श्री
कुलजम सरूप

निजनाम श्री जी साहिबजी, अनादि अछरातीत ।
सो तो अब जाहेर भए, सब विध वतन सहीत ॥

प्रकास गुजराती जंबूर

जंबूर किताब पुरानी दाऊद अलैहस्सलाम पैगम्बर लाए थे। उसको रद्द कर उस नाम की यह प्रकाश गुजराती किताब हबसा में उतरी। इसका अनुवाद स्वयं अक्षरातीत श्री प्राणनाथजी महाराज ने अनूपशहर में हिन्दुस्तानी भाषा में किया, ताकि सब सुन्दरसाथ इसका भावार्थ समझ सकें।

रास खेलने के बाद श्री इन्द्रावतीजी ने प्रार्थना की कि हे मेरे धनी! आपने रास की रामतें तो अति सुखदाई खिलाई हैं, परन्तु इसमें आपके अन्तर्ध्यान होने पर जो दुःख हुआ, वह हमसे सहन नहीं होता है। अब वहां उस घर को ले चलो, जहां कभी भी आपसे हम जुदा न हो सकें। तब वालाजी ने उनकी प्रार्थना स्वीकार की। सब आत्माओं को निजधाम वापस ले गए।

कांई एणी पेरे कीधूं रास, रमीने जागिया।
कांई आपण आ अवतार, फरीने मांगिया।। १ ॥

रास का खेल करके जब मूल-मिलावा में जागृत हुए और फिर से हमने पूरा खेल देखने की मांग अपने पिया से की तो फिर से इस कालमाया के ब्रह्माण्ड में आए।

कांई तेणी घडी तत्काल, आपण आंही आवियां।
पेहेला फेराना लवलेस, आपण आंही ल्याविया।। २ ॥

श्री राजजी महाराज ने हमारी मांग को तुरन्त स्वीकार किया। उस समय सब ब्रह्मसृष्टियां यहां उतरीं। पहली बार ब्रज में आए थे। उसमें जो चाहना बाकी रह गई थीं, उसको पूर्ण करने के लिए हम यहां आए।

वालेजीए तेणी ताल, सुन्दरबाई मोकल्यां।
सखी तमे लई चालो आवेस, म मूकूं एकला।। ३ ॥

वालाजी ने परमधाम से उसी समय श्यामाजी (सुन्दरबाई) को भेजा और कहा कि मैं आपको अकेला नहीं भेजूंगा। मेरा आवेश आपके साथ रहेगा।

नोट—श्यामाजी का नाम खेल में वालाजी ने सुन्दरबाई रखा। प्रमाण है चौपाई ७२ प्रगट वाणी। श्यामजी के मन्दिर में दर्शन देते समय कहा, 'धरयो नाम बाई सुन्दर निजवतन दिखाया घर'। दूसरा प्रमाण है प्रकाश हिन्दुस्तानी प्रकरण ४, चौपाई २। श्री सुन्दरबाई धनी धाम दुलहन इन्द्रावती पर दया पूर्ण। हृदय बैठ कहे वचन एह। कारण साथ किए सनेह।।

इंद्रावती लागे पाय, सुणो तमे साथ जी।
कांई आपणने अवसर, आव्यो छे हाथ जी।। ४ ॥

श्री इन्द्रावतीजी सब सुन्दरसाथजी के चरणों में प्रणाम करती हैं। हे सुन्दरसाथजी! यह सुन्दर मौका हमको फिर से मिला है।

॥ प्रकरण ॥ १ ॥ चौपाई ॥ ४ ॥

Nijanand App

श्री साथनो प्रबोध–राग धनाश्री

इस प्रकरण में सब सुन्दरसाथजी को कैसे रहनी में रहना है, श्री राजजी महाराज ने सिखापन (शिक्षा) दिया है।

संभारो साथ, अवसर आव्यो छे हाथ जी।
आप नाख्या जेम पेहेले फेरे, वली नाखजो एम निघात जी।। १ ।।

हे सुन्दरसाथजी! याद करो, यह सुन्दर मौका अपने को मिला है। पहली बार में जब ब्रज से रास में जाते समय संसार को हमने खड़े-खड़े छोड़ दिया था, उसी तरह से दृढ़ता के साथ इस बार भी छोड़ देना।

सुन्दरबाई आपण माटे, आव्या छे आणी वार जी।
ए आपणने अलगां नव करे, कांई मोकल्या छे प्राण आधार जी।। २ ।।

इस बार श्यामाजी (सुन्दरबाई) अपने वास्ते यहां पर आई हैं। वह अपने को कभी भी हमसे अलग नहीं करेंगी, क्योंकि श्री राजजी महाराज ने इनको भेजा है।

सपनातरमां खिणनव मूके, तो साख्यात अलगां केम थायजी।
कृपा वालाजीनी केही कहूं, जो जुए जीव रुदया मांहें जी।। ३ ।।

सपने में भी (ब्रज में) वालाजी ने एक क्षण के लिए भी नहीं छोड़ा तो अब साक्षात् में कैसे अलग हो सकेंगे? (अब हमारे पास तारतम वाणी से उनकी पहचान है, जो ब्रज में नहीं थी) हृदय से विचारें तो वालाजी की कृपा अपार है। यह वर्णन से परे है, जो जीव मन में विचारे।

एवडी वात वालो करे रे आपणसूं, पण नथी कांई साथने सार जी।
भरम उडाडी जो आपण जोइए, तो बेठा छे आपणमां आधार जी।। ४ ।।

वालाजी हमारे ऊपर मेहरबान हैं और ऐसी कृपा करते हैं, किन्तु सुन्दरसाथ को इसकी खबर नहीं है। अपने संशय दूर करके देखें तो श्री राजजी महाराज अपने बीच में ही बैठे हैं।

सपनातरमां मनोरथ कीधां, तो तिहां पण वालोजी साथ जी।
सुंदरबाई लई आवेस धणीनो, नव मूके आपणो हाथ जी।। ५ ।।

सपने में (ब्रज में) हमने इच्छा की थी। वहां पर भी धाम धनी अपने साथ में थे। अब श्यामाजी (सुन्दरबाई) धनीजी के आवेश के साथ आई हैं और हमारा हाथ अब नहीं छोड़ेंगी।

तिलमात्र दुख नव दिए आपणने, जो जोइए वचन विचारी जी।
दुख आपणने तोज थाय छे, जो संसार कीजे छे भारी जी।। ६ ।।

हम विचार करके देखें तो थोड़ा-सा भी दुःख वालाजी नहीं देते हैं। हम तभी दुःखी होते हैं, जब हम माया को अच्छा समझते हैं। (चाहना राजजी की तरफ नहीं होती)

अंतरध्यान समे दुख दीधां, ए आसंका मन मांहें जी।
एणे समे संसार भारी नव कीधूं, साथें दुख दीठां एम कांए जी।। ७ ।।

एक आशंका सब सुन्दरसाथजी के मन में आती है कि रास की लीला में हमें माया की चाह नहीं थी, तो फिर अन्तर्ध्यान के समय विरह का दुःख क्यों दिखाया गया?

दुखतां केमे न दिए रे वालोजी, ए तां विचारीने जोइए जी।
सांभरे वचन तोज रे सखियो, जो माया मूकतां घणूं रोइए जी।। ८ ।।

वालाजी तो हमको किसी तरह से भी दुःख नहीं देते हैं। जरा विचार करके देखो। यह वचन तभी याद आते हैं, जब हम माया छोड़ते समय दुःख महसूस करते हैं।

Nijanand App

वचन संभारवा ने काजे मारे वाले, दुख दीधां अति घणां जी।
आपण मनोरथ एहज कीधां, वाले राख्या मन आपणां जी।। ९ ।।

इन वचनों को याद दिलाने के वास्ते ही हमने दुःख की मांग की थी। वालाजी ने हमारा मन रखने के लिए ही विरह का दुःख दिखाया था।

आपण माया नी होंसज कीधी, अने माया तो दुख निधान जी।
ते संभारवाने काजे रे सखियो, वालो पाम्या ते अंतरध्यान जी।। १० ।।

हमने उमंग से माया देखने की चाहना की थी, माया तो दुःख का ही रूप है। उसे याद दिलाने के लिए ही हे सुन्दरसाथजी! वालाजी अन्तर्ध्यान हुए थे।

नहीं तो अधखिण ए रे आपणों, नव सहे विछोह जी।
ए तां विचारीने जोइए रे सखियो, तो तारतम भाजे संदेह जी।। ११ ।।

नहीं तो आधे पल के लिए भी हमारी जुदाई वालाजी सहन नहीं करते। यह विचार करके देखो तो तारतम वाणी से सब संशय मिट जाते हैं।

एणे समे तारतमनी समझण, ते में केम केहेवाय जी।
अनेक विधनूं तारतम इहां, तेणे घर लीला प्रगट थाय जी।। १२ ।।

इस समय तारतम को ही समझना है। मैं कैसे कहूं? क्योंकि संसार में अनेक प्रकार के ज्ञान हैं, जो घर का ज्ञान तो देते हैं, पर सब संसार में ही घटा देते हैं। तारतम वाणी के बिना घर की पहचान नहीं होती है।

ओलखवाने धणी आपणो, कहूं तारतम विचार जी।
साथ सकल तमे ग्रहजो चितसूं, नहीं राखूं संदेह लगार जी।। १३ ।।

अपने धनी की पहचान कराने के लिए सब ज्ञान का सार लेकर तारतम का महत्व बतलाती हूं। हे साथजी! तुम चित्त से ग्रहण करना। मैं सब संशय मिटा डालूंगी।

पेहेले फेरे तां ए निध न हुती, अजवालूं तारतम जी।
तो आ फेरो थयो आपणने, साथ जुओ विचारी मन जी।। १४ ।।

पहली बार (ब्रजरास में) में तारतम वाणी का ज्ञान (धनी की पहचान) नहीं था, इसलिए हे सुन्दरसाथजी! मन से विचार करके देखो तो यही कारण था जो दुबारा हमको खेल में आना पड़ा।

उत्कंठा नव रहे रे केहेनी, जो कीजे तारतम नो विचार जी।
तारतमतणूं अजवालूं लईने, आव्या आपणमां आधार जी।। १५ ।।

यदि तारतम का विचार करके देखो तो किसी की चाहना बाकी नहीं रहेगी। श्री राजजी महाराज तारतम के स्वरूप में ही हमारे बीच में आए हैं। (तारतम का ज्ञान लेकर आए हैं)

एणे अजवाले जो न ओलख्या, तो आपणमां अति मणां जी।
चरणे लागी कहे इंद्रावती, वालो नव मूके गुण आपणां जी।। १६ ।।

इस ज्ञान की रोशनी में भी आपने नहीं पहचाना तो यह अपनी कमी है। (अपने सिर दोष होगा) श्री इन्द्रावतीजी चरणों में लगकर कहती हैं कि (हमारी इतनी बड़ी भूल पर भी) वालाजी फिर भी अपने ऊपर मेहरबान हैं। वह अपनी मेहर (कृपा) करने के गुण को नहीं छोड़ते।

॥ प्रकरण ॥ २ ॥ चौपाई ॥ २० ॥

Nijanand App

सकल साथ, रखे कोई वचन विसारो जी।
धणी मल्या आपणने मायामां, अवसर आज तमारो जी।। १ ।।

हे सुन्दरसाथजी! आज हमें श्री राजजी महाराज माया में मिले हैं। आज मौका तुम्हारे हाथ आया है। मेरे वचनों को कोई भुला नहीं देना।

सुंदरबाई अंतरगत कहावे, प्रकास वचन अति भारी जी।
साथ सकल तमे मली सांभलो, जो जो तारतम विचारी जी।। २ ।।

मेरे अन्दर बैठकर श्री श्यामाजी (सुन्दरबाई) कहलाती हैं कि ज्ञान के वचन बहुत भारी हैं। हे साथजी! तारतम ज्ञान को सब मिलकर विचारो।

साथ जी एणे पगले चालजो रे, पगला ते एह प्रमाण जी।
प्रगट तमने पेहेले कह्यूं, वली कहूं छू निरवाण जी।। ३ ।।

हे सुन्दरसाथजी! यही प्रामाणिक (सच्चा) रास्ता है। इस पर ही चलना। तुमको पहले भी स्पष्ट कहा है और फिर से साफ कहती हूं।

हवे रखे माया मन धरो, तमे जोई ते अनेक जुगत जी।
कई कई पेरे कह्यूं में तमने, तमे हजी न पाम्या तृपित जी।। ४ ।।

हे साथजी! अब अपने मन को माया से हटाओ। तुमने अनेक प्रकार से इसको देख लिया है और मैंने भी आपको तरह-तरह से समझाया है, फिर भी तुम्हारा मन इससे भरा नहीं।

जिहां लगे तमे रहो रे मायामां, रखे खिण मूको रास जी।
पचवीस पख लेजो आपणां, तमने नहीं लोपे मायानों पास जी।। ५ ।।

हे साथजी! जब तक माया में रहो रास की वाणी को पलभर के लिए भी भूलना नहीं। परमधाम के पच्चीस पक्षों को यदि सदा अपने चित्त में रखो (ध्यान परमधाम में ही रखोगे) तो माया का रंग तुम्हारे ऊपर नहीं चढ़ सकता। (माया कुछ भी बिगाड़ नहीं सकती)।

अनेक विध में घणुंए कह्यूं, हवे रखे खिण विहिला थाओ जी।
रासतणी रामतडी जो जो, जे भरियां आपण पांउं जी।। ६ ।।

हे साथजी! मैंने तुमको तरह-तरह से समझाया। अब एक पलभर के लिए आप राजजी महाराज से अलग मत होना। रास की रहनी पर अब भी चलें। जिस प्रकार हमने संसार को छोड़ा था।

रास रामतडी रखे खिण मूको, जे आपण कीधी परमाण जी।
तमे घणुए नव मूको माया, पण हूं नहीं मूकूं निरवाण जी।। ७ ।।

रास का ज्ञान (रहनी) पल भर भी न छोड़ें। वह अपनी बीती बात है। तुमसे तो माया नहीं छूटती और धनी कहते हैं मैं तुम्हें नहीं छोड़ूंगा।

कहे इंद्रावती वचन वालाना, जे सुणया आपण सार जी।
हवे लाख वातो जो करे रे माया, तोहे नहीं मूकूं चरण निरधार जी।। ८ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि श्री राजजी महाराज की वाणी से हमको सार वस्तु (परमधाम की पहचान) मिली। अब माया कितना भी मुझे फंसावे तो भी मैं धनी के चरण नहीं छोड़ूंगी।

॥ प्रकरण ॥ ३ ॥ चौपाई ॥ २८ ॥

Nijanand App

चौपाई प्रगटी

न कांई मनमां न कांई चित, न कांई मारे रदे एवडी मत।
एक वचन समू नव केहेवाय, एतां आव्यो जाणे पूरतणो दरियाय।। १ ।।

इस तारतम वाणी को कहने के लिए मेरे मन में, मेरे चित्त में तथा मेरे हृदय में इतनी बुद्धि नहीं है कि मैं इसके एक शब्द का भी वर्णन कर सकूं, पर धाम धनी की मेहर से दरिया के प्रवाह के समान वाणी आ रही है।

श्री सुंदरबाई लई आविया, इंद्रावती ऊपर पूरण दया।
रुदे बेसी केहेवराव्युं एह, साथ माटे कीधा सनेह।। २ ।।

श्री श्यामाजी (सुन्दरबाई) इस वाणी को लेकर आई हैं और श्री इन्द्रावतीजी पर पूर्ण रूप से मेहरबान हैं। जिसके हृदय में बैठकर बड़े प्रेम से सुन्दरसाथजी के लिए वाणी कहलवा रही हैं।

वचन एक केहेतां निरधार, अमे घेर जईने लेसूं सार।
अदृष्ट थईने कहे वचन, साथ सकल तमे ग्रहजो मन।। ३ ।।

श्री श्यामाजी महारानी (श्री देवचन्द्रजी के तन से) कहती हैं कि मैं अपने घर श्री इन्द्रावतीजी के दिल में बैठकर सुन्दरसाथ की अच्छी तरह से खबर रखूंगी। हे सुन्दरसाथजी! देवचन्द्रजी ने शरीर छोड़ते समय यह जो वचन कहे उनको तुम मन में दृढ़ता के साथ ग्रहण कर लो।

आपण पेहेलां पगला भरियां जेह, वली जे कीधां प्रेम सनेह।
ते प्रगट कीधां आपण माट, धोक मारग ए आपणी वाट।। ४ ।।

हम पहली बार (ब्रज, रास में) प्यार और स्नेह से जैसे रहते थे, वही रास्ता हमको बतलाया है। रास्ता सरल और सुगम है। फल की प्राप्ति के लिए पक्षी की तरह है। (चींटी की तरह नहीं जो हवा के झोंके से बार-बार गिरती और चढ़ती है)।

आपणने ए प्रगट करी, साथ सकल लेजो चित धरी।
तमे रखे हलवी करो ए वाण, पूरण दयाए कह्यूं निरवाण।। ५ ।।

हे साथजी! राजजी महाराज ने हमको वाणी से साक्षात् दिखलाया। इसको तुम चित्त में धारण कर लो। इन वचनों को तुम हल्का न समझो। श्री राजजी महाराज ने पूरी कृपा करके यह वाणी हमें दी है।

प्रबोध वचन ते सदा केहेवाय, पण आ वचन कांई प्रगट न थाय।
ते माटे तमे सुणजो साथ, आपणमां बेठा प्राणनाथ।। ६ ।।

उपदेश तो कईयों ने दिये, पर जिस वाणी से अपनी और अपने घर की पहचान होती है, उसे किसी ने आज तक नहीं कहा। इसलिए हे साथजी! तुम सुनो। श्री राजजी महाराज अब अपने बीच में बैठकर वाणी से पहचान करा रहे हैं।

आपणने सिखामण कहे, पण भरम आडे कांई रुदे नव रहे।
ते भरम उडाडो तमे जोई रास, जेम ओलखिए आपणो प्राणनाथ।। ७ ।।

हमको बार-बार समझाते हैं, किन्तु संशय (माया) के कारण हृदय में उनकी वाणी नहीं आती। उस संशय को उड़ाने के लिए तुम रास में पिया के साथ कैसे रहे? याद करो, जिससे अपने धनी की पहचान हो जाए।

Nijanand App

विहिला थयानी नहीं ए वार, तेडवा आपणने आव्या आधार।
प्रगट पुकारी कहे छे सही, आ वचन कहाव्या अंतरगत रही।। ८ ।।

हमको श्री राजजी महाराज बुलाने के लिए आए हैं, इसलिए अब उनसे दूर होने का समय नहीं है। यह वचन श्री राजजी महाराज मेरे अन्दर बैठकर कहलवा रहे हैं।

एक वचन न आवे अस्तुत, सोभा दीधी जेम कालबुत।
अस्तुतनी आंहीं केही वात, प्रगट थावा कीधी विख्यात।। ९ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि मुझमें श्री राजजी महाराज की महिमा कहने की जरा भी शक्ति नहीं है। कहने वाले स्वयं धाम के धनी हैं। जैसे पत्थर की मूर्ति को भगवान की शोभा मिलती है, उसी प्रकार से मेरे तन को शोभा मिली है। कहने वाले श्री राजजी महाराज ही हैं, जिन्होंने संसार में साथ के लिए वाणी से जाहिर होना है।

फल वस्त जे भारे वचन, जीव पण न कहे आगल मन।
ते प्रगट कीधां अपार, जे कांई हुतो आपणो सार।। १० ।।

श्री राजजी महाराज की पहचान कराने वाले भारी वचनों के लेने के लिए जीव भी मन को आगे नहीं करता। उन्होंने मेरे द्वारा सार वस्तु अपने घर श्री परमधाम की सब बातें जाहिर करा दीं।

सगाई कीधी प्रगट, आपण घणुंए राखी गुपत।
वचन एक ए छे निरधार, श्री सुंदरबाई केहेतां जे सार।। ११ ।।

श्री श्यामाजी (श्री देवचन्द्रजी महाराज) कहते थे कि हमारा नाता परमधाम का है, जिसे अब तक हमने जाहिर नहीं किया था।

आ लीला थासे विस्तार, सूरज ढांक्यो न रहे लगार।
आ लीला केम छानी रहे, जेहेने रास धणी एम वचन कहे।। १२ ।।

इस लीला का आगे चलकर बहुत विस्तार होगा। ज्ञान के सूर्य को ढांपा नहीं जा सकेगा। यह लीला कैसे छिप सकती है, जिसके लिए धाम के धनी स्वयं इतना महत्व देते हैं।

ते माटे तमे सुणजो साथ, जे प्रगट लीला कीधी प्राणनाथ।
कोई मनमां म धरजो रोष, रखे काढो मेहेराजनो दोष।। १३ ।।

इसलिए प्यारे साथजी! सुनो, श्री राजजी महाराजजी ने जाहिर होने के लिए ही यह लीला की है। यह बात सुनकर कोई दुःखी नहीं होना और श्री मेहराज को दोष नहीं देना।

एटलूं तमे जाणो निरधार, आ वचन मेहेराजें प्रगट न थाय।
आपण घरनी नहीं ए वात, जे किव करी मांडिए विख्यात।। १४ ।।

यह बात निश्चित रूप से जानो। यह वाणी श्री मेहराज से जाहिर नहीं हो सकती, क्योंकि परमधाम की यह रीति नहीं कि अपने घर की बात कविता की तरह रचना करके कही जाए।

हूं मन मांहें एम जाणुं घणुं, जे किव नहीं ए काम आपणुं।
पण आतां नथी कांई किवनी वात, रुदे बेसी केहेवराव्युं प्राणनाथ।। १५ ।।

यह बात मैं अच्छी प्रकार से मन में जानती हूं कि अपना काम कविता करना नहीं है। यहां तो कविता का कोई काम ही नहीं है। यह तो सब श्री राजजी महाराज की ही वाणी है, जो हृदय में बैठकर स्वयं कहला रहे हैं।

Nijanand App

ए वचन सर्वे आवेसमां कह्या, उत्तमबाईए जोपे करी ग्रह्या।
एम कह्युं दई आवेस, जे प्रगट लीला कीधी वसेस।। १६ ।।

यह सब वाणी आवेश द्वारा कहलवाई है, जिसे उत्तमबाई (ऊधो ठाकुर) ने अच्छी तरह (हवसा में साथ थे) ग्रहण किया। इस प्रकार अपने आवेश द्वारा कहलाया कि अब यह लीला सब में जाहिर हो जाएगी।

में मन मांहें जाण्यूं एम, जे किव थासे त्यारे रमसूं केम।
किव पण थई आ वचन विचार, रमी इंद्रावती अनेक प्रकार।। १७ ।।

मैंने मन में ऐसा जाना कि यदि यह मेरी बनाई कविता होगी तो सत का वर्णन कैसे होगा, किन्तु यदि देखा जाए तो एक तरह से कविता का रूप भी बन गया तथा सत को भी प्रगट किया। यह कहने की खूबी केवल इन्द्रावती में ही है।

सघला कारज थया एम सिध, श्रीसुंदरबाईए सिखामण दिध।
रुदे बेसी केहेवराव्युं रास, पेहेलो फेरो कीधो प्रकास।। १८ ।।

श्री श्यामाजी (सुन्दरबाई) ने हृदय में बैठकर रास का वर्णन कराया और उसका सिखापन देकर, हमारे सभी काम इसी तरह पूर्ण कर दिए। (रास की लीलाओं से हमने वालाजी को अपने से अलग न करने की लीला की और अभिमान करने पर दुःख मिला। अतः अभिमान कभी न करना, यह सीखो)

ते माटे तमे सुणजो साथ, आपण काजे कीधूं प्राणनाथ।
रखे जाणो मनमां रहे कांई लेस, ते माटे कीधो उपदेस।। १९ ।।

हे सुन्दरसाथजी! सुनो, अपने अन्दर माया लेशमात्र भी न रह जाए, इसलिए राजजी महाराज ने ऐसी सुन्दर वाणी से उपदेश (ज्ञान) दिया।

आपण पेहेला पगला भरियां सार, एम चालो म लावो वार।
वली जो जो आ पेहेलां वचन, प्रेम सेवा एम राखो मन।। २० ।।

हमने पहली बार ब्रज से रास में जाते समय माया को छोड़कर दिखाया था। उसी तरह देर मत करो। इस बार भी फिर उसी तरह से पहले फेरे के वचनों को दखो, फिर प्रेम और सेवा में अपने मन को लगा दो।

तारतम वचन कहूं वली फरी, तमने कह्युं छे अनेक विधे करी।
वली तमने कहूं प्रकास, सुणजो एक मने ग्रही स्वांस।। २१ ।।

हे साथजी! मैं आपको बार-बार तारतम की वाणी से समझाती हूं। आप भी एक मन, एक चित्त से वाणी के ज्ञान को सुनो।

पेहेले फेरे श्री वैकुण्ठनाथ, इछा दरसन करवा साथ।
साथतणे मन मनोरथ एह, जे माया रामत जोइए तेह।। २२ ।।

पहली बार (ब्रज, रास में) अक्षर भगवान को हमारे दर्शन करने की इच्छा थी और सुन्दरसाथ को माया (संसार) देखने की इच्छा थी।

त्यारे भगवानजी मन विमास्या रही, श्री धणीजीए इछा कीधी सही।
लाधूं सपन दीधूं आवेस, माया रामत कीधी प्रवेस।। २३ ।।

तब अक्षर ब्रह्म ने मन में विचार किया और श्री राजजी महाराज ने उनकी इच्छा ब्रजरास में पूरी की। हम सबने स्वप्न में श्री राजजी के आवेश के साथ माया के खेल (ब्रज) में प्रवेश किया।

Nijanand App

ए आवेस लईने करी, प्रगटया गोकुल नन्द घरी।
साथ सपन एम लाधूं सही, जे गोकुल रमिया भेला थई।। २४ ।।

इस आवेश को लेकर अक्षर ब्रह्म नन्द के घर में (विष्णु के तन में जिसका नाम कृष्ण रखा गया) प्रगट हुए। इसी प्रकार उसी ब्रह्माण्ड (कालमाया के पहले ब्रह्माण्ड) में हम सखियां भी आईं और गोकुल में मिलकर खेलीं।

अग्यारे वरस लगे लीला करी, कालमाया इहांज परहरी।
जोगमाया करी रमियां रास, आनन्द मन आणी उलास।। २५ ।।

गोकुल में ग्यारह वर्ष तक लीला करके कालमाया के ब्रह्माण्ड का प्रलय कर दिया तथा योगमाया के ब्रह्माण्ड में (नए तन योगमाया के धारण कर) उमंग के साथ रास की लीला की।

रास रमी घेर आव्या एह, साथ सकल मन अधिक सनेह।
कांईक उत्कंठा रही मन सार, तो आपण आव्या आणी वार।। २६ ।।

रास खेलने के बाद हम (हमारी आत्माएं, ब्रह्मसृष्टि—तन नहीं) घर (परमधाम) में सावधान हुए, तब सुन्दरसाथ के मन प्रेम से भरपूर थे। फिर भी माया देखने की चाहना मन में शेष रह गई, इसलिए हम इस बार फिर कालमाया के ब्रह्माण्ड में आए।

वली एक वचन कहूं सुणजो साथ, दया करी कहे प्राणनाथ।
आ किव करी रखे जाणो मन, भरम टालवा कह्यां वचन।। २७ ।।

कृपा करके श्री प्राणनाथ राजजी महाराज स्वयं कहते हैं, सुन्दरसाथजी! हमारी इस वाणी को सुनो। यह कविता नहीं है। तुम्हारे सब संशय मिटाने के वास्ते ही यह वाणी कही है।

भरम टले ओलखाय धणी, अने सेवा थाय मारा वालाजी तणी।
ओलखाय वल्लभ तो टले माया पास, एटला माटे प्रगट थयो रास।। २८ ।।

तुम्हारे संशय मिट जाने पर ही तुम्हें धनी की पहचान होगी। फिर श्री राजजी महाराज की सेवा होगी। वालाजी की पहचान हो जाए तो माया का रंग उतर जाएगा। इस कारण से रास का वर्णन किया। (यदि सुन्दरसाथ को राजजी महाराज के स्वरूप व निसबत की पहचान कराके तारतम दिया जाता तो माया का रंग हट जाता। इस कारण से ही तुम्हें रास की वाणी कहनी पड़ी।)

पेहेला फेरना अवतार, ते तारतमे कह्या विचार।
पेहेले फेरेतां खबर न पडी, तो आपण आव्या आंहीं वली।। २९ ।।

पहले फेरे में जो अवतार हमारे साथ आया (आतम अक्षर और धनी जी का जोश) उसकी पहचान हमें नहीं हुई थी। इस कारण से हम इस संसार में आए। यह पहचान अब तारतम ज्ञान (जागृत बुद्धि) से हो रही है।

कांईक मन मांहें रह्यो अंदेस, ते राखे नहीं धणी लवलेस।
हवे आ फेरानो जो जो विचार, अजवालूं लई आव्या आधार।। ३० ।।

हमारे मन में नासमझी थी (तारतम ज्ञान नहीं था), जिसे धनी अब थोड़ा-सा भी नहीं रहने देना चाहते हैं, इसलिए इस फेरे में जागृत बुद्धि (तारतम ज्ञान) को लेकर पधारे हैं, इसलिए अब दुबारा विचार करें।

Nijanand App

साथने रखे उत्कंठा रहे, तारतम वचन पाधरा कहे।
लई तारतम आव्या आ वार, मेहेता मतू घेर अवतार।। ३१ ।।

सुन्दरसाथ को कोई उत्कण्ठा न रहे, इसलिए मत्तू मेहता के घर में तारतम ज्ञान (जागृत बुद्धि) लेकर आए। केवल तारतम ज्ञान ही घर का सीधा रास्ता दिखाता है।

कुंअरबाई मातानूं नाम, उत्तम कायथ उमरकोट गाम।
श्री देवचंदजी नगर आविया, आवी वचन भागवतना ग्रह्या।। ३२ ।।

श्री देवचन्द्रजी की माताश्री का नाम कुंवरबाई है। उमरकोट ग्राम में उत्तम कायस्थ परिवार में थे। श्री देवचन्द्रजी उमरकोट ग्राम छोड़कर (नौतनपुरी) नवांनगर आए और आकर भागवत के वचनों को ग्रहण किया।

चौद वरस लगे नेष्टा बंध, वचन ग्रह्यां सघली सनन्ध।
एणे समे गांगजी भाई मल्या, धनबाई ऊपर पूरण दया।। ३३ ।।

चौदह वर्ष तक व्रत लेकर विधिवत भागवत के सब सार ग्रहण किए। इसी समय गांगजी भाई मिले जो धनबाई की आतम है। उन पर पूर्ण कृपा की।

सनन्धे सर्वे कह्या वचन, ग्रह्या गांगजी भाइए जोपे मन।
एटला लगे कोंणे नव लह्यां, ते गांगजी भाई घेर प्रगट थया।। ३४ ।।

गांगजी भाई को पूर्ण हकीकत के साथ परे की वाणी सुनाई, जिसे गांगजी भाई ने पूर्ण विश्वास से सुना। आज तक जो ज्ञान किसी को नहीं मिला था, वह गांगजी भाई को प्राप्त हुआ।

पधराव्या पोताने घेर, जुगते सेवा कीधी अनेक पेर।
त्यारे श्रीमुख वचन कह्यां प्राणनाथ, जेखोली काढवो छे आपणो साथ।। ३५ ।।

गांगजी भाई (श्री देवचन्द्रजी के अन्दर बैठे श्री राजजी महाराज के स्वरूप की पहचान की) उन्हें अपने घर ले गए और बड़े प्यार और भाव से सेवा की। तब श्री प्राणनाथजी ने (श्री देवचन्द्रजी के तन में) अपने मुखारविन्द से कहा कि सुन्दरसाथ को खेल में से खोजकर लाना है।

प्रवेस कीधो छे माया मंझार, तेडी आपणने जावूं निरधार।
अमे आव्या छूं एटले काम, तेडवा साथ घरे श्री धाम।। ३६ ।।

सुन्दरसाथ माया के बीच आए हैं। उनको लेकर घर जाना है। मैं केवल सुन्दरसाथ को अपने घर ले जाने के काम से ही आया हूं।

त्यारे गांगजी भाई पाम्यां अचरज मन, जे किहां छे साथ अने आवसे केम।
आ वचन वेहदना कोण मानसे, केणी पेरे ए साथ आवसे।। ३७ ।।

यह सुनकर गांगजी भाई को बहुत हैरानी हुई कि सुन्दरसाथ कहां हैं और वह कैसे आएंगे? इन बेहद के वचनों को कौन मानेगा और सुन्दरसाथ कैसे आएंगे?

आ माया पूर वहे नताल, नख मूक्यो लई जाय तत्काल।
लेहेर ऊपर आवे छे लेहेर, मांहें दीसे भमरीना फेर।। ३८ ।।

माया का बहाव इतना जोरदार है कि यदि अंग का नाखून भी उसको छू जाए तो माया नाखून को तोड़कर ले जाएगी। (माया की थोड़ी-सी भी चाह हमें माया में घसीट कर ले जाएगी) इसके बहाव में लहर पर लहर आती हैं और भंवर पड़ती हैं।

Nijanand App

आडा ऊभा वेहेवट घणां, अने विकराल जीव माहें जलतणा।
ऊंचो आडो ऊभो ऊंडो अतांग, पोहोरो कठिण नथी केहेनो लाग।। ३९ ।।

माया का बहाव टेढ़ा-मेढ़ा है, जिसमें जल में रहने वाले बड़े-बड़े जीव हैं और जल भी अथाह गहरा है। यहां ऐसा कठिन समय है कि कोई रास्ता बाहर जाने का नहीं दिखता।

नव सूझे हाथने हाथ, माया अमले छाक्यो साथ।
नव ओलखे आपने पर, सुध नहीं सरीर न सूझे घर।। ४० ।।

माया के नशे में सुन्दरसाथ ऐसे लिप्त हो गए हैं कि अब उन्हें अपने और पराये की सुध नहीं और न अपने घर की याद आती है, क्योंकि यहां इतना अन्धकार है कि अपना हाथ भी नहीं सूझता।

त्यारे बेहेर दृष्टनो कह्यो विचार, एक मोटो आडीको थासे निरधार।
अंतरगते आवसे धणी, वस्तों आपणने देसे घणी।। ४१ ।।

तब सांसारिक दृष्टि से बड़ी आडीका (चमत्कारिक) लीला होगी। यह दिल में लिया। जिसमें श्री राजजी महाराज हमारे बीच में आएंगे तथा बहुत तरह की चीजें हमको देंगे।

आपण मांहें आंहीं आरोगसे, साथतणी दृष्टे आवसे।
थासे छेडा ग्रह्या लगण, मानसे मन त्यारे अति घण।। ४२ ।।

अपने बीच में यहीं आकर भोजन करेंगे और सुन्दरसाथ को दर्शन देंगे। इससे सुन्दरसाथ उनका दामन पकड़ लेंगे और उनके मन में पूर्ण विश्वास होगा।

आवसे साथ उछाह अति घणां, पण तमे वचन मूको रखे तारतम तणां।
बेहेर दृष्टतणो जोई अजवास, आनन्द मन उपजसे साथ।। ४३ ।।

सुन्दरसाथ इस लीला में बड़ी उमंग के साथ आएंगे। वह बाहरी दृष्टि से इसको देखेंगे, जिससे उनके मन में अति आनन्द होगा। फिर भी तुम तारतम वाणी (जागृत बुद्धि) के ज्ञान को छोड़ना नहीं अर्थात् आडीका (चमत्कारपूर्ण) लीला को ही सत्य नहीं मान बैठना।

त्यारे वचनतणां करसूं विचार, खरी वस्त जोसूं तत्काल।
वासना ओलखी लेसूं सही, माया जीवने वचन भारे केहेसूं नहीं।। ४४ ।।

तब तारतम वाणी पर विचार करेंगे। उससे सब आने वालों में से सुन्दरसाथ की पहचान हो जाएगी। जीव सृष्टि को पार की वाणी नहीं कहेंगे, क्योंकि यह उनकी समझ से परे की बात होगी।

ए आडीको कीधो उत्तम, पण घरनी निध ते कही तारतम।
जेथी ओलखिए आधार, वली जीवने टले अंधकार।। ४५ ।।

इसलिए इस आडीका लीला (चमत्कारिक लीला) को किया, लेकिन घर की जो न्यामत है वह तारतम ज्ञान है। उससे अपने धनी को पहचानो, जिससे अपने जीव का अन्धकार मिट जाए।

त्यारे गांगजी भाई पाम्या मन उछरंग, कीधां क्रतब अति घणे रंग।
साख्यात तणी सेवा कीधी सही, अंग पाछूं कोई राख्यूं नहीं।। ४६ ।।

यह सुनकर गांगजी भाई को मन में आनन्द हुआ और अति उल्लास के साथ सुन्दरसाथ को बुलाने के कार्य को किया। श्री देवचन्द्रजी को साक्षात् धाम धनी जानकर सेवा की और सुन्दरसाथ की सेवा में कोई कमी नहीं रखी।

Nijanand App

हवे साथ खोली काढूं आवार, ते तां तमने में कह्यो प्रकार।
श्री सुंदरबाई तणो अवतार, पूरण आवेस दीधो आधार।।४७।।

जो आपने ढंग बताया है उसको ही हृदय में लेकर सुन्दरसाथ की खोज में लगूंगा। श्री देवचन्द्रजी श्यामाजी (सुन्दरबाई) के अवतार हैं, जिनको श्री राजजी महाराज ने अपने आवेश की शक्ति दी है।

आपणने तेडवा आविया, साथ ऊपर छे पूरण दया।
अनेक वचन आपणने कह्या, पण भरम आडे कांई रुदे नव रह्या।।४८।।

सुन्दरसाथ के ऊपर अत्यन्त कृपा करके बुलाने के लिए राजजी महाराज आए हैं। उन्होंने तरह-तरह के ज्ञान से समझाया, किन्तु माया की शंकाओं ने वह ज्ञान हमारे हृदय में नहीं आने दिया।

त्यारे अनेक विधे आपणने कही, पण भरम बेठो चित आडो थई।
अनेक आपणने कह्या दृष्टांत, तोहे बेठां अमे ग्रही स्वांत।।४९।।

तब श्री राजजी महाराज ने अनेक प्रकार से हमें समझाया। फिर भी चित्त में संशय बना ही रहा। अनेक प्रकार के दृष्टान्त देकर समझाने पर भी हम शान्त होकर बैठे रहे।

अनेक आपणसूं कीधां उपाय, तोहे आपणो सुभाव न जाय।
त्यारे अनेक विधे कह्यूं तारतम, तोहे आपणो न गयो भरम।।५०।।

श्री देवचन्द्रजी ने हमें समझाने के लिए अनेक उपाय किए। फिर भी हमारे स्वभाव नहीं बदले (ढीठ के ढीठ बने रहे)। तब अनेक प्रकार से तारतम की वाणी समझाई। (धाम धनी के स्वरूप की पहचान कराई।) फिर भी हमारे संशय नहीं मिटे (हम उनकी पहचान न कर सके)।

अनेक आपणसूं कीधां विचार, कही कही वांक टाल्यो आधार।
अनेक पखे समझाव्यां सही, आपणने टांकी लागी नहीं।।५१।।

हमको अपने पास बिठाकर विचार-विमर्श कर हमारे अवगुण निकाले तथा अनेक तरह से दृष्टान्त (नरसैयां, कबीर, जाटी और अन्य) के ज्ञान से समझाया। फिर भी हमको उनके वचनों की चोट नहीं लगी।

त्यारे अनेक आडीका मेल्या आधार, तोहे आपणने न वली सार।
अनेक प्रकार करी करी रह्या, पख पचवीस आपणने कह्या।।५२।।

फिर हमें समझाने के लिए अनेक आडीका लीलाओं (चमत्कारों) का सहारा लिया (जैसे यमुनाजी को प्रगट कर दिखलाना, इत्यादि)। फिर भी हमें सुध नहीं आई। अनेक प्रकार की आडीका लीला करने पर भी सुन्दरसाथ नहीं जागा। तब परमधाम के पच्चीस पक्षों की पहचान कराई।

ते पण आपण रह्या सही, तोहे भरम उडाड्यो नहीं।
तोहे आपण ऊपर अति दया, वृज तणां सुख विगते कह्या।।५३।।

तो भी हम सुनते रहे पर संशय हमारे नहीं मिटे। फिर धाम धनी श्री देवचन्द्रजी ने कृपा करके ब्रज के सुखों को अच्छी तरह समझाया।

वली वसेखे वरणव्यो रास, पेहेला फेरानो कीधो प्रकास।
तोहे आपण हजी तेहनातेह, वली वरणव्या श्री धाम सनेह।।५४।।

जब ब्रज के सुखों को समझाने पर भी हम नहीं जागे (हमारे संशय नहीं मिटे), तब फिर रास का विशेष रूप से वर्णन किया। फिर भी सुन्दरसाथ जैसे के तैसे संशय में ही डूबे रहे। फिर परमधाम में एकदिली का कितना प्रेम है, उसको समझाया।

Nijanand App

दया आपण ऊपर अति घणी, प्रगट लीला कीधी घरतणी।
सेवा कीधी धनबाइए ओलखी धणी, सोभा साथमां लीधी अति घणी।।५५।।

फिर अति कृपा करते हुए अपने घर की हकीकत (लीला) का बयान किया। ऐसे वचनों को सुनकर धनबाई (गांगजी भाई) ने देवचन्द्रजी के अन्दर बैठे धाम धनी को पहचाना और सुन्दरसाथ में धन्य-धन्य हुए।

साथसों हेत कीधां अपार, धंन धंन धनबाईनो अवतार।
कांईक लेहेर लागी संसार, त्यारे अडवडती ऊभी राखी आधार।।५६।।

धनबाई के अवतार श्री गांगजी भाई ने सुन्दरसाथ से बहुत प्यार किया। उनको भी माया ने कुछ गिराना चाहा (भानबाई को छोड़ने का प्रसंग)। तब लड़खड़ाती हुई धनबाई की आत्मा को अपना बल देकर राजजी ने खड़ा रखा।

बेहेवट पूर खमाए नहीं, त्यारे बांह ग्रहीने काढी सही।
पण न वली सुध आपणने केमे, मोहजल गुण नव मूक्यो अमे।।५७।।

माया की नदी के तीखे बहाव को गांगजी भाई सहन नहीं कर पाए। तब धनी ने उनका हाथ पकड़ कर उन्हें माया से बाहर निकाल लिया। (एक तरफ पत्नी का प्यार और दूसरी तरफ धनी की सेवा—इन दोनों विचारों में चित्त डांवाडोल हो रहा था। धाम धनी ने माया छुड़ाकर सेवा में खड़ा रखा और पत्नी को छुड़ा दिया)। फिर भी हमको सुध नहीं आई और भवसागर को हमने नहीं छोड़ा।

त्यारे वढ्या आपणसूं पोतावट करी, तोहे भरम निद्रा नव मूकी परहरी।
त्यारे अनेक पेरे आसूंवालीने कह्यूं, पण एणे समे अमे कांई नव लह्यूं।।५८।।

तब अपना जानकर हमें डांटा। फिर भी हमारे संशय नहीं मिटे। तब अनेक तरह से रो-रोकर कहा, परन्तु इतने पर भी हमने कुछ ग्रहण नहीं किया।

त्यारे वली धणी जीए कीधा विचार, जे साथ घेर तेडी जावुं निरधार।
त्यारे संवत सतरे बारोतरे वरख, भादरवो मास अजवालो पख।।५९।।

तब सम्वत् सत्रह सौ बारह के भादों (भाद्रपद) महीने के उजाले पक्ष में धाम धनी ने फिर विचार किया कि सुन्दरसाथ को बुलाकर घर निश्चित ले जाना है।

चतुरदसी बुधवारी थई, सनंधे सर्वे श्री विहारीजीने कही।
मध्यरात पछी कीधो परियाण, बिहारीजीने कांईक खबर थई जाण।।६०।।

चतुर्दशी (चौदस) बुधवार के दिन बिहारीजी को अपना शरीर छोड़ने की पूर्ण जानकारी दे दी और आधी रात्रि के बाद शरीर त्याग दिया। तब बिहारीजी को कुछ होश आया।

हूं तेणे समे थई बेठी अजाण, मूने फजीत गिनाने कीधी निरवाण।
घरथी तेडी मूने दीधी निध, तोहे न मूकी जीवे मोहजल बुध।।६१।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि उस समय मैं बेसुधि (बेखबरी) में थी। मेरी चतुराई ने मेरा मजाक उड़ाया। वरन् घर से बुलाकर मुझे अखण्ड ज्ञान दिया था, फिर भी मेरे जीव ने माया की बुद्धि को नहीं छोड़ा।

Nijanand App

मूने हती मायानी लेहेर, तो न आव्यो जीवने बेहेर।
त्यारे मारी निध गई मांहेथी मारे हाथ, श्री धाम घेर पोहोंता प्राणनाथ।। ६२ ।।

मैं माया की नींद में सो रही थी। इसलिए धनी के बिछुड़ने का विरह नहीं हुआ। तब मेरी वस्तु मेरे हाथ से चली गई और मेरे प्राणनाथ धाम पधारे (इन्द्रावती के दिल में उस समय उन्हें पहचान नहीं हुई कि मेरे अन्दर धनी विराजमान हो गए हैं)।

आंहीं अम मांहेथी अदृष्ट थया, अमे सारा साजा बेसी रह्या।
जो कांई जीवने आवे भाय, तो आ वचन केम काने संभलाय।। ६३ ।।

इस तरह से हमारे बीच में से धनी आंखों से ओझल हो गए और हम सब जैसे के तैसे संसार में बैठे रह गए। यदि जीव को उस समय सुध आ जाती तो "मेरे धनी धाम चले गए हैं", यह वचन कानों से नहीं सुने जाते।

ते तां में जोयूं मारी दृष्ट, अने जीव थई बेठो कोई दुष्ट।
नहीं तो विछोडो केम खमाए, पण दुष्ट भरम बेठो मन मांहें।। ६४ ।।

इसको तो मैंने अपनी दृष्टि से देखा है कि मेरा जीव दुष्ट होकर बैठा रहा, नहीं तो वियोग सहन नहीं होता। यह दुष्ट शंकाओं से भरा जीव अन्दर बैठा रहा।

एक वचनतणो नव कीधो विचार, न कांई ओलखिया आधार।
सांभलो रतनबाई ए कीहू प्रकार, एवी बुध केम आवी आवार।। ६५ ।।

एक वचन का भी विचार मैंने नहीं किया और न अपने धनी की पहचान ही की। हे रतनबाई (बिहारीजी) ऐसी बुद्धि हमारे अन्दर क्यों आई?

एणे समे अमने सूं थयूं, सगाईतणों सुख कांई नव लह्यूं।
जुओ रे बेहेनी अमे एम कां थया, एवडा दुख अमे खमीने रह्या।। ६६ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, बहन रतनबाई! (बिहारीजी) हमको क्या हो गया कि मैंने मूल सम्बन्ध के पहचान का सुख नहीं लिया। यह दुःख मैंने कैसे सहन कर लिया?

ए दुखनी वातो छे अति घणी, पण ए अग्या मारा वालाजी तणी।
एणे समे जो निध नव जाय, तो आवेस सरूप केम मुकाय।। ६७ ।।

ऐसी दुख की बातें बहुत हैं, किन्तु मेरे वालाजी की ऐसी ही आज्ञा थी। उस समय यदि मैं अपने घर न गई होती तो इस आवेश स्वरूप की जुदाई मुझसे सहन न होती और मैं भी तन छोड़ देती।

आवेसे धणी ओलखाय, ओलखे खिण जुआ न रेहेवाय।
ते माटे जो एम न थाय, तो आ वाणी केम केहेवाय।। ६८ ।।

हमारे आवेश स्वरूप हमारे धनी हैं। यदि इसकी अच्छी तरह से पहचान हो जाती तो पहचान हो जाने के बाद मैं जुदा न हो सकती। इस वास्ते यदि ऐसा न होता तो यह विरह की वाणी मैं कैसे कहती?

हवे फिट फिट रे भूंडी तूं बुध, तें नव दीधी जीवने सुध।
महादुष्ट अभागणी तूं, जांण जीवने कां नव करयूं।। ६९ ।।

अपनी बुद्धि को धिक्कारती हूं, कि तूने मेरे जीव को ज्ञान क्यों नहीं दिया? तू महादुष्टा अभागिनी है, जिस कारण तूने जीव को जानकारी नहीं दी।

Nijanand App

एवडी वात तें केम करी सही, के तूं घर मूकीने गई।
के तूं विकल थई पापनी, विना खबर निध गई आपनी।।७० ।।

हे दुष्टा बुद्धि! तुमने ऐसी बात कैसे सहन कर ली? क्या तू शरीर छोड़कर चली गई थी? क्या तू इतनी शक्तिहीन हो गई थी कि अपनी निधि (श्री देवचन्द्रजी) चली गई और तुझे होश ही नहीं आया।

हवे तूंने सी दऊं रे गाल, ते नव लाध्यो अवसर आणी वार।
हवे फिट फिट रे भूंडा तूं मन, तें कां कीधो एवडो अधरम।।७१ ।।

हे मेरे पापी मन! तुझे कौन सी गाली दूं? तूने हाथ आए अवसर का लाभ नहीं उठाया, इतना अधर्म क्यों किया?

जीव समो तूं बेठो थई, तुझ देखतां ए निध गई।
एवडी उपमा बेठो लई, अने बेठो छे काया धणी थई।।७२ ।।

जीव! तू कैसा होकर बैठा रहा? तेरे देखते-देखते यह निधि (देवचन्द्रजी) चली गई। तू शरीर का मालिक बन के बैठा है, इतनी उपमा लेकर भी तूने कुछ नहीं किया।

तें नव कीधूं जीवने जांण, नेठ खोटो ते खोटो निरवाण।
आ क्रोध हतो सबलो समरथ, पण नव सर्‌यूं तूं मांहेंथी अरथ।।७३ ।।

तूने जीव को सूचित नहीं किया, इसलिए तू नीच से नीच है। यह पक्की बात है। हे क्रोध! तू तो शक्तिशाली था, पर तुझसे भी कोई काम सिद्ध नहीं हुआ।

गुण सघले घारण आवियो, अने जीव कायामां बेसी रह्यो।
सघला गुण काया मंझार, कोणे नव लाध्यो अवसर आणी वार।।७४ ।।

मेरे सभी गुणों को नींद आई और जीव शरीर में बैठा रह गया। सब गुण तन के अन्दर ही बैठे रहे, किन्तु इस बार किसी को अवसर का लाभ प्राप्त नहीं हुआ।

फिट फिट रे भूंडा जीव अजाण, तारी सगाई हती निरवाण।
रे मूरख तूंने सूं थयूं, ए निध जातां कांई पाछूं नव रह्यूं।।७५ ।।

हे मूर्ख पापी जीव! तुझे धिक्कार है। तेरा तो उनसे निश्चय ही सम्बन्ध था। हे मूर्ख! तुझे क्या हो गया? ऐसा सम्बन्धी जाते समय तू पीछे क्यों रह गया?

ऐटला दुख तें केम करी सह्या, अनेक विध तूंने धणीए कह्या।
निर्बल जीव नीच तूं थयो निरधार, तें नव कीधी धणीनी सार।।७६ ।।

इतना भारी दुःख तू कैसे सहन कर गया। धनी ने तो तुझे अनेक तरह से समझाया था। हे बलहीन जीव! तू इतना नीच क्यों हो गया कि तूने धनी की खबर नहीं ली?

एवो अबूझ अकरमी थयो तूं कांए, कांई न विमास्यूं रुदया माहें।
बुध मन सारूं बेठो थई, निध जातां तोहे घारण न गई।।७७ ।।

तू ऐसा अनजान कर्महीन कैसे हो गया? तूने अपने दिल में विचार नहीं किया। बुद्धि और मन के समान बैठा रहा और धनी के जाते समय तेरी गहरी नींद खुली नहीं।

Nijanand App

एवो कठण कोरडू तूं कांथयो, आवडी अगने हजी नव चड्यो।
पांच वरसनो होय जे बाल, ते पण कांइक करे संभाल।।७८ ।।

तू इतना कठोर खागडूं (दाल का रोड़ा जो पकता नहीं) क्यों हो गया? इतनी अग्नि जलने पर भी तू गला क्यों नहीं? एक पांच वर्ष का एक बालक भी कुछ होश रखता है।

हवे तूंने हूं केटलूं कहूं, अवसर आवयो तें कांई नव लह्यूं।
तारी दोरी कां न टूटी तत्काल, फिट फिट भूंडा किहां हतो काल।।७९ ।।

अब मैं तुझे कितना कहूं? हाथ आए मौके का कुछ लाभ नहीं लिया। तेरी सांस उसी समय क्यों नहीं छूट गई? हे पापी काल (मौत)! तू कहां चला गया था?

आ तां केहेर मोटो जुलम थयो, अणे जाणिए तो केम जाय सह्यो।
ते तां में मारी मीटे जोयूं, धरम अमारूं कांई नव रह्यूं।।८० ।।

यह तो बड़ा भारी जुल्म हुआ। इसे जानकर कैसे सहा जाए? इसको मैंने अपनी दृष्टि से देखा और विचार किया। इसे देखकर मैं तो धर्मरहित हो गई।

|| प्रकरण || ४ || चौपाई || १०८ ||

विलाप कर्‍या छे–राग रामश्री

जुओ रे बेहेनी हूं हाय हाय, करती हींडूं त्राहे त्राहे।
वालोजी रे विछड़तां, कां जीव कडका न थाए।। १ ।।

हे सखी रतनबाई (बिहारीजी)! मैं हाय-हाय और त्राहि-त्राहि करती फिर रही हूं। वालाजी के वियोग में टुकड़े-टुकड़े क्यों नहीं हो गए।

फिट फिट रे भूंडा तूं सब्द, केम आवी मुख वाण।
वाए न आव्यो ते दिसनो, धणी भेला चालतां मारा प्राण।। २ ।।

हे पापी आवाज! तुझे धिक्कार है। तुझसे ऐसी बोली कैसे निकली? मेरे प्राण के आधार धनी चले गए और तुझे खबर ही नहीं पड़ी। नहीं तो मैं धनी के साथ ही अपने प्राण छोड़ देती।

केम वली जिभ्या मारी, ए केहेतां वचन।
समूली न चुटाणी, जिहां थकी उतपन।। ३ ।।

हे मेरी जीभ! इन वचनों को कहते (कि धनी धाम चले गए हैं) तू जड़ से ही क्यों नहीं उखड़ गई, जहां से तू निकली है।

श्री धणीजी सिधावतां, केम रही वाचा रे अंग।
उखडी न पड्या दंतडा, घण घाय मुख भंग।। ४ ।।

धनीजी के चलते समय, हे जिह्वा! तू अंग में रह कैसे गई? हे दांतो! मुंह पर इतनी चोट लगने पर भी तुम उखड़ क्यों नहीं गए?

केम न सुणियां रे, ए वचन तें श्रवणा।
तें सूं न हता सुणया, वचन धणी तणां।। ५ ।।

हे कानो! तुमने सुना नहीं कि धनी धाम चले गए हैं। क्या तुमने धनी के ज्ञान वाले वचनों को कभी नहीं सुना था?

Nijanand App

एवो कठण कोरडू तूं कांथयो, आवडी अगने हजी नव चड्यो।
पांच वरसनो होय जे बाल, ते पण कांइक करे संभाल।।७८ ।।

तू इतना कठोर खागडूं (दाल का रोड़ा जो पकता नहीं) क्यों हो गया? इतनी अग्नि जलने पर भी तू गला क्यों नहीं? एक पांच वर्ष का एक बालक भी कुछ होश रखता है।

हवे तूंने हूं केटलूं कहुं, अवसर आवयो तें कांई नव लह्यूं।
तारी दोरी कां न टूटी तत्काल, फिट फिट भूंडा किहां हतो काल।।७९ ।।

अब मैं तुझे कितना कहूं? हाथ आए मौके का कुछ लाभ नहीं लिया। तेरी सांस उसी समय क्यों नहीं छूट गई? हे पापी काल (मौत)! तू कहां चला गया था?

आ तां केहेर मोटो जुलम थयो, अणे जाणिए तो केम जाय सह्यो।
ते तां में मारी मीटे जोयूं, धरम अमारूं कांई नव रह्यूं।।८० ।।

यह तो बड़ा भारी जुल्म हुआ। इसे जानकर कैसे सहा जाए? इसको मैंने अपनी दृष्टि से देखा और विचार किया। इसे देखकर मैं तो धर्मरहित हो गई।

।। प्रकरण ।। ४ ।। चौपाई ।। १०८ ।।

विलाप करया छे–राग रामश्री

जुओ रे बेहेनी हूं हाय हाय, करती हींडूं त्राहे त्राहे।
वालोजी रे विछड़तां, कां जीव कडका न थाए।। १ ।।

हे सखी रतनबाई (बिहारीजी)! मैं हाय-हाय और त्राहि-त्राहि करती फिर रही हूं। वालाजी के वियोग में टुकड़े-टुकड़े क्यों नहीं हो गए।

फिट फिट रे भूंडा तूं सब्द, केम आवी मुख वाण।
वाए न आव्यो ते दिसनो, धणी भेला चालतां मारा प्राण।। २ ।।

हे पापी आवाज! तुझे धिक्कार है। तुझसे ऐसी बोली कैसे निकली? मेरे प्राण के आधार धनी चले गए और तुझे खबर ही नहीं पड़ी। नहीं तो मैं धनी के साथ ही अपने प्राण छोड़ देती।

केम वली जिभ्या मारी, ए केहेतां वचन।
समूली न चुटाणी, जिहां थकी उतपन।। ३ ।।

हे मेरी जीभ! इन वचनों को कहते (कि धनी धाम चले गए हैं) तू जड़ से ही क्यों नहीं उखड़ गई, जहां से तू निकली है।

श्री धणीजी सिधावतां, केम रही वाचा रे अंग।
उखडी न पड्या दंतडा, घण घाय मुख भंग।। ४ ।।

धनीजी के चलते समय, हे जिह्वा! तू अंग में रह कैसे गई? हे दांतो! मुंह पर इतनी चोट लगने पर भी तुम उखड़ क्यों नहीं गए?

केम न सुणियां रे, ए वचन तें श्रवणा।
तें सूं न हता सुणया, वचन धणी तणां।। ५ ।।

हे कानो! तुमने सुना नहीं कि धनी धाम चले गए हैं। क्या तुमने धनी के ज्ञान वाले वचनों को कभी नहीं सुना था?

Nijanand App

ए रे लवो सुणतां, तूंने दाझ न आवी।
एणे रे लवे अगिन नी, झालमां कां न झंपावी।। ६ ।।

जरा भी जाने की खबर सुनकर तुम्हें आग क्यों नहीं लगी? इस समाचार को सुनते ही तुम आग की लपटों में जल क्यों नहीं गए?

निबल नेंणां रे भूंडा, तमे दृष्टें नव जोयूं।
वालोजी रे विछड़तां, तमे लोही नव रोयूं।। ७ ।।

हे पापी निर्बल नेत्रो! तुम्हें दिखाई नहीं दिया और धनी के बिछुड़ने पर तुमने खून के आंसू क्यों नहीं बहाए?

सूं रे थयूं तमने, तमे लोही नव रडिया।
एवो विरह देखी ततखिण, निकली न पडिया।। ८ ।।

यह तुम्हें क्या हो गया? तुम खून के आंसू बहाकर क्यों नहीं रोए? तुम इतना विरह देखकर उसी पल तन से निकल क्यों नहीं गए?

ए वचन तणी तूंने नासिका, न आवी प्रेमल।
वालैयो रे विछडतां, तें नव दाख्यूं बल।। ९ ।।

हे नासिका! धनी के बिछुड़ने की सुगन्धि तुझे क्यों नहीं आई? धनी से बिछुड़ते समय तूने अपना बल क्यों नहीं दिखाया?

फिट फिट रे प्रेमल, नासिका केम रही।
ए निध जातां अंगथी, विछडी नव गई।। १० ।।

हे सुगन्धि! तू नाक में कैसे रह गई? धनी के जाते समय तू अंग से जुदा क्यों नहीं हो गई?

प्रेमतणी रे धणी, गोली बांधतां काम।
तेहेमां सूं न हता रे गुण, तमे चतुर सुजांण।। ११ ।।

धनी श्री देवचन्द्रजी अपने मधुर वचनों से सुन्दरसाथ को एक रस करते थे। उस समय हे चतुर जानकार (सुजान)! तुममें क्या गुण नहीं थे? तुम तन के प्रेमी थे।

फिट फिट रे गुण तमने, ए अंग ना प्रेम काम।
नव लाध्यो विरह रे, विछड़तां धणी श्री धाम।। १२ ।।

हे गुण! तुम तन के प्रेमी थे। तुम्हें धिक्कार है कि तुम अपने कर्तव्य से गिर गए और धाम धनी के बिछुड़ते समय तुम्हें विरह नहीं आया।

एवडी वात तें केम सही, अंग ऊभो केम रह्यो।
रोम रोम हेठे कां, गली नव पडिया।। १३ ।।

ए गुणो! ऐसी बात तुमने कैसे सहन की? अंग तन में कैसे खड़े रहे? शरीर के रोम-रोम से गलकर नीचे क्यों नहीं गिर पड़े?

अगिनडी न उठी रे, कालजडे रे झाल।
ए विरह लई अंग कां, ऊभो रह्यो रे चंडाल।। १४ ।।

हे कलेजे! तू आग की लपटों में जला क्यों नहीं? विरह की अग्नि को, हे चण्डाल! तू सहन कर खड़ा कैसे रहा?

Nijanand App

हाथ पग सहु अंग ना, सर्वे रे संधाण।
जुजवा कां नव थया रे, आथमते ए भाण।। १५ ।।

ऐसे सूर्य के अस्त होते समय अंग के सब हाथ-पैर तथा जोड़-जोड़ तुम अलग-अलग क्यों नहीं हो गए?

भाण वचन रे कांई, ए वालाने न केहेवाय।
धणीतणी रे जोत, कोट ब्रह्मांडे न समाय।। १६ ।।

सूर्य की उपमा मेरे वालाजी को नहीं लगती है, क्योंकि वालाजी के ज्ञान की ज्योति (प्रकाश) करोड़ों ब्रह्माण्डों में भी नहीं समाती।

जोत ने प्रगट थई, नव झाली रहे विना ठाम।
ब्रह्मांड अखंडोंमां निसरी, जई पोहोंती घर श्री धाम।। १७ ।।

हमारे धनी के ज्ञान की ज्योति बिना मूल ठिकाने के रुक नहीं सकती। यह अखण्ड ब्रह्माण्डों (बृज, रास) में से भी आगे निकल कर अपने घर परमधाम पहुंचती है।

ए जोत जोसे रे सखी, सकल मलीने साथ।
वचन ए प्रगट थासे, रास ने प्रकास।। १८ ।।

सब सुन्दरसाथ मिलकर इस ज्ञान की ज्योति (प्रकाश) को देखेंगे। इन वचनों से सुन्दरसाथ को रास व प्रकाश की जानकारी (समझ) आ जाएगी।

नसो न त्रूटी रे, तूं केम रही तन तुचा।
रूप रंग लई कां न थई, तिल तिल जेवडा पुरजा।। १९ ।।

हे शरीर की चमड़ी! तेरी नसें क्यों नहीं टूट गईं। तेरे रूप और रंग के छोटे-छोटे टुकड़े क्यों नहीं हो गए?

हाड मांस रे तमे, केम रह्या रे भेला।
कांय न सूकयुं रे मारूं, लोही तेणी वेला।। २० ।।

हे हड्डी और मांस! तुम इकट्ठे कैसे रहे? मेरे धनी के चलते समय, हे खून! तू उसी समय सूख क्यों नहीं गया?

फिट फिट रे तुंबड़ी, भूंडी केम रही रे साजी।
साखला न थई रे, एहरण घण वचे लागी।। २१ ।।

हे खोपड़ी! तुझे धिक्कार है। पापी! तू साबित कैसे रह गयी? तू एहरण (निहाई) और घन की चोट में नष्ट क्यों नहीं हो गई?

अंग मारा रे अभागी, तमे कां भूको नव थयो।
ए धणी रे चालतां, अधरमी कां ऊभो रह्यो।। २२ ।।

हे मेरे अभागे अंग! तेरे टुकड़े क्यों नहीं हो गए? धाम धनी के चलते समय तू कैसे खड़ा रह गया?

Nijanand App

केम ने रह्यूं रे मारा, अंग माहें रे बल।
तें जीवने नव काढ्यूं रे, निध जातां नेहेचल।। २३ ।।

हे अंग की शक्ति! तू तन में कैसे रह गई? तूने धनी के जाते समय जीव को तन में से क्यों नहीं निकाला?

नेहेचल निध रे जातां, तूं किहां हती रे बुध।
धिक धिक रे चंडालनी, तूं कां थई रे असुध।। २४ ।।

अखण्ड धनी के जाते समय हे मेरी बुद्धि! तू कहां थी? हे चाण्डालिनी! तुझे धिक्कार है। तू इतनी पापिनी (बेसुध) क्यों हो गई?

गिनान भूंडा रे एणे समे, नव कीधो अजवास।
एवी सी मूने भोलवी रे, में कीधो तारो विश्वास।। २५ ।।

हे पापी ज्ञान! तूने इस समय होश क्यों नहीं दी? मुझे तेरे ऊपर पूरा विश्वास था। तूने मुझे ऐसा क्यों भ्रमा दिया?

गुण ने सघला मली रे, तमे मोसूं थया अवला।
मारो धणी रे चालतां, तमे कां नव थया सबला।। २६ ।।

हे मेरे सारे गुणो! तुम सारे के सारे उलटे क्यों हो गए? मेरे धाम धनी के चलते समय तुम सबने बल क्यों नहीं दिखाया।

ए वालो रे चालतां, गुण हता अंग मांहें।
काम न आव्या रे तमे, मारे अवसर क्याहें।। २७ ।।

धनी के चलते समय सब गुण अंग में ही थे, परन्तु समय पर तुम कोई काम नहीं आए।

धिक धिक पड़ो रे तमने, सूं न हती ओलखाण।
जीवनू धन रे जाता, तमे कां नव काढ्या रे प्राण।। २८ ।।

हे मेरे गुणो! तुम्हें धिक्कार है। क्या तुम्हें पहचान नहीं थी? जीव के धन (धनी) के जाते समय तुमने प्राणों को क्यों नहीं खींच लिया?

कांए न निसरियो रे, भूंडा जीव एणी वार।
फिट फिट रे कालिया अवसर, चूक्यो रे चंडाल।। २९ ।।

हे पापी जीव! तू उस समय क्यों नहीं निकल गया? हे मौत! तुझे धिक्कार है। तू भी निश्चित रूप से चूक गई जो मुझे (मेरे पास) आई नहीं।

नीच अधरमी जीव रे, एवो अधरम कोई करे।
श्री धणी धाम चाल्या पछी, आकार कोण धरे।। ३० ।।

हे नीच अधर्मी जीव! ऐसा नीच काम कोई करता है कि धाम धनी चले जाएं फिर भी तू तन लेकर खड़ा रहे।

केही पेर करूं जीव तूंने, तूं चूक्यो रे चंडाल।
जो तूंने अगिन न उठी रे, कां न झंपाव्यो झाल।। ३१ ।।

हे चाण्डाल जीव! तुझे अब क्या करूं? तू भी मौका हाथ से गवां बैठा है। नहीं तो आग की लपटों में जल क्यों नहीं गया?

Nijanand App

भैरव न झंपाव्यो रे जीव, एवो थयो कां कायर।
तरवारे न ताछयो रे अंग, धणी जातां सुख सायर।। ३२ ।।

हे जीव! तू पहाड़ी से कूदकर क्यों नहीं मरा? तू इतना कायर क्यों हो गया? सुख के सागर धनी के धाम जाते समय तलवार से अंग के छिलके क्यों नहीं उतारे?

गुण धणी जातां रे जीव, ताहरो किहां हतो रे काल।
करम कोढियो ढेड तूं, थयो रे चंडाल।। ३३ ।।

ऐसे गुणवान धनी के जाते समय, हे जीव! तुम्हारी मौत कहां थी? तू कर्मों से नीच कोढ़ी-चण्डाल क्यों हो गया?

हवे केटलूं कहूं रे दुष्ट, तें नव ग्रह्यो वांसो।
अवसर भूल्यो रे घणों, पडियो रे वरासों।। ३४ ।।

हे दुष्ट जीव! तुझे कितना कहूं? तूने धनी का पीछा नहीं किया। तू निश्चित ही समय गवां बैठा है। अब पड़ा-पड़ा पछताएगा।

खरी रे वस्तनो, तूंने हतो रे तेज।
तें कां नव राख्यो रे, धाम धणीसूं हेज।। ३५ ।।

हे जीव! तुझे तो सत्य ज्ञान की पहचान थी। धाम धनी से बिछुड़ते समय तुझे उनसे प्यार क्यों नहीं हुआ?

ए धणी रे विछडतां, केम रह्यो रे अंग पास।
कांय न समाणो रे तूं, तेज जोत प्रकास।। ३६ ।।

ऐसे धनी के बिछुड़ते समय, हे जीव! तू तन में क्यों रह गया? उसी तेज और प्रकाश के अन्दर तू क्यों नहीं समा गया?

हवे हूं केम करूं रे, वचन वाणी धणी किहां।
वालैयो वोलावी करी, हूं पाछी रही इहां।।३७।।

अब मैं क्या करूं? धनी के वचन कहां मिलेंगे? वालाजी को भेजकर मैं यहां पीछे रह गई?

हवे किहांने सुणीस रे, ए वचन वल्लभ।
श्रीमुख वाणी रे मूने, थई छे दुर्लभ।। ३८ ।।

अब ऐसे धनी की चर्चा कहां सुनूंगी? ऐसे धनी के मुखारबिन्द के वचन मुझे दुर्लभ हो गए हैं।

तारतम तणा विचार, कोण करी देसे हेत।
केमने सांभलसूं रे, वृज रास अखंडना विवेक।। ३९ ।।

तारतम वाणी का विस्तार कर प्यार से कौन समझाएगा? ब्रज रास अखण्ड परमधाम की लीला का ज्ञान किससे सुनूंगी?

उत्तम आडीका नें, वली उत्तम दृष्टांत।
कोणनें विचारसे, धणी विना करी खांत।। ४० ।।

आडीका (चमत्कारिक) लीला तथा उत्तम दृष्टान्त देकर धनी के बिना दृढ़ता के साथ कौन बताएगा?

Nijanand App

चौद वरस लगे नेष्टाबंध, भागवत कोण लेसे।
एहेनो सार काढी अमने, ततखिण कोण देसे।। ४१ ।।

चौदह वर्ष तक नियमबद्ध होकर भागवत कौन सुनेगा? फिर भागवत के ज्ञान का सार निकाल कर तुरन्त हमें कौन देगा?

दूध-पाणी ना विछोडा, कोण करीने देसे।
हवे आ बेहेवट मांहेथी, बांहें ग्रहीने कोण लेसे।। ४२ ।।

दूध और पानी (माया और ब्रह्म) को अलग करके कौन बताएगा? अब इस माया के बहाव में से हाथ पकड़ कर कौन निकालेगा?

एक सो ने आठ रे, कहिए जे पख।
ते जुजवा वरणवी, अमने कोण देसे रे सुख।। ४३ ।।

एक सौ आठ जो पक्ष कहलाते हैं, उनका अलग-अलग वर्णन करके यह सुख अब हमको कौन देगा?

नरसैयां कबीर ने जाटी, वचन कोण लेसे।
एहेना अर्थ अमने, कोण करी देसे।। ४४ ।।

नरसैयां, कबीर और जाटी के वचन को कौन ग्रहण करेगा? इनके अर्थ हमको कौन समझाएगा?

महा ने प्रले लगे, कोई करे रे अभ्यास।
सर्वे विद्या सास्त्रनी, लिए करी विस्वास।। ४५ ।।

महाप्रलय तक दृढ़ विश्वास के साथ सब शास्त्रों का यदि कोई अभ्यास भी कर ले,

तोहे केमे न आवे रे, विद्या एवी रे वाण
ते खिण मांहें दई करी, वालो करतां चतुर सुजाण।। ४६ ।।

तो भी उसे इस ब्रह्म-ज्ञान (तारतम वाणी) की विद्या नहीं आएगी (समझ में नहीं आएगी)। हमारे धाम धनी उसे जागृत बुद्धि का ज्ञान देकर चतुर सुजान (जानकार) बना देते थे।

अबूझ टालीने हवे, कोण करसे वचिखिण।
नेहेचल निध निज धामनी, कोण देसे ततखिण।। ४७ ।।

हमारी अज्ञानता को हटाकर अब विद्याओं में पूर्ण कौन बनाएगा? हमारे घर की अखण्ड निधि (धाम धनी) तत्काल कौन देगा?

खीजी वढीने ए निध, बीजो कोण देसे।
जीव ना सगा जांणी, आंसुवाली कोण केहेसे। ।४८ ।।

अब डांट डपट कर इस ज्ञान को दूसरा कौन देगा? अपने जीव के सगे सम्बन्धी जानकर रो-रोकर कौन कहेगा?

अनेक पेरे अमने, एम कोण रे प्रीछवसे।
देखाडवा आ रामत, एणी पेरे देह कोण धरसे।। ४९ ।।

अनेक तरह से हमको ऐसा कौन समझाएगा? यह खेल दिखाने के लिए हमारे वास्ते तन कौन धारण करेगा?

Nijanand App

आ ब्रह्मांडने रामत, बीजो कोण केहेसे।
ए रामत देखाडी ए थकी, अलगां राखी कोण लेसे।।५०।।

इस ब्रह्माण्ड के खेल की लीला कौन कहेगा? यह खेल दिखाकर खेल से अलग कौन करेगा?

विध विधनी रे चरचा, हवे किहां रे सांभलसूं।
एह रे वाणी विना, हवे आपण केम गलसूं।।५१।।

अब तरह-तरह की चर्चा कहां सुनेंगे? अब इस धनी की वाणी बिना हम निर्मल कैसे होंगे?

गल्या पखे बीजो घाट, केम करी थासे।
बीजो घाट विना मोहजल, केम रे मुकासे।।५२।।

बिना वाणी से निर्मल हुए हमारे जीव को योगमाया का अखण्ड तन कौन देगा? नया अखण्ड तन धारण किए बिना भवसागर कैसे छूटेगा?

पांच पचीस तेहने, बीजो कोण ओलखावसे।
वचन धणीना पखे, ए सवलो केम थासे।।५३।।

पांच तत्व (जल, वायु, अग्नि, पृथ्वी, आकाश) पच्चीस प्रकृतियां अर्थात् पांच कर्मेन्द्रियां (हाथ, पैर, मुख, लिंग, गुदा) पांच ज्ञानेन्द्रियां (आंख, कान, नाक, जीभ तथा चमड़ी) पांच तन्मात्रा (शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध) चार अन्तःकरण (मन, चित्त, बुद्धि तथा अहंकार) तथा पच्चीसवां जीव—इन सबकी अलग-अलग पहचान कौन कराएगा? धनी के इन वचनों (चर्चा) द्वारा माया की तरफ से हटाकर सीधे रास्ते कौन लगाएगा?

जीवता गुण ते हवे, केणी पेरे मरसे।
दुखी टालीने सुखी, बीजो कोण करसे।।५४।।

अब जीते-जी इन अवगुणों को कौन मारेगा? माया के दुःख से हटाकर कौन सुखी करेगा?

श्रवणा ने अंग इंद्री, टालसे कोण अवला।
ए धणी विना बीजो कोण, करी देसे सवला।।५५।।

हमारे कान और अंग की इन्द्रियां जो उलटी चाल चल रही हैं, इन्हें धनी के बिना दूसरा कौन सीधे रास्ते पर लाएगा?

आतम ने परआतमा, भेला कोण करसे।
आ भवसागर मांहेथी, बीजो कोण लई तरसे।।५६।।

इस भवसागर में से निकाल कर आत्मा को परात्म से कौन मिलाएगा?

नखत्रोड पूर तणातां, बांहें ग्रहीने कोण वालसे।
एवा रे लाड अमारा, हवे बीजो कोण पालसे।।५७।।

ऐसी जोरदार माया के बहाव, जिसे छूने से ही नख कट जाता है, में से हाथ पकड़कर दूसरा कौन निकालेगा और इस तरह से प्यार करके हमसे लाड कौन लड़ाएगा?

सागर जीव खोली करी, वासना कोण परखसे।
खोलतां लाधे वासना, एम कोण रे हरखसे।।५८।।

इस माया के सागर में से आत्माओं की पहचान कौन करेगा? ब्रह्मसृष्टि को पाने की खुशी दूसरे किसको होगी?

Nijanand App

हवे कोणने वरणवसे, वृज रास ने श्री धाम।
ए सुख दई भाजसे, कोण मारा जीवनी हाम।।५९ ।।

ब्रज और रास, धाम की चर्चा अब कौन करेगा? मेरे जीव की इच्छाओं को पूरा करके दूसरा कौन सुख देगा?

जीवने जगावी ए निध, बीजो कोण देसे।
श्रवणा उघाडी जीवना, एम वचन कोण केहेसे।।६० ।।

जीव को इस प्रकार जागृत करके यह निधि (अपने धाम धनी की पहचान) दूसरा कौन देगा? ऐसी वाणी सुनाकर जीव के कान कौन खोलेगा?

नेहेचल निध दई करी, सूतो जीव कोण रे जगाडसे।
ब्रह्मांड फोडीने श्री धांम, ऊपरवाडे एम कोण पोहोंचाडसे।।६१ ।।

ऐसी अखण्ड निधि (वाणी) देकर सोए जीव को कौन जगाएगा? ब्रह्माण्ड से ऊपर परमधाम का रास्ता कौन दिखाएगा?

ऊपरवाडे वाट खिण मांहें, ए घर केम रे लेवासे।
ए भोइया विना रे आ भोम, केम रे मेलासे।।६२ ।।

एक पल में ऊपर परमधाम का रास्ता कौन दिखाएगा? ऐसे अनुभवी जानकार के बिना भवसागर से कौन छुड़ाएगा?

अचेत अबूझ साथने, कोण सुधारी लेसे।
जीवना सगां जाणी करी, ए निध बीजो कोण देसे।।६३ ।।

ऐसे अज्ञानी और नासमझ सुन्दरसाथ को कौन सुधारेगा? जीव को सगा-सम्बन्धी जानकर यह निधि (ज्ञान) दूसरा कौन देगा?

सुतेज सत सागर मांहेंथी, धन आवतूं अविचल।
वही गयूं ते पूर, लेहेर आवतियूं छोल।।६४ ।।

सच्चे ज्ञान के अखण्ड सागर में से अखण्ड लहरों का बहाव आ रहा था। वह बहाव चला गया (धनी धाम चले गए)। उछाल हट गया।

ए निध बेहेनी रे हूं, बेठी रे खोई।
भरम मूने गेहेन हुतो, तेणे हूं रही रे जोई।।६५ ।।

हे बहन! (रतनबाई—बिहारीजी) मैं यह निधि खो बैठी हूं। उस समय मैं माया के नशे में गर्क थी और देखती ही रह गई।

एवडूं अंधारू थातां, तूं केम रही रे जोई।
फिट फिट रे तूं पापनी, ए निध केम रही खोई।।६६ ।।

इतने घोर अंधेरे में तू खड़ी रहकर कैसे देखती रही? हे पापिनी! तुझे धिक्कार है। तू यह निधि (धनी धाम) कैसे खो बैठी?

Nijanand App

धिक धिक रे जीवडा, तें खोई निध हाथे।
श्री धणी धाम चालतां, तूं न चाल्यो रे साथे।। ६७ ।।

हे जीव! तुझे धिक्कार है। तूने अपने हाथ से निधि (धाम धनी) खो दी है। धाम धनी के चलते समय तू उनके साथ नहीं गया।

खूंटी न आवी रे भूंडी, तूं वल्लभ विछडतां।
हजी न जाय रे जीव, ए वचन रे सांभरतां।। ६८ ।।

धनी के बिछुड़ते समय, हे पापिनी मौत! तू क्यों नहीं आई। इन वचनों को सुनते ही, हे जीव! तू अभी तक क्यों नहीं जाता?

फिट फिट रे भूंडा जीव, ए तें कीधूं रे सूं।
ए विरह देखी रे अंगथी, उडी न पडियो रे तूं।। ६९ ।।

हे पापी जीव! तुझे धिक्कार है। यह तूने क्या किया? तन को विरह में दुःखी देखकर तू उड़ क्यों नहीं गया?

हाय हाय करूं रे बेहेनी, वाले दीधो मूने छेह।
भसम न थयो रे, मारा जीवसुं देह।। ७० ।।

हे बहन! (रतनबाई—बिहारीजी) मैं हाय-हाय कर रही हूं कि वालाजी मुझसे जुदा हो गए हैं। मेरा तन जीव से अलग होकर भस्म क्यों नहीं हो गया?

घणुए कह्यूं रे बेहेनी, मूने मूल सनेह।
पण हूं निगमी बेठी रे, निध हाथ आवी जेह।। ७१ ।।

हे बहन! (रतनबाई—बिहारीजी) परमधाम के मूल सम्बन्ध की बातें बहुत कहीं, पर मैं हाथ में आई निधि (धाम धनी) को खो बैठी।

मूने घणुए जणावियूं, निध दई चालता एकांत।
पण में खोई निध पापनी रे, ग्रही बेठी हूं स्वांत।। ७२ ।।

धाम चलने से पहले एकान्त में बिठाकर मुझे बहुत जानकारी दी, परन्तु मुझ पापिनी ने निधि खो दी। अब शान्त होकर बैठी हूं।

हवे सब्दातीत निध, कोण देसे रे वांण।
वर्तमाण तणी रे, कोण केहेसे रे जांण।। ७३ ।।

अब अक्षरातीत की वाणी की चर्चा कौन सुनाएगा? इस माया की जानकारी कौन देगा?

उठतां बेसतां रमतां, खबर कोण देसे।
वन पधारया रे सखी, सिणगार कोण वरणवसे।। ७४ ।।

उठते-बैठते और खेलने की परमधाम की लीला के वचन कौन हमको कहेगा? वनों में जाकर झीलने के बाद किये गये शृंगार का वर्णन कौन सुनाएगा?

Nijanand App

वस्तर भूखण तणी रे, विगत कोण लेसे।
ए धणी विना रे ए सुख, हवे बीजो कोण देसे।। ७५ ।।

वस्त्र और आभूषण की हकीकत का वर्णन धनी के बिना कौन जानता है? जो अब बताएगा। अपने अनुभवों के सुखों का ज्ञान, साथी जानकर अब दूसरा कौन देगा?

मूल तारतम तणी, कोण प्रीछवसे रे बडाई।
धाम धणीसूं मूने, कोण करी देसे रे सगाई।। ७६ ।।

मूल तारतम वाणी (धाम धनी और पच्चीस पक्ष) के ज्ञान को कौन समझाएगा? धाम धनी से हमारी निसबत (सम्बन्ध) की पहचान कौन कराएगा?

मूल तारतमतणा, कोण करसे रे विचार।
आसामुखी हुती इंद्रावती, मारा प्राणना आधार।। ७७ ।।

अब मूल पार के ज्ञान का कौन विचार करेगा? श्री इन्द्रावतीजी विलाप करके कहती हैं, हे मेरे प्राणाधार! आप पर तो मेरी बहुत आशाएं टिकी थीं।

।। प्रकरण ।। ५ ।। चौपाई ।। १८५ ।।

भाखा सिंधी जाटी

मूंजी सैयल रे, सजण हुअडा मूं गरें।
मूं न सुजातां सिपरी, हल्या कारयूं घणूं करे।। १ ।।

हे मेरी बहन! धनी मेरे घर आए थे। मैंने धनी को नहीं पहचाना। वह पुकार-पुकार कर चले गए।

सजण आया मूं गरे, मूं न सुजातां सेंण।
गाल्यूं केयाऊं हेतमें, घणी भती भती जा वेण।। २ ।।

मेरे प्रीतम मेरे घर आए थे, किन्तु मैंने अपने प्रीतम को नहीं पहचाना। उन्होंने प्रेम से तरह-तरह के वचनों से बातें कीं।

मूंके जा घारण आवई, जे अंई पसो साथ।
त खरे बपोरे सेज सोझरे, मूंके थेई रात।। ३ ।।

मुझे नींद आ गई। तुम देखती हो कि सामने दोपहर की धूप (सहज उजाले) में मेरे लिए अंधेरा हो गया (रात हो गई)।

सजण आया मूं न सुजातम, मूंके चेयाऊं घणा वेण।
कंन अखियुं फूटियुं, व्या फूट्या हिए जा नेंण।। ४ ।।

प्रीतम आए, मैंने नहीं पहचाना। मुझसे तरह-तरह के वचन कहे। आंख-कान फूट गए और हृदय के नेत्र (अन्दर की आंखें) भी फूट गयीं।

सजण विया निकरी, हांणे आंऊं करियां कीं।
अवसर व्यो मूंजे हथ मंझां, हांणें रूअण रातो डीं।। ५ ।।

प्रीतम हमारे बीच से चले गए। अब मैं क्या करूं? मेरे हाथ से अवसर निकल गया। अब रात-दिन रोना ही है।

Nijanand App

वस्तर भूखण तणी रे, विगत कोण लेसे।
ए धणी विना रे ए सुख, हवे बीजो कोण देसे।। ७५ ।।

वस्त्र और आभूषण की हकीकत का वर्णन धनी के बिना कौन जानता है? जो अब बताएगा। अपने अनुभवों के सुखों का ज्ञान, साथी जानकर अब दूसरा कौन देगा?

मूल तारतम तणी, कोण प्रीछवसे रे बडाई।
धाम धणीसूं मूने, कोण करी देसे रे सगाई।। ७६ ।।

मूल तारतम वाणी (धाम धनी और पच्चीस पक्ष) के ज्ञान को कौन समझाएगा? धाम धनी से हमारी निसबत (सम्बन्ध) की पहचान कौन कराएगा?

मूल तारतमतणा, कोण करसे रे विचार।
आसामुखी हुती इंद्रावती, मारा प्राणना आधार।। ७७ ।।

अब मूल पार के ज्ञान का कौन विचार करेगा? श्री इन्द्रावतीजी विलाप करके कहती हैं, हे मेरे प्राणाधार! आप पर तो मेरी बहुत आशाएं टिकी थीं।

।। प्रकरण ।। ५ ।। चौपाई ।। १८५ ।।

भाखा सिंधी जाटी

मूंजी सैयल रे, सजण हुअडा मूं गरें।
मूं न सुजातां सिपरी, हल्या कारयूं घणूं करे।। १ ।।

हे मेरी बहन! धनी मेरे घर आए थे। मैंने धनी को नहीं पहचाना। वह पुकार-पुकार कर चले गए।

सजण आया मूं गरे, मूं न सुजातां सेंण।
गाल्यूं केयाऊं हेतमें, घणी भती भती जा वेण।। २ ।।

मेरे प्रीतम मेरे घर आए थे, किन्तु मैंने अपने प्रीतम को नहीं पहचाना। उन्होंने प्रेम से तरह-तरह के वचनों से बातें कीं।

मूंके जा घारण आवई, जे अंई पसो साथ।
त खरे बपोरे सेज सोझरे, मूंके थेई रात।। ३ ।।

मुझे नींद आ गई। तुम देखती हो कि सामने दोपहर की धूप (सहज उजाले) में मेरे लिए अंधेरा हो गया (रात हो गई)।

सजण आया मूं न सुजातम, मूंके चेयाऊं घणा वेण।
कंन अखियुं फूटियुं, व्या फूट्या हिए जा नेंण।। ४ ।।

प्रीतम आए, मैंने नहीं पहचाना। मुझसे तरह-तरह के वचन कहे। आंख-कान फूट गए और हृदय के नेत्र (अन्दर की आंखें) भी फूट गयीं।

सजण विया निकरी, हांणे आंऊं करियां कीं।
अवसर व्यो मूंजे हथ मंझां, हांणें रूअण रातो डीं।। ५ ।।

प्रीतम हमारे बीच से चले गए। अब मैं क्या करूं? मेरे हाथ से अवसर निकल गया। अब रात-दिन रोना ही है।

Nijanand App

पिरी हल्या प्रभातमें, आऊं उथिस अवेरी।
कीं वंजाइयां वलहो, जे हुंद जागां सवेरी।। ६ ।।

प्रीतम बहुत सवेरे चले गए। मैं देर से उठी। मैं प्रीतम को कैसे खो देती यदि मैं जल्दी जाग जाती।

जीव मूहीजो जे तडे जागे, त अवसर वंजाइयां कीं।
हुंद साथ न छडियां सजणे, आडी लेहेर माया थेई नी।। ७ ।।

मेरा जीव यदि तभी जाग जाता तो अवसर न खोती और मैं प्रीतम का साथ न छोड़ती। मेरे बीच माया की लहर आ गई थी। (घर में बैठी रही)।

हांणे डिसूनी डोहे निहारियां, तां जर भरया अतांग।
महें लेहेरयुं मेर जेडियुं, व्या मछे पेरां न्हाय मांग।। ८ ।।

अब दसों दिशाओं में देखती हूं कि बहुत गहरा सागर मोहजल का भरा है। इस मोह सागर में लहरें (मजबूरियां) पर्वतों जैसी ऊंची उठ रही हैं। दूसरे बेशुमार मगरमच्छ (रिश्तेदार) हैं, जिनसे निकलने का रास्ता नहीं मिलता।

महें घूमरियूं जर जुजवा, व्या परी परी जा पूर।
हिक वेर न वेहेजे सुख करे, हेतां डिसे डुखे संदा मूर।। ९ ।।

जल के अन्दर अलग-अलग तरह की भंवरें (सांसारिक समस्याएं) पड़ती हैं। तरह-तरह से लहरों के प्रवाह (मजबूरियां) आते हैं। एक पल भी सुख से बैठ नहीं सकते। यह तो दुःख का ही घर दिखता है।

हिक घोर अंधारो व्यो अंखे न सुझे, त्रेओ हियडो न्हायम हंद।
पिरी आया मूंके पार उतारण, एहेडी धारा मंझ।। १० ।।

एक तो घोर अंधेरा है, दूसरा आंखों से दिखाई नहीं देता है। मेरे हृदय का कोई ठिकाना नहीं है। प्रीतम ऐसी विषम धारा (कठिन समय में) से मुझे पार उतारने आए थे।

मूं कारण सैयल मूंहजी, हिनमें विधाऊं पांण।
कूकडियूं करे करे, नेठ उथी वियां निरवांण।। ११ ।।

हे सखी! मेरे लिए प्रीतम स्वयं इस संसार में उतर कर आए। पुकार-पुकार कर हारकर उठकर चले गए।

हांणे कीं करियां केडा वंजां, केहेडो मूंजो हांणे हंद।
पिरी न पसां अंखिऐ, जे मूं कारण आया माया मंझ।। १२ ।।

अब क्या करूं? कहां जाऊं? मेरा कहां ठिकाना है? अब मैं उन प्रीतम को इन आंखों से नहीं देख पाती, जो मेरे वास्ते माया में आए थे।

।। प्रकरण ।। ६ ।। चौपाई ।। १९७ ।।

बीजी विलामणी

सजण विया मूंजा निकरी, मूं तां सुजातां न सारे रे।
मूंके चेयाऊं घणवे पुकारे रे, न कीं न्हारयो मूं दिल विचारे रे।।
से सजण हांणे कित न्हारियां।। १ ।।

मेरे प्रीतम निकल (चले) गए और मैंने इनकी पहचान नहीं की। मुझसे बहुत चिल्ला-चिल्लाकर कहा, पर मैंने दिल में कुछ भी विचार कर नहीं देखा। अब ऐसे धनी को कहां देखूं? (दर्शन करूं)।

Nijanand App

पिरी हल्या प्रभातमें, आऊं उथिस अवेरी।
कीं वंजाइयां वलहो, जे हुंद जागां सवेरी।। ६ ।।

प्रीतम बहुत सवेरे चले गए। मैं देर से उठी। मैं प्रीतम को कैसे खो देती यदि मैं जल्दी जाग जाती।

जीव मूहीजो जे तडे जागे, त अवसर वंजाइयां कीं।
हुंद साथ न छडियां सजणे, आडी लेहेर माया थेई नी।। ७ ।।

मेरा जीव यदि तभी जाग जाता तो अवसर न खोती और मैं प्रीतम का साथ न छोड़ती। मेरे बीच माया की लहर आ गई थी। (घर में बैठी रही)।

हांणे डिसूनी डोहे निहारियां, तां जर भरया अतांग।
महें लेहेरयुं मेर जेडियुं, व्या मछे पेरां न्हाय मांग।। ८ ।।

अब दसों दिशाओं में देखती हूं कि बहुत गहरा सागर मोहजल का भरा है। इस मोह सागर में लहरें (मजबूरियां) पर्वतों जैसी ऊंची उठ रही हैं। दूसरे बेशुमार मगरमच्छ (रिश्तेदार) हैं, जिनसे निकलने का रास्ता नहीं मिलता।

महें घूमरियूं जर जुजवा, व्या परी परी जा पूर।
हिक वेर न वेहेजे सुख करे, हेतां डिसे डुखे संदा मूर।। ९ ।।

जल के अन्दर अलग-अलग तरह की भंवरें (सांसारिक समस्याएं) पड़ती हैं। तरह-तरह से लहरों के प्रवाह (मजबूरियां) आते हैं। एक पल भी सुख से बैठ नहीं सकते। यह तो दुःख का ही घर दिखता है।

हिक घोर अंधारो व्यो अंखे न सुझे, त्रेओ हियडो न्हायम हंद।
पिरी आया मूंके पार उतारण, एहेडी धारा मंझ।। १० ।।

एक तो घोर अंधेरा है, दूसरा आंखों से दिखाई नहीं देता है। मेरे हृदय का कोई ठिकाना नहीं है। प्रीतम ऐसी विषम धारा (कठिन समय में) से मुझे पार उतारने आए थे।

मूं कारण सैयल मूंहजी, हिनमें विधाऊं पांण।
कूकडियूं करे करे, नेठ उथी वियां निरवांण।। ११ ।।

हे सखी! मेरे लिए प्रीतम स्वयं इस संसार में उतर कर आए। पुकार-पुकार कर हारकर उठकर चले गए।

हांणे कीं करियां केडा वंजां, केहेडो मूंजो हांणे हंद।
पिरी न पसां अंखिऐ, जे मूं कारण आया माया मंझ।। १२ ।।

अब क्या करूं? कहां जाऊं? मेरा कहां ठिकाना है? अब मैं उन प्रीतम को इन आंखों से नहीं देख पाती, जो मेरे वास्ते माया में आए थे।

।। प्रकरण ।। ६ ।। चौपाई ।। १९७ ।।

बीजी विलामणी

सजण विया मूंजा निकरी, मूं तां सुजातां न सारे रे।
मूंके चेयाऊं घणवे पुकारे रे, न कीं न्हाऱ्यो मूं दिल विचारे रे।।
से सजण हांणे कित न्हारियां।। १ ।।

मेरे प्रीतम निकल (चले) गए और मैंने इनकी पहचान नहीं की। मुझसे बहुत चिल्ला-चिल्लाकर कहा, पर मैंने दिल में कुछ भी विचार कर नहीं देखा। अब ऐसे धनी को कहां देखूं? (दर्शन करूं)।

Nijanand App

अदी रे पिरिए पांणसे जा केई, आऊंसे जे संभारियां साथ।
पांणजे काजे हिन मायामें, कींय विधाऊं आप।। २ ।।

हे सखी! प्रीतम ने मेरे साथ जो किया है, उसकी मैं सुन्दरसाथ को पहचान कराती हूं। हमारे वास्ते प्रीतम ने अपने आपको इस माया में किस तरह डाला?

हिक अधगुण संभारजे, अदी रे त पण लभे साह।
गुण संभारीदे सजणें, अजां को न उडे अरवाह।। ३ ।।

प्रीतम के एक-आध गुण की पहचान हो जाती, तो हे सखी! तो भी धनी मिल जाते। अब प्रीतम के गुणों की पहचान करके यह अरवाह (अर्वा—आत्मा) उड़ क्यों नहीं जाती?

अदी रे सजण सांणें हलया, घणूं धायडियूं पाए।
खुई मुंहजो जिंदुओ जे, अजां अख न उघाडे रे।। ४ ।।

हे सखी! धनी हमारे सामने पुकार-पुकार कर घर चले गए। मेरे जीव को आग लग जाए। यह अभी तक आंख नहीं खोलता है।

परी परी मूंके चेयाऊं, मूंके सल्लेथा से वेंण।
अखडियूं पाणी भर्याऊं, आऊं तोहे न खणां मथा नेण।। ५ ।।

मुझे तरह-तरह से जो कहा वह वचन मेरे को चुभते हैं (खटकते हैं)। अब मुझसे आंखों में आंसू भरकर आंखें ऊंची करके नहीं देखा जाता।

अखडियूं भरे असांसे, बांह झल्ले केयाऊं गाल।
फिट फिट रे मूंजा जिंदुआ, अजां जेहेजो उही हाल।। ६ ।।

मेरी रोती हुई आंखों की हालत में मेरी बांह पकड़ कर बातें कीं। धिक्कार है मेरे जीव को, जिसका अभी भी वैसा ही हाल है। (जैसे का तैसा है)।

हाणेंनी आऊं कीं करियां, मूंजानी केहा हवाल।
केहे मोंह गिनीने रे अद्यिूं, आंऊं करियां आंसे गाल।। ७ ।।

अब मैं क्या करूं? मेरी कैसी हालत है? कौन-सा मुंह लेकर, हे सखी! मैं आपसे बातें करूं?

अदीबाईनी सुणो गालडी, मूंके रूअण रातो डींह रे।
पाणीनी पिरी गिंनी बेयां, हाणें फडकां मछी जींह रे।। ८ ।।

हे सखी! मेरी बात सुनो। मुझे रात-दिन रोना है। प्रीतम पानी लेकर चले गए हैं और अब मछली की तरह तड़पना है।

वेण चई चई वलहो मूंहजो, बरया घर मणे रे।
हलया मूंजे डिसंदे, अदी कार्‌यूं घणूं करे रे।। ९ ।।

मेरे प्रीतम मुझे अपनी वाणी से समझा-समझा कर घर की तरफ लौट गए। मेरे देखते-देखते, हे सखी! पुकार-पुकार कर चले गए।

Nijanand App

पिरी मूंजानी हलया, आऊं कीं चुआं जिभ्याय रे।
सजण वेर न बिसरे, मूंके लगा तरारी जा घाय रे।। १० ।।

मेरा दूल्हा चला गया। मैं कैसे इस जुबान से कहूं? धनी का एक वचन भी नहीं भूलता। यह मुझे तलवार के घाव की तरह लगे हैं।

॥ प्रकरण ॥ ७ ॥ चौपाई ॥ २०७ ॥

खुई सा परडेहडो, जित सांगाए न्हाए सिपरी।
पिरी पुकारेनी हलया, मूंजी माया मत बेई फिरी।। १ ।।

आग लगे इस परदेश (माया के ब्रह्माण्ड) में जहां पर प्रीतम की पहचान नहीं है। प्रीतम पुकार कर चले गए और मेरी बुद्धि माया में लगी रही।

मूंजो जीव वढे कोरा करे, महें मिठो पाताऊं।
सजण संदो सूर ईं मारे, मंझा जीव करे रे धाऊं।। २ ।।

अब मैं अपने जीव को काट-काटकर टुकड़े करूं और उसमें नमक डालूं। इस तरह प्रीतम के दुःख के कारण मरूं। जीव अन्दर बैठा रोए-चिल्लाए।

जेरोनी लगो जर उथई, जीव कर करे मंझ।
वलहे संदोनी विरह ईं मारे, मूंके डिंनाऊं डूरण डंझ।। ३ ।।

आग लगी, लपटें उठीं। जीव (विरह में) जल रहा है। प्रीतम के विरह से जीव को इस तरह से मारूं क्योंकि इसने मुझे कठोर दुःख दिया है।

मूं पिरियन से जा केई, अदी एडी न करे व्यो कोए।
सजण आया मूं कारण, आऊं अंख न खणियां तोए।। ४ ।।

हे सखी! मैंने प्रीतम से जो किया, वैसा हे सखी! कोई दूसरा नहीं करता। प्रीतम मेरे वास्ते आए। मैंने आंख उठाकर देखा ही नहीं।

कीं करियां आऊं गालडी, मथां उखणियां की मोंह।
मूं हथां एहेडी थेई, खल लाहियां चोटी नोंह।। ५ ।।

अब मैं कैसे बात करूं? अपने मुंह को कैसे उठाऊं? मेरे हाथ से ऐसा हुआ कि चमड़ी को नाखून से उधेड़ दूं।

तरारे गिंनी तन ताछियां, हडे करियां भोर।
पेहेलेनी खल उबती लाहियां, जीव कढां ईं जोर।। ६ ।।

तलवार लेकर तन को छील डालूं और हड्डियों का पाउडर बनाऊं (पीस डालूं)। पहले खाल उलटी उधेड़ूं और इस प्रकार से जीव को तड़पा-तड़पा कर निकालूं।

भाले तरारी कटारिएं, मूंके वढे बिधाऊं झूक।
मूं अंग मूंहीं डुझण थेयां, जीव करे रे मंझ कूक।। ७ ।।

भाला से, तलवार से, कटार से काट-काटकर इस तन के टुकड़े कर डालूं। मेरा तन ही मेरा दुश्मन हो गया है। जीव इसके अन्दर बैठा चिल्ला रहा है।

Nijanand App

पिरी मूंजानी हलया, आऊं कीं चुआं जिभ्याय रे।
सजण वेर न बिसरे, मूंके लगा तरारी जा घाय रे।। १० ।।

मेरा दूल्हा चला गया। मैं कैसे इस जुबान से कहूं? धनी का एक वचन भी नहीं भूलता। यह मुझे तलवार के घाव की तरह लगे हैं।

।। प्रकरण ।। ७ ।। चौपाई ।। २०७ ।।

खुई सा परडेहडो, जित सांगाए न्हाए सिपरी।
पिरी पुकारेनी हलया, मूंजी माया मत बेई फिरी।। १ ।।

आग लगे इस परदेश (माया के ब्रह्माण्ड) में जहां पर प्रीतम की पहचान नहीं है। प्रीतम पुकार कर चले गए और मेरी बुद्धि माया में लगी रही।

मूंजो जीव वढे कोरा करे, महें मिठो पाताऊं।
सजण संदो सूर ईं मारे, मंझा जीव करे रे धाऊं।। २ ।।

अब मैं अपने जीव को काट-काटकर टुकड़े करूं और उसमें नमक डालूं। इस तरह प्रीतम के दुःख के कारण मरूं। जीव अन्दर बैठा रोए-चिल्लाए।

जेरोनी लगो जर उथई, जीव कर करे मंझ।
वलहे संदोनी विरह ईं मारे, मूंके डिंनाऊं डूरण डंझ।। ३ ।।

आग लगी, लपटें उठीं। जीव (विरह में) जल रहा है। प्रीतम के विरह से जीव को इस तरह से मारूं क्योंकि इसने मुझे कठोर दुःख दिया है।

मूं पिरियन से जा केई, अदी एडी न करे व्यो कोए।
सजण आया मूं कारण, आऊं अंख न खणियां तोए।। ४ ।।

हे सखी! मैंने प्रीतम से जो किया, वैसा हे सखी! कोई दूसरा नहीं करता। प्रीतम मेरे वास्ते आए। मैंने आंख उठाकर देखा ही नहीं।

कीं करियां आऊं गालडी, मथां उखणियां की मोंह।
मूं हथां एहेडी थेई, खल लाहियां चोटी नोंह।। ५ ।।

अब मैं कैसे बात करूं? अपने मुंह को कैसे उठाऊं? मेरे हाथ से ऐसा हुआ कि चमड़ी को नाखून से उधेड़ दूं।

तरारे गिंनी तन ताछियां, हडे करियां भोर।
पेहेलेनी खल उबती लाहियां, जीव कढां ईं जोर।। ६ ।।

तलवार लेकर तन को छील डालूं और हड्डियों का पाउडर बनाऊं (पीस डालूं)। पहले खाल उलटी उधेड़ूं और इस प्रकार से जीव को तड़पा-तड़पा कर निकालूं।

भाले तरारी कटारिएं, मूंके वढे बिधाऊं झूक।
मूं अंग मूंहीं डुझण थेयां, जीव करे रे मंझ कूक।। ७ ।।

भाला से, तलवार से, कटार से काट-काटकर इस तन के टुकड़े कर डालूं। मेरा तन ही मेरा दुश्मन हो गया है। जीव इसके अन्दर बैठा चिल्ला रहा है।

Nijanand App

सजण सुजाणी करे, कडे समी सई न कीयम गाल रे।
ए डुख आंऊं कीं झलींदी, मूंजा केहा हांणे हवाल रे।।८।।

प्रीतम की पहचान करने पर भी कभी सामने बातें नहीं कीं। इस दुःख को मैं कैसे झेलूंगी? अब मेरी क्या हालत होगी?

सूर तोहेजा घणूज सुहामणां, जे तो डिंना रे डंझ।
सूरेनी घणूं सुखाईस, पेई पचारे हाणें मंझ।।९।।

हे प्रीतम! आपका यह दुःख सुहावना लगता है, जो आपने मुझे दिया है। आपका यह दुःख बहुत सुख देने वाला है। इसके बीच मैं पड़ी हूं।

सूर तोहेजा हेडा सुखाला, त तो सुखें हूंदो केहेडो सुख।
पण मूं न सुजातां मूजा सिपरी, आऊं झूरां तेहेजे डुख।।१०।।

हे प्रीतम! आपका दुःख इतना सुखदाई है तो आपके सुख में कितना सुख होगा, परन्तु मैंने अपने प्रीतम की पहचान नहीं की। उसके दुःख में मैं कलपती हूं।

अंग मूहीं जे अडाए तरारी, झूक करे करियां झोरो।
घोरे बंजां आंजी डिस मथां, त को लाईम सजणे थोरो।।११।।

मैं अपने तन के तलवार से टुकड़े करूं। अग्नि में झोंक दूं और बलिहारी जाऊं (कुरबान जाऊं)। उस दशा में फिर भी प्रीतम के लिए यह थोड़ा है।

हडेनी करियां अंगीठडी, मूजो माहनी होमियां मंझ।
नारियर हंदे ल्हाय रखां मथां, मूंके तोहे न भजेरे डंझ।।१२।।

हड्डियों की अंगीठी बनाऊं जिसमें अपने मांस को होम कर दूं। नारियल के स्थान पर मैं अपने सिर की बलि दूं, तो भी मेरा दुःख नहीं जाता।

जरो जरो मूंजे जीव संदो, मूंके विरह पाताऊं वढ।
इंद्रावती चोए चेताय, मूंके माया मंझानी कढ।।१३।।

अपने जीव के छोटे-छोटे टुकड़े करके विरह की अग्नि में जला दूं। श्री इन्द्रावतीजी सावधान होकर कहती हैं, हे धनी! मुझे इस तरह की माया से निकालो।

।। प्रकरण ।। ८ ।। चौपाई ।। २२० ।।

चौपाई प्रगटाणी

हवे एक लवो जो सांभरे सही, तो जीव रहे केम काया ग्रही।
सांभलो साथ कहूं विचार, चूक्या अवसर आपण आणी वार।।१।।

अब यदि जीव एक शब्द को विचार करे तो इस तन में नहीं रह सकता। हे मेरे सुन्दरसाथ! मैं विचार कर तुमसे कहती हूं कि निश्चय ही हम इस बार भूल कर बैठे हैं।

ए आपण खमीने रह्या, त्यारे वली धणीजीए कीधी दया।
बाई रतनबाईनी वासना, श्री लीलबाईने उदर उपना।।२।।

यह हमने सहन कर लिया। इसलिए धनी ने हमारे ऊपर फिर से कृपा की है। लीलबाईजी के उदर से उत्पन्न बिहारीजी रतनबाई की वासना है।

Nijanand App

सजण सुजाणी करे, कडे समी सई न कीयम गाल रे।
ए डुख आंऊं कीं झलींदी, मूंजा केहा हांणे हवाल रे।। ८ ।।

प्रीतम की पहचान करने पर भी कभी सामने बातें नहीं कीं। इस दुःख को मैं कैसे झेलूंगी? अब मेरी क्या हालत होगी?

सूर तोहेजा घणूज सुहामणां, जे तो डिंना रे डंझ।
सूरेनी घणूं सुखाईस, पेई पचारे हाणें मंझ।। ९ ।।

हे प्रीतम! आपका यह दुःख सुहावना लगता है, जो आपने मुझे दिया है। आपका यह दुःख बहुत सुख देने वाला है। इसके बीच मैं पड़ी हूं।

सूर तोहेजा हेडा सुखाला, त तो सुखें हूंदो केहेडो सुख।
पण मूं न सुजातां मूजा सिपरी, आऊं झूरां तेहेजे डुख।। १० ।।

हे प्रीतम! आपका दुःख इतना सुखदाई है तो आपके सुख में कितना सुख होगा, परन्तु मैंने अपने प्रीतम की पहचान नहीं की। उसके दुःख में मैं कलपती हूं।

अंग मूहीं जे अडाए तरारी, झूक करे करियां झोरो।
घोरे बंजां आंजी डिस मथां, त को लाईम सजणे थोरो।। ११ ।।

मैं अपने तन के तलवार से टुकड़े करूं। अग्नि में झोंक दूं और बलिहारी जाऊं (कुरबान जाऊं)। उस दशा में फिर भी प्रीतम के लिए यह थोड़ा है।

हडेनी करियां अंगीठडी, मूजो माहनी होमियां मंझ।
नारियर हंदे ल्हाय रखां मथां, मूंके तोहे न भजेरे डंझ।। १२ ।।

हड्डियों की अंगीठी बनाऊं जिसमें अपने मांस को होम कर दूं। नारियल के स्थान पर मैं अपने सिर की बलि दूं, तो भी मेरा दुःख नहीं जाता।

जरो जरो मूंजे जीव संदो, मूंके विरह पाताऊं वढ।
इंद्रावती चोए चेताय, मूंके माया मंझानी कढ।। १३ ।।

अपने जीव के छोटे-छोटे टुकड़े करके विरह की अग्नि में जला दूं। श्री इन्द्रावतीजी सावधान होकर कहती हैं, हे धनी! मुझे इस तरह की माया से निकालो।

।। प्रकरण ।। ८ ।। चौपाई ।। २२० ।।

चौपाई प्रगटाणी

हवे एक लवो जो सांभरे सही, तो जीव रहे केम काया ग्रही।
सांभलो साथ कहूं विचार, चूक्या अवसर आपण आणी वार।। १ ।।

अब यदि जीव एक शब्द को विचार करे तो इस तन में नहीं रह सकता। हे मेरे सुन्दरसाथ! मैं विचार कर तुमसे कहती हूं कि निश्चय ही हम इस बार भूल कर बैठे हैं।

ए आपण खमीने रह्या, त्यारे वली धणीजीए कीधी दया।
बाई रतनबाईनी वासना, श्री लीलबाईने उदर उपना।। २ ।।

यह हमने सहन कर लिया। इसलिए धनी ने हमारे ऊपर फिर से कृपा की है। लीलबाईजी के उदर से उत्पन्न बिहारीजी रतनबाई की वासना है।

Nijanand App

श्री देवचंदजी पिता प्रमाण, निरखी आवेस दीधों निरवांण।
नहीं तो ए आवेस छे अपार, पण धणीतणां वचन निरधार।। ३ ।।

श्री देवचन्द्रजी पिता हैं, जिन्होंने बिहारीजी की इच्छा को देखकर अपनी कुछ शक्ति प्रदान की। धनी के वचनों को विचार कर देखें तो आवेश की तो बहुत भारी शक्ति है (जो वचन श्री देवचन्द्रजी कहा करते थे कि जागनी मेहराज ठाकुर के तन से होगी। निश्चय ही वह शक्ति अब मेहराज ठाकुर के तन में आई)।

मारी वाणीए ब्रह्मांडज गले, तो वासना केम वचनथी टले।
वासनाओ माटे बांध्या बंध, कई भांते अनेक सनंध।। ४ ।।

जागृत बुद्धि के ज्ञान की शक्ति से ब्रह्माण्ड का कल्याण होता है, तो वासना उस वाणी से कैसे मुनकिर (इंकार) हो सकती है। इसलिए धनीजी ने ब्रह्मसृष्टि के वास्ते ही तरह-तरह के ढंग से नियम (उपाय) बनाए हैं।

ए वचनों माहें छे निध घणी, आगल प्रगट थासे धणी।
हरखे साथ जागसे एह, रेहेसे नहीं कोई संदेह।। ५ ।।

इन वचनों में अखण्ड ज्ञान छिपा है। आगे धनी फिर से प्रकट होंगे। तब सुन्दरसाथ बड़ी उमंग के साथ जागृत होंगे और उनको कोई संशय नहीं रह जाएंगे।

साथ सकलने तेडूं सही, माया मांहें मूकूं नहीं।
वली वाणी श्री देवचंदजीतणी, साथ सकलने ताणे घर भणी।। ६ ।।

अब मैं (इन्द्रावती) सब साथ को बुलाऊंगी और माया में नहीं छोड़ूंगी। फिर से धनी देवचन्द्रजी की वाणी सुन्दरसाथ को घर की तरफ खींचती है।

वली तेह चरचा ने तेहज वाण, वचन केहेतां जे प्रमाण।
वृज रास ने वली श्री धाम, सुख साथने दिए निधान।। ७ ।।

साखियां (गवाहियां) दे-देकर उसी तरह की चर्चा, उसी तरह की वाणी, ब्रज, रास तथा परमधाम की, सुनाकर सुन्दरसाथ को (मेहराज ठाकुर) सुख देते हैं।

पचवीस पख वरणवनी जेह, वल्लभ वली सुख आपे तेह।
अंतरध्यान समे जेम थया, वली वालो ततखिण आवया।। ८ ।।

पच्चीस पक्षों का वर्णन जैसा श्री देवचन्द्रजी करते थे, अब वही श्री प्राणनाथजी (मेहराज ठाकुर के तन में बैठकर) सुख देते हैं। जैसे रास में अन्तर्ध्यान के बाद फिर से वालाजी आ गए थे, उसी तरह से श्री प्राणनाथजी श्री देवचन्द्रजी के तन को छोड़कर तत्काल श्री मेहराज ठाकुर के तन में आ गए हैं।

पेहेले फेरे थयूं छे जेम, आंहीं पण वालेजीए कीधूं तेम।
आ ते वालो ने तेहज दिन, विचार करी जुओ तारतम।। ९ ।।

जागृत बुद्धि के ज्ञान से विचार कर देखो तो वालाजी ने जैसा पहले फेरे (रास में) किया था, यहां पर भी उसी तरह किया (एक तन छोड़कर दूसरे तन में आ गए हैं)। यह वही वालाजी हैं और वही समय है।

Nijanand App

Nijanand App

विनती–राग धनाश्री

हवे विनती एक कहूं मारा वाला, सुणो पिउजी वात।
प्रगट तमे पधारिया, आकार फेरो छो नाथ।। १ ।।

अब एक विनती मैं करती हूं, मेरे धनी! मेरी बात को सुनो। आप आकार बदल कर फिर से पधारे हैं।

श्री देवचन्दजी अम कारणे, रुदे तमारे आवया।
वचन पालवा आपणा, साथ सकल पर कीधी दया।। २ ।।

श्री देवचन्द्रजी ने हमारे लिए जो वचन कहे थे कि अपने तन के बाद तुम्हारे हृदय में आऊंगा, वही वचन उन्होंने पूरे किए (मेरे हृदय में आ पधारे हैं)। उन्होंने सुन्दरसाथ पर यह कृपा की है।

जनम अंध अमे जे हतां, ते तां तमे देखीतां करया।
वांसो वछूटो हाथथी, जमपुरी जातां वली कर ग्रह्या।। ३ ।।

हे धनी! अज्ञानी थे तो आपने जागृत बुद्धि का ज्ञान देकर हमारी अज्ञानता को (अनजानपने को) हटाया। हमने आपका पीछा छोड़ दिया था। दूसरे जीवों की तरह गादी पूजा और कर्म काण्ड जो यमपुरी जाने का ही साधन है, उसमें भटक गए थे। तब आपने अति कृपा कर हाथ पकड़ कर खींच लिया (और अपने चरणों में लगा लिया)।

हवे अम मांहें अमपणूं, जो कांई होसे लगार।
तो निद्रा उडाडी तमे निध दीधी, हवे नहीं मूकूं निरधार।। ४ ।।

यदि अब हमारे अन्दर थोड़ा भी अहंकार है, तो आपने हमारे इस अहं को हटाकर जो अखण्ड ज्ञान दिया है, उसे मैं अब नहीं छोड़ूंगी।

आगे तो अमे नव ओलख्या, ते साले छे मन।
चरचा ते करी करी प्रीछव्या, अने कह्या ते विविध वचन।। ५ ।।

मैं आपको पहले नहीं पहचान सकी, यह बात मन में चुभती है (खटकती है)। आपने तो हमें तरह तरह के वचनों से चर्चा में समझाया था।

चाल

एहेवा अनेक वचन कह्या अमने, जेणे एक वचने ओलखूं तमने।
पेरे पेरे करीने प्रीछव्या सही, अमे निरोध तोहे उडाड्यो नहीं।। ६ ।।

ऐसे अनेक वचनों से आपने हमको समझाया, जिनमें से एक वचन से ही मैं आपकी पहचान कर लेती। आपने तो तरह-तरह से समझाया, तो भी मेरे मन का भ्रम (संशय) नहीं मिटा।

त्यारे हंसी वढी आंसूवाली ने कह्यूं, पण एणे समे अमे कांई नव लह्यूं।
त्यारे तारतम कही घर देखाड्या सही, पण अमे तोहे ओलख्या नहीं।। ७ ।।

तब आपने हंसकर, लड़कर, रोकर भी कहा, पर उसका मेरे पर कुछ असर नहीं हुआ। तब आपने जागृत बुद्धि के ज्ञान से घर की पहचान कराई, परन्तु फिर भी मैंने नहीं पहचाना।

Nijanand App

त्यारे अम मांहेंथी अद्रष्ट थया, मूल वचन रुदयामां रह्या।
एणे समे जो खबर न लेवाय, तो दुस्तर अमने घणूं दोहेलूं थाय।। ८ ।।

इस कारण से हमें आप छोड़कर चले गए। अब उन्हीं वचनों को लेकर आप मेरे हृदय में आ विराजे हो। यदि इस समय आप हमारी खबर न लेते (कहे वचनों के अनुसार मेरे हृदय में न विराजते) तो यह कठिन माया और भी दुःखदायी हो जाती।

एम जाणी ने आव्या अम मांहें, आवी बेठा प्रगट्या तम जांहें।
आपण जेम पेहेलां वृजमां हतां, नित प्रते वालाजीसूं रंगे रमतां।। ९ ।।

ऐसा जानकर आप मेरे हृदय में प्रकट होकर बैठे हैं। जैसे ब्रज में नित्य ही वालाजी के साथ में आनन्द की लीला करते थे, वैसी ही करने लगे।

अनेक रामत कीधी आपणे, पूरण मनोरथ कीधां समे तेणे।
अग्यारे वरसनी लीला करी, कालमाया तिहांज परहरी।। १० ।।

ब्रज में अनेक खेल खेले और जो इच्छाएं कीं, आपने तुरन्त उसी समय पूरी कीं। ऐसी लीला हमने ग्यारह वर्ष तक की। फिर कालमाया के ब्रह्माण्ड को वहीं छोड़ दिया।

जोगमायामां आपण रासज रम्या, तेतां साथ सकलने घणूं घणूं गम्या।
वचन संभारवाने अद्रष्ट थया, त्यारे अमे विरह कीधां जुजवा।। ११ ।।

योगमाया के ब्रह्माण्ड में हमने रास खेली जो सुन्दरसाथ को बहुत अच्छी लगी। इन वचनों को याद दिलाने के लिए अन्तर्ध्यान की लीला की, जिसमें हमने विरह अलग से किया।

ते देखीने आव्या जेम, वली आंहीं प्रगट थया छो तेम।
धणी ज्यारे धणवट करे, त्यारे मन चितव्या कारज सरे।। १२ ।।

उस समय रास में हमारे विरह के दुःख को देखकर आप फिर से प्रकट हुए थे। उसी तरह अब हमें दुःखी देखकर फिर से प्रकट हुए हो। धनी जब अपना धनीपना (अपनत्व) निभाते हैं तो मनचाहे सब कार्य सिद्ध हो जाते हैं।

तेणे समे धाख रहीती जेह, हमणां पूरण कीधी तेह।
हवे वालाजी कहूं ते सुणो, अने अति घणो दोष छे अमतणो।। १३ ।।

उस समय जो हमारी चाहना बाकी रह गई थी, अब उसे आकर आपने पूरा किया है। हे वालाजी! मैं अब जो कहती हूं वह सुनो। हमारा गुनाह बहुत बड़ा है।

तमारा मनमां न आवे लेस, पण साख पूरे मारूं मनडूं वसेख।
वारी फरी नाखूं मारी देह, तमे कीधां मोसूं अधिक सनेह।। १४ ।।

तुम्हारे मन में इनका थोड़ा भी असर नहीं होता। ऐसा हमारा मन विशेषकर गवाही देता है। आपने मुझे अधिक प्यार दिया है, इसलिए मैं फिर से अपने तन को समर्पित करती हूं।

वार वार हूं घोली घोली जाऊं, एक वचन तणां नव ओसीकल थाऊं।
ओसीकल वचन तो ते केहेवाए, जो अमे बेठा मोहजल मांहें।। १५ ।।

बार-बार मैं आप पर बलिहारी जाती हूं। आपके हर एक वचन का बदला नहीं चुका सकती। बदला चुकाने की बात तो कही है, क्योंकि मैं माया में बैठी हूं।

Nijanand App

अनेक वार जाऊं वारणे, तमे जे कीधूं ते आपोपणे।
भामणा उपर लऊं भामणा, पण दोष साले जे में कीधां घणा।। १६ ।।

आपने जो अपनापन (अपनत्व) दिखाया है, उसके लिए मैं बार-बार बलिहारी जाती हूं। मैं तो आप पर न्योछावर हुई जाती हूं, किन्तु हमारी भूलें हमें चुभती हैं।

हवे ए दोष केम छूटीस हो नाथ, सांचूं कहूं मारा धामना साथ।
तमे साथ मांहें देओ छो उपमां, पण हूं केम छूटीस ए वज्रलेपणा।। १७ ।।

हे मेरे धनी! मैं इस गलती से कैसे छूट सकूंगी? मैं अपने परमधाम के सुन्दरसाथ को सत्य कहती हूं आप मुझे सुन्दरसाथ के बीच में अपने जैसी उपमा देते हो। यह मेरे लिए वज्रलेप है। इस दोष से मैं कैसे छूट सकूंगी?

तमे गुण कीधां मोसूं घणां घणां, पण अलेखे अवगुण अमतणा।
तमे गुण करो छो ते ओलखी करी, पण मोहजल लेहेर मूने फरी वली।। १८ ।।

हे धनी! आपने मुझ पर बड़ी-बड़ी कृपाएं कीं, किन्तु मेरे अवगुण बेशुमार हैं। आप सब अवगुण देखते हुए भी कृपा ही करते हो, किन्तु मुझे भवसागर की (माया की) लहरों ने घेर रखा है।

हवे हूं बलिहारी जाऊं मारा धणी, मारा मनमां एक हाम छे घणी।
अछतां मंडल मांहें लाभ छे घणो, अने आंझो छे मारा धणीजी तम तणो।। १९ ।।

हे धनी! मैं आप पर बलिहारी जाती हूं। मेरे मन में एक बड़ी चाहना है। इस झूठे संसार में सबसे बड़े लाभ की यह बात है कि मैं आपका ही सहारा लेकर खड़ी हूं।

जे मनोरथ कीधां श्री धाम मांहें, ते द्रढ सघला आहीं थाए।
जे पेर सघली कही छे तमे, ते द्रढ कीधी सर्वे जोईए अमे।। २० ।।

मैंने परमधाम में जो चाहना की थी, वह सब यहीं पूरी होती हैं। आपने जिस तरह से समझाया। हमें उसी तरह से मन में दृढ़ता के साथ लेनी चाहिए।

श्री धामना सुख जे दीसे आहें, ते जीव जाणे मनज मांहें।
आ देहनी जिभ्या केणी पेरे कहे, वचन कहूं ते ओरूं रहे।। २१ ।।

श्री परमधाम के सुख जो यहां दिखते हैं, उनका अनुभव मेरा जीव मन में करता है। इस देह की जुबान से यदि कहें तो यहीं रह जाता है, अर्थात् कहने में नहीं आता।

ए सोभा सब्दातीत छे घणी, अने सब्द मांहें जिभ्या आपणी।
ए सुख विलसी निरदोष थाऊं, तम दयाए फेरो सुफल करी जाऊं।। २२ ।।

यह शोभा शब्दों से परे बेहद की है और अपनी जुबान शब्द के अन्दर (हद की) है। इस सुख और आनन्द का वर्णन कर मैं निर्दोष हो जाऊं तो आपकी कृपा से यह फेरा सफल हो जाए।

एटले मनोरथ पूरण थया, जे थाय ते वालाजीनी दया।
दयानो तो कहूं छूं घणूं, जे करी न सकी वस आपोपणूं।। २३ ।।

इसलिए हमारी समस्त चाहनाएं पूर्ण हो गईं और मैंने समझ लिया कि यहां जो कुछ भी होता है, वह धनी की मेहर से ही होता है। धनी की मेहर इसलिए बड़ी है कि मैं अपने आपको वश में नहीं कर सकी (उपमा ग्रहण कर ली)।

Nijanand App

हवे मनसा वाचा करमणां करी, हूं नहीं मूकूं निध परहरी।
नैणे निरखूं निरमल चित करी, हूं रुदे राखीस वालो प्रेम धरी।। २४ ।।

अब मन, वचन और कर्म से अपने अखण्ड घर को नहीं छोड़ूंगी अपने चित्त को निर्मल करके देखूंगी और धनी के प्रेम को हृदय में रखूंगी।

करी परणाम लागूं चरणे, सेवा करीस हूं वालपण घणे।
दंडवत करूं जीव ने मन, दऊं प्रदखिणा रात ने दिन।। २५ ।।

श्री इन्द्रावतीजी चरणों में लगकर प्रणाम करती हैं और कहती हैं, मैं बड़े लाड व प्यार से आपकी सेवा करूंगी। जीव और मन से दण्डवत् करती हूं और रात-दिन आपकी परिक्रमा करती हूं।

कृपा करो छो सहु साथज तणी, वली कृपा साथने करजो घणी घणी।
इंद्रावती चरणे लागे आधार, धणी लिए तेम लीधी सार।। २६ ।।

हे धनी! आप सुन्दरसाथ पर बड़ी कृपा करते हो। आगे भी बारबार अति कृपा करना। इन्द्रावती आपके पांव पड़कर कहती है कि जिस प्रकार पति, पत्नी का ध्यान रखता है, आप उसी तरह हमारा ध्यान रखो।

॥ प्रकरण ॥ १० ॥ चौपाई ॥ २६३ ॥

हवे आपणमां बेठा आधार, रामत देखाडी उघाडी बार।
हवे माया कोटान कोट करे प्रकार, पण आपणने नव मूके निरधार।। १ ।।

अब हमारे बीच में धनी विराजमान हैं और परमधाम के दरवाजे खोलकर खेल दिखा रहे हैं। अब माया करोड़ों प्रयत्न करे तो भी धनी हमें नहीं छोड़ेंगे।

तेडी आपणने जाय घरे, वचन कह्या केम पाछां फरे।
मनना मनोरथ पूरण करे, नेहेचे धणी तेडी जाय घरे।। २ ।।

धनी हमें घर लेकर ही जाएंगे। जो वचन उन्होंने कहे वह उसे पूरा करेंगे। हमारे मन के मनोरथ को निश्चित रूप से पूरा कर के बुलाकर घर ले जाएंगे।

जो हवे आपण ओलखिए आवार, तो जीव घणूं पामे करार।
साथ ऊपर दया अति करी, वली जोगवाई आवी छे फरी।। ३ ।।

इस बार यदि हम धनी की पहचान कर लें तो जीव को बड़ा करार होगा (आनन्द होगा)। सुन्दर साथ के ऊपर धनी ने अति कृपा की है। फिर से सब साधन दे दिए हैं।

वली अवसर आव्यो छे घणो, अने वखत उघड्यो साथज तणो।
आपणे नव मूकवा हीडूं संसार, धणी आपणो विछोडो नव सहे लगार।। ४ ।।

फिर से अवसर हाथ आया है और सुन्दरसाथ के नसीब खुल गए हैं। आप संसार को नहीं छोड़ना चाहते और धनी हमारा बिछोह नहीं सहन करते, अर्थात् धनी हमें नहीं छोड़ सकते।

तारतम पखे विछोडो नहीं, सुपनमां माया जोइए सही।
सुपन विछोडो पण धणी नव सहे, तारतम वचन पाधरा कहे।। ५ ।।

यदि हम जागृत बुद्धि से देखें तो वियोग नहीं है। स्वप्न के अन्दर ही हम माया देख रहे हैं। तारतम ज्ञान से स्पष्ट जानकारी मिलती है कि सपने में भी धनी हमें छोड़ना सहन नहीं करते।

Nijanand App

हवे मनसा वाचा करमणां करी, हूं नहीं मूकूं निध परहरी।
नैणे निरखूं निरमल चित करी, हूं रुदे राखीस वालो प्रेम धरी।। २४ ।।

अब मन, वचन और कर्म से अपने अखण्ड घर को नहीं छोड़ूंगी अपने चित्त को निर्मल करके देखूंगी और धनी के प्रेम को हृदय में रखूंगी।

करी परणाम लागूं चरणे, सेवा करीस हूं वालपण घणे।
दंडवत करूं जीव ने मन, दऊं प्रदखिणा रात ने दिन।। २५ ।।

श्री इन्द्रावतीजी चरणों में लगकर प्रणाम करती हैं और कहती हैं, मैं बड़े लाड व प्यार से आपकी सेवा करूंगी। जीव और मन से दण्डवत् करती हूं और रात-दिन आपकी परिक्रमा करती हूं।

कृपा करो छो सहु साथज तणी, वली कृपा साथने करजो घणी घणी।
इंद्रावती चरणे लागे आधार, धणी लिए तेम लीधी सार।। २६ ।।

हे धनी! आप सुन्दरसाथ पर बड़ी कृपा करते हो। आगे भी बारबार अति कृपा करना। इन्द्रावती आपके पांव पड़कर कहती है कि जिस प्रकार पति, पत्नी का ध्यान रखता है, आप उसी तरह हमारा ध्यान रखो।

॥ प्रकरण ॥ १० ॥ चौपाई ॥ २६३ ॥

हवे आपणमां बेठा आधार, रामत देखाडी उघाडी बार।
हवे माया कोटान कोट करे प्रकार, पण आपणने नव मूके निरधार।। १ ।।

अब हमारे बीच में धनी विराजमान हैं और परमधाम के दरवाजे खोलकर खेल दिखा रहे हैं। अब माया करोड़ों प्रयत्न करे तो भी धनी हमें नहीं छोड़ेंगे।

तेडी आपणने जाय घरे, वचन कह्या केम पाछां फरे।
मनना मनोरथ पूरण करे, नेहेचे धणी तेडी जाय घरे।। २ ।।

धनी हमें घर लेकर ही जाएंगे। जो वचन उन्होंने कहे वह उसे पूरा करेंगे। हमारे मन के मनोरथ को निश्चित रूप से पूरा कर के बुलाकर घर ले जाएंगे।

जो हवे आपण ओलखिए आवार, तो जीव घणूं पामे करार।
साथ ऊपर दया अति करी, वली जोगवाई आवी छे फरी।। ३ ।।

इस बार यदि हम धनी की पहचान कर लें तो जीव को बड़ा करार होगा (आनन्द होगा)। सुन्दर साथ के ऊपर धनी ने अति कृपा की है। फिर से सब साधन दे दिए हैं।

वली अवसर आव्यो छे घणो, अने वखत उघड्यो साथज तणो।
आपणे नव मूकवा हीडूं संसार, धणी आपणो विछोडो नव सहे लगार।। ४ ।।

फिर से अवसर हाथ आया है और सुन्दरसाथ के नसीब खुल गए हैं। आप संसार को नहीं छोड़ना चाहते और धनी हमारा बिछोह नहीं सहन करते, अर्थात् धनी हमें नहीं छोड़ सकते।

तारतम पखे विछोडो नहीं, सुपनमां माया जोइए सही।
सुपन विछोडो पण धणी नव सहे, तारतम वचन पाधरा कहे।। ५ ।।

यदि हम जागृत बुद्धि से देखें तो वियोग नहीं है। स्वप्न के अन्दर ही हम माया देख रहे हैं। तारतम ज्ञान से स्पष्ट जानकारी मिलती है कि सपने में भी धनी हमें छोड़ना सहन नहीं करते।

Nijanand App

लई तारतम अजवालूं सार, वली श्रीजी आव्या आवार।
जाणे रखे केहेने उत्कंठा रहे, साथ ऊपर एटलूं नव सहे।। ६ ।।

अब फिर से जागृत बुद्धि का ज्ञान लेकर श्रीजी आए हैं। किसी की भी कोई चाहना बाकी रह जाए, धनी इतना भी सहन नहीं करेंगे।

श्री धणीतणा गुण केटला कहुं, हूं अबूझ कांई घणूं नव लहुं।
पण पाधरा गुण दीसे अपार, धणिए जे कीधां आवार।। ७ ।।

धनी के गुणों का कहां तक बयान करूं? मैं नासमझी के कारण अधिक ग्रहण नहीं कर सकती। इस बार जो धनी ने कृपा की है, वह गुण बेशुमार स्पष्ट दिखाई दे रहे हैं।

आपणी मीटे दीठां सही, पण आणी जिभ्याए केहेवाय नहीं।
भोम कणका जो गणाए, सायर लेहेरे उठे जल मांहें।। ८ ।।

इस नजर से मैंने देखा तो सही, पर जुबान से कहनी में नहीं आते। पृथ्वी के कण यदि कोई गिन भी ले, सागर की लहरें भी यदि कोई गिन ले (पर धनी के गुण नहीं गिने जा सकते)।

मेघ पण गाजे वली पडे, वनस्पति पत्र कोई नव गणे।
जदिपे तेहेनो निरमाण थाय, पण धणीतणा गुण कोणे न गणाय।। ९ ।।

बादलों की गरज से पड़ी बूंदें भी कोई गिन ले, वृक्षों के पत्ते कोई गिन ले, पृथ्वी के कण यदि कोई गिन ले। यह चारों चीजें गिनी नहीं जा सकती। यदि इनको कोई गिन भी ले, तो भी धनी के गुण तो गिने नहीं जा सकते।

न गणाय आ फेरा तणां, अने गुण आपणसूं कीधां अति घणां।
पेहेला फेरानी केही कहूं वात, गुण जे कीधां धणी प्राणनाथ।। १० ।।

जब इस फेरे (जागनी के ब्रह्माण्ड में) के गुण जो धनी ने असंख्य किए हैं, गिने नहीं जा सकते, तो पहले फेरे की (ब्रज और रास की) बात कैसे करूं जो अपने धनी प्राणनाथ ने किए हैं।

ते आणी जोगबाईए केम गणू आधार, पण कांईक तोहे गणवा निरधार।
इंद्रावती कहे हूं गुण गणूं, कांईक दाखूं आपोपणूं।। ११ ।।

मैं इस तन और अन्य सभी साधनों से धनी के गुण कैसे गिनूं? परन्तु कुछ तो गिनना ही है। इसलिए श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि अब मैं अपनापन दिखाकर धनी के गुण गिनती हूं।

॥ प्रकरण ॥ ११ ॥ चौपाई ॥ २७४ ॥

श्री धणीजीना गुण

हवे गुणने लखूंजी तमतणां, जे तमे कीधां अमसूं अति घणां।
जोजन पचास कोट पृथ्वी केहेवाए, आडी ऊभी सर्वे ते मांहें।। १ ।।

हे धाम के धनी! मैं आपके गुणों को लिखती हूं जो आपने मेरे साथ बेशुमार किए। पचास करोड़ योजन पृथ्वी कही जाती है। इसमें आड़ी, टेड़ी और खड़ी सब आ गईं।

Nijanand App

लई तारतम अजवालूं सार, वली श्रीजी आव्या आवार।
जाणे रखे केहेने उत्कंठा रहे, साथ ऊपर एटलूं नव सहे।। ६ ।।

अब फिर से जागृत बुद्धि का ज्ञान लेकर श्रीजी आए हैं। किसी की भी कोई चाहना बाकी रह जाए, धनी इतना भी सहन नहीं करेंगे।

श्री धणीतणा गुण केटला कहुं, हूं अबूझ कांई घणूं नव लहुं।
पण पाधरा गुण दीसे अपार, धणिए जे कीधां आवार।। ७ ।।

धनी के गुणों का कहां तक बयान करूं? मैं नासमझी के कारण अधिक ग्रहण नहीं कर सकती। इस बार जो धनी ने कृपा की है, वह गुण बेशुमार स्पष्ट दिखाई दे रहे हैं।

आपणी मीटे दीठां सही, पण आणी जिभ्याए केहेवाय नहीं।
भोम कणका जो गणाए, सायर लेहेरे उठे जल मांहें।। ८ ।।

इस नजर से मैंने देखा तो सही, पर जुबान से कहनी में नहीं आते। पृथ्वी के कण यदि कोई गिन भी ले, सागर की लहरें भी यदि कोई गिन ले (पर धनी के गुण नहीं गिने जा सकते)।

मेघ पण गाजे वली पडे, वनस्पति पत्र कोई नव गणे।
जदिपे तेहेनो निरमाण थाय, पण धणीतणा गुण कोणे न गणाय।। ९ ।।

बादलों की गरज से पड़ी बूंदें भी कोई गिन ले, वृक्षों के पत्ते कोई गिन ले, पृथ्वी के कण यदि कोई गिन ले। यह चारों चीजें गिनी नहीं जा सकती। यदि इनको कोई गिन भी ले, तो भी धनी के गुण तो गिने नहीं जा सकते।

न गणाय आ फेरा तणां, अने गुण आपणसूं कीधां अति घणां।
पेहेला फेरानी केही कहूं वात, गुण जे कीधां धणी प्राणनाथ।। १० ।।

जब इस फेरे (जागनी के ब्रह्माण्ड में) के गुण जो धनी ने असंख्य किए हैं, गिने नहीं जा सकते, तो पहले फेरे की (ब्रज और रास की) बात कैसे करूं जो अपने धनी प्राणनाथ ने किए हैं।

ते आणी जोगबाईए केम गणू आधार, पण कांईक तोहे गणवा निरधार।
इंद्रावती कहे हूं गुण गणूं, कांईक दाखूं आपोपणूं।। ११ ।।

मैं इस तन और अन्य सभी साधनों से धनी के गुण कैसे गिनूं? परन्तु कुछ तो गिनना ही है। इसलिए श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि अब मैं अपनापन दिखाकर धनी के गुण गिनती हूं।

।। प्रकरण ।। ११ ।। चौपाई ।। २७४ ।।

श्री धणीजीना गुण

हवे गुणने लखूंजी तमतणां, जे तमे कीधां अमसूं अति घणां।
जोजन पचास कोट पृथ्वी केहेवाए, आडी ऊभी सर्वे ते मांहें।। १ ।।

हे धाम के धनी! मैं आपके गुणों को लिखती हूं जो आपने मेरे साथ बेशुमार किए। पचास करोड़ योजन पृथ्वी कही जाती है। इसमें आड़ी, टेड़ी और खड़ी सब आ गईं।

Nijanand App

चौद लोक वैकुण्ठ सुन्य जेह, भोम समी हूं करूं वली तेह।
पाधरा पाथरी करूं एक ठामे, वांक चूक टालूं ए मांहें।। २ ।।

चौदह लोकों, बैकुण्ठ निराकार तक जो भूमि है, उसे फिर समान (सीधा) कर दूं। इन सबको सीधा करके बिछा दूं और इसके अन्दर का टेढ़ापन भी सब सीधा कर दूं।

कागल परठ्यूं में एहनूं नाम, गुण लखवा मारा धणी श्री धाम।
चौद भवननी लऊं वनराय, तेहेनी लेखणो मारे हाथों घडाय।। ३ ।।

इसका नाम मैंने कागज रखा। इसमें मुझे धाम धनी के गुण लिखने हैं। चौदह लोकों के वृक्षों को लेकर इनकी अपने हाथ से कलमें बनाऊं।

घडतां कोसर करूं अतिघणी, जाणूं रखे मोटी छोही पडे तेहतणी।
झीणियों टांको मारे हाथो थाय, अणियों मांहें नहीं मूकूं मणाय।। ४ ।।

कलम बनाते समय मैं बहुत कंजूसी के साथ उनके छिलके उतारूं ताकि मोटा छिलका न निकले (जिससे कलमें कम न हो जाएं)। इन कलमों की नोंक मैं अपने हाथों से बारीक बनाऊं। बनाने में कमी न करूं।

तोहे कोसर करूं घडतां अति घणी, जाणू जेमने झीणियों थाय अति अणी।
हवे धरती उपला लऊं सर्व जल, बीजापण भरया सात पातालना तल।। ५ ।।

फिर भी इनकी नोंक बनाने में बहुत कंजूसी करूं, जिससे नोंक और भी बारीक बन जाए। अब धरती के ऊपर का सारा जल इकट्ठा करूं और साथ-साथ सात पातालों का भी जल इकट्ठा कर लूं।

बीजा रे छ लोक तेहेना लऊं जल, नहीं मूकूं किहांए टीपूं अवल।
सर्व जल मेलवीने लऊं मारे हाथ, गुण लखवा मारे श्री प्राणनाथ।। ६ ।।

ऊपर के छः लोकों का भी जल इकट्ठा करूं और कहीं भी एक बूंद बाकी न छोड़ूं। इस सब जल को मैं अपने हाथ से धनी के गुण लिखने के लिए मिला लूं।

स्याही करूं अति जुगते करी, रखें कांई मांहेंथी जाय परी।
ए लेखणो स्याही आ कागल करी, माहें झीणां आंक लखूं चित धरी।। ७ ।।

उस जल की अति सावधानी से स्याही बनाऊं कि स्याही कहीं गिर न जाए। इस प्रकार की लेखनी, स्याही और कागज बना करके सावधानी से बारीक अंक लिखूं।

गुण जे कीधां मोसूं मारा वालैया, ते आंणी जिभ्याए नव जाय कह्या।
देह सारूं हूं लखूं प्रमाण, एक अर्ध अणूमात्रनुं काढूं निरमाण।। ८ ।।

मेरे वालाजी ने जो मेरे ऊपर गुण (मेहर, कृपा, एहसान) किए हैं, वह इस जुबान से नहीं कहे जा सकते। मैं अपनी देह की शक्ति से लिखती हूं। आपके एक चौथाई अंक का वर्णन करती हूं।

हवे लखूं छूं तमे जोजो साथ, हूं गजा सारूं करूं प्रकास।
घणूं चीफूं आंक लखतां एह, रखे जाणूं कांई मींडा मोटा थाय तेह।। ९ ।।

हे सुन्दरसाथजी! अब तुम देखना, मैं धनी के गुण लिखती हूं। अपनी बुद्धि के अनुसार जाहिर करती हूं। अंक लिखने में भी मैं बड़ी कंजूसी करती हूं। कहीं कोई बिन्दी मोटी न हो जाए।

Nijanand App

हवे प्रथम एकडो काढूं एक चित, अडतूं मींडूं धरूं भिलत।
मारे हाथे अखर पोहोलो नव थाय, अने बीहुं जाणूं रखे घेलाय।। १० ।।

अब सबसे पहले ध्यान से एक का अंक लिखती हूं। उसी से मिलाकर एक बिन्दी रखी है। मेरे हाथ से अक्षर चौड़ा न हो जाए और डरती हूं कि अंक फैल न जाए।

एम करता ए दसज थया, मींडूं मूकीने एक सो गणया।
वली एक मूकूं नव करूं वार, जेम गुण गणूं मारा धणीना हजार।। ११ ।।

इस तरह से यह दस हुए। एक बिन्दी और रखकर सौ की गिनती की। फिर एक और बिन्दी रखने में देरी न करूं, जिससे अपने धनी के गुण हजार तक गिन लूं।

हवे मींडूं मूकूं अडतूं एक, जेम गुण गणूं दस हजार वसेक।
वली एक मूकतां लाख गणाय, हवे मूकूं जेम दस लाख थाय।। १२ ।।

अब फिर एक बिन्दी साथ में रखूं जिससे गुण दस हजार गिन लूं। फिर एक बिन्दी रखके एक लाख गिनूं। फिर एक बिन्दी रखूं तो दस लाख हो जाए।

कोट थाय मींडूं मूके सातमूं, दस कोट करूं वली मूकी आठमूं।
नव मूकीने करूं अबज, गुण गणती जाऊं करती कवज।। १३ ।।

सातवीं बिन्दी रखकर करोड़ की गिनती करूं। आठवीं बिन्दी रखकर दस करोड़ की गिनती करूं। नौवीं बिन्दी रखकर अरब (अबज) की गिनती गिनूं। धनी के गुण गिनती जाऊं और अपने दिल में रखती जाऊं।

दस मूकीने करूं अबज दस, ए गुण गणतां मूने आवे घणों रस।
अग्यार मूकीने करूं खरबज एक, लखतां गुण धणी ग्रहूं वसेक।। १४ ।।

दसवीं बिन्दी रखकर दस अरब की गिनती गिनूं। यह गुण गिनने में मुझे बड़ा आनन्द आता है। ग्यारहवीं बिन्दी रखकर एक खरब की गिनती गिनूं और लिखते हुए धनी के गुणों को खास कर ग्रहण करती जाऊं।

बार करीने दस करूं खरब, आगे कोणे नव गणया गुण एव।
तारतम जोतां बीजो कोण गणसे, अम टाली कोई थयो न थासे।। १५ ।।

बारहवीं बिन्दी रखकर दस खरब की गिनती गिनूं। हमसे पहले इस प्रकार से धनी के गुण किसी ने नहीं गिने। तारतम के ज्ञान के बिना दूसरा कौन गिनेगा? हमारे अलावा न कोई ऐसा हुआ है न होगा।

हवे गुण गणूं मारा धणीतणां, पण कागल स्याही लेखणो मांहें मणां।
मणां तो कहूं छूं जो बेठी माया मांहें, नहीं तो मणां मूने नथी कोई क्यांहें।। १६ ।।

अब मैं अपने धनी के गुण गिनती हूं, परन्तु कागज, स्याही और लेखनी की कमी है। मैं माया में बैठी हूं, इसलिए कमी लग रही है। नहीं तो किसी तरह की भी कमी नहीं है।

साथ माटे हूं करूं रे पुकार, जोऊं वासना चौद लोक मंझार।
मेली वासनाओने रास रमाडुं, धणीना गुण हूं गणीने देखाडुं।। १७ ।।

सुन्दरसाथ के वास्ते मैं पुकार करके कहती हूं। चौदह लोकों में अपनी आत्माओं को ढूंढती हूं। ब्रह्मसृष्टि को इकट्ठा करके उनको रास खिलाएं और धनी के गुण गिनकर दिखाएं।

Nijanand App

नील करूं मींडा मूकीने तेर, ए गुण गणतां मूने टली गयो फेर।
हवे चौद करूं दस नीलने काज, गुण गणवा मारा धणी श्री राज।। १८ ।।

तेरहवीं बिन्दी रखकर नील की गिनती करूं। ऐसे गुण गिनने में मेरा फेरा (चक्कर) सफल हो जाए (जीवन सफल हो जाए)। अब दस नील के वास्ते चौदहवीं बिन्दी रखूं, क्योंकि मुझे तो धाम धनी के गुण गिनने हैं।

पनर करीने करूं गुण पार, दस पार करूं सोल गुणने आधार।
पदम करवाने करूं सतर, हूं अरधांग मारो धणी ए घर।। १९ ।।

पन्द्रहवीं बिन्दी रखकर एक पार की गिनती गिनूं और सोलहवीं बिन्दी रखकर दस पार की गिनती गिनूं। सत्रहवीं बिन्दी रखकर पदम की गिनती गिनूं। मैं अर्द्धांगिनी हूं, यह मेरे धनी और यह मेरा घर है।

अढार करीने दस करूं पदम, मूने वाला लागे धणीना गुण एम।
खोईण करूं करीने नव दस, गुणने बंधाई वालो आव्यो मारे वस।। २० ।।

अठारहवीं बिन्दी रखकर दस पदम की गिनती लिखूं। इस तरह से मेरे धनी के गुण मुझे बड़े प्यारे लगते हैं। उन्नीसवीं बिन्दी रखकर खोईण की गिनती करूं तो इस गुण के एहसान के बन्धन में वालाजी मेरे वश में आ जाएं।

वीस करीने दस करूं खोईण, एकवीस करूं जेम थाय गुण जोण
दस जोण करूं मूकीने दस बार, गुण गणतां घणूं जीती आधार।। २१ ।।

बीसवीं बिन्दी रखकर दस खोईण की गिनती करूं। इक्कीसवीं बिन्दी रखकर जोण की गिनती करूं। बाईसवीं बिन्दी रखकर दस जोण की गिनती गिनूं। गुण गिनते-गिनते धनी को जीतती जाऊं।

अंक करूं गुण लखीने त्रेवीस, दस अंक करूं मींडा मूकीने चोवीस।
हवे पचवीस कीधे गुण एक संख थाय रदे रे मोटो गुण घणा समाय।। २२ ।।

तेईसवीं बिन्दी रखकर अंक की गिनती करूं। चौबीसवीं बिन्दी रखकर दस अंक की गिनती करूं। अब पच्चीसवीं बिन्दी रखकर एक संख की गिनती गिनूं। मेरा हृदय बहुत बड़ा है, उसमें धनी के गुण समाते जाते हैं।

हवे छवीस करीने करूं दस संख, वली लखतां लखतां चीफूं निसंख।
सुरिता करूं मींडा मूकीने सतावीस, ए गुण धणी जोई हूं पगला भरीस।। २३ ।।

अब छब्बीसवीं बिन्दी रखकर दस संख की गिनती गिनूं। फिर लिखते-लिखते कंजूसी करती हूं। अब सत्ताईसवीं बिन्दी रखकर सुरिता तक गिनूं। ऐसे धनी के गुण देखकर मैं उनके कदमों पर कदम रखूंगी।

अठावीसे दस सुरिता थाय, वीस नव करूं जेम पती गुण ग्रहाय।
दसपती गुण हूं त्रीसज करूं, ए गुण गणी मारा चितमां धरूं।। २४ ।।

अट्ठाईसवीं बिन्दी रखकर दस सुरिता की गिनती गिनूं। उनतीसवीं बिन्दी रखकर पती तक के गुण ग्रहण करूं। तीसवीं बिन्दी रखकर दस पती तक के गुण गिनूं और यह सब गुण गिनकर मैं अपने चित्त में धरूं।

Nijanand App

एकत्रीसे एम अंत केहेवाय, वली लेखणो कागल स्याहीनी चिंता थाय।
जाणूं रखे खपी जाय अध विच, त्यारे केम गुण गणीने ग्रहीस मारे चित।। २५ ।।

इकत्तीसवीं बिन्दी रखकर अन्त तक की गिनती गिनूं। फिर लेखनी, कागज और स्याही की चिन्ता हो रही है, मानो लिखते-लिखते बीच में ही खत्म न हो जाएं। फिर धनी के गुण गिनकर चित्त में कैसे धारण करूंगी ?

बत्रीस करीने दस अंतज करूं, ए गुण एकांत मारा चितमां धरूं।
मध गुण करूं त्रेतीसज करी, रखे कागल स्याही लेखणो जाय वरी।। २६ ।।

बत्तीसवीं बिन्दी रखकर दस अन्त की गिनती करूं। यह सभी गुण एकान्त में अपने चित्त में धरूं। तैतीसवीं बिन्दी रखकर मध की गिनती गिनूं। ऐसा न हो कि कागज, स्याही और लेखनी खत्म हो जाए।

हवे दस मध करूं करीने चोंत्रीस, गुण मारा वालाना चितमां ग्रहीस।
हवे एकडा ऊपर पांत्रीस मींडा धरूं, परार्ध करीने लेखो मारो करूं।। २७ ।।

अब चौंतीसवीं बिन्दी रखकर दस मध की गिनती गिनूं और अपने वालाजी के गुणों को चित्त में रखूं। अब फिर एक के अंक के ऊपर पैंतीसवीं बिन्दी रखूं और परार्ध की गिनती करूं।

एणे लेखे कांई गणती न थाय, मारा धणीतणां गुण एम न गणाय।
हवे लेखो करूं साथ जो जो विचार, लखवा गुण मारा प्राणना आधार।। २८ ।।

एक तरह से देखो तो गिनती ऐसे नहीं होती। मेरे धनी के गुण इस तरह से नहीं लिखे जाते। अब मैं हिसाब करती हूं। हे सुन्दरसाथ! विचार करके देखो, क्योंकि अपने प्राणाधार धनी के गुण लिखने हैं।

एक मींडे थाय परार्ध गणां, एणी सनंधें वाधे बीजे एह तणां।
एम करतां ए जेटला थाय, वली एहेना एटला गुण गणाय।। २९ ।।

एक बिन्दी रखने से धनी के गुण परार्ध गुना बढ़ जाते हैं और इसी तरह से धनी के दूसरे गुण बढ़ते रहते हैं। ऐसा करने में जो गिना गया है फिर से इसी प्रकार से इतने सभी गुण गिनते जाएं।

ए गुण मारा जीवमां ग्रहाय, पण बीहती लखूं जाणुं रखे कागले न समाय।
लेखणोनी मूने चिंता थाय, जाणूं घडतां घडतां रखे उतरी जाय।। ३० ।।

इन गुणों को गिनकर मैं अपने जीव में ग्रहण करती हूं, पर डरती हूं कि कहीं ऐसा न हो कि लिखने से कहीं कागज में न समाये। कलमों की चिन्ता हो रही है कि नोंक बनाते-बनाते कलमें ही खत्म न हो जाएं।

हूं ता स्याहीनी पण करूं छूं जो वाण, जाणूं रखे लखतां न पोहोंचे निरवाण।
एम मूकतां मूकतां मींडा रह्या भराय, कागल स्याही लेखणो खपी जाय।। ३१ ।।

मैं तो स्याही की भी कंजूसी करती हूं। ऐसा न हो कि लिखते-लिखते अन्त तक न पहुंचे (कहीं बीच में खत्म न हो जाए)। इसलिए बिन्दी रख-रखकर लिखने से कागज भर गया। स्याही और कलमें खत्म हो गई।

ए कागल एम रह्यो भराई, कोरमेर सघली रही समाई।
कीडी पग मूकवानो नथी क्याहें ठाम, किहां ने मूकूं मींडूं जेहेनूं नाम।। ३२ ।।

यह कागज ऐसा भर गया कि चारों किनारों से भी बिन्दयों से भर गया। अब चींटी के पग भर भी जगह नहीं बची, तो जिसे बिन्दी कहते हैं उसे कहां रखूं?

Nijanand App

हवे ए गुण गण मारा जीव तूं रही, जेम जाणजे तेम राखजे ग्रही।
ए गुणतां में घणुं ए गणाय, पर मारा धणीतणां गुण एहमा न समाय।। ३३ ।।

हे जीव! तू अब गुण गिनकर जैसा बने वैसा हृदय में रख। यह तो मैंने बड़ी कठिनाई से गिने हैं, परन्तु मेरे धनी के गुण इसमें समाते नहीं हैं।

हवे वली करूं बीजो लखवानो ठाम, लखवा गुण मारा धनी श्री धाम।
जेटला गुण ए माहें थया, एटली दाण एहवा कागल भरया।। ३४ ।।

अब दूसरा लिखने का ठिकाना सोचती हूं। मुझे अपने धाम धनी के गुण लिखने हैं। जितने गुण इस कागज में लिखे गए, उतनी ही बार ऐसे कागज भरे गए।

एवा कागल एवी स्याही लेखण, माहें झीणा आंक लख्या अतिघण।
ए लेखणोंनी में जोई अणी, पण हजी कांई करी न सकी झीणी अतंत घणी।। ३५ ।।

यह कागज, यह स्याही और यह कलमें तथा बारीक अंक बहुत ज्यादा लिखे। मैंने लेखनी की नोंक भी देखी और इससे अधिक बारीक नोंक नहीं कर सकी।

जेटला गुण ए गणतां थाय, ए गुण मारा जीवमां समाय।
लेखणो करवाने बुध करे छे बल, घडूं ने समारूं सहु काढीने बल।। ३६ ।।

जितने गुण इस गिनती में हुए यह गुण मैंने अपने जीव में रखे। मेरी बुद्धि इन सबका हिसाब करना सोचती है और पूर्ण शक्ति से इसका हिसाब रखना चाहती है।

कथुआना पगनो गुण जेटलो भाग, लेखणोंनी टांको में चीरियों जोई लाग।
एणी टांके आंक लख्या एम करी, एटली दाण एहवा कागल फरी फरी।। ३७ ।।

कथुवा (वह कीड़ा जो कागज खाता है, वह इतना छोटा होता है कि उसे दूरबीन से ही देखा जाता है) के पैर के हिस्से के समान मैंने कलमों की नोंक चीरकर बनाई। इस तरह की नोंकों से ऐसे बारीक अंक लिखे और बार-बार ऐसे कागज भरे।

एम लखी लखीने में गणया गुण, पण मारा धणी तणा गुण छे अतिघण।
ए गुण मलीने जेटला थया, ते तां में मारा जीवमां ग्रह्या।। ३८ ।।

ऐसे लिख-लिखकर मैंने धनी के गुण गिने, परन्तु मेरे धनी के गुण तो बहुत अधिक हैं। यह गुण गिनकर जितने हुए, वह सब मैंने जीव में ग्रहण कर लिए।

ए लखतां मूने केटली थई छे वार, हवे एहेनो निरमांण काढवो निरधार।
गुण जेतमों भाग एक खिणनो आधार, एटली थई छे मूने लखतां वार।। ३९ ।।

इन गुणों को गिनने में समय कितना लगा, इसका भी हिसाब लिखना है। जितने गुण गिने हैं एक पल के उतने ही टुकड़े करो, तो इतने ही समय में मैंने गुण लिखे हैं।

एम लखी लखीने में लख्या अपार, हवे वली जोऊं केटली थई मूने वार।
गुण जेटला महाप्रले थाय, एम लख्या में तेणें ताय।। ४० ।।

इस तरह से लिख-लिखकर मैंने बेशुमार गुण लिखे। अब फिर देखती हूं कि मुझे कितना समय लगा। जितने गुण लिखे उतने ही महाप्रलय बीते। उसी जोश में मैंने सारे गुणों को लिखा है।

Nijanand App

वचमां स्वांस न खाधो एक, वेल न कीधी कांई लखतां वसेक।
एहेनो में सरवालो किध, श्री सुंदरबाईए सिखामण दिध।। ४१ ।।

गुण लिखते समय थोड़ा भी समय गंवाया नहीं। इसका मैंने हिसाब लगाया, तो (श्यामाजी ने) सुन्दरबाई ने यह मुझे सिखापन (शिक्षा) दिया।

हवे जो जो साथ लेखूं एम लख्यूं जोर, तोहे मारा जीवनी हामनी न चंपाणी कोर।
जीव छे मारो मोटो पात्र, हजी जीव जाणे ए लख्यूं तुछ मात्र।। ४२ ।।

हे सुन्दरसाथ! अब देखो मैंने यह सब लिखा, फिर भी मेरे जीव की चाह पूरी नहीं हुई। जीव का पात्र बहुत बड़ा है। सारे गुण उसमें रखने के बाद लगता है कि वह पात्र अत्यधिक खाली है।

गुण तो पाछल हजी भरया भंडार, गुण जेटला भंडार में गणियां आधार।
गणतां गणतां पाछल दीसे अपार, तेहेनो निरमाण काढवो निरधार।। ४३ ।।

गुणों के तो अभी पीछे भण्डार भरे पड़े हैं। जितने धनी के गुण हैं, उतने ऐसे भण्डार के भण्डार गिने। फिर भी गिनते-गिनते पीछे अपार गुण दिखते हैं। उनका भी हिसाब निश्चित रूप से निकालना ही है।

हूं नव काढूं तो बीजो काढे कोंण, निरमाण काढी ग्रहूं धणीतणा गुण।
पाछला भंडारनूं लेखूं दऊं वल्लभ, ए लेखूं करतां मूने नथी रे दुर्लभ।। ४४ ।।

इन गुणों का हिसाब मैं नहीं निकालूंगी, तो दूसरा और कौन निकालेगा? हिसाब निकाल कर धनी के गुणों को ग्रहण करूंगी। अपने प्रीतम को पीछे बचे हुए गुणों के भण्डार का हिसाब दूंगी। यह हिसाब करना भी मुझे कठिन नहीं है।

सर्वे गुण गणी जीवे कीधां मारे हाथ,हूं तां प्रगट कहूं छूं मारा प्राणना नाथ।
ए सर्वे तो कहूं जो गुण ऊभा थाय, गुण मननी पेरे वाधता जाय।। ४५ ।।

सब गुणों को गिनकर जीव ने मेरे सुपुर्द कर दिए। फिर भी मेरे प्राणनाथ के गुण तो पल-पल में बढ़ते ही हैं। यह सब तो सम्भव हो, यदि गुण स्थिर रहें। गुण तो मन की गति के अनुसार बढ़ते जाते हैं।

एक खिण में वहेच्यूं मारा श्री राज, ए गुण जेटला कीधां तेहेना भाग।
तेहेवा एक भागना में ए गुण कह्या, ए सर्वे मारा जीवमां ग्रह्या।। ४६ ।।

एक पल के मैंने उतने हिस्से किए जितने गुण हैं। फिर उसके एक हिस्से के गुणों को मैंने कहा है और जीव में ग्रहण किया है।

ए गुण गणतां मारा कारज सरया, भलेरे मायामां आपण देह धरया।
आखा अवतारनी केही कहूं वात, कांईक प्रेमल रदे मूने आवी प्राणनाथ।। ४७ ।।

यह गुण गिनते-गिनते मेरे काम सिद्ध हो गए। भले ही हमने माया में देह धारण की है। सभी अवतार जो पांच बार आए, उनकी कैसे बात करूं? उनमें से अपने प्राणनाथ की मुझे थोड़ी-सी पहचान हुई है (सुगन्ध मिली है)।

Nijanand App

ए गुण गणिया में निद्रा मंझार, नहीं तो एम केम गणूं मारा जीवना आधार।
हवे वातडियो करसूं इछा तमतणी, आंही जाग्यानी मूने हाम छे घणी।। ४८ ।।

इन गुणों की गिनती मैंने झूठे शरीर से माया में की है। नहीं तो मेरे प्राणों के आधार के गुण क्या ऐसे गिने जाते हैं? हे धनी! अब आपकी इच्छानुसार ही बात करूंगी। इस संसार में जागने की मुझे यहां प्रबल इच्छा है।

वाला तमे आव्या छो माया देह धरी, साथ तणी मत माया ए गई फरी।
हवे अनेक हांसी थासे जाग्या पछी घरे, ज्यारे साथे माया मांगी कहे अमने सूं करे। ४९ ।।

हे वालाजी! तुम देह धारण कर इस माया में आए हो। साथ की बुद्धि माया में बदल गई है। घर में जागने पर बड़ी हंसी होगी, क्योंकि सब सुन्दरसाथ ने खेल मांगने से पहले कहा था कि माया हमारा क्या करेगी?

तमे ततखिण लीधी अमारी खबर, लई आव्या तारतम देखाड्या घर।
आपण जाग्या पछी हांसी करसूं जोर, घरने विसारी माया ए कीधा चोर।। ५० ।।

हे धनी! आपने तुरन्त ही हमारी यहां खबर ली और जागृत बुद्धि का ज्ञान देकर घर की पहचान कराई। अब परमधाम में जागने के बाद खूब हंसी करेंगे। माया ने हमें अपने घर को भुलाकर चोर की तरह बिठा रखा है।

हवेने करसूं जाग्या पछी वात, कांई अमल चढ्यूं छे साथने निघात।
तारतम केहेता हजी वले न सार, नहीं तो अनेक विधे कह्यूं प्राणने आधार।। ५१ ।।

अब घर में जागने के बाद आपसे बात करूंगी। यहां सब साथ माया के नशे (बहुत अधिक) में बेहोश पड़े हैं। तारतम से भी इनको होश वापस नहीं आ रहा है। प्राणाधार ने इनको तरह-तरह से समझाया भी है।

इंद्रावती लिए भामणा गुण जेटला, तमे आंही सुख दीधा अमने एटला।
घरना सुखनी आंही केही कहूं वात, हवे सुख घरना नी घेर करसूं विख्यात।। ५२ ।।

हे धनी! आपने यहां मुझे इतने अधिक सुख दिए हैं। जितने आपके गुण हैं। यदि उतनी बार भी मैं कुर्बान हो जाऊं तो भी कम है। फिर परमधाम के सुख की बात यहां क्या करूं? घर के सुख की बातें घर पर ही करेंगे।

चरणे लाग कहे इंद्रावती, गुण न देखे किन एक रती।
धणी जगाडी देखाडसे गुण, हांसी थासे त्यारे अति घण।। ५३ ।।

श्री इन्द्रावतीजी चरणों में लगकर कहती हैं कि किसी ने भी वालाजी की मेहर को नहीं देखा। जब वालाजी परमधाम में जगाकर अपनी मेहर (कृपा) बताएंगे तो बहुत बड़ी हंसी होगी।

|| प्रकरण || १२ || चौपाई || ३२७ ||

सांभलो साथ मारा सिरदार, वचन कहूं ते ग्रहो निरधार।
एटला गुण आपणसूं करी, बेठा आपणमां माया देह धरी।। १ ।।

हे मेरे श्रेष्ठ सुन्दरसाथ! सुनो, मैं जो वचन कहती हूं उनको ग्रहण करो। धनी ने हमारे ऊपर बड़ी मेहर की है और हमारे बीच माया में तन धारण करके बैठे हैं।

Nijanand App

ए गुण गणिया में निद्रा मंझार, नहीं तो एम केम गणूं मारा जीवना आधार।
हवे वातडियो करसूं इछा तमतणी, आंही जाग्यानी मूने हाम छे घणी।। ४८ ।।

इन गुणों की गिनती मैंने झूठे शरीर से माया में की है। नहीं तो मेरे प्राणों के आधार के गुण क्या ऐसे गिने जाते हैं? हे धनी! अब आपकी इच्छानुसार ही बात करूंगी। इस संसार में जागने की मुझे यहां प्रबल इच्छा है।

वाला तमे आव्या छो माया देह धरी, साथ तणी मत माया ए गई फरी।
हवे अनेक हांसी थासे जाग्या पछी घरे, ज्यारे साथे माया मांगी कहे अमने सूं करे। ४९ ।।

हे वालाजी! तुम देह धारण कर इस माया में आए हो। साथ की बुद्धि माया में बदल गई है। घर में जागने पर बड़ी हंसी होगी, क्योंकि सब सुन्दरसाथ ने खेल मांगने से पहले कहा था कि माया हमारा क्या करेगी?

तमे ततखिण लीधी अमारी खबर, लई आव्या तारतम देखाड्या घर।
आपण जाग्या पछी हांसी करसूं जोर, घरने विसारी माया ए कीधा चोर।। ५० ।।

हे धनी! आपने तुरन्त ही हमारी यहां खबर ली और जागृत बुद्धि का ज्ञान देकर घर की पहचान कराई। अब परमधाम में जागने के बाद खूब हंसी करेंगे। माया ने हमें अपने घर को भुलाकर चोर की तरह बिठा रखा है।

हवेने करसूं जाग्या पछी वात, कांई अमल चढ्यूं छे साथने निघात।
तारतम केहेता हजी वले न सार, नहीं तो अनेक विधे कहूं प्राणने आधार।। ५१ ।।

अब घर में जागने के बाद आपसे बात करूंगी। यहां सब साथ माया के नशे (बहुत अधिक) में बेहोश पड़े हैं। तारतम से भी इनको होश वापस नहीं आ रहा है। प्राणाधार ने इनको तरह-तरह से समझाया भी है।

इंद्रावती लिए भामणा गुण जेटला, तमे आंही सुख दीधा अमने एटला।
घरना सुखनी आंही केही कहूं वात, हवे सुख घरना नी घेर करसूं विख्यात।। ५२ ।।

हे धनी! आपने यहां मुझे इतने अधिक सुख दिए हैं। जितने आपके गुण हैं। यदि उतनी बार भी मैं कुर्बान हो जाऊं तो भी कम है। फिर परमधाम के सुख की बात यहां क्या करूं? घर के सुख की बातें घर पर ही करेंगे।

चरणे लाग कहे इंद्रावती, गुण न देखे किन एक रती।
धणी जगाडी देखाडसे गुण, हांसी थासे त्यारे अति घण।। ५३ ।।

श्री इन्द्रावतीजी चरणों में लगकर कहती हैं कि किसी ने भी वालाजी की मेहर को नहीं देखा। जब वालाजी परमधाम में जगाकर अपनी मेहर (कृपा) बताएंगे तो बहुत बड़ी हंसी होगी।

|| प्रकरण || १२ || चौपाई || ३२७ ||

सांभलो साथ मारा सिरदार, वचन कहूं ते ग्रहो निरधार।
एटला गुण आपणसूं करी, बेठा आपणमां माया देह धरी।। १ ।।

हे मेरे श्रेष्ठ सुन्दरसाथ! सुनो, मैं जो वचन कहती हूं उनको ग्रहण करो। धनी ने हमारे ऊपर बड़ी मेहर की है और हमारे बीच माया में तन धारण करके बैठे हैं।

Nijanand App

भरम भाजो वचन जोई करी, निद्रा घेन मूको परहरी।
श्री धामतणां धणी केहेवाए, ते आवी बेठा आपण मांहें।। २ ।।

इन वचनों को विचारकर अपने संशय मिटाओ और नींद के नशे (माया का नशा) को त्यागो। अपने धाम धनी हमारे बीच में बैठे हैं।

हवे सेवा कीजे अनेक विध करी, अने आपण काजे आव्या फरी।
वली अवसर आव्यो छे हाथ, चेतन करी दीधो प्राणनाथ।। ३ ।।

अब इन धाम धनी की हर तरह से सेवा करें, क्योंकि वह हमारे कारण ही दुबारा माया में तन धारण करके आए हैं। फिर से अवसर अपने हाथ आया है। अपने श्री प्राणनाथ हमको जगा रहे हैं।

ए ऊपर हवे सूं कहूं, श्री वालाजीना चरणज ग्रहूं।
कर जोडी करूं विनती, अने अलगी न थाऊं चरण थकी।। ४ ।।

इसके ऊपर अब क्या कहूं? सिवाय इसके कि वालाजी के चरणों को पकड़ लूं और हाथ जोड़कर विनती करूं कि हे धनी! अब इन चरणों से कभी भी अलग न रहूंगी।

।। प्रकरण ।। १३ ।। चौपाई ।। ३३१ ।।

जाटी भाषा में–प्रबोध

मूंजा अंध अभागी जीव जोर रे, तूं कीं सुतो हित।
पर पर धणिए जगाइया, तोके घर न सूझे कित।। १ ।।

हे मेरे अन्धे अभागे जीव! तू यहां क्यों सोता है? ताकत लगाकर उठ। धनी ने तुझे तरह-तरह से जगाया फिर भी तुझे घर की सुध नहीं आई।

अगेनी तू कुरो केओ, जडे पिरी हल्या साणे।
से अजां न उथिए अकरमी, भूंडा सुते हित केही सांगायसे।। २ ।।

आगे भी तूने क्या किया? जब प्रीतम अपने सामने चले गए। हे अकर्मी जीव! तू अभी तक नहीं उठता। हे पापी! तू यहां किस (सम्बन्ध) कारण से सोया पड़ा है?

पर पोतेजी न्हार तूं निखर, वलहो न डिसे अजां छेह।
अवगुण न डिसे पांहिंजा, पिरी मेहेर करी वरी एह।। ३ ।।

हे दुष्ट! तू अपनी तरफ देख। धनी की जुदाई तुझे अभी भी नहीं दिखती। तू अपने अवगुणों को नहीं देखता। धनी ने फिर से कृपा की है।

वभिरकां पिरी तो कारण, आया माया मंझ।
को न सुजाणे सिपरी, न तां थींदिए डूरण डंझ।। ४ ।।

दूसरी बार प्रीतम तुम्हारे वास्ते माया में आए हैं। तुम अपने प्रीतम की पहचान क्यों नहीं करते? नहीं पहचाना तो कठिन से कठिन दुःख होगा।

पांण पांहिंजो पस तूं, अंख उघाडे न्हार।
खीर पाणी जी परख पधरी, हिन तारतम महें विचार।। ५ ।।

तू स्वयं अपनी तरफ आंख खोलकर देख, तो जागृत बुद्धि (तारतम) के विचार से दूध-पानी की (माया-ब्रह्म) पहचान साफ है।

Nijanand App

भरम भाजो वचन जोई करी, निद्रा घेन मूको परहरी।
श्री धामतणां धणी केहेवाए, ते आवी बेठा आपण मांहें।। २ ।।

इन वचनों को विचारकर अपने संशय मिटाओ और नींद के नशे (माया का नशा) को त्यागो। अपने धाम धनी हमारे बीच में बैठे हैं।

हवे सेवा कीजे अनेक विध करी, अने आपण काजे आव्या फरी।
वली अवसर आव्यो छे हाथ, चेतन करी दीधो प्राणनाथ।। ३ ।।

अब इन धाम धनी की हर तरह से सेवा करें, क्योंकि वह हमारे कारण ही दुबारा माया में तन धारण करके आए हैं। फिर से अवसर अपने हाथ आया है। अपने श्री प्राणनाथ हमको जगा रहे हैं।

ए ऊपर हवे सूं कहूं, श्री वालाजीना चरणज ग्रहूं।
कर जोडी करूं विनती, अने अलगी न थाऊं चरण थकी।। ४ ।।

इसके ऊपर अब क्या कहूं? सिवाय इसके कि वालाजी के चरणों को पकड़ लूं और हाथ जोड़कर विनती करूं कि हे धनी! अब इन चरणों से कभी भी अलग न रहूंगी।

।। प्रकरण ।। १३ ।। चौपाई ।। ३३१ ।।

जाटी भाषा में–प्रबोध

मूंजा अंध अभागी जीव जोर रे, तूं कीं सुतो हित।
पर पर धणिए जगाइया, तोके घर न सूझे कित।। १ ।।

हे मेरे अन्धे अभागे जीव! तू यहां क्यों सोता है? ताकत लगाकर उठ। धनी ने तुझे तरह-तरह से जगाया फिर भी तुझे घर की सुध नहीं आई।

अगेनी तू कुरो केओ, जडे पिरी हल्या साणे।
से अजां न उथिए अकरमी, भूंडा सुते हित केही सांगायसे।। २ ।।

आगे भी तूने क्या किया? जब प्रीतम अपने सामने चले गए। हे अकर्मी जीव! तू अभी तक नहीं उठता। हे पापी! तू यहां किस (सम्बन्ध) कारण से सोया पड़ा है?

पर पोतेजी न्हार तूं निखर, वलहो न डिसे अजां छेह।
अवगुण न डिसे पांहिंजा, पिरी मेहेर करी वरी एह।। ३ ।।

हे दुष्ट! तू अपनी तरफ देख। धनी की जुदाई तुझे अभी भी नहीं दिखती। तू अपने अवगुणों को नहीं देखता। धनी ने फिर से कृपा की है।

वभिरकां पिरी तो कारण, आया माया मंझ।
को न सुजाणे सिपरी, न तां थींदिए डूरण डंझ।। ४ ।।

दूसरी बार प्रीतम तुम्हारे वास्ते माया में आए हैं। तुम अपने प्रीतम की पहचान क्यों नहीं करते? नहीं पहचाना तो कठिन से कठिन दुःख होगा।

पांण पांहिंजो पस तूं, अंख उघाडे न्हार।
खीर पाणी जी परख पधरी, हिन तारतम महें विचार।। ५ ।।

तू स्वयं अपनी तरफ आंख खोलकर देख, तो जागृत बुद्धि (तारतम) के विचार से दूध-पानी की (माया-ब्रह्म) पहचान साफ है।

Nijanand App

अगेनी अंखियूं फूटियूं, भूंडा हाणें तूं कींक सांगाए।
ही जोगवाई हथ न रेहेंदी, पोय पर न थिंदिए कांए।।६ ।।

पहले भी तेरी आंखें फूटी रहीं। हे पापी! अब तो तू कुछ पहचान। यह तन, समय, सामग्री हाथ में नहीं रहने वाली। पीछे तेरा क्या हाल होगा? (बुरी हालत होगी)।

अगेतां अकरमी थेओ भूंडा, हांणे तूं पाण संभार।
पिरी पले पले तोके थका, भूंडा अजां न वरे तोके सार।।७ ।।

पहले भी तू कर्महीन हो गया था। अब तो तू अपने को संभाल। प्रीतम तरह-तरह से कहकर थक गए। हे पापी! तुझे अभी भी सुध नहीं आती।

वभिरकां पिरी तो कारण, हांणे आया माया मंझ।
धाऊं पाइंदे पिरी वभिरकां, तोके थीअण आई संझ।।८ ।।

अब प्रीतम माया में तेरे लिए दूसरी बार आये हैं। दूसरी बार प्रीतम जोर-जोर से पुकार कर कह रहे हैं। तेरा समय समाप्त होने को आया है (तेरी समझ का समय हो गया है)।

अंग मरोडे न उथिए, पासे फजर पसी हींए मंझ।
पोए कारी रात में कीं न सुझे, से तां डुखे संदानी डंझ।।९ ।।

यदि आलस्य छोड़कर 'अब भी सवेरा हो गया है' ऐसा हृदय में विचार कर नहीं उठता, तो पीछे अंधेरी रात में कुछ भी दिखाई नहीं देगा और हमेशा के लिए दुःख ही दुःख हो जाएगा।

तारतम तूतां न्हार विचारे, जा पिरी आंदो तो कारण।
हेतरा भट बरंदे मथे, तोके अजां सा न वंजे घारण।।१० ।।

हे जीव! प्रीतम तेरे लिए जो जागृत बुद्धि का ज्ञान (तारतम) लाए हैं, उसको विचारो और देखो। इतनी आग (ज्ञान की फटकार) तेरे माथे पर हुई फिर भी तू नींद (माया) को अभी तक नहीं छोड़ता।

॥ प्रकरण ॥ १४ ॥ चौपाई ॥ ३४१ ॥

मूंहजा जीव अभागी रे, हाणे तूं जिन चुके हिन वेर।
तो के नी हिन अंधारे मंझां, ई वेओ कढंदो केर।।१ ।।

हे मेरे अभागे जीव! तू इस बार मत भूलना। तुझे इस माया के अंधेरे से इस तरह दूसरा कौन निकालेगा?

गुण तूं हिकडो न्हार संभारे, संदो सिपरियन।
जाग तूं मूंजा जीव अभागी, को सुते सारूथी मन।।२ ।।

हे अभागे जीव! प्रीतम के एक भी गुण को तू देखे और पहचाने तो तू जाग जाएगा। मन में सुख समझ कर क्यों सो रहा है?

पेरो वेण तो केहा कढया, से कुरो मथियण मन मंझा।
बुध मन तोहेजा बेही रेहेंदा, हांणें क्रोध कढंदे साहा।।३ ।।

पहले तूने क्या कहा था? तूने मन में क्या विचार किया है? तेरे मन और बुद्धि यहीं बैठे रह जाएंगे। अब धनी तुझ पर गुस्सा करके ले जाएंगे।

Nijanand App

अगेनी अंखियूं फूटियूं, भूंडा हाणें तूं कींक सांगाए।
ही जोगवाई हथ न रेहेंदी, पोय पर न थिंदिए कांए।। ६ ।।

पहले भी तेरी आंखें फूटी रहीं। हे पापी! अब तो तू कुछ पहचान। यह तन, समय, सामग्री हाथ में नहीं रहने वाली। पीछे तेरा क्या हाल होगा? (बुरी हालत होगी)।

अगेतां अकरमी थेओ भूंडा, हांणे तूं पाण संभार।
पिरी पले पले तोके थका, भूंडा अजां न वरे तोके सार।। ७ ।।

पहले भी तू कर्महीन हो गया था। अब तो तू अपने को संभाल। प्रीतम तरह-तरह से कहकर थक गए। हे पापी! तुझे अभी भी सुध नहीं आती।

वभिरकां पिरी तो कारण, हांणे आया माया मंझ।
धाऊं पाइंदे पिरी वभिरकां, तोके थीअण आई संझ।। ८ ।।

अब प्रीतम माया में तेरे लिए दूसरी बार आये हैं। दूसरी बार प्रीतम जोर-जोर से पुकार कर कह रहे हैं। तेरा समय समाप्त होने को आया है (तेरी समझ का समय हो गया है)।

अंग मरोडे न उथिए, पासे फजर पसी हींए मंझ।
पोए कारी रात में कीं न सुझे, से तां डुखे संदानी डंझ।। ९ ।।

यदि आलस्य छोड़कर 'अब भी सवेरा हो गया है' ऐसा हृदय में विचार कर नहीं उठता, तो पीछे अंधेरी रात में कुछ भी दिखाई नहीं देगा और हमेशा के लिए दुःख ही दुःख हो जाएगा।

तारतम तूतां न्हार विचारे, जा पिरी आंदो तो कारण।
हेतरा भट बरंदे मथे, तोके अजां सा न वंजे घारण।। १० ।।

हे जीव! प्रीतम तेरे लिए जो जागृत बुद्धि का ज्ञान (तारतम) लाए हैं, उसको विचारो और देखो। इतनी आग (ज्ञान की फटकार) तेरे माथे पर हुई फिर भी तू नींद (माया) को अभी तक नहीं छोड़ता।

॥ प्रकरण ॥ १४ ॥ चौपाई ॥ ३४१ ॥

मूंहजा जीव अभागी रे, हाणे तूं जिन चुके हिन वेर।
तो के नी हिन अंधारे मंझां, ई वेओ कढंदो केर।। १ ।।

हे मेरे अभागे जीव! तू इस बार मत भूलना। तुझे इस माया के अंधेरे से इस तरह दूसरा कौन निकालेगा?

गुण तूं हिकडो न्हार संभारे, संदो सिपरियन।
जाग तूं मूंजा जीव अभागी, को सुते सारूथी मन।। २ ।।

हे अभागे जीव! प्रीतम के एक भी गुण को तू देखे और पहचाने तो तू जाग जाएगा। मन में सुख समझ कर क्यों सो रहा है?

पेरो वेण तो केहा कढया, से कुरो मथियण मन मंझा।
बुध मन तोहेजा बेही रेहेंदा, हांणें क्रोध कढंदे साहा।। ३ ।।

पहले तूने क्या कहा था? तूने मन में क्या विचार किया है? तेरे मन और बुद्धि यहीं बैठे रह जाएंगे। अब धनी तुझ पर गुस्सा करके ले जाएंगे।

Nijanand App

जीव निरजो को थिए, तोके अजां न लगे घाए।
सिपरी संभारे करे, भूंडा को न उडाइए अरवाए।।४।।

हे जीव! तू इतना निर्लज्ज (बेशर्म) क्यों हो गया? तुझे अभी भी चोट नहीं लगी। हे पापी जीव! धनी की पहचान कर, तू अपनी अरवाह उड़ा क्यों नहीं देता (तन क्यों नहीं छोड़ देता)।

जे तूं चुके जीव हिन भेरां, त तां सुणज मूंजी गाल।
जीव कढंदुस जोरे तोके, करे भुछा हवाल।।५।।

हे जीव! मेरी बात सुन। यदि तू इस बार भी चूक गया तो तुझे जबरदस्ती निकाल कर बुरी हालत करेंगे।

अगेनी तो भुछी केई, जीव हाणें तूं पाण संभाल।
सजण तोके साणें कोठींन था, खिल्ली करींन था गाल।।६।।

पहले भी तूने बुरा किया। हे जीव! अब तो तू अपने आपको संभाल। प्रीतम तुझे घर बुलाने तथा तेरी हंसी उड़ाने आए हैं।

हो ससुई सा पण ई चोए, आऊं डियां कोड मथां।
पुनूं संदी बधाई को आणे, ते के डियां ल्हाए हथां।।७।।

दृष्टान्त देते हैं—ससी भी इस प्रकार से कहती है कि यदि मुझे कोई मेरे पुनू की बधाई देता है कि तेरा पुनू आ गया है तो उसको मैं अपने हाथ से अपने करोड़ों सिर काटकर दे दूंगी।

नोट—(ससी और पुनू दो प्रेमी पंजाब में हुए। पुनू के मरने पर ससी रोती-रोती कहती है कि यदि कोई मुझे मेरे पुनू के आने की झूठी बधाई ही दे दे कि तेरा पुनू आ गया तो मैं उसके बदले उसे करोड़ सिर अपने हाथ से दे दूंगी)।

ए वेण न न्हारिए, फिट फिट रे भूंडा जीव।
तो जो ओठो पण वेओ को न्हारे, हिन गाले वेओ घणूं लही।।८।।

धिक्कार है तुझे, पापी जीव! तू इन वचनों को भी नहीं विचारता। तेरी नकल कोई नहीं करेगा (तेरी दुष्टता की नकल कौन करेगा। तुम गुणहीन हो)। इन बातों से दूसरे को ज्ञान मिलेगा।

तोहे तोके सांगाय न वरे, तूं थेओ को ई।
न्हार संभारे पाण पांहिंजो, जे गालों करींन था पिरीं।।९।।

हे जीव! तू ऐसा क्यों हो गया? तुझे अब भी पहचान नहीं होती। तू अपनी तरफ देख और पहचान कर कि तूने परमधाम में धनी से क्या बातें की थीं?

से वेण तूं को विसारिए भूंडा, जे पिरी चेया तोके पाण।
जे वेण विचारिए हिकडो, त हंद न छडिए निरवांण।।१०।।

हे पापी! तू उन वचनों को (जो परमधाम में कौल किए थे) क्यों भूल गया है जो प्रीतम ने स्वयं तेरे को कहे। यदि तू उनके एक वचन को भी विचारे तो उनके बताए ठिकाने (परमधाम) को नहीं छोड़ेगा।

Nijanand App

अभागी तोके ते चुआं अकरमी, जे न पसां तोमें हाल।
सत दाण तोके चुआं सुहागी, जे करिए कीं कीं भाल।। ११ ।।

हे जीव! तुझे पापी कहूं या अभागा कहूं। तेरी हालत को बदलते नहीं देखती हूं। यदि तू अपनी थोड़ी सी संभाल कर ले, तो तुझे सौ बार सुहागी (सौभाग्यशाली) कहूंगी।

।। प्रकरण ।। १५ ।। चौपाई ।। ३५२ ।।

वी वलामणी

मूंजा जीव सुहागी रे, हाणें जिन छडिए पिरी पेर।
वभेरकां तो कारणे, पिरी आया हिन वेर।। १ ।।

हे मेरे सुहागी जीव! इस बार प्रीतम के चरणों को नहीं छोड़ना है। इस बार दुबारा तेरे वास्ते प्रीतम आए हैं।

पिरिए संदा गुण संभारे, झल्ल तूं पिरिए पेर।
सांणे तोके सुख पुजाइंदा, वेओ कोठे ईंय केर।। २ ।।

प्रीतम के गुणों को याद कर और उनके चरणों को पकड़ ले। वह तुझे सुख से घर (परमधाम) पहुंचा देंगे। इस प्रकार से तुझे कौन बुलाएगा?

खिल्ली कूडी कर गालडी, सुजाण पोतेजा पिरी।
तोजे काजे आप विधाऊं, विनी भेरां न्हार कीं।। ३ ।।

हंसकर, रोकर बातें कर तथा अपने प्रीतम की पहचान कर। तेरे वास्ते ही धनी दूसरी बार आए हैं। तू देखता क्यों नहीं?

सजण ए कीं छडजे, तूं तां न्हार केडा आईन।
पिरिए तोसे पाण न रख्यो, से न संभारजे कीं।। ४ ।।

ऐसे प्रीतम को कैसे छोड़ा जाए? तू उनको देख वह कैसे हैं? धनी ने तुझसे कुछ छिपा नहीं रखा है। उनको क्यों याद नहीं करता?

कोड करे तूं केड बांधीने, थी पिरिए जे पास।
सिपरी तूं सुजाण पांहिंजा, छड वेओ मंडे साथ।। ५ ।।

तू खुशी से कमर कसकर प्रीतम के पास जा। तू अपने प्रीतम की पहचान कर और दूसरों का साथ छोड़ दे।

पाणजे साथ के परमें चोयज, जे तो उकले वेण।
साथ तां कीं न सांगाय सुहागी, तोहे पाहिंजा सेण।। ६ ।।

अगर तुझे यह वाणी समझ में आ जाए तो अपने साथियों को भी बताना (कहना)। हे सुहागी जीव! साथ को तो कुछ भी पहचान नहीं है। फिर भी वह अपने साथी हैं।

।। प्रकरण ।। १६ ।। चौपाई ।। ३५८ ।।

Nijanand App

अभागी तोके ते चुआं अकरमी, जे न पसां तोमें हाल।
सत दाण तोके चुआं सुहागी, जे करिए कीं कीं भाल।। ११ ।।

हे जीव! तुझे पापी कहूं या अभागा कहूं। तेरी हालत को बदलते नहीं देखती हूं। यदि तू अपनी थोड़ी सी संभाल कर ले, तो तुझे सौ बार सुहागी (सौभाग्यशाली) कहूंगी।

।। प्रकरण ।। १५ ।। चौपाई ।। ३५२ ।।

वी वलामणी

मूंजा जीव सुहागी रे, हाणें जिन छडिए पिरी पेर।
वभेरकां तो कारणे, पिरी आया हिन वेर।। १ ।।

हे मेरे सुहागी जीव! इस बार प्रीतम के चरणों को नहीं छोड़ना है। इस बार दुबारा तेरे वास्ते प्रीतम आए हैं।

पिरिए संदा गुण संभारे, झल्ल तूं पिरिए पेर।
सांणे तोके सुख पुजाइंदा, वेओ कोठे ईंय केर।। २ ।।

प्रीतम के गुणों को याद कर और उनके चरणों को पकड़ ले। वह तुझे सुख से घर (परमधाम) पहुंचा देंगे। इस प्रकार से तुझे कौन बुलाएगा?

खिल्ली कूडी कर गालडी, सुजाण पोतेजा पिरी।
तोजे काजे आप विधाऊं, विनी भेरां न्हार कीं।। ३ ।।

हंसकर, रोकर बातें कर तथा अपने प्रीतम की पहचान कर। तेरे वास्ते ही धनी दूसरी बार आए हैं। तू देखता क्यों नहीं?

सजण ए कीं छडजे, तूं तां न्हार केडा आईन।
पिरिए तोसे पाण न रख्यो, से न संभारजे कीं।। ४ ।।

ऐसे प्रीतम को कैसे छोड़ा जाए? तू उनको देख वह कैसे हैं? धनी ने तुझसे कुछ छिपा नहीं रखा है। उनको क्यों याद नहीं करता?

कोड करे तूं केड बांधीने, थी पिरिए जे पास।
सिपरी तूं सुजाण पांहिंजा, छड वेओ मंडे साथ।। ५ ।।

तू खुशी से कमर कसकर प्रीतम के पास जा। तू अपने प्रीतम की पहचान कर और दूसरों का साथ छोड़ दे।

पाणजे साथ के परमें चोयज, जे तो उकले वेण।
साथ तां कीं न सांगाय सुहागी, तोहे पाहिंजा सेण।। ६ ।।

अगर तुझे यह वाणी समझ में आ जाए तो अपने साथियों को भी बताना (कहना)। हे सुहागी जीव! साथ को तो कुछ भी पहचान नहीं है। फिर भी वह अपने साथी हैं।

।। प्रकरण ।। १६ ।। चौपाई ।। ३५८ ।।

Nijanand App

मूंजा साथ सुहागी रे, हांणें अईं को न सुजाणो सिपरी।
पेरोनी पांण न सुजातां, आइडा से वरी रे।।१।।

हे मेरे सुहागी सुन्दरसाथजी! अब अपने प्रीतम को क्यों नहीं पहचानते हो? पहली बार भी हमने नहीं पहचाना। वह अब फिर से आए हैं।

सेई सजण सेई गालड्यूं, सेई कारयूं करीन।
पांण जो काजे पिरी पांहिंजा, पाणी अखियें भरीन।।२।।

वही अपने प्रीतम हैं। वही चर्चा है। उसी तरह से पुकार करके कहते हैं। अपने प्रीतम अपने लिए आंखों में आंसू भरकर समझाते हैं।

सेई सिखामण डियन सिपरी, ताणीन घर मणे।
पाण पाहियूं कीं ओसरूं, वलहो आव्यो वरी करे।।३।।

वही सिखापन (सीख) प्रीतम देते हैं। घर की तरफ बुलाते हैं। अब हम क्यों भूलें? प्रीतम दुबारा आए हैं।

कूकडियूं करीन पेहेलीनियूं, हांणें को न सुजाणो साथ।
न तां खरे बेपोरे सेज सोझरे, हाणे थींदी रात।।४।।

पहली तरह से वह पुकार-पुकारकर कहते हैं कि हे सुन्दरसाथ! तुम क्यों नहीं सुनते? अब यदि नहीं सुनोगे तो दोपहर की कड़ी धूप में ही रात हो जाएगी (ज्ञान के उजाले में भी प्रीतम से वियोग हो जाएगा)।

पोए हथ हणंदा पटसे, हैडे डींदा घा।
सजण सूरे में वेही न रेहेंदा, हल्ली वेदानी हथ मंझां।।५।।

पीछे हाथ पटक-पटक कर छाती पीटोगे। प्रीतम माया में (दुःख में) बैठे नहीं रहेंगे। वह अपने हाथ से चले जाएंगे।

धाएडियुं करीन पिरी, परी परी चए वेण।
पाणजे काजे पिरी बभेरां, पाण त्रेमाईन नेण।।६।।

प्रीतम पुकार-पुकार कर तरह-तरह से वचन कहते हैं। हमारे लिए प्रीतम दुबारा आंखों से आंसू बहाते हैं।

मायातां डिठियां मंझ पेहीने, सोझरे सिपरियन।
भती भती जी रांद डेखारण, पिरी आंदो तारतम।।७।।

हम माया में बैठकर माया देख रहे हैं, पर धनी तरह-तरह के खेल दिखाने के लिए तारतम ज्ञान का उजाला (जागृत बुद्धि का ज्ञान) लेकर आए हैं।

जा माया आं मोहें मंगई, सा डिठियां वी वार।
साथ हाणें पिरी साथ हल्लजे, जीं पिरी पेराईन करार।।८।।

जो माया हमने मांगी थी, उसको दूसरी बार देख रहे हैं। हे साथजी! अब प्रीतम के साथ चलें जिससे वह आराम पाएं (उनके मन को करार मिले)।

Nijanand App

वभेरे पिरी पाणजे काजे, सायर में विधाऊं आप।
पाणजे काजे पांण विधाऊं, हाणें को न सुजाणो साथ।। ९ ।।

अपने लिए प्रीतम दुबारा माया (भवसागर) में आए हैं। जब अपने वास्ते ही वह आए हैं तो हे साथजी! तुम उनकी पहचान क्यों नहीं करते?

आकारतां अंई भले पसो था, पण पसो मंझियो तेज।
पिरी पांहिंजा पाण पाणसे, घणूं करीन था हेज।। १० ।।

हे साथजी! आप उनके तन को भले देखो, पर उनके अन्दर के ज्ञान के तेज को भी देखो। अपने प्रीतम अपने से बहुत प्यार करते हैं।

हांणें केही पर करियां आंसे, को न सुजाणों सेंण।
सजण सेई पुकार करीन, आंके निद्र अचे कीं नेंण।। ११ ।।

अब मैं तुम्हारे साथ क्या करूं? तुम प्रीतम को क्यों नहीं पहचानते? यह वही प्रीतम हैं और उनकी वही आवाज है। फिर तुमको नींद क्यों आती है? (उनकी पहचान क्यों नहीं होती)।

नेंणेंनी मंझां निद्र न वंजे, जे हेडी मथां थेई।
सेणेंसे अंई साथ न हल्यां, पोरयां कुरो कंदा रही।। १२ ।।

तुम्हारी आंखों से नींद नहीं जाती। ऐसी हालत क्यों हुई? यदि प्रीतम के साथ नहीं चले तो पीछे रहकर क्या करोगे?

हिन डुखे मंझा को न निकरयो, केहो डिसोथा भाल।
जडे हली वेंदा हथ मंझां, तडे केहा थींदा हाल।। १३ ।।

इस दुःख के संसार में से कोई नहीं निकला। किसका सहारा लेकर बैठे हो? जब प्रीतम हाथ से निकल जाएंगे तब तुम्हारा क्या हाल होगा?

पाणके हिन पिरी धारा, वेओ चोय ईं केर।
साथ संभारे न्हारयो दिलमें, जिन चुको हिन वेर।। १४ ।।

इन प्रीतम के बिना हमको दूसरा इस तरह से कौन कहेगा? हे सुन्दरसाथ! अपने दिल में विचार कर पहचानो और इस बार मत भूलो।

हिकडी आर चुके मांहड़ु, तेके वी आर अचे बुध।
हेतरा भठ वरंदे मथे, आंके अजां न वरे सुध।। १५ ।।

एक बार यदि मनुष्य चूक जाता है तो दूसरी बार उसे बुद्धि आ जाती है। इतनी आग तुम्हारे सिर पर जली (वाणी वचन तथा देवचन्द्रजी के वियोग की) फिर भी तुम्हें सुध नहीं आई।

हिक वेर म थीजा विसरया, हित न्हाय बेठे जो लाग।
अंख उघाडे ढकजे, कोडमी पातीमें थिए अभाग।। १६ ।।

इस बार अब मत भूलो। यहां बैठने का अवसर (समय) नहीं है। आंख खोलकर बन्द करने में जो समय लगता है, उसके करोड़वें हिस्से के समय में यदि तू जागेगा नहीं, तो तू अभागा (बदनसीब) हो जाएगा।

Nijanand App

आऊं खीजी आंके कीं चुआं, सा न वरे मूंजी जिभ।
पण अंई हिन माया मंझां, केही कढंदा निध।। १७ ।।

मैं तुम्हें खीजकर क्यों कहूं? मेरी जिह्वा से कठिन शब्द तुम्हारे लिए नहीं निकलते, पर तुम इसमें रहकर कौन-सा खजाना प्राप्त कर लोगे?

वेण विगो आंके चुआं, सा वढियां मुंहजी जिभ।
पण अंई हिनमें पई रह्या, हिन मंझां कां न थिंदियां सिध।। १८ ।।

तुम्हारे लिए कठिन शब्द यदि निकलें तो मैं अपनी जुबान के टुकड़े कर डालूंगी, पर तुम भी इसमें पड़े रहकर क्या करोगे? इसमें पड़े रहकर किसी का कोई काम सिद्ध नहीं हुआ।

हिन सोझरे जे न सुजातां, वभेरकां हीं ईं।
पोए सांणेनी सिपरियन अग्यां, मोंह खणदियूं कीं।। १९ ।।

इस दुपहरी के उजाले (जागृत बुद्धि के ज्ञान के उजाले) में दुबारा भी इस बार नहीं पहचाना तो फिर प्रीतम के सामने (घर चलकर) कैसे मुंह उठाएंगे?

पेरोनी पाण नजर न्हारींदे, व्यो अवसर हथां।
जडे हथे मंझे हली वेयां, तडे केहेडी थेईनी पाण मथां।। २० ।।

पहले भी अपने देखते-देखते हाथ से समय निकल गया और जब प्रीतम अपने में से चले गए तो अपने ऊपर कैसी बीती?

हींय हंद एहेडो आय, हिक वेरमें थिए वेणां।
साथ तां आईन सभे समझू, न्हाय केहे में मणां।। २१ ।।

यह स्थान ऐसा है कि एक पल में ही सब नष्ट हो जाएगा। हे सुन्दरसाथजी! आप सभी तो समझदार हैं। किसी में कोई कमी नहीं है।

साथ अंई कीं कीं न्हारयो संभारे, गुण म छडो मोकरे मोय।
इंद्रावती चोय पेरे लगी, फिरी फिरीने केतरो चोय।। २२ ।।

हे सुन्दरसाथजी! तुम कुछ तो देखो और पहचानो। अपने धनी को मत छोड़ो। माया से मोह मत करो। श्री इन्द्रावतीजी तुम्हारे चरणों में लगकर बार-बार कितना कहें कि तुम जागो।

।। प्रकरण ।। १७ ।। चौपाई ।। ३८० ।।

विनती–राग धनाश्री

हूं तां पिउजीने लागूं छूं पाय, मारा वाला जेम आ फेरो सुफल मारो थाय।
जेम पिउजी ओलखाय मारा पिउजी, सुणोने अमारी वालाजी विनती।। १ ।।

हे मेरे पियाजी! मैं आपके चरणों लगती हूं जिससे मेरा यह फेरा (जागनी का ब्रह्माण्ड) सफल हो जाए। हे मेरे पिया! किसी तरह से आपकी पहचान हो जाए। यह मेरी विनती है। उसे सुनो।

Nijanand App

आऊं खीजी आंके कीं चुआं, सा न वरे मूंजी जिभ।
पण अंई हिन माया मंझां, केही कढंदा निध।। १७ ।।

मैं तुम्हें खीजकर क्यों कहूं? मेरी जिह्वा से कठिन शब्द तुम्हारे लिए नहीं निकलते, पर तुम इसमें रहकर कौन-सा खजाना प्राप्त कर लोगे?

वेण विगो आंके चुआं, सा वढियां मुंहजी जिभ।
पण अंई हिनमें पई रह्या, हिन मंझां कां न थिंदियां सिध।। १८ ।।

तुम्हारे लिए कठिन शब्द यदि निकलें तो मैं अपनी जुबान के टुकड़े कर डालूंगी, पर तुम भी इसमें पड़े रहकर क्या करोगे? इसमें पड़े रहकर किसी का कोई काम सिद्ध नहीं हुआ।

हिन सोझरे जे न सुजातां, वभेरकां हीं ईं।
पोए सांणेनी सिपरियन अग्यां, मोंह खणदियूं कीं।। १९ ।।

इस दुपहरी के उजाले (जागृत बुद्धि के ज्ञान के उजाले) में दुबारा भी इस बार नहीं पहचाना तो फिर प्रीतम के सामने (घर चलकर) कैसे मुंह उठाएंगे?

पेरोनी पाण नजर न्हारींदे, व्यो अवसर हथां।
जडे हथे मंझे हली वेयां, तडे केहेडी थेईनी पाण मथां।। २० ।।

पहले भी अपने देखते-देखते हाथ से समय निकल गया और जब प्रीतम अपने में से चले गए तो अपने ऊपर कैसी बीती?

हींय हंद एहेडो आय, हिक वेरमें थिए वेणां।
साथ तां आईन सभे समझू, न्हाय केहे में मणां।। २१ ।।

यह स्थान ऐसा है कि एक पल में ही सब नष्ट हो जाएगा। हे सुन्दरसाथजी! आप सभी तो समझदार हैं। किसी में कोई कमी नहीं है।

साथ अंई कीं कीं न्हार्‌यो संभारे, गुण म छडो मोकरे मोय।
इंद्रावती चोय पेरे लगी, फिरी फिरीने केतरो चोय।। २२ ।।

हे सुन्दरसाथजी! तुम कुछ तो देखो और पहचानो। अपने धनी को मत छोड़ो। माया से मोह मत करो। श्री इन्द्रावतीजी तुम्हारे चरणों में लगकर बार-बार कितना कहें कि तुम जागो।

॥ प्रकरण ॥ १७ ॥ चौपाई ॥ ३८० ॥

विनती–राग धनाश्री

हूं तां पिउजीने लागूं छूं पाय, मारा वाला जेम आ फेरो सुफल मारो थाय।
जेम पिउजी ओलखाय मारा पिउजी, सुणोने अमारी वालाजी विनती।। १ ।।

हे मेरे पियाजी! मैं आपके चरणों लगती हूं जिससे मेरा यह फेरा (जागनी का ब्रह्माण्ड) सफल हो जाए। हे मेरे पिया! किसी तरह से आपकी पहचान हो जाए। यह मेरी विनती है। उसे सुनो।

Nijanand App

अमें पेहेला नव ओलख्या राज, अमने भरम गेहेने आण्या वाज।
भवसागरना जल छे अपार, तेतां तमे सेहेजे उतार्‌या पार।। २ ।।

हे राजजी! पहले हमने आपको नहीं पहचाना, क्योंकि पहले हम माया के नशे में हार गए (भरम में उलझ गए)। भवसागर में अथाह जल है (माया संसार का)। उससे आपने सहज में ही हमको पार उतार लिया।

तमे भली पेहेलीने कीधी मारी वहार, धणी लिए तेम लीधी सार।
चौद भवननी गम आंही, तेतां लखी सर्वे सास्त्रों मांही।। ३ ।।

हे धनी! पहले आपने अच्छी तरह से हमारी खबर रखी। जैसे एक पति अपनी पत्नी का ध्यान रखता है, उसी प्रकार आपने हमारा ध्यान रखा। चौदह भुवनों के ज्ञान माया तक ही सीमित हैं, ऐसा सब शास्त्रों में लिखा है।

ते तमे कीधी छे प्रकास, तेहेनी तारतम पाय पुरावी साख।
तमे अमने जुगते माया रामत देखाडी, तमे अमने घेर पोहोंचाड्या दुस्तर उतारी।। ४ ।।

इसका आपने हमें ज्ञान दिया और तारतम के ज्ञान से गवाहियां दिलाई। आपने हमें बड़ी युक्ति से माया का खेल दिखाया और इस कठिन भवसागर से छुड़ाकर (परमधाम) अपने घर पहुंचाया।

अमें मनोरथ कीधां हता जेह, तमें पूरण कीधां सर्वे तेह।
तमे अमने मनोरथ करतां वार्‌या, तोहे कारज अमारा लई सार्‌या।। ५ ।।

हमने परमधाम में जो चाह खेल देखने की, की थी, वह सब आपने यहां पूरी कर दी। आपने तो हमें माया की चाहना से रोका था फिर भी हमारा कार्य (चाहना) सिद्ध हो गया।

अमने लागी हती जेहेनी रढ, ते तमे पूरण कीधी आंही आवी द्रढ़।
तमे अमने रामत देखाडवाने काज, अम पेहेलाने पधार्‌या श्री राज।। ६ ।।

हमें जिसको देखने की रट लगी थी, वह सब आपने यहां आकर अच्छी तरह से पूर्ण कर दी। हमें खेल दिखलाने के वास्ते आप हमसे पहले आए।

एवा मारा लाड पूरण कोण करे, बीजी दाण देह मायामां कोण धरे।
तमे मोसूं गुण कींधां छे अनेक, तेतां लख्या मारा रुदयामां लेख।। ७ ।।

इस प्रकार हमारे लाड कौन पूरे करेगा और आपके अलावा दूसरी बार माया में तन कौन धारण करेगा? आपने मेरे ऊपर अपार मेहर की है (गुण किए हैं) वह सब मेरे हृदय में लिखे हैं (मैं जानती हूं)।

तम उपर थी तिल तिल करी नाखूं मारी देह, तमे कीधां मोसूं अधिक सनेह।
हूं तो भामणियां लई लई जाऊं, तमसूं सुरखरू केणी पेरे थाऊं।। ८ ।।

आपके ऊपर मैं अपने तन के टुकड़े-टुकड़े करके कुर्बान कर दूं, क्योंकि आपने मुझसे इतना अधिक प्रेम किया है। मैं तो आप पर न्योछावर होती हूं। आपका सम्मान कैसे प्राप्त करूं?

तमे छो अमारडा धणी, तो आसडी पूरो छो अमतणी।
इंद्रावती चरणे लागे, कृपा करो तो जागी जागे।। ९ ।।

आप हमारे धनी हैं, इसलिए हमारी इच्छा पूरी करते हैं। श्री इन्द्रावतीजी चरणों में पड़कर कहती हैं कि आप कृपा करो तो सुन्दरसाथ जाग जाएं।

।। प्रकरण ।। १८ ।। चौपाई ।। ३८९ ।।

Nijanand App

अखंड दंडवत करूं परणाम, हैडे भीडी ने भाजूं हाम।
प्रेमे दउं प्रदखिणा, फरी फरी वली अति घणा।। १ ।।

हे श्री राजजी! आपके चरणों में अखण्ड दण्डवत प्रणाम करूं और अपने हृदय से लगाकर चाहना मिटाऊं। अति प्रेम से बार-बार आपकी परिक्रमा करूं।

वारी वारी जाऊं मुखारने विंद, वरणवुं सोभा सरूप सनंध।
वारणा लऊं आंखडियो तणा, सीतल द्रष्ट माहें नहीं मणा।। २ ।।

आपके मुखारबिन्द पर मैं बलिहारी जाती हूं। आपके सुन्दर स्वरूप का वर्णन करती हूं। आपकी आंखों पर बलिहारी जाती हूं। इनकी शीतल नजर में कमी नहीं है।

भामणा ऊपर लउं भामणा, सुख अमने दीधां अति घणा।
वली वली लागूं चरणे, सेवा करीस हूं वालपण घणे।। ३ ।।

आपने हमको अनगिनत सुख दिए हैं, इसलिए बार-बार बलिहारी जाती हूं। बार-बार चरणों में प्रणाम करती हूं। प्यार से आपकी सेवा करूंगी।

वारी फरी नाखूं मारी देह, इंद्रावती वली वली एम कहे।
अति वखाण में थाय नहीं, पोताना घरनी वातज थई।। ४ ।।

श्री इन्द्रावतीजी बार-बार कहती हैं कि मैं अपने तन को आप पर कुर्बान कर दूं। इससे अधिक और बार-बार मैं क्या कहूं? यह तो अपने घर की बात है।

पोते पोताना करे वखाण, तेहेने सहु कोई कहे अजाण।
पण जेवडी वात तेहेवा वखाण, वचन ग्रहसे जोईने जाण।। ५ ।।

अपने मुंह जो अपनी प्रशंसा करता है, उसे सब कोई अज्ञानी (मूर्ख) कहते हैं, परन्तु जैसा हो वैसा ही वर्णन जानकर लोग उन वचनों से हकीकत जान जाते हैं।

श्री धणीतणा वचन प्रमाण, प्रगट लीला थासे निरवाण।
चौद भवननो कहिए भाण, रास प्रकास उदे थया जाण।। ६ ।।

श्री धाम धनी के वचनों के प्रमाण से अब यह लीला सब में जाहिर होगी। सूर्य की तरह चौदह भुवनों (लोकों) में रास और प्रकाश का ज्ञान फैल जाएगा।

चौद भवननो नहीं आसरो, उदेकार अति घणो थयो।
सब्दातीत ब्रह्मांड कीधां प्रकास, ए अजवालूं जोसे साथ।। ७ ।।

आपके ज्ञान से इतनी अधिक जानकारी हो गई है कि अब हमें चौदह लोकों के देवी-देवताओं या किसी के सहारे की जरूरत नहीं है। आपका ज्ञान शब्दातीत है। यह चौदह लोकों में फैल रहा है। उस उजाले को सुन्दरसाथ देखेगा।

प्रकास तणा वचन निरधार, जे जोईने करसे विचार।
आगल ए थासे विस्तार, जीव घणा उतरसे पार।। ८ ।।

जो कोई विचार करके देखे तो प्रकाश के वचन सत्य हैं (अटल हैं)। इनका आगे विस्तार होगा और इसके द्वारा बहुत से जीव भवसागर से पार उतरेंगे।

Nijanand App

ए लीला जे जोसे विचार, सूं करसे तेहेने संसार।
प्रगट पाइयो कीधो एह, अंबारत थासे हवे तेह।। ९ ।।

इस लीला को जो विचार करके देखेगा, उसका संसार क्या बिगाड़ सकता है? आपने ऐसी मजबूत नींव रखी है कि इसके ऊपर बहुत बड़ा भवन बनेगा।

हवे सुणजो सहुए साथ, चरणे तमने लागे मेहेराज।
ए वाणी श्री धणिए कही, वली वली तमने कृपा थई।। १० ।।

हे सुन्दरसाथजी! सुनो, श्री मेहराज तुम्हारे चरणों में प्रणाम कर कहते हैं कि यह वाणी धनी ने कही है और तुम्हारे ऊपर फिर से कृपा हुई है।

एहेवो पकव प्रवीण नथी कांई हूं, तो सिखामण तमने केम दऊं।
हूं घणुए एम जाणूं सही, जे जीव मारूं समझावुं रही।। ११ ।।

मैं इतना पक्का ज्ञानी नहीं हूं। आपको शिक्षा कैसे दूं? मैं यह अच्छी तरह जानती हूं कि यह बात मुझे हृदय में रखनी है।

पण धणी तणी कृपा अति घणी, वली वली दया करे साथ तणी।
तो वचन तमने केहेवाय, नहीं तो कीडी मुख कोहलूं न समाय।। १२ ।।

धनी की कृपा अत्यधिक है। वह सुन्दरसाथ के ऊपर बार-बार दया करते हैं। यह वचन स्वयं तुमको कह रहे हैं। नहीं तो चींटी के मुख में कुम्हड़ा (पेठा) नहीं समाता। (मेहराज चींटी के समान और धनी की कृपा कुम्हड़े के समान है)।

हवे रखे वचन विसारो एक, साथ माटे कह्या विसेक।
वचन कह्या छे करजो तेम, आपण पेहेलां पगला भरियां जेम।। १३ ।।

हे सुन्दरसाथजी! अब धनी के एक वचन को भी मत भूलो। यह वचन धनी ने विशेषकर सुन्दरसाथ के लिए ही कहे हैं। जैसे वचन धनी ने कहे हैं, वैसे ही रहनी में आना। ब्रज से रास को जाते समय जो रास्ता चलकर बताया था उसी के मुताबिक चलना।

वली अवसर आव्यो छे हाथ, चरणे लागीने कहूं छूं साथ।
हवे चरणे लागूं श्रीवालाजी, तमे वहार मारी भली कीधी।। १४ ।।

श्री इन्द्रावतीजी साथ के चरणों में लगकर कहती हैं कि अब फिर से अवसर हाथ आया है। अब वालाजी के चरणों में विनती करती हूं कि हे वालाजी! आपने भलीभांति हमारी सुध ली।

आ माया घणूं जोरावर हती, पण हलवी थई मारा धणी तम थकी।
मायाने तजारक थई, ते ऊपर आ विनती कही।। १५ ।।

यह माया बड़ी ताकत वाली थी, किन्तु आपकी कृपा लेकर मेरे लिए हल्की (सुगम-सरल) हो गई। मैंने माया को ठोकर मारकर हटा दिया। इसलिए यह विनती की है (आपका धन्यवाद किया है)।

ते विनतडी जोजो सार, माया दुख पामी निरधार।
धणी लिए तेम लीधी सार, मुख मांहेंथी काढी आधार।। १६ ।।

इस विनती के सार को आप देखें। माया ने हमको बहुत ही दुःखी किया है। आपने एक पति की तरह हमारी सार (सुध) ली और माया के मुख में से आपने हमें निकाला।

Nijanand App

तमारा गुणनी केही कहूं वात, तमे अनेक विधे कीधी विख्यात।
पोतावट जाणी प्रमाण, इंद्रावती चरणे राखी निरवाण।। १७ ।।

आपके ऐसे गुणों की (मेहरबानियों की) मैं क्या बात कहूं? आपने अनेक तरह से भलाइयां की हैं और अपनी अंगना जानकर निश्चित रूप से इन्द्रावती को चरणों में रखा है।

चरण पसाय सुंदरबाईने करी, फल वस्त आवी रदे चढी।
चरण फल्या निध आवी एह, हवे नहीं मूकूं चित चरण सनेह।। १८ ।।

श्री श्यामाजी (सुन्दरबाई) की कृपा से यह पूर्ण ज्ञान हृदय में आ गया। आपके चरणों की कृपा से यह न्यामत आई है, इसलिए बड़े प्यार से इन चरणों को कभी नहीं छोड़ूंगी।

चरण तले कीधुं निवास, इंद्रावती गाए प्रकास।
भाजी भरम कीधो अजवास, पामे फल कारण विस्वास।। १९ ।।

श्री इन्द्रावतीजी आपके चरणों का आसरा लेकर, वाणी का प्रकाश कर रही हैं। संशय मिटाकर ज्ञान का उजाला कर दिया, जिस विश्वास के कारण यह फल उन्हें मिला है।

विस्वास करीने दोडे जेह, तारतमनूं फल लेसे तेह।
ते माटे कहूं प्रकास, जोपे जागी लेजो साथ।। २० ।।

जो विश्वास करके दौड़ता है, तारतम (अपने धनी की मेहर) का फल वही पाता है। इसलिए मैंने प्रकाश का वर्णन किया है। सुन्दरसाथजी इसे ग्रहण कर जाग जाना।

एटले पूरण थयो रास, इंद्रावती धणीने पास।
मूने मारे धणिए दीधी बुध, हवे प्रकास करूं तारतमनी निध।। २१ ।।

इतने में रास की लीला पूरी करके श्री इन्द्रावतीजी धनी के पास पहुंचीं और कहती हैं कि मुझे मेरे धनी ने जागृत बुद्धि दी है। अब उससे तारतम की निधि को संसार में प्रकाशित करूं?

।। प्रकरण ।। १९ ।। चौपाई ।। ४१० ।।

हवे प्रकास उपनो छे

हवे करूं ते अस्तुत आधार, वल्लभ सुणो विनती।
आटला दिवस में नव ओलख्या मारा वालैया, मायानी लेहेर मूने जोर हती।। १ ।।

हे मेरे प्रीतम! मेरी विनती सुनो। मैं आपकी वन्दना करती हूं। मैं माया की लहर में डूबी थी और मैंने इतने दिन तक अपने प्रीतम को नहीं पहचाना।

जीव जगावी भाजी भरम, श्री वालाजीने लागूं पाए।
सोभा तमारी तीत सब्द थकी, मारी देह आ जिभ्या सब्द मांहें।। २ ।।

अपने संशय मिटाकर जीव को जगाऊं और आपके चरणों में प्रणाम करूं। हे वालाजी! आपकी शोभा शब्दातीत (पार की) है और मेरा तन और जुबान माया की है।

केणी पेरे हूं करूं अस्तुत, मारा जीवने नथी कांई बल।
मारी जोगवाई सर्वे अस्थिर वस्तनी, केम वरणवुं सोभा नेहेचल।। ३ ।।

हे धनी! मैं किस तरह से आपकी वन्दना करूं? मेरे जीव में इतना बल नहीं है। मेरा तन संसार का मिटने वाला है। आपकी शोभा अखण्ड है, उसका वर्णन कैसे करूं?

Nijanand App

तमारा गुणनी केही कहूं वात, तमे अनेक विधे कीधी विख्यात।
पोतावट जाणी प्रमाण, इंद्रावती चरणे राखी निरवाण।। १७ ।।

आपके ऐसे गुणों की (मेहरबानियों की) मैं क्या बात कहूं? आपने अनेक तरह से भलाइयां की हैं और अपनी अंगना जानकर निश्चित रूप से इन्द्रावती को चरणों में रखा है।

चरण पसाय सुंदरबाईने करी, फल वस्त आवी रदे चढी।
चरण फल्या निध आवी एह, हवे नहीं मूकूं चित चरण सनेह।। १८ ।।

श्री श्यामाजी (सुन्दरबाई) की कृपा से यह पूर्ण ज्ञान हृदय में आ गया। आपके चरणों की कृपा से यह न्यामत आई है, इसलिए बड़े प्यार से इन चरणों को कभी नहीं छोड़ूंगी।

चरण तले कीधुं निवास, इंद्रावती गाए प्रकास।
भाजी भरम कीधो अजवास, पामे फल कारण विस्वास।। १९ ।।

श्री इन्द्रावतीजी आपके चरणों का आसरा लेकर, वाणी का प्रकाश कर रही हैं। संशय मिटाकर ज्ञान का उजाला कर दिया, जिस विश्वास के कारण यह फल उन्हें मिला है।

विस्वास करीने दोडे जेह, तारतमनूं फल लेसे तेह।
ते माटे कहूं प्रकास, जोपे जागी लेजो साथ।। २० ।।

जो विश्वास करके दौड़ता है, तारतम (अपने धनी की मेहर) का फल वही पाता है। इसलिए मैंने प्रकाश का वर्णन किया है। सुन्दरसाथजी इसे ग्रहण कर जाग जाना।

एटले पूरण थयो रास, इंद्रावती धणीने पास।
मूने मारे धणिए दीधी बुध, हवे प्रकास करूं तारतमनी निध।। २१ ।।

इतने में रास की लीला पूरी करके श्री इन्द्रावतीजी धनी के पास पहुंचीं और कहती हैं कि मुझे मेरे धनी ने जागृत बुद्धि दी है। अब उससे तारतम की निधि को संसार में प्रकाशित करूं?

।। प्रकरण ।। १९ ।। चौपाई ।। ४१० ।।

हवे प्रकास उपनो छे

हवे करूं ते अस्तुत आधार, वल्लभ सुणो विनती।
आटला दिवस में नव ओलख्या मारा वालैया, मायानी लेहेर मूने जोर हती।। १ ।।

हे मेरे प्रीतम! मेरी विनती सुनो। मैं आपकी वन्दना करती हूं। मैं माया की लहर में डूबी थी और मैंने इतने दिन तक अपने प्रीतम को नहीं पहचाना।

जीव जगावी भाजी भरम, श्री वालाजीने लागूं पाए।
सोभा तमारी तीत सब्द थकी, मारी देह आ जिभ्या सब्द मांहें।। २ ।।

अपने संशय मिटाकर जीव को जगाऊं और आपके चरणों में प्रणाम करूं। हे वालाजी! आपकी शोभा शब्दातीत (पार की) है और मेरा तन और जुबान माया की है।

केणी पेरे हूं करूं अस्तुत, मारा जीवने नथी कांई बल।
मारी जोगवाई सर्वे अस्थिर वस्तनी, केम वरणवुं सोभा नेहेचल।। ३ ।।

हे धनी! मैं किस तरह से आपकी वन्दना करूं? मेरे जीव में इतना बल नहीं है। मेरा तन संसार का मिटने वाला है। आपकी शोभा अखण्ड है, उसका वर्णन कैसे करूं?

Nijanand App

आगल जीवे कीधी अस्तुत, भगवानजीनी भली भांत।
पंडिताई चतुराई ने प्रवीणाई, किवता मांडे छे करी खांत।।४।।

आपके आने से पहले सब जीव विष्णु भगवान (देवी-देवता) की पूजा करते थे। ज्ञान के अहंकार से पण्डिताई, चतुराई दिखाकर कविता बनाते थे।

ते प्रवाही वचन ज्यारे जोइए, तेहेमां को को छे भारे वचन।
एतां दिए अचेत थकी उपमां, पण मूने साले ते मन।।५।।

यदि इन माया के जीवों के वचनों को देखें तो इनमें भी कोई-कोई गम्भीर वचन हैं। यह लोग बेहोशी में (जागृत बुद्धि के ज्ञान के बिना) अपने ही देवताओं को हमारे धनी के विशेषण (उपमाएं) लगाते हैं। यह मेरे मन में खटकता है।

नोट : दुनियां के देवी-देवताओं का महाप्रलय में लय होता है, लेकिन हमारे धनी अनादि, अक्षरातीत हैं।

अजाण थके दिए एवडी उपमा, त्यारे जाण्यानो कीहो प्रमाण।
एक वचन जो पडे मुख प्रवाही, ते तां नव जाण्यूं निरवाण।।६।।

इस संसार के जीव अनजाने में यदि झूठ को इतनी उपमा देते हैं तो हम अपने को जानकर किन शब्दों से बताएं? हमारे धनी के वचन प्रवाहियों के ध्यान में आ जाएं यह तो हमने कभी सुना ही नहीं।

नव में सांभल्यूं वेद पुराण, नव सांभली किव चतुराई।
एक बे वचन मुख सांभल्या धणीना, तेणे एम जाण्यूं आ पुष्ट ओ प्रवाही।।७।।

न तो मैंने वेद-पुराणों को सुना और न ही कविता की चतुराई सुनी। धनी के मुखारबिन्द से एक दो वचन सुने, जिससे यह जानकारी स्पष्ट हो गई कि धनी की वाणी सत्य है और प्रवाहियों के ग्रन्थ झूठे हैं।

ते पण चित दई नव सांभल्या, नहीं तो पूर बढ्यो प्रघल।
आडा गुण सघला जोध जुजवा, तेणे नव लेवा दीधूं टीपूं जल।।८।।

धनी की वाणी भी मैंने चित्त देकर नहीं सुनी जो कि दरिया के बहाव के समान थी। मेरे गुण, अंग, इन्द्रिय सब विरोध में लड़ने को आ गए और उस ज्ञान के प्रवाह में से एक बूंद भी जल ग्रहण नहीं करने दिया (वाणी नहीं सुनने दी)।

हवे ते गुणने केही दीजे उपमा, फिट फिट भूंडी बुध।
प्रथम तूं मोहोवड मंडाणी, तें कां न लीधी ए निध।।९।।

अब ऐसे गुणों की क्या उपमा दूं? हे पापी बुद्धि! तुझे धिक्कार है। पहले तो तू सरदार बनकर आगे आ गई और तूने मुझे यह ज्ञान नहीं लेने दिया।

सागर पूर वह्यूं रे सनंधे, तें कां न लीधूं ए जल।
तें बुध पापनी हूं मेलूं परहरी, तें थई मोसूं निबल।।१०।।

धनी का ज्ञान सागर के बहाव की तरह बहता रहा। हे बुद्धि! तूने जरा-सा भी ज्ञान नहीं लिया। अब मैं तुझ पापी बुद्धि को छोड़ती हूं। तू मुझसे अब कमजोर हो गई (अब तेरा बल नहीं चलेगा)।

Nijanand App

हवे रे बुधडी हूं कहूं तूंने, तूं थाय बुधनो अवतार।
श्री वालाजीने वल्लभ कर रे, एक खिण म मूके लगार।। ११ ।।

हे बुद्धि! मैं तुझसे कहती हूं कि तू संभल जा और जागृत बुद्धि का अवतार बन जा। वालाजी से प्रेम कर तथा एक पल के लिए जुदा मत हो।

बीजी बुध केही आवे अम समवड, हूं बुध मांहें बुध अवतार।
बुधें करी वालाजीने वल्लभ करीस, ए बुध नहीं मूकूं लगार।। १२ ।।

बुद्धि अब जवाब देती है। दूसरी माया की बुद्धि अब मेरे समान कैसे होगी? मैं जागृत बुद्धि का ज्ञान प्राप्त कर बुद्ध अवतार बन गई हूं। अब इस बुद्धि से जागृत होकर वालाजी से प्यार करूंगी। इस जागृत बुद्धि को पल मात्र के लिए भी नहीं छोडूंगी।

बुध जी रह्या छे आसरे, जे छे बुध अवतार।
ए बुध जी विना बीजा बापडा, कोण काढे ए सार।। १३ ।।

यह जागृत बुद्धि भी हमारे सहारे थी। हमसे ही पार का ज्ञान प्राप्त करके बुध अवतार बनी (कहलाई)। इस भेद को भी जागृत बुद्धि के बिना दूसरा कौन बता सकता है?

सार काढे सुध करीने, वाणी वेहद गाए।
धन अवतार ते बुध तणो, जे रह्यो आवीने पाए।। १४ ।।

अब यह जागृत बुद्धि सब ग्रन्थों का सार निकाल कर बेहद वाणी की पहचान कराती है, इसलिए इस बुद्धि का अवतरण धन्य-धन्य है, जो हमारे चरणों में आ गई है।

ते नहीं वैकुंठ नाथने, जे रस बुध अवतार।
चरण ग्रह्या वालाजी तणां, कांई ए निध पाम्यो सार।। १५ ।।

जो रस (ज्ञान) बुध अवतार (असराफील) में है, उसकी जानकारी विष्णु भगवान को भी नहीं है। इस जागृत बुद्धि ने भी वालाजी के चरण ग्रहण किए तो यह अखण्ड ज्ञान इसको मिला।

सार पामे सुख उपनूं, धन धन ए अवतार।
आज लगे ब्रह्मांड मांहें, कोई एम न पाम्यो पार।। १६ ।।

जब उसको धनी के चरण मिल गए तो उसे अत्यन्त अखण्ड सुख मिला, इसलिए यह बुध अवतार भी धन्य है। आज तक इस ब्रह्माण्ड में कोई भी इस तरह से पार नहीं जा सका (क्योंकि किसी को भी धनी के चरण नहीं मिले थे)।

ए अवतारनी उपमा, कांई लीला अखंड थासे।
वचन एहेना विधे विधे, कांई वाणी ब्रह्मांड गासे।। १७ ।।

इस जागृत बुध अवतार की कृपा से (महिमा से) सारा ब्रह्माण्ड अखण्ड हो जाएगा और इस अवतार की वाणी को सारे ब्रह्माण्ड वाले कई तरह से गाएंगे।

हवे रे श्रवणा कहूं हूं तूंने, तूंने धणिए कह्या वचन।
कां न लीधां तें वचन वचिखिण, फिट फिट भूंडा करन।। १८ ।।

हे कान! तुझे क्या कहूं? तुझे धनी ने ज्ञान सुनाया। तूने ऐसे वचिक्षण (सारगर्भित गहरे) ज्ञान को क्यों नहीं सुना? हे पापी कान! तुझे धिक्कार है।

Nijanand App

मंडाण तुझ ऊपर रे श्रवणा, लेवाए तारे बल।
धणिए धन रेढतां नव जोयूं, नेठ कां न थया निबल।। १९ ।।

हे कान! हम तो तुम्हारे ऊपर ही निर्भर थे। तुम्हारे द्वारा ज्ञान मिला था। धनीजी जब ज्ञान का धन दे रहे थे, तुम निर्बल क्यों हो गए? बलवान क्यों नहीं बने?

हवे श्रवणा तूं संभार आपोपूं, थाय वचिखिण वीर।
वाणी जे वल्लभतणी, तूं ग्रहजे द्रढ करी धीर।। २० ।।

हे कान! अब तो तू अपने आपको संभाल। अपने आपको चतुर और शक्तिशाली बना। प्रीतम की जो वाणी है, उसे धैर्य से धारण कर।

विध विधना वचन सुणयाजी, श्रवणां कहे संभारी।
जे मनोरथ हता मारा जीवने, ते पूरी वाले आस अमारी।। २१ ।।

कान कहते हैं कि हमने तरह-तरह के वचनों को सुना। हमारे जीव की जो मनोकामना थी, वह धनी ने पूरी की है।

हवे सुणीस हूं जोपे करी, नव मूकूं एक वचन।
ऐ वाणी घणू हूं वल्लभ करीस, जेम सहु को कहे धन धन।। २२ ।।

कान कहते हैं कि अब हम अच्छी तरह से सुनेंगे और एक वचन को भी नहीं छोड़ेंगे। इस वाणी को हम बड़े प्यार से ग्रहण करेंगे, जिससे सब कोई प्रशंसा करे।

हवे तूने हूं कहूं रे निद्रा, तूं नीच निबल निरधार।
गुण सघला आडी तूं फरी वली, नव लेवा दीधी निध आधार।। २३ ।।

हे नींद! अब मैं तुझे कहती हूं। तू निश्चित ही नीच और निर्बल है। सब गुणों के आगे आकर तूने अखण्ड न्यामत को नहीं लेने दिया।

तू तां केवल माया रूप पापनी, वोल्या लई तूं बाथ।
श्रवणाय तें सांभलवा न दीधी, आलस वगाई तारे साथ।। २४ ।।

हे नींद! तू तो पापी माया का ही रूप है। तूने सबको चिपट कर डुबा दिया है। तूने कानों को भी नहीं सुनने दिया, क्योंकि आलस्य और उबासी (सुस्ती) तेरे साथ हैं।

घारण घणी विध आवी जीवने, जेम मीन वीट्यो माहें जाल।
जेणे नेत्रे निध निरखूं निरमल, ते नेत्रे आडी थई पाल।। २५ ।।

तेरे कारण, जीव तुझ में ऐसे फंस गया जैसे जाल में मछली फंस जाती है। जिन आंखों से ज्ञान साफ दिखाई देता है, उन आंखों के सामने तूने परदा डाल दिया।

फिट फिट भूंडी दुष्ट पापनी, हवे तजूं तुझने निरधार।
आगे तें अवसर चूकवयो, हवे निरखूं जीवनो आधार।। २६ ।।

हे दुष्ट पापिनी नींद! तुझे धिक्कार है। अब तुझे निश्चित ही छोड़ूंगी। पहले तूने अवसर भुला दिया था। अब जीवन के आधार बालाजी को अच्छी तरह से देखूंगी और अच्छी तरह वाणी सुनूंगी।

Nijanand App

आगे निद्रा थई निबल मोसूं, घारण हुती घणी पर।
हवे तूं जीवने म आवीस ढूकडी, कर संसार मांहें घर।। २७ ।।

हे नींद! मैं पहले तेरे सामने निर्बल (मृतक समान) हो गया था क्योंकि मेरे ऊपर घोर नींद छाई थी। अब तू जीव के निकट बिल्कुल नहीं आना। तू अपना घर संसार में बना।

निद्रा कहे ज्यारे जीव जाग्यो, त्यारे में केम रेहेवाय।
चरण फल्या ज्यारे धणीतणा, त्यारे जाऊं छूं लागीने पाय।। २८ ।।

नींद जवाब देती है कि जब जीव जाग जाए तो मैं कैसे रह सकती हूं? धनी के चरणों की कृपा हुई, तो मैं उनके चरण छूकर भाग जाती हूं।

अरुचडी तूं त्यारे आवी, ज्यारे मल्या मूने श्री राज।
फिट फिट भूंडी ऊहन अकरमण, तूं सरजी स्या ने काज।। २९ ।।

जब मुझे धाम के धनी मिले, हे अरुचि! तू उस समय आई। हे पापी दुष्ट ऊंघ! धिक्कार है तुझको। तू किसलिए पैदा हुई?

फिट फिट भूंडी तें दा चूकवयो, हवे करे कांईयक बल।
जीवनजी मलया जीवने, तूं थाय संसारमां नेहेचल।। ३० ।।

हे पापी अरुचि! तुझे धिक्कार है। तेरे कारण हमारा आया दांव चूक गया। अब कुछ ताकत लगा। हमारे जीव के जीवन मिले हैं। तू संसार में जाकर अखण्ड हो जा।

अरुचडी कहे हूं बलवंती, मूने न लखे कोय।
छानी थईने आवूं जीवमां, भाजूं ते साजूं नव होय।। ३१ ।।

अब अरुचि कहती है कि मैं बड़ी बलवान हूं। मुझे कोई नहीं जानता। मैं छिपकर जीव में आती हूं और जिसको मैं मिटा देती हूं, फिर वह खड़ा नहीं हो सकता।

ज्यारे धणी पोते घर संभारे, त्यारे चोरी करे केम चोर।
हवे अवला मांहेथी सवलूं करूं, जई बेसू संसार मांहें जोर।। ३२ ।।

जब धनी अपने घर की संभाल करता है तो चोर चोरी नहीं कर सकता। अब इस उलटे को मैं सीधा कर देती हूं और संसार में जाकर बैठती हूं (संसार से अरुचि हो जाएगी)।

मूने मारो वल्लभ मल्या रे वालेस्वरी, जाणूं सेवा कीजे हरकांत।
तेणे समे आवी ऊभी तूं अकरमण, फिट फिट भूंडी स्वांत।। ३३ ।।

अरुचि कहती है कि मुझे मेरे प्यारे वल्लभ मिल गए हैं। अब मैं उनकी सेवा लगन के साथ करूंगी। अब इसके बाद पापिनी शान्ति को धिक्कारते हैं कि तू उस समय आकर खड़ी हो गई और मुझे निर्बल बना दिया।

ए निध आवे केम स्वांत कीजे, केम बेसिए करार।
दोड कीजे सघला अंगसूं, स्वांत कीजे संसार।। ३४ ।।

ऐसी अखण्ड निधि प्राप्त करके चुपचाप कैसे बैठें? अब तो सब अंगों में फुर्ती आनी चाहिए और संसार से शान्त होना चाहिए।

Nijanand App

स्वांत कहे हूं तिहां लगे हुती, जां जीवने निद्रा हती जोर।
हवे जाऊं छूं संसार मांहें, तमे करो धनीसों कलोल।। ३५ ।।

स्वांत (शान्ति) कहती है कि मैं तभी तक थी, जब तक जीव को जोर की नींद लगी थी। अब मैं संसार में जाती हूं। तुम धनी से आनन्द करो।

हवे रे तूंने कहूं लोभ लालची, फिट फिट भूंडा अजाण।
नव कीधो लोभ खरी निधनो, जेथी अरथ सरे निरवाण।। ३६ ।।

अब हे लोभ! लालच गुण! मैं तुझसे कहती हूं हे पापी मूर्ख! तुझे धिक्कार है। तूने खरी वस्तु का लोभ नहीं किया जिससे सारे कार्य सिद्ध होने थे।

हवे म थासो तमे माया ढूकडा, मारा लोभ लालच बंने जोड।
लोभ आवो मारा वालाजीमां, जेम करूं रात दिन दोड।। ३७ ।।

हे लोभ! लालच! (दोनों) अब तुम माया के निकट नहीं जाना। हे लोभ! तुम वालाजी के लिए आओ जिससे रात-दिन दौड़ती रहूं।

लोभ लालच कहे स्यो वांक अमारो, जां न वले जीवने सार।
हवे जे तमे कह्यूं अमने, ते जोजो केम ग्रहूं छूं आधार।। ३८ ।।

लोभ और लालच कहते हैं कि यदि जीव ही अपनी संभाल न करे तो हमारा क्या दोष है? अब हमसे तुमने कड़ा है। अब देखना कितने मजबूती के साथ प्रीतम को पकड़ते हैं।

फिट फिट भूंडी तृष्णा अभागणी, तूं निबल थई निरधार।
बीजा गुण सघला तृपत थाय, पण तूंने कोई भावठ नां भंडार।। ३९ ।।

हे अभागिनी तृष्णा! तुझे धिक्कार है। तू निश्चय ही कमजोर पड़ गई। दूसरे गुण तो तृप्त हो जाते हैं पर तू तो भूख का ही भण्डार है।

हवे तूंने केम काढुं रे तृष्णा, तोसूं मारे घणू काम।
तृष्णा आव मारा वालाजीमां, जेम वस करूं धणी श्री धाम।। ४० ।।

अब हे तृष्णा! तुझे कैसे निकालूं? तुझसे मेरा बड़ा काम है। हे तृष्णा! तू मेरे वालाजी में आजा जिससे अपने धाम धनी को मैं वश में कर सकूं।

तृष्णा कहे हूं केमे नव मूकूं, जे आत्माए देखाड्या आधार।
तमे जई बीजा गुण संभारो, ए हूं नहीं मूकूं निरधार।। ४१ ।।

तृष्णा जवाब देती है कि जब आत्मा ने अपने प्रीतम की पहचान करा दी है तो मैं किसी तरह से अब नहीं छोड़ूंगी। अब तुम जाकर के दूसरे गुणों को संभालो।

मोह कहूं सुन वातडी, मूने मल्याता मारो आधार।
फिट फिट भूंडा दुरमती, तें तोहे न छाड्यो संसार।। ४२ ।।

हे मोह! मेरी बात सुनो। मुझे मेरे प्रीतम मिले थे। हे मूर्ख पापी! तुझे धिक्कार है। तूने फिर भी संसार को नहीं छोड़ा।

Nijanand App

हवे रे आव तूं वालाजीमां, मायासूं करजे विछोह।
फरी जोगवाई आवी मारा हाथमां, हवे केवो जोध जोइए मारो मोह।। ४३ ।।

हे मोह! अब तू हमारे वालाजी में आजा। माया को छोड़ दे। अब फिर से सब साधन (जोगबाई) मेरे हाथ में आए हैं। हे मेरे मोह! अब देखें तुम्हारे में क्या ताकत है?

मोह कहे मारी वात छे मोटी, मूने जाणे सहु कोय।
जेणे ठामे हूं बेसूं, तिहांथी अलगो करी न सके कोय।। ४४ ।।

मोह कहता है कि मेरी बात बड़ी है और मुझे सब कोई जानता है। जहां मैं जाकर बैठ जाता हूं, वहां से मुझे कोई उठा नहीं सकता।

जे निध देखाडी तमे मूने, तेने जड थई वलगूं हूं अंध।
म्हारी विध तां एकज छे, बीजी न जाणू सनंध।। ४५ ।।

अब तुमने जो मुझे न्यामत दिखा दी है उसे अन्धे की तरह मजबूती के साथ पकड़ कर बैठूंगा। मेरा तो एक ही तरीका है और दूसरा मैं जानता ही नहीं।

हरख सोक तमे थयारे मायाना, फिट फिट अभागी अजाण।
धणी मले तूं हरख न आव्यो, चाले सोक न आव्यो निरवाण।। ४६ ।।

हे मूर्ख हर्ष-शोक! तुम्हें धिक्कार है। तुम माया के हो गए, धनी मिले तुम्हें खुशी नहीं हुई। जाने पर तुम्हें दुःख नहीं हुआ।

निखर तमे निवलाई घणी कीधी, एवा अंध थया अभागी।
हवे तमने हूं सूं कहूं, जे जीवे न वारया जागी।। ४७ ।।

हर्ष और शोक जीव को कहते हैं कि तुमने इतने कठोर (जड़) होकर कमजोरी दिखाई। जागृत होकर हमें रोका नहीं। ऐसे तुम अन्धे और अभागे हो गए कि अब हम तुमसे क्या कहें?

हवे रे आवो तमे खरी निधमां, आगे चूक्या अवसर।
एक लीजे लाहो श्रीवालाजीनो, बीजो हरखे जागूं म्हारे घर।। ४८ ।।

अब जीव कहता है, हे हर्ष-शोक! अब तुम सच्ची निधि (प्रीतम) में आ जाओ। पहले तुम अवसर चूक गए थे। एक वालाजी का लाभ लेकर खुशी-खुशी अपने घर जागृत हो जाऊं।

हरख कहे हूं सूं करूं, जां धणी न लिए खबर।
सोक कहे जां धणी नव कहे, तो अमे करूं केही पर।। ४९ ।।

हर्ष कहता है कि जब मालिक ही खबर न ले तो मैं क्या करूं? शोक कहता है कि मालिक ही न कहे तो मैं क्या करता?

जोध अमे बंने छऊं बलिया, हवे जोजो अमारी भांत।
धणी तमे देखाड्या अमने, अमे ते ग्रहूं छूं हरकांत।। ५० ।।

हर्ष और शोक कहते हैं कि हम दोनों ही बलवान हैं। अब हमारी चाल देखना। तुमने हमें धनी की पहचान करा दी है। इसको हमने लगन से ग्रहण कर लिया है।

Nijanand App

मद मत्सर अहंमेव अहंकार, तमे दोड कीधी संसार।
फिट फिट गुण भूंडा एवा बलिया, तमे विछोह पाड्यो मारे आधार।।५१ ।।

मद-मत्सर, अहंमेव-अहंकार (नशा-ईर्ष्या-अभिमान-अहंकार) तुम सभी माया की तरफ दौड़ गए। हे पापियो! ऐसे बलवान होकर तुमने हमारे प्रीतम से वियोग कराया।

तमे त्रणे जोधा एक सम थई, कां नव कीधी समी वात।
ज्यारे जीवनजी मल्या जीवने, त्यारे तमे कां न कीधो उलास।।५२ ।।

तुम तीनों योद्धाओं ने एक साथ होकर हमारी खबर क्यों नहीं ली? जब जीव को प्रीतम मिले थे तो तुम्हें खुशी क्यों नहीं हुई?

हवे रे तमे म्हारे पासे थाओ, मूने वली मल्या म्हारो आधार।
वले जुध करजो बुधे करी, जेम छांटो न लागे संसार।।५३ ।।

अब तुम (मद-मत्सर-अहंमेव-अहंकार) मेरे पास आओ। मुझे फिर से प्रीतम मिले हैं। अब अक्ल से ताकत लगाओ जिससे माया का असर न हो।

त्रणे जोधा अमे जोरावर, चालूं एकी वाट।
वालाजीने ग्रही करी ने, जीवने भेला करी दऊं साथ।।५४ ।।

हम तीनों योद्धा बलवान हैं और एक ही रास्ते चलते हैं। वालाजी को प्राप्त करने के लिए जीव को बलशाली बना देंगे।

हवे एवा जोध सबल तमे बलिया, मल्या मोसूं खोटे भाव।
जोगवाई गई मारे हाथ थी, पण तमे न गया सेहेज सुभाव।।५५ ।।

अब जीव सहज स्वभाव को कहता है कि तुम ताकतवर योद्धा थे, किन्तु मुझे खोटे भाव (बेईमानी) से मिले और मेरे धनी मेरे हाथ से चले गए।

मायाने मलीने रे मूरखो, मोसूं थया तमे कूडा।
फिट फिट भूंडा दुष्ट अभागी, एणी वाते न थया रूडा।।५६ ।।

हे मूर्ख! (सहज स्वभाव) तुमने माया से मिलकर मुझसे दुश्मनी की। हे अभागे! तुझे धिक्कार है। इतनी बातों पर तुम सुधरे नहीं।

सेहेज सुभाव बंने सरखी जोड, मारा जोध सबल तमे ज्वान।
जेहेनी गमां तमे थाओ, ते जीते निरवाण।।५७ ।।

हे सहज स्वभाव! तुम एक से हो। तुम मेरे जवान योद्धा हो। जिस तरफ तुम जाते हो वहां निश्चित ही जीत होती है।

हवे तमने हूं खीजी कहूं छूं, मारा सबल थाजो सुजाण।
सेहेज सुभाव करजो वालाजीसूं वालपण, मा माणजो केहेनी आण।।५८ ।।

सहज स्वभाव को जीव डांटकर कहता है कि अब तुम पहचान कर साहसी बन जाओ। वालाजी से सहज स्वभाव से प्यार करना और किसी के बहकावे में आना नहीं।

Nijanand App

सेहेज सुभाव बंने अमे बलिया, जो करे कोई कोट उपाय।
जे अमे वात ग्रहूं जोपे करी, ते केणे नव पाछी थाय।।५९ ।।

सहज स्वभाव कहते हैं कि हम दोनों ही बलवान हैं। यदि कोई करोड़ों उपाय भी करे तो हमको जीत नहीं सकता। हम जिस बात को अच्छी तरह से ग्रहण कर लेते हैं, वह किसी तरह से पीछे नहीं हटती।

हवे जोजो तमे जोर अमारो, वालोजी ग्रहूं करी खांत।
पूरो पास दई रंग चोलनो, पाडूं पटोले भांत।।६० ।।

सहज स्वभाव कहते हैं कि अब हमारी ताकत देखना। वालाजी को बड़ी चाह से ग्रहण कर लेंगे और धनी पर अपना रंग ऐसा चढ़ाएंगे जैसे नरम कपड़े पर पक्की छपाई होती है।

ममता तूं मायातणी, निबल थई निरवाण।
फिट फिट भूंडी दुष्ट पापनी, कीधी मुझने घणी हाण।।६१ ।।

अब जीव ममता से कहता है कि हे ममता! तू माया की बनकर कमजोर हो गई। हे दुष्ट पापिनी! तुझे धिक्कार है। तूने मुझे बहुत नुकसान पहुंचाया।

हवे ममता आव मारा वालाजीमां, बीजो मूक सर्व संसार।
सबल संघातण थाय मुझ पासे, मूने मल्या छे मारो आधार।।६२ ।।

हे ममता! अब तुम वालाजी में आ जाओ और सब संसार को छोड़ दो। तुम मेरी सच्ची साथी बन जाओ। मुझे मेरे प्राणाधार मिल गए हैं।

हूं संघातण छऊं जो तमारी, तमे लेओ ए निध।
ए निध अलगी थावा न दऊं, करो कारज तमे सिध।।६३ ।।

ममता कहती है कि मैं तुम्हारी साथी बन जाती हूं। तुम अपनी न्यामत संभालो। अब मैं यह न्यामत तुमसे अलग नहीं होने दूंगी। तुम अपनी सब चाहना पूरी कर लो।

हवे तूंने हूं कहूं रे कलपना, फिट फिट भूंडी अकरमण।
फोकटियाणी फजीत तें कीधां, कांई अमने अति घण।।६४ ।।

अब जीव कल्पना से कहता है कि हे कल्पना! तू कर्महीन है, पापी है, तुझे धिक्कार है। तूने बेकार में मेरी फजीहत की (मुझे अपमानित किया)।

हवे करमण था तूं आव कलपना, सेवा मांहें कर विचार।
वालैयो वालाजी मुझने मल्या, लाभ लऊं आवी मांहें संसार।।६५ ।।

हे कल्पना! अब तुम कर्मठ (न थकने वाला, कार्य करना) होकर (कार्यशील) आओ और धनी की सेवा में लगो। वालाजी मुझे माया में मिले हैं इसलिए मैं लाभ उठाऊं।

कहे कलपना ए काम म्हारो, हूं करूं विध विधना विचार।
अंग एके नव राखूं पाछो, सेवानी सेवा दाखूं सार।।६६ ।।

कल्पना कहती है कि अब यह मेरा काम है। सब प्रकार से विचार करके सब अंगों से सेवा करके दिखाऊंगी। कोई अंग पीछे नहीं रखूंगी।

Nijanand App

वेर राग बंने जोध जुजवा, साम सामा सिरदार।
वेर कीधूं तमे वल्लभजीसूं, राग कीधो संसार।। ६७ ।।

अब जीव वैर और राग से कहता है कि तुम बड़े योद्धा हो और आमने-सामने अगुए (प्रधान) हो। तुमने वालाजी से वैर किया और माया में लिप्त हो गए।

तमे मोसूं भूंडाई अति कीधी, तमने दऊं कटारी घाय।
एवो अवसर आव्यो मारा हाथमां, पण तमे भूलव्यो मूने दाय।। ६८ ।।

तुम दोनों ने (वैर और राग) मुझसे बड़ा कपट किया है, इसलिए तुम्हारे को कटारी से काट डालूं। मेरे हाथ में इतना सुन्दर अवसर आया था पर तुमने मेरा मौका गंवा दिया।

म्हारे मंडाण छे तम ऊपर, तमे कां थया मोसूं एम।
हवे हुंकारी आवो अम पासे, हूं लाभ लऊं वालाजीनो जेम।। ६९ ।।

हे वैर और राग! मुझे तुम्हारे ऊपर भरोसा था। तुम मुझसे ऐसे क्यों हो गए? अब ताल ठोंककर मेरे पास आओ जिससे मैं वालाजी का लाभ ले सकूं।

जोर करो तमे जोध जुजवा, राग आवो मांहें आधार।
वेर विधे विधे कठणाईसूं, जई बेसो मांहें संसार।। ७० ।।

हे वैर और राग! तुम अलग-अलग ताकत लगाओ। राग मेरे प्रीतम में; और वैर! तुम तरह-तरह की कठिनाइयों से संसार में चले जाओ।

वेर कहे स्यो वांक अमारो, जां धणी पोते घर नव राखे।
अमें आफरवा केम करी ग्रहूं, जां जीव चींधी नव दाखे।। ७१ ।।

वैर कहता है कि हमारा क्या कसूर है? जब घर का मालिक अपना घर नहीं देखे, जो जीव हमें इशारे से न समझावे तो हम अपने अनुमान से क्या करें?

राग कहे हूं रूडी पेरे, हलमल करूं आधार।
जीव धणी वचे अंतर टालूं, तो वखाणजो आवार।। ७२ ।।

अब राग कहता है कि मैं अच्छी तरह से प्रीतम के साथ एक रस हो जाऊंगा और जीव और धनी के बीच का अन्तर हटा दूं, तो मेरी प्रशंसा करना।

हवे वेर कहे मारी विध जोजो, केवी कठणाई करूं संसार।
कोई गुण जो जीवसूं जोर करे, तो उतरी वढूं तरवार।। ७३ ।।

वैर कहता है कि अब हमारी असलियत देखो। संसार में मैं कितनी कठोरता से व्यवहार करता हूं। दूसरा कोई भी गुण जो जीव के रास्ते में आएगा तो उसे तलवार से काट डालूंगा।

फिट फिट भूंडा स्वाद कहूं तूंने, मूने मल्याता मीठा आधार।
एह स्वाद मेलीने रे सोखिया, तूं स्वाद थयो संसार।। ७४ ।।

(अब जीव स्वाद से कहता है)—हे पापी स्वाद! तुझे धिक्कार है। मुझे मीठे प्रीतम मिले थे, जिनको तू छोड़कर संसार के निकम्मे स्वादों में लग गया।

Nijanand App

हवे रे स्वाद तूं थाय सुहागी, जोजो वल्लभनो मिठास।
ज्यारे तूं आव्यो ए मांहें, त्यारे केहिए न कर बीजी आस।।७५ ।।

हे स्वाद! तू वालाजी के मीठे रस को देखकर सौभाग्यवान बन। जब तू वालाजी के मीठे रस में आ जाएगा तो दूसरे स्वाद तुझे अच्छे नहीं लगेंगे।

स्वाद कहे ज्यारे ए सुख लाध्यो, त्यारे अभख थयो मोहजल।
उवल हतो ते टली गयो, हवे सवलो आव्यो बल।।७६ ।।

अब स्वाद कहता है कि जब यह सुख मिल गया तो संसार में खाने योग्य कुछ नहीं रहा। उलटे रास्ते हट गये और अब सीधा रास्ता मिल गया।

हवे रे कहूं तूंने गुणना उतार, तें वल्लभसूं कीधो ब्रोध।
में तूंने जाण्यो हतो सुहागी, फिट फिट कमल फेरण क्रोध।।७७ ।।

(अब जीव क्रोध से कहता है)—हे क्रोध! तुम सब गुणों में नीच हो, तुमने प्रीतम से विरोध किया। मैंने तुम्हें हितकारी समझा था, परन्तु तुमने मेरे मन को ही उलटा दिया।

क्रोध में तूंने जाण्यो पोतानो, पण नव सिध्यूं तूं मांहेंथी काम।
फिट फिट भूंडा दुष्ट अभागी, रही मारा हैडा मांहें हांम।।७८ ।।

हे क्रोध! तुमको मैंने अपना समझा था, पर तुमसे कोई काम सिद्ध नहीं हुआ। हे पापी! दुष्ट अभागे! तुझे धिक्कार है। मेरी चाहना मन की मन में ही रह गई।

हवे क्रोध कमल फेरी नाख तूं ऊंधो, ऊंधो फेरजे कमल संसारे।
एहवो अकरमी कां थई बेठो, तेम कर जेम सहु को संभारे।।७९ ।।

अब हे क्रोध! तू मेरे मन को उलटा फिरा दे, जैसे तूने पहले मेरे मन को उलटा संसार की तरफ घुमा दिया था। तू ऐसा निकम्मा होकर क्यों बैठ गया? तू कुछ ऐसा कर जिससे सब तुझे याद करें।

क्रोध कहे हूं घणुवे जोरावर, पण धणी विना करूं हूं केम।
हवे जो कोई गुण जीवने चंपावे, तो त्यारे तमे कहेजो मूने एम।।८० ।।

अब क्रोध कहता है कि मैं तो बहुत ही बलवान हूं, किन्तु मालिक के बगैर क्या करूं? यदि कोई गुण जीव को दबाता है तब तुम मुझसे कहना।

हवेने कहूं तूने चाक चकरडा, तूं चढी बेठो जीवने माथे।
आपोपूं नव ओलखया अभागी, फोकट फेरव्यो जीव निघाते।।८१ ।।

अब जीव मन से कहता है कि हे मन! तू जीव के सिर पर चढ़ के बैठ गया। हे अभागे! तूने अपने आपको नहीं पहचाना और व्यर्थ में जीव को भटका दिया।

अंध एवो कां थयो रे अभागी, तें नव सुण्यो आटलो पुकार।
फिट फिट भूंडा फेर न राख्यो. ज्यारे मलिया मूने आधार।।८२ ।।

हे अभागे मन! तू ऐसा अन्धा क्यों हो गया? क्या तूने प्रीतम की इतनी आवाज नहीं सुनी? जब मुझे धनी मिले थे उस समय तूने अपना घूमना बन्द क्यों नहीं किया? (स्थिर क्यों नहीं हुआ)।

Nijanand App

मन समरथ सबल तूं बलियो, तारा वेगनो कीहो कहूं विस्तार।
सूझ सबल मांहे तूं फरतो, आडो ऊभो द्रोड अपार।। ८३ ।।

हे मन! तू समर्थ है और बलवान है। तेरी चलने की गति का कहां तक बखान करूं? तू सब जगह घूमता है। जैसी भी स्थिति हो सब में अपार दौड़ता है (सुख में, दुःख में तथा दुनियां के हर रंग में, हर हालत में दौड़ता ही रहता है)।

हवे तूं मांहें काम म्हारे छे अति घणो, जोसूं तारो जोर मेवार।
पचवीस पख मांहें तूं फरजे, रखे अधखिण रहे लगार।। ८४ ।।

हे मन! अब तुझसे मेरा बड़ा काम है। देखता हूं कि तू मेरा कैसा साथ निभाता है? पच्चीस पक्ष जो अपने घर के हैं, तू उनमें घूम और एक पल के लिए भी रुकना नहीं।

संकल्प विकल्प छे तूं माहीं, ते तूं कर सेवा नी।
मन उमंग आणे तूं अति घणो, श्री धाम धणी मलवा नी।। ८५ ।।

हे मन! तेरे अन्दर संकल्प-विकल्प हैं (संशय ही संशय से भरा है)। अब यह सब तू सेवा में बदल दे और धाम धनी के मिलने की लबालब उमंग भर ले।

मन कहे म्हारी वात छे मोटी, अने सकल विध हूं जाणू।
गजा पखे चढी बेसूं माथें, जीवने जोपे वस आणू।। ८६ ।।

अब मन कहता है कि मेरी बात बड़ी है। मैं सब तरह जानता हूं और बुद्धि के सिर पर चढ़ बैठता हूं। जीव को अच्छी तरह से अपने वश में कर लेता हूं।

ज्यारे जीव पोते जाग्रत न थाय, त्यारे करूं केम अमे।
जोर अमारूं त्यारे चाले, ज्यारे सामा जागी बेसो तमे।। ८७ ।।

मन कहता है कि जब जीव स्वयं जागृत न हो तो मैं क्या करूं? मेरी ताकत (बस) तभी चलती है जब तुम सामने जागृत होकर बैठो।

हवे पेर जोजो तमे म्हारी, करूं म्हारा बलनो विस्तार।
निध लईने दऊं ततखिण, तो केहेजो गुण सिरदार।। ८८ ।।

मन कहता है कि अब मेरी असलियत देखना। मैं अपने बल को रोशन (जाहिर) करता हूं। जो तुम्हारी न्यामत है तुरन्त तुम्हें लाकर दूंगा, तब मुझे गुणों में प्रधान कहना।

कोई जो केलवी जाणे अमने, तो फल लई दऊं तत्काल।
सेवानी सनंधो ते देखाडूं, जेणे धणी न थाय अलगा कोई काल।। ८९ ।।

मन कहता है कि कोई मेरी कदर करे तो जाने, उसे तुरन्त मन चाही वस्तु ला देता हूं। जो धनी किसी भी समय अलग नहीं होते हैं, उन धनी की सेवा कैसे करनी चाहिए, यह मैं बताता हूं।

भरम भ्रांत कीधी तमे भूंडी, एम न करे बीजो कोए।
तारतम अजवाले वालोजी ओलख्या, तमे आडा फरी वल्या तोहे।। ९० ।।

अब जीव भ्रम-भ्रान्ति (धोखा और सन्देह) से कहता है, हे धोखा और सन्देह! तुमने पाप का काम किया है। ऐसा दूसरा कोई नहीं करता। तारतम ज्ञान के उजाले में भी वालाजी को नहीं पहचाना और उलटे बीच में आड़े आ गए।

Nijanand App

जो आकार तमारे होत रे अभागी, तो कटका करूं तरवारे।
पींजी पींजी पुरजा करी, वली वली काढूं हेठल धारे।। ९१ ।।

हे भ्रम-भ्रान्ति, हे अभागो! यदि तुम्हारा आकार होता तो तलवार से काट डालता और तुम्हारे जोड़-जोड़ के टुकड़े करके नीचे धरती पर फेंक देता।

हवे जोपे थईने जाओ संसार मांहें, ए छे तेवा थाओ तमे।
जेम अजवाले श्री वालोजीने ओलखी, एमांमूल जोत देखूं जेम अमे।। ९२ ।।

हे भ्रम-भ्रान्ति! अब सावधान होकर संसार में चले जाओ। जैसा यह संसार है वैसे ही तुम हो जाओ, ताकि हम तारतम के उजाले में अपने धाम धनी को पहचान सकें।

भरम भ्रांत कहे सांभलो जीवजी, अमने मारो तरवारो।
कीहे ठिकाणे निद्रा करो, ते आपोपूं कां न संभारो।। ९३ ।।

अब भ्रम और भ्रान्ति कहते हैं, हे जीव! सुनो, तुम हमको आज तलवार से मारते हो। आज दिन तक तुम कहां सो रहे थे? अपने आप क्यों नहीं संभले?

जेहेनो धणी पोते निध पामे, ते केम सुए करारे।
आप पोते खबर नव राखे, अने फोकट अमने मारे।। ९४ ।।

हे जीव! जिस मालिक को अपना अखण्ड फल (धाम धनी) मिले तो वह कहीं चैन से नहीं सो सकता। आप अपनी गफलत छोड़ते नहीं हो और व्यर्थ में हमें मार रहे हो?

ज्यारे तमे जाग्या जोरावर, त्यारे अमे जाऊं छूं संसार।
भले मल्या धणीजी तमने, हवे करो अजवालूं अपार।। ९५ ।।

हे जीव! जब तुम अपनी ताकत से जाग गए तो हम संसार में चले जाते हैं। तुमको तुम्हारे अच्छे धनी मिल गए। अब इस तारतम की रोशनी से वाणी का प्रकाश करो।

फिट फिट लज्या तूं थई लोकिक नी, बीजा बांध्या कुटमसों करम।
धाम धणी मूने तेडवा आव्या, तिहां तूने न आवी सरम।। ९६ ।।

अब जीव शर्म को कहता है, हे लज्जा! तू सांसारिक बनकर संसार की हो गई और झूठे कुटुम्ब कबीले से सम्बन्ध जोड़ लिया। तुझे धिक्कार है। मुझे धाम के धनी बुलाने आए हैं। वहां तुझे शर्म नहीं आई।

दुष्ट पापनी तें सूं कीधूं, आगल करीस हूं केम।
केही पेरे हूं मोंहों उपाडीस, मारा धणी आगल न आवी सरम।। ९७ ।।

जीव कहता है, हे दुष्ट, पापिनी लज्जा! यह तूने क्या किया? अब आगे मैं क्या करूंगा? परमधाम में धनी के आगे मुंह उठाकर कैसे देखूंगा? तूने मुझे शर्मिन्दा कर दिया है।

हवे रे सरमडी कहूं हूं तूने, तूं जोजे मूल सगाई।
आगे अवसर मोटो चूकी, हवे फरी आवी जोगवाई।। ९८ ।।

जीव शर्म को कहता है, हे शर्मिन्दगी! तुम मूल के सम्बन्ध को देखो। तुम पहले अच्छा मौका चूक गई। अब फिर तन (सुअवसर) मिला है।

Nijanand App

लज्या कहे हूं घणुए भूली, हवे वालाजीसूं मुख केम मेलूं।
दुस्तर ऊपर आगज उठो, जेणे भूलवी मूने पेहेलूं।। ९९ ।।

अब शर्म कहती है कि मुझसे बड़ी भारी भूल हुई है। अब वालाजी से मुख कैसे मोड़ूं? कठिन दुनियां की शर्म पर आग लग जाए जिसने मुझे पहले भुला दिया था।

फिट फिट भूंडी आसा तूं थई सागरनी, धणी मेल्या विसारी।
जीवने सुफल जे हाथ लागूं, भूंडी ते तूं बेठी हारी।। १०० ।।

अब जीव आशा को कहता है, हे पापिनी! तू भवसागर की (माया की) हो गई और धनी को छोड़ कर माया में जाकर बैठ गई। जीव को सफल करने के लिए अखण्ड फल मिला था। हे पापिनी! उसे तू हार बैठी है (गंवा दिया है)।

एह फल तें मूकी करीने, नीच वस्त कां लीधी।
ए दोष सर्वे जीवने बेठो, तूंने सिखामण नव दीधी।। १०१ ।।

हे पापिनी आशा! तूने ऐसे अखण्ड फल को छोड़कर नीच माया को क्यों ग्रहण किया? यह सारा दोष (गुनाह) जीव पर लगा, तूने उसे समझाया क्यों नहीं?

हवे आस धणीनी घणूं मोटी, थाईस हूं विचारी।
मणा नहीं राखुं कोई आसडी, हवे लेजो सुफल संभारी।। १०२ ।।

अब आशा कहती है, मैं अच्छी तरह विचार कर कहती हूं कि धनी की आशा ही बड़ी है, इनसे छोटी वस्तु (माया की चाहना) नहीं रखूंगी और अब इससे तुम अखण्ड फल लेकर फेरा सफल करो।

अचेत गुण तूं आव्यो अकरमी, धाख थावा नव दीधी।
जीवने जे निध हाथ लागी, भूंडा तें ते जुई कीधी।। १०३ ।।

अब जीव कहता है, हे अकरमी अचेत! तू अब आया है तूने धनी की पहचान नहीं करने दी। जीव को जो न्यामत (प्रीतम) हाथ आई थी, हे पापी! तूने मुझे उससे जुदा कर दिया।

ए निधनी केही वात करूं, भूंडा फिट फिट गुण अचेत।
तुझ बेठा तिवरता न आवी, नहीं तो ए निध हूं लेत।। १०४ ।।

अब इस न्यामत (प्रीतम) की मैं बात क्या कहूं? हे पापी अचेत गुण! तुझे धिक्कार है, तेरे होते हुए मुझे तीव्रता नहीं आई नहीं तो मैं प्रीतम को ग्रहण कर लेती।

अचेत कहे हूं सागरनो, ते जाऊं छूं सागर मांहें।
निध तमारी तमे पामो, ग्रहूं तिवरता बांहें।। १०५ ।।

अब अचेत गुण कहता है कि मैं माया का हो गया था और माया में ही जा रहा हूं। तुम अब अपनी न्यामत (प्रीतम) को प्राप्त करो और बाजू पकड़ कर रखो।

फिट फिट भूंडा गुण कहूं तिवरता, मूने मल्या ता धाम धणी।
एवो अवसर कोई निगमे, तें कीधी मोसूं भूंडी घणी।। १०६ ।।

अब जीव तीव्रता को कहता है, हे पापी तीव्रता गुण! तेरे को धिक्कार है। मुझे धाम धनी मिले थे। ऐसा अवसर कोई गंवाता है? तूने मुझे धोखा दिया।

Nijanand App

वली अवसर आव्यो छे हाथमां, हवे तिवरता तू संभारे।
रात दिवस तूं जीवने दोडावे, एक पाव पल मा विसारे।। १०७ ।।

(जीव तीव्रता को कहता है) हे तीव्रता! फिर से अवसर हाथ में आया है। अब तू याद रखना। रात दिन जीव को दौड़ाते रहना। एक-चौथाई पल के लिए भी प्रीतम को नहीं छोड़ना।

तिवरता कहे हूं बलवंती, जीवने दऊं हूं जोर।
वस करी आपूं धणी तमारो, करूं पाधरा दोर।। १०८ ।।

अब तीव्रता कहती है कि मैं बलवान हूं और जीव को ताकत देती हूं। मैं धनी को वश में करके आपको दे रही हूं। अब सीधा रास्ता खोल दिया है, सीधे दौड़ो।

सील संतोख हवे आवजो ढूकडा, बांधो सागर आडी पाल।
गुण सघला केहेसो तेम करसे, नथी कांई बीजो जंजाल।। १०९ ।।

अब जीव शील और सन्तोष को कहता है, हे शील और सन्तोष! मेरे पास आओ और माया के सागर (भवसागर) के सामने परदा लगा दो (माया की चाहना खत्म कर दो)। अब सब गुणों को जो तुम कहोगे वह सब वैसा ही करेंगे। अब इन गुणों के सामने कोई झंझट नहीं है।

सील कहे संतोख सुनो, आपणने कीधां छे पाल।
परवत तांणें पूर सागरना, मांहें वेहेवट छे निताल।। ११० ।।

अब शील सन्तोष को कहता है कि आपने पाल तो बांध दी, किन्तु पहाड़ के समान सागर में प्रवाह (लहरें) आ रहा है और बहाव भी बड़ा तेज है।

आमलिया अलेखे दीसे, लेहेरों मेर समान।
मछ जोरावर मांहें छे मोटा, पाल करवी एणे ठाम।। १११ ।।

इस सागर में अनेक भंवर दिखाई देते हैं। लहरें पहाड़ के समान हैं और बड़े-बड़े मगरमच्छ हैं। तुम कहते हो कि इनके सामने परदा बांध दो।

हवे बांधिए पाल खरो करी पाइयो, जेम खसे नहीं लगार।
पछे जल पोते ज्यारे ठाम ग्रहसे, त्यारे सामूं सोभा थाय अपार।। ११२ ।।

सन्तोष शील को कहता है कि अब वह अपने परदे को मजबूत खूंटे (पाए) से बांधे, जिससे परदा जरा भी खिसके नहीं। बाद में जब जल (माया की लहरें) अपने ठिकाने वापस चला जाएगा, तब हमारी शोभा बढ़ जाएगी।

हवे ए पाल अमे बांधसूं जीवजी, पण तमे थाओ तत्पर।
आ अवसर बीजी वार नहीं आवे, सोभा साथ मांहें ल्यो घर।। ११३ ।।

अब शील और सन्तोष दोनों मिलकर जीव से कहते हैं, हे जीव! तुम होशियार हो जाओ। अब हम दोनों मिलकर पाल बांध रहे हैं (परदा लगा रहे हैं)। यह अवसर तुम्हें बार-बार नहीं मिलेगा, इसलिए साथ के बीच यह शोभा अपने घर में लो।

हवे जाग जीव तूं जोपे बलिया, तूने केही दऊं गाल।
में तूने घणुए फिटकार्‍यो, पण चूक्यो अवसर निनाल।। ११४ ।।

हे बलवान जीव! तू अब जाग जा, तुझे कौन-सी गाली दूं? मैंने तुझे बहुत फटकारा, फिर भी तूने अवसर (धनी का साथ) छोड़ दिया।

Nijanand App

कठणाई में जोई जीव तारी, अति घणो निखर अपार।
धणी धमी धमीने थाक्या, पण नेठ नव गलियो निरधार।। ११५ ।।

हे जीव! मैंने तेरी कठोरता देखी, तू बेहद कठोर (निखर) है। धनी कह-कहकर थक गए पर तू निश्चित ही नहीं गला।

॥ प्रकरण ॥ २० ॥ चौपाई ॥ ५२५ ॥

जीवनो प्रबोध

सांभल जीव कहुं वृतांत, तूने एक दऊं द्रष्टांत।
ते तुं सांभल एके चित, तूंने कहूं छूं करीने हित।। १ ।।

हे जीव! एक कथा सुनो, मैं एक दृष्टान्त तुझे देती हूं। इसको ध्यान से सुनना, मैं तेरी भलाई के वास्ते कहती हूं।

परीछिते एम पूछ्यो प्रश्न, सुकजी मूने कहो वचन।
वौद भवन मांहें मोटो जेह, मुझने उतर आपो तेह।। २ ।।

राजा परीक्षित ने शुकदेवजी से एक प्रश्न पूछा कि चौदह लोकों में सबसे बड़ा कौन है? इसका मुझे उत्तर दो।

त्यारे सुकजी एम बोल्या प्रमाण, ग्रहजो वचन उत्तम करी जांण।
चौद भवनमां मोटो तेह, मोटी मतनो धणी छे जेह।। ३ ।।

तब शुकदेवजी ने इस प्रकार कहा कि इन वचनों को अच्छी तरह ग्रहण करना—चौदह लोकों में वही बड़ा है, जो बड़ी बुद्धि का मालिक है।

वली परीछितें पूछ्यूं एम, जे मोटी मत ते जाणिए केम।
मोटी मतनो कहूं विचार, ग्रहजो परीछित जाणी सार।। ४ ।।

फिर परीक्षित ने इस प्रकार पूछा कि यह कैसे जाना जाए कि बुद्धि किसकी बड़ी है? शुकदेवजी कहते हैं कि मैं बड़ी बुद्धि की पहचान कराता हूं। तुम इस सार को समझ कर ग्रहण करना।

मोटी मत ते कहिए एम, जेहेना जीवने वल्लभ श्री कृष्ण।
मतनी मततां ए छे सार, वली बीजी मतनो कहूं विचार।। ५ ।।

बड़ी बुद्धि वाला उसी को ही कहा जाए जिसके जीव के प्रीतम श्री कृष्णजी अक्षरातीत हैं। बड़ी बुद्धि के बारे में सबका यही विचार है, फिर दूसरी बुद्धि के बारे में भी विचार बताता हूं।

एह विना जे बीजी मत, ते तूं सर्वे जाणे कुमत।
कुमत ते केही केहेवाय, नीछारा थी नीची थाय।। ६ ।।

इसके बिना जो दूसरे लोगों की बुद्धि है, उन सबकी मायावी बुद्धि (कुमति) समझना। परीक्षित कहता है कि कुमति किसको कहते हैं? शुकदेवजी कहते हैं कि नीच से नीच जो बुद्धि हो उसे कुमति कहते हैं।

एवडो तेहेनो स्यो वृतांत, तेहेनुं कांइक कहूं द्रष्टांत।
सांभल परीछित कहूं वली तेह, एक मोटी मतनो धणी छे जेह।। ७ ।।

परीक्षित पूछते हैं कि इस कुमति की क्या हकीकत है? शुकदेवजी कहते हैं कि उसका कुछ दृष्टान्त देता हूं। हे परीक्षित! सुनो, मैं फिर से कहता हूं और एक बड़ी बुद्धि के मालिक की पहचान कराता हूं।

Nijanand App

कठणाई में जोई जीव तारी, अति घणो निखर अपार।
धणी धमी धमीने थाक्या, पण नेठ नव गलियो निरधार।। ११५ ।।

हे जीव! मैंने तेरी कठोरता देखी, तू बेहद कठोर (निखर) है। धनी कह-कहकर थक गए पर तू निश्चित ही नहीं गला।

॥ प्रकरण ॥ २० ॥ चौपाई ॥ ५२५ ॥

जीवनो प्रबोध

सांभल जीव कहुं वृतांत, तूने एक दऊं द्रष्टांत।
ते तुं सांभल एके चित, तूंने कहूं छूं करीने हित।। १ ।।

हे जीव! एक कथा सुनो, मैं एक दृष्टान्त तुझे देती हूं। इसको ध्यान से सुनना, मैं तेरी भलाई के वास्ते कहती हूं।

परीछिते एम पूछ्यो प्रश्न, सुकजी मूने कहो वचन।
चौद भवन मांहें मोटो जेह, मुझने उतर आपो तेह।। २ ।।

राजा परीक्षित ने शुकदेवजी से एक प्रश्न पूछा कि चौदह लोकों में सबसे बड़ा कौन है? इसका मुझे उत्तर दो।

त्यारे सुकजी एम बोल्या प्रमाण, ग्रहजो वचन उत्तम करी जांण।
चौद भवनमां मोटो तेह, मोटी मतनो धणी छे जेह।। ३ ।।

तब शुकदेवजी ने इस प्रकार कहा कि इन वचनों को अच्छी तरह ग्रहण करना—चौदह लोकों में वही बड़ा है, जो बड़ी बुद्धि का मालिक है।

वली परीछितें पूछ्यूं एम, जे मोटी मत ते जाणिए केम।
मोटी मतनो कहूं विचार, ग्रहजो परीछित जाणी सार।। ४ ।।

फिर परीक्षित ने इस प्रकार पूछा कि यह कैसे जाना जाए कि बुद्धि किसकी बड़ी है? शुकदेवजी कहते हैं कि मैं बड़ी बुद्धि की पहचान कराता हूं। तुम इस सार को समझ कर ग्रहण करना।

मोटी मत ते कहिए एम, जेहेना जीवने वल्लभ श्री कृष्ण।
मतनी मततां ए छे सार, वली बीजी मतनो कहूं विचार।। ५ ।।

बड़ी बुद्धि वाला उसी को ही कहा जाए जिसके जीव के प्रीतम श्री कृष्णजी अक्षरातीत हैं। बड़ी बुद्धि के बारे में सबका यही विचार है, फिर दूसरी बुद्धि के बारे में भी विचार बताता हूं।

एह विना जे बीजी मत, ते तूं सर्वे जाणे कुमत।
कुमत ते केही केहेवाय, नीछारा थी नीची थाय।। ६ ।।

इसके बिना जो दूसरे लोगों की बुद्धि है, उन सबकी मायावी बुद्धि (कुमति) समझना। परीक्षित कहता है कि कुमति किसको कहते हैं? शुकदेवजी कहते हैं कि नीच से नीच जो बुद्धि हो उसे कुमति कहते हैं।

एवडो तेहेनो स्यो वृतांत, तेहेनुं कांइक कहूं द्रष्टांत।
सांभल परीछित कहूं वली तेह, एक मोटी मतनो धणी छे जेह।। ७ ।।

परीक्षित पूछते हैं कि इस कुमति की क्या हकीकत है? शुकदेवजी कहते हैं कि उसका कुछ दृष्टान्त देता हूं। हे परीक्षित! सुनो, मैं फिर से कहता हूं और एक बड़ी बुद्धि के मालिक की पहचान कराता हूं।

Nijanand App

मोटी मत वल्लभ धणी करे, ते भवसागर खिण मांहें तरे।
तेहेने आडो न आवे संसार, ते नेहेचल सुख पामे करार।। ८ ।।

बड़ी बुद्धि वही है जो श्री कृष्णजी अक्षरातीत को प्रीतम माने, वह एक पल में भवसागर से पार हो जाएगा। उसे संसार आड़े नहीं आएगा। वह अखण्ड सुख की प्राप्ति करेगा (योगमाया में चला जाएगा)।

ओली कुमत कहिए तेणे सूं थाए, अंध कूप पड्यो पचे मांहें।
ए सुकजीना कह्या वचन, जीव विमासी जुए जोपे मन।। ९ ।।

परीक्षित पूछता है कि कुमति (नीच बुद्धि) किसे कहते हैं? उससे क्या होता है? शुकदेवजी उत्तर देते हैं कि जैसे अन्धा कुएं में पड़ा-पड़ा सड़ता है, उसी प्रकार कुमति वाला भवसागर के जन्म-मरण में पड़ा सड़ता रहता है। इसलिए हे परीक्षित! जीव से विचार कर मन में अच्छी तरह देख।

विमासणनी नहीं ए वात, तारो निरमाण बांध्यो स्वांसो स्वांस।
तेहेनो पण नथी विस्वास, जे केटला तूं लइस ए स्वांस।। १० ।।

हे परीक्षित! यह चिन्ता करने की बात नहीं है। तेरा जीवन सांसों की गिनती से बंधा है। यह भी विश्वास नहीं है कि कितनी सांसें बाकी हैं जो तुझे लेनी हैं।

एक खिणमां कई वार आवे जाय, त्यारे कात्यूं वीछ्यूं कपासिया थाय।
ते माटे सुणजे रे जीव सही, मोटी मत में तुझने कही।। ११ ।।

यह सांस एक पल में कई बार आती-जाती है, जैसे कातने से पहले रूई धुनी जाती है तब कहीं उसका फल (बिनौला) निकलता है। इसलिए हे जीव! सुन, बड़ी बुद्धि की पहचान तुझे करा दी है।

जे जोगवाई छे तारे हाथ, ते आंणी जिभ्याए केही कहूं वात।
आटला दिवस ते जाण्यूं नव जाण, मूरख करे तेम कीधुं अजांण।। १२ ।।

हे जीव! यह मनुष्य तन जो तेरे हाथ में है इसकी हकीकत जबान से कैसे कहूं? इतना जीवन तूने ऐसे ही गंवा दिया। जैसा मूर्ख अज्ञानता में करते हैं, वैसा तूने किया।

हवे ए वचन विचारजे रही, सुकजी पाय साख पुरावी सही।
हवे एकवचन कहूं सुणजे जीव सही, वालाजीना चरणतूं रेहे जे ग्रही।। १३ ।।

हे जीव! शुकदेवजी की जो गवाही हमने सुनाई है, उन वचनों को विचार कर देखो, एक बात खास कर सुन लो कि वालाजी के चरणों को पकड़ कर रहना।

सुणजे वली धणीना वचन, वाणी कहे ते ग्रहजे मन।
रखे पाणीवल विहिलो थाय, आवो नहीं लाभे रे दाय।। १४ ।।

अब फिर से धनी के वचनों को सुनो। जो वचन कहे हैं उन्हें मन में धरो। इनसे एक क्षण के लिए अलग मत हो। ऐसा मौका दुबारा नहीं मिलेगा।

भरम भाजवा कह्या वचन, मोटीमत ग्रहे जेम थाय धन धन।
हवे ओलखजे जोपे करी, भरम भ्रांत मूके परहरी।। १५ ।।

तुम्हारे संशय मिटाने के लिए ही यह वचन कहे हैं। बड़ी बुद्धि को ग्रहण कर लेना जिससे तू धन्य हो जाए। अच्छी तरह से अब पहचान कर भ्रम और भ्रान्ति को छोड़ देना।

Nijanand App

मुख मांहेंथी वचन कह्या तो सूं, जो हजी न छेक निकलियो तूं।
आगे किव मांडी छे अनेक, तें पण कांइक कीधी विसेक।। १६ ।।

केवल मुख से कह देने से क्या हुआ? अभी तक तूने अपनी कमियों को नहीं निकाला (अर्थात् दुनियां के देवी-देवताओं की पूजा-अर्चना या व्रत, इत्यादि कुरीतियां नहीं छोड़ीं)। आगे भी कई लोगों ने कविता की रचना कर इसे समझाया है। फिर भी तेरे लिए विशेष रूप से कुछ अधिक स्पष्ट कर दिया।

पण सांचो तो जो समझे जीव, तो वाणी भले मुखथी कही पीउ।
ए वाणी नथी कांई किवना जेम, मारा जीवने खीजवा कह्या में एम।। १७ ।।

सच्चा जीव तो वही है जो पिया के मुखारबिन्द की वाणी को समझे। यह वाणी कोई कविता नहीं है। यह तो मैंने जीव को फटकारने के लिए कही है।

जीव छे मारो अति सुजाण, ते धणीना चरण नहीं मूके निरवाण।
पण सांचो तो जो करे प्रकास, जोत जई लागी आकास।। १८ ।।

मेरा जीव तो जानकार है। वह अब धनी के चरण को निश्चित ही नहीं छोड़ेगा, पर जीव तो सच्चा तभी कहलाएगा जब इस ज्ञान की ज्योति के प्रकाश को आसमान तक पहुंचाएगा।

आंणी जोगवाईए तो एम थाय, चौद भवनमां जोत न समाय।
एम अमें न करूं तो बीजो कोण करे, धणी अमारे काजे बीजी दाण देह धरे।। १९ ।।

यह समय तो ऐसा मिला है कि चौदह लोकों में ज्ञान की रोशनी समाती नहीं। इस तरह ज्ञान का प्रकाश हम न करेंगे तो दूसरा कौन करेगा? हमारे वास्ते ही धनी ने दूसरी बार तन धारण किया है।

एणी केमे नव थाय सरम, एणी द्रष्टे केम न थाय नरम।
जीव छे मारो खरी वस्त, ते कां न करे अजवालूं अत।। २० ।।

ऐसा जानकर भी इनको शर्म क्यों नहीं आती? इनकी दृष्टि नरम क्यों नहीं होती? (अहंकार छोड़कर झुकते क्यों नहीं)। मेरा जीव सच्चा है तो वह वाणी का प्रकाश क्यों नहीं करे?

श्री सुंदरबाईने चरणज थकी, वली मोसूं गुण कीधां बाई गुणवंती।
मारे माथे दया रतनबाईनी घणी, एणी कृपाए जोपे ओलखीस धणी।। २१ ।।

श्री श्यामाजी (सुन्दरबाई) के चरणों की कृपा से और फिर मेरे ऊपर गुणवंतीबाई (गोवर्धन भाई) ने कृपा की तथा मेरे ऊपर रतनबाई (बिहारीजी) ने तो बहुत ही दया की। जिनकी कृपा से मैंने अपने धनी को पहचाना।

एहेनी दयाए जोत एम करीस, चरण धणीना चितमां धरीस।
इंद्रावती चरणे लागे आधार, सुफल फेरो करूं आवार।। २२ ।।

इनकी दया से धनी के चरण चित्त में धारण करूंगी, संसार में ज्ञान की ज्योति का प्रकाश करूंगी। इन्द्रावती धनी के चरणों में लगकर कहती है कि इस प्रकार मैं अपना आगमन सफल करूंगी।

॥ प्रकरण ॥ २१ ॥ चौपाई ॥ ५४७ ॥

हवे द्रष्ट उघाडी जो पोतानी, निरख धणो श्री धाम।
प्रेमल करी पोते आप संभारी, बांध गोली प्रेम काम।। १ ।।

अब आप अपनी दृष्टि खोलकर धाम के धनी की पहचान करो (पहचान कर देखो)। फिर इनकी पहचान करके अपने को संभालो और प्रीतम के प्रेम को हृदय में लेकर धनी से एक रस हो जाओ।

Nijanand App

मुख मांहेंथी वचन कह्या तो सूं, जो हजी न छेक निकलियो तूं।
आगे किव मांडी छे अनेक, तें पण कांइक कीधी विसेक।। १६ ।।

केवल मुख से कह देने से क्या हुआ? अभी तक तूने अपनी कमियों को नहीं निकाला (अर्थात् दुनियां के देवी-देवताओं की पूजा-अर्चना या व्रत, इत्यादि कुरीतियां नहीं छोड़ीं)। आगे भी कई लोगों ने कविता की रचना कर इसे समझाया है। फिर भी तेरे लिए विशेष रूप से कुछ अधिक स्पष्ट कर दिया।

पण सांचो तो जो समझे जीव, तो वाणी भले मुखथी कही पीउ।
ए वाणी नथी कांई किवना जेम, मारा जीवने खीजवा कह्या में एम।। १७ ।।

सच्चा जीव तो वही है जो पिया के मुखारबिन्द की वाणी को समझे। यह वाणी कोई कविता नहीं है। यह तो मैंने जीव को फटकारने के लिए कही है।

जीव छे मारो अति सुजाण, ते धणीना चरण नहीं मूके निरवाण।
पण सांचो तो जो करे प्रकास, जोत जई लागी आकास।। १८ ।।

मेरा जीव तो जानकार है। वह अब धनी के चरण को निश्चित ही नहीं छोड़ेगा, पर जीव तो सच्चा तभी कहलाएगा जब इस ज्ञान की ज्योति के प्रकाश को आसमान तक पहुंचाएगा।

आंणी जोगवाईए तो एम थाय, चौद भवनमां जोत न समाय।
एम अमें न करूं तो बीजो कोण करे, धणी अमारे काजे बीजी दाण देह धरे।। १९ ।।

यह समय तो ऐसा मिला है कि चौदह लोकों में ज्ञान की रोशनी समाती नहीं। इस तरह ज्ञान का प्रकाश हम न करेंगे तो दूसरा कौन करेगा? हमारे वास्ते ही धनी ने दूसरी बार तन धारण किया है।

एणी केमे नव थाय सरम, एणी द्रष्टे केम न थाय नरम।
जीव छे मारो खरी वस्त, ते कां न करे अजवालूं अत।। २० ।।

ऐसा जानकर भी इनको शर्म क्यों नहीं आती? इनकी दृष्टि नरम क्यों नहीं होती? (अहंकार छोड़कर झुकते क्यों नहीं)। मेरा जीव सच्चा है तो वह वाणी का प्रकाश क्यों नहीं करे?

श्री सुंदरबाईने चरणज थकी, वली मोसूं गुण कीधां बाई गुणवंती।
मारे माथे दया रतनबाईनी घणी, एणी कृपाए जोपे ओलखीस धणी।। २१ ।।

श्री श्यामाजी (सुन्दरबाई) के चरणों की कृपा से और फिर मेरे ऊपर गुणवंतीबाई (गोवर्धन भाई) ने कृपा की तथा मेरे ऊपर रतनबाई (बिहारीजी) ने तो बहुत ही दया की। जिनकी कृपा से मैंने अपने धनी को पहचाना।

एहेनी दयाए जोत एम करीस, चरण धणीना चितमां धरीस।
इंद्रावती चरणे लागे आधार, सुफल फेरो करूं आवार।। २२ ।।

इनकी दया से धनी के चरण चित्त में धारण करूंगी, संसार में ज्ञान की ज्योति का प्रकाश करूंगी। इन्द्रावती धनी के चरणों में लगकर कहती है कि इस प्रकार मैं अपना आगमन सफल करूंगी।

।। प्रकरण ।। २१ ।। चौपाई ।। ५४७ ।।

हवे द्रष्ट उघाडी जो पोतानी, निरख धणो श्री धाम।
प्रेमल करी पोते आप संभारी, बांध गोली प्रेम काम।। १ ।।

अब आप अपनी दृष्टि खोलकर धाम के धनी की पहचान करो (पहचान कर देखो)। फिर इनकी पहचान करके अपने को संभालो और प्रीतम के प्रेम को हृदय में लेकर धनी से एक रस हो जाओ।

Nijanand App

प्रेमतणी गोली बांधीने, अमल करूं जोजो छाक।
चौद भवन मांहें किरण कुलांभी, फोडी जाऊं ब्रह्मांड पिउ पास।। २ ।।

प्रेम की मस्ती में डूबकर एकाकार हो जाऊं और उसकी मस्ती में मस्त हो जाऊं। चौदह लोकों में पिया के ज्ञान की किरणें फैलाकर ब्रह्माण्ड को लांघकर पिया के पास पहुंच जाऊं।

हवे वाचा मुख बोले तूं वाणी, करजे हांस विलास।
श्रवणा तुं संभार तिहारी, सुंण धणीनों प्रकास।। ३ ।।

हे मेरी जिह्वा! पिया से मीठी-मीठी बातों से दिल्लगी तथा विलास करो। अपने कानों से धनी के ज्ञान को सुनो।

जीवना अंग कहे परियाणी, तमे धणी देखाड्या जेह।
प्रले ब्रह्मांड जो थाय प्रगट, पण तोहे न मूकूं खिण एह।। ४ ।।

जीव के सब अंग सलाह कर कहते हैं कि आपने जिस धनी के दर्शन हमको कराए हैं, ब्रह्माण्ड के प्रलय होने तक भी एक पल भर भी इन्हें नहीं छोड़ेंगे।

हवे जाग जीव सावचेत थई, वालो ओलख आंख उघाड़ी।
कर अस्तुत विनती वल्लभसूं, नाख अंतर पट टाली।। ५ ।।

हे जीव! तू सतर्क होकर जाग जा और आंख खोलकर धनी को पहचान। प्रीतम से हाथ जोड़कर विनती कर और अपने तन के पर्दे को हटा।

आटला दिवस में नव ओलख्या मारा वालैया, में कीधूं अधम नूं काम।
महाचंडाल अकरमी अबूझ, में न ओलख्या धणी श्री धाम।। ६ ।।

इतने दिन तक मैंने अपने वालाजी को नहीं पहचाना। यह मैंने बहुत ही नीचता का काम किया। हे जीव ! तू महा कसाई है, कर्महीन है तथा अबूझ है, जिससे मैं धाम के धनी को नहीं पहचान सकी।

धिक धिक पडो मारा जीव अभागी, धिक धिक पडो चतुराई।
धिक धिक पडो मारा गुण सघलाने, जेणे नव जाणी मूल सगाई।। ७ ।।

मेरे अभागे जीव! तुझे धिक्कार है। चतुराई! तुझे भी धिक्कार है। मेरे सब गुणों को भी धिक्कार है, जिन्होंने मूल सम्बन्ध को नहीं पहचाना।

धिक धिक पडो ते तेज बलने, धिक धिक पडो रूप रंग।
धिक धिक पडो ते गिनानने, जेहेने नव लाधो प्रसंग।। ८ ।।

ऐसे तेज और बल, रूप और रंग तथा ज्ञान को धिक्कार है जिसने धनी से नाता नहीं जोड़ने दिया।

धिक धिक पडो मारी पांचो इन्द्री, धिक धिक पडो मारी देह।
श्री धाम धणी मूकी करी, संसारसूं कीधूं सनेह।। ९ ।।

मेरी पांचों इन्द्रियों (आंख, कान, नाक, जुबान और चमड़ी) को धिक्कार है। धिक्कार है मेरे तन को, जिसने धाम के धनी को छोड़कर संसार से प्यार किया।

Nijanand App

धिक धिक पडो मारा सर्वा अंगने, जे न आव्या धणीने काम।
में ओलखी नव बावरया, मारा धणी सुंदर श्री धाम।। १० ।।

धिक्कार है मेरे सब अंगों को जो धनी के काम न आए और पहचान करके भी मूल सम्बन्ध को न निभा सके।

तमे तमारा गुण नव मूक्यां, में कीधी घणी दुष्टाई।
हूं महा निबल अति नीच थई, पण तमे नव मूकी मूल सगाई।। ११ ।।

हे धनी! मैंने बहुत दुष्टता की, परन्तु फिर भी आपने अपनी मेहर करनी नहीं छोड़ी। मैंने बहुत ही नीचता की है, पर आपने फिर भी मूल सम्बन्ध नहीं छोड़ा।

॥ प्रकरण ॥ २२ ॥ चौपाई ॥ ५५८ ॥

हवे वारी जाऊं वनराय वल्लभनी, जेहेनी सकोमल छाया।
गुण जोजो तमे ए वन ओखदी, दीठडे दूर जाय माया।। १ ।।

अब मैं उन धनी के वृक्षों पर बलिहारी जाती हूं, जिनकी सुन्दर छाया है और जिनको देखने से माया का रोग मिट जाता है।

हवे वारणां लऊं आंगणियो वेलूं, जिहां बेसो छो संझा समे साथ।
परियाण करो धाम चालवा, घर वाटडी देखाडो प्राणनाथ।। २ ।।

उस आंगन की बलिहारी जाती हूं, जहां सायंकाल सुन्दरसाथ के बीच में धनी बैठते थे और धाम चलने की सलाह करके घर (परमधाम) का रास्ता दिखाते थे।

वली वारणा लऊं आंगणियां, अने आस पास सहु साज।
जिहां बेसो उठो ऊभा रहो, वल्लभ मारा श्री राज।। ३ ।।

फिर न्योछावर होती हूं उस आंगन पर तथा वहां पर आस-पास रखे सब सामान पर जहां हमारे प्यारे श्री धाम धनी बैठते, उठते और खड़े रहते थे।

घणी विधे हूं घोली घोली जाऊं, मंदिर ने वली द्वार।
भामणां लऊं ते भोमतणां, जिहां वसो छो मारा आधार।। ४ ।।

खास कर मैं उस मकान पर, मकान के दरवाजे पर और उस भूमि पर जहां मेरे प्रीतम रहते थे, बलिहारी जाती हूं।

वारी जाऊं पलंग पाटी ओसीसा, तलाई सिरख ओछाड।
वली वारी जाऊं चंद्रवा, जिहां पोढो सुख सेज्याए।। ५ ।।

वारी जाती हूं उस पलंग पर, निवार पर, तकिया पर, गद्दा पर, रजाई पर, पिछौरी पर, चन्दोवा पर, सेज पर, जिस पर मेरे धनी लेटते थे।

हवे घोली घोली जाऊं झीलाने चाकला, घोली जाऊं मंदिरना थंभ।
जेणे थंभे करे धणी पोताने, जुगते वाल्या बंध।। ६ ।।

वारी जाती हूं उस गलीचा पर, गद्दी पर, और मकान के थम्भों पर, जिन थम्भों के धनी ने स्वयं अपने हाथ से बन्ध बांधे थे।

Nijanand App

धिक धिक पडो मारा सर्वा अंगने, जे न आव्या धणीने काम।
में ओलखी नव बावरया, मारा धणी सुंदर श्री धाम।। १० ।।

धिक्कार है मेरे सब अंगों को जो धनी के काम न आए और पहचान करके भी मूल सम्बन्ध को न निभा सके।

तमे तमारा गुण नव मूक्यां, में कीधी घणी दुष्टाई।
हूं महा निबल अति नीच थई, पण तमे नव मूकी मूल सगाई।। ११ ।।

हे धनी! मैंने बहुत दुष्टता की, परन्तु फिर भी आपने अपनी मेहर करनी नहीं छोड़ी। मैंने बहुत ही नीचता की है, पर आपने फिर भी मूल सम्बन्ध नहीं छोड़ा।

।। प्रकरण ।। २२ ।। चौपाई ।। ५५८ ।।

हवे वारी जाऊं वनराय वल्लभनी, जेहेनी सकोमल छाया।
गुण जोजो तमे ए वन ओखदी, दीठडे दूर जाय माया।। १ ।।

अब मैं उन धनी के वृक्षों पर बलिहारी जाती हूं, जिनकी सुन्दर छाया है और जिनको देखने से माया का रोग मिट जाता है।

हवे वारणां लऊं आंगणियो वेलूं, जिहां बेसो छो संझा समे साथ।
परियाण करो धाम चालवा, घर वाटडी देखाडो प्राणनाथ।। २ ।।

उस आंगन की बलिहारी जाती हूं, जहां सायंकाल सुन्दरसाथ के बीच में धनी बैठते थे और धाम चलने की सलाह करके घर (परमधाम) का रास्ता दिखाते थे।

वली वारणा लऊं आंगणियां, अने आस पास सहु साज।
जिहां बेसो उठो ऊभा रहो, वल्लभ मारा श्री राज।। ३ ।।

फिर न्योछावर होती हूं उस आंगन पर तथा वहां पर आस-पास रखे सब सामान पर जहां हमारे प्यारे श्री धाम धनी बैठते, उठते और खड़े रहते थे।

घणी विधे हूं घोली घोली जाऊं, मंदिर ने वली द्वार।
भामणां लऊं ते भोमतणां, जिहां वसो छो मारा आधार।। ४ ।।

खास कर मैं उस मकान पर, मकान के दरवाजे पर और उस भूमि पर जहां मेरे प्रीतम रहते थे, बलिहारी जाती हूं।

वारी जाऊं पलंग पाटी ओसीसा, तलाई सिरख ओछाड।
वली वारी जाऊं चंद्रवा, जिहां पोढो सुख सेज्याए।। ५ ।।

वारी जाती हूं उस पलंग पर, निवार पर, तकिया पर, गद्दा पर, रजाई पर, पिछौरी पर, चन्दोवा पर, सेज पर, जिस पर मेरे धनी लेटते थे।

हवे घोली घोली जाऊं झीलाने चाकला, घोली जाऊं मंदिरना थंभ।
जेणे थंभे करे धणी पोताने, जुगते वाल्या बंध।। ६ ।।

वारी जाती हूं उस गलीचा पर, गद्दी पर, और मकान के थम्भों पर, जिन थम्भों के धनी ने स्वयं अपने हाथ से बन्ध बांधे थे।

Nijanand App

बेसो छो जिहां बलवंत बलिया, जाऊं बलिहारी तेणे ठाम।
साथ सकल सवारो आवी बेसे, वरणवो धणी श्री धाम।।७।।

जहां सर्वशक्तिमान धनी स्वयं बैठते थे उस ठिकाने (जगह) पर बलिहारी जाती हूं। वहां सब साथ जल्दी-जल्दी पहले से आकर बैठ जाते थे और आप परमधाम का वर्णन करते थे।

मंदिर मांहें अनेक विध दीसे, जोगवाई पूरण सर्वे।
अनेक वार लऊं तेना भामणा, मारी वारी नाखूं जीवसूं देह।।८।।

मकान में जो सब प्रकार का सामान है उस पर अनेक बार बलिहारी जाऊं और मैं तन, मन, जीवन से कुर्बान होती हूं।

भले तमे देह धर्या मुझ कारण, करी अजवालूं टाल्यो भरम।
जीव मारो घणो कठण हतो, तमे नेत्रे गाली कीधो नरम।।९।।

हे धनी! आपने मेरे लिए अच्छा तन धारण किया। संशय मिटाकर ज्ञान का प्रकाश दिया। मेरा जीव तो बहुत ही कठोर था, जिसे आपने अपने प्रेम भरे नेत्रों से गलाकर नर्म कर दिया।

हवे चरण कमलना लऊं भामणियां, अने भामणा लऊं सर्वा अंग।
हस्त कमलने वारणे, वारी जाऊं मुखार ने विंद।।१०।।

अब आपके चरण-कमलों पर मैं बलिहारी जाऊं, आपके सब अंगों पर हस्त कमल पर, मुखारबिन्द पर बलिहारी जाऊं।

वस्तर ऊपर वारी वारी जाऊं, भामणां लऊं भूखण।
नेत्र निरमलने वारणे, जेहेनी द्रष्टे फल पामिए ततखिण।।११।।

वस्त्रों पर बलिहारी जाऊं, आभूषणों पर बलिहारी जाऊं, निर्मल नैनों पर वारी जाऊं। जिनके दर्शनों से तुरन्त फल प्राप्त होता है।

जाऊं बलिहारी नासिका पर, अने दुखणां लऊं श्रवणा।
सुंदर सरूप सकोमल ऊपर, जीव लिए भामणा घणा घणा।।१२।।

नासिका पर, कानों पर, सुन्दर प्रसन्न स्वरूप पर (मेरा जीव) न्योछावर होती हूं।

सेवा करे छे बाई हीरबाई, ओछव रसोई जांहें।
अंतरगते तमे नित आरोगो, हूं लऊं भामणा घणा घणा तांहें।।१३।।

जहां हीरबाई (खेता भाई की धर्मपत्नी) सेवा करती हैं, नित्य मंगल रसोई होती है और जहां आप नित्य आरोगते (जलपान करते) थे, उस पर मैं वारी-वारी जाती हूं।

घोली घोली जाऊं ते वाणी ऊपर, जे वचन कहो छो रसाल।
साथ सकलने चरणे राखी, सागर आडी बांधो छो पाल।।१४।।

मैं आपके कहे मीठे वचनों पर बलिहारी जाती हूं। सुन्दरसाथ को अपने चरणों में बिठाकर माया के आगे पाल (बांध) बांधते थे (माया छुड़ाते थे)।

हवे सेवा करीस हूं सर्वा अंगे, दऊं प्रदखिणा रात ने दिन।
पल न वालूं निरखूं नेत्रे, वालपण करूं जीव ने मन।।१५।।

मैं अब सब अंगों से सेवा करूंगी। रात-दिन परिक्रमा दूंगी। एक पल के लिए भी आपसे जुदा नहीं होऊंगी। जीव और मन जैसे एक ही तन में रहते हैं, उसी तरह प्यार से मैं आपके साथ रहूंगी।

Nijanand App

मूं जेहेवा अजाण अबूझ दुष्ट होय अप्रीछक, अधम नीच मत हीन।
ते एणे चरणे आवी थाय जाण सिरोमण, सुघड सुप्रीछक प्रवीन।। १६ ।।

मेरे जैसे अनजान, नासमझ, दुष्ट, मूढ़, नीच और बुद्धिहीन आपके इन चरणों की कृपा से ज्ञानी, होशियार, बुद्धिमान, सुबुद्धि और चतुर बन जाते हैं।

तेना जीवने जगावी निध देओ छो निरमल, करो छो वासना प्रकास।
ते जीव वचिखिण वीर थई, चौद भवन करे अजवास।। १७ ।।

ऐसे जीवों को जागृत करके, अखण्ड ज्ञान देकर आत्मा की पहचान कराते हो। जिससे वह जीव चतुर और बलवान होकर चौदह लोकों में प्रकाश करते हैं।

हवे गुण केटला कहूं मारा वालैया, जे अमसूं कीधां आवार।
आणी जोगवाई ए न केहेवाय, पण लखवा तोहे निरधार।। १८ ।।

हे मेरे वालाजी! आपने इस बार जो कृपा की है, उन गुणों का मैं कहां तक बखान करूं? इस मनुष्य तन से उनका बखान नहीं होता है, परन्तु लिखना तो निश्चित ही है।

हवे आहीं उपमा केही दऊं मारा वालैया, ए सब्द न पोहोंचे तमने।
वचन कहूं ते ओरूं रहे, तेणे दुख लागे घणूं अमने।। १९ ।।

हे वालाजी! अब इसके ऊपर आपकी शोभा का क्या वर्णन करूं। मेरे शब्द आप तक नहीं पहुंचते और जो कहती हूं वह यहीं रह जाते हैं इसलिए मुझे अत्यन्त दुःख होता है।

एक वचने मारी दाझ भाजे छे, ज्यारे कहूं छूं धणी श्री धाम।
एक एणे वचने मारो जीव करास्यो, भाजी हैडानी हाम।। २० ।।

मेरे एक वचन "धाम के धनी" कहने में जीव की आग बुझ जाती है, जीव को शान्ति मिलती है और हृदय की चाहना मिट जाती है।

कहे इंद्रावती अति उछरंगे, फोडी ब्रह्मांड करूं प्रकास।
विगते वाट देखाडूं घरनी, जेम सोहेलो आवे मारो साथ।। २१ ।।

श्री इन्द्रावतीजी बड़ी उमंग के साथ कहती हैं कि इस ब्रह्माण्ड को फोड़ (पार) कर अच्छी तरह घर का रास्ता बताऊं जिससे मेरा सुन्दरसाथ आसानी से आ जाए।

|| प्रकरण || २३ || चौपाई || ५७९ ||

नोट : यह शोभा चाकला मन्दिर की है जो ऊपर लिखी गई है। आज यह गांगजी भाई के परिवार में सम्पत्ति बंटवारे के कारण आकार में छोटा हो गया है। इस चाकला मन्दिर में ही वह आंगन था, वृक्ष था, सामान था, जिसकी महिमा का वर्णन इस प्रकरण में है और कई ऐतिहासिक पुरानी वस्तुएं आज इसी चाकला मन्दिर में हैं। स्वामीजी जब हबसा में विराजमान थे, वहां वाणी उतरी। उस समय कोई और स्थान अपना नहीं था (और किसी स्थान का वाणी में वर्णन नहीं है)।

हवे अस्तुत ऊपर एक विनती कहूं, चरण तमारा जीवने नेत्रे ग्रहूं।
एणे चरणे मूने थई छे सिध, पेहेली निध मूने सुन्दरबाईए दिध।। १ ।।

श्री इन्द्रावतीजी इस स्तुति के बाद (जो ऊपर के प्रकरण में वर्णित है वही स्तुति है) विनती करती हैं कि हे धनी! आपके चरण जीव के नेत्रों में सदा रखूं। इन चरणों से मेरे सब कार्य सिद्ध हुए हैं। पहली निधि (तारतम ज्ञान) श्यामाजी (सुन्दरबाई) ने दिया है।

Nijanand App

मूं जेहेवा अजाण अबूझ दुष्ट होय अप्रीछक, अधम नीच मत हीन।
ते एणे चरणे आवी थाय जाण सिरोमण, सुघड सुप्रीछक प्रवीन।। १६ ।।

मेरे जैसे अनजान, नासमझ, दुष्ट, मूढ़, नीच और बुद्धिहीन आपके इन चरणों की कृपा से ज्ञानी, होशियार, बुद्धिमान, सुबुद्धि और चतुर बन जाते हैं।

तेना जीवने जगावी निध देओ छो निरमल, करो छो वासना प्रकास।
ते जीव वचिखिण वीर थई, चौद भवन करे अजवास।। १७ ।।

ऐसे जीवों को जागृत करके, अखण्ड ज्ञान देकर आत्मा की पहचान कराते हो। जिससे वह जीव चतुर और बलवान होकर चौदह लोकों में प्रकाश करते हैं।

हवे गुण केटला कहूं मारा वालैया, जे अमसूं कीधां आवार।
आणी जोगवाई ए न केहेवाय, पण लखवा तोहे निरधार।। १८ ।।

हे मेरे वालाजी! आपने इस बार जो कृपा की है, उन गुणों का मैं कहां तक बखान करूं? इस मनुष्य तन से उनका बखान नहीं होता है, परन्तु लिखना तो निश्चित ही है।

हवे आहीं उपमा केही दऊं मारा वालैया, ए सब्द न पोहोंचे तमने।
वचन कहूं ते ओरूं रहे, तेणे दुख लागे घणूं अमने।। १९ ।।

हे वालाजी! अब इसके ऊपर आपकी शोभा का क्या वर्णन करूं। मेरे शब्द आप तक नहीं पहुंचते और जो कहती हूं वह यहीं रह जाते हैं इसलिए मुझे अत्यन्त दुःख होता है।

एक वचने मारी दाझ भाजे छे, ज्यारे कहूं छूं धणी श्री धाम।
एक एणे वचने मारो जीव करास्यो, भाजी हैडानी हाम।। २० ।।

मेरे एक वचन "धाम के धनी" कहने में जीव की आग बुझ जाती है, जीव को शान्ति मिलती है और हृदय की चाहना मिट जाती है।

कहे इंद्रावती अति उछरंगे, फोडी ब्रह्मांड करूं प्रकास।
विगते वाट देखाडूं घरनी, जेम सोहेलो आवे मारो साथ।। २१ ।।

श्री इन्द्रावतीजी बड़ी उमंग के साथ कहती हैं कि इस ब्रह्माण्ड को फोड़ (पार) कर अच्छी तरह घर का रास्ता बताऊं जिससे मेरा सुन्दरसाथ आसानी से आ जाए।

।। प्रकरण ।। २३ ।। चौपाई ।। ५७९ ।।

नोट : यह शोभा चाकला मन्दिर की है जो ऊपर लिखी गई है। आज यह गांगजी भाई के परिवार में सम्पत्ति बंटवारे के कारण आकार में छोटा हो गया है। इस चाकला मन्दिर में ही वह आंगन था, वृक्ष था, सामान था, जिसकी महिमा का वर्णन इस प्रकरण में है और कई ऐतिहासिक पुरानी वस्तुएं आज इसी चाकला मन्दिर में हैं। स्वामीजी जब हबसा में विराजमान थे, वहां वाणी उतरी। उस समय कोई और स्थान अपना नहीं था (और किसी स्थान का वाणी में वर्णन नहीं है)।

हवे अस्तुत ऊपर एक विनती कहूं, चरण तमारा जीवने नेत्रे ग्रहूं।
एणे चरणे मूने थई छे सिध, पेहेली निध मूने सुन्दरबाईए दिध।। १ ।।

श्री इन्द्रावतीजी इस स्तुति के बाद (जो ऊपर के प्रकरण में वर्णित है वही स्तुति है) विनती करती हैं कि हे धनी! आपके चरण जीव के नेत्रों में सदा रखूं। इन चरणों से मेरे सब कार्य सिद्ध हुए हैं। पहली निधि (तारतम ज्ञान) श्यामाजी (सुन्दरबाई) ने दिया है।

Nijanand App

ए बंने सरूपमां जोतज एक, ते में जोयूं करी विवेक।
इंद्रावती करे विनती, तमे निध दीधी मूने तारतम थकी।। २ ।।

इन दोनों स्वरूपों में (श्री राजजी का आवेश स्वरूप और श्यामाजी की आतम) एक ही तेज है। इसको मैंने विवेक से विचार कर देखा। श्री इन्द्रावतीजी विनती करती हैं कि हे श्री राज श्यामाजी! आपने यह न्यामत (कुलजम स्वरूप की वाणी) तारतम से दी है।

मारो आसरो कांई न हतो मारा धणी, पण मूने बंने सरूपे दया कीधी घणी।
सेवा मां हूं न हती सरीख, नव जाणूं मूने निध दीधी केम करीस।। ३ ।।

हे मेरे धनी ! मेरा कोई सहारा नहीं था, परन्तु मेरे ऊपर आप दोनों स्वरूपों ने कृपा की है। मैं तो सेवा में भी शामिल न थी। पता नहीं, इन दोनों स्वरूपों ने मुझे किस प्रकार से यह न्यामत बख्शी।

क्रतव चितवणी जे सेवा करे, अवला गुण मोहजल परहरे।
ते पण मनसा वाचा करमणा करी, अने दोड करे घणूं वालपण धरी।। ४ ।।

अपना कर्तव्य समझ कर जो सेवा और चितवनी करते हैं, मोहजल की तरफ खींचने वाले उलटे गुणों को छोड़ते हैं, वह मन, वचन और कर्म से बड़े प्यार से आकर मिलते हैं।

पण जिहां लगे दया तमारी नव थाय, तिहां लगे सर्व तणाणूं जाय।
ते पारखूं में जोयुं निरधार, साथ सकलना वचन विचार।। ५ ।।

परन्तु जब तक आपकी कृपा नहीं होती, तब तक यह सब बेकार जाता है। इस बात को मैंने दृढ़ता से जांचकर देखा और परखा और सुन्दरसाथ के वचनों पर भी विचार कर देखा।

जे खरो थई जीव जुओ मन करे, कपट रत्ती रदे नव धरे।
एम थैने जे तमने सेवे, अने वचन विचारी तमारा ग्रहे।। ६ ।।

जो जीव सच्चे मन से देखे और हृदय में तनिक भी कपट न रखे, ऐसा बनकर जो आपकी सेवा करे और आपके वचनों को विचार कर ग्रहण करे।

साचो सनकूल करे जे तमारो चित, अने भ्रांत मेली करे जीवने हित।
चित ऊपर खरो चालसे जेह, सोभा घेर साथमां लेसे तेह।। ७ ।।

जो आपके चित्त को सच्चाई से प्रसन्न करे और संशय मिटाकर जीव का हित करे और आपके चाहे अनुसार सच्ची रहनी में आवे, उस सुन्दरसाथ को परमधाम में सबके बीच शोभा मिलेगी।

ए निद्रा उडाडीने कह्या वचन, श्री धाम धणी जीव जाणी मन।
वली जां जोऊं तमने जोपे करी, तां हजीमें निद्रा नथी मूकी परहरी।। ८ ।।

यह वचन मैंने नींद हटाकर (जागृत होकर) कहे। धाम के धनी को अपने जीव और मन से पहचाना है। फिर जब आपकी तरफ देखती हूं तो लगता है कि मैंने अभी भी निद्रा को नहीं छोड़ा।

आ वचन कह्या में निद्रा मंझार, जां जोपे करी जोऊं मारा जीवना आधार।
नहीं तो एह वचन केम कहूं मारा धणी, पण कांईक तासीर दीसे अस्थानक तणी।। ९ ।।

अपने जीव के जीवन (श्री राजजी महाराज) को अच्छी तरह से देखती हूं तो लगता है कि यह वचन भी मैंने नींद में कहे हैं। नहीं तो, हे मेरे धनी ! ऐसा मैं कैसे कह सकती थी। यह तो इस स्थान का असर है।

Nijanand App

वली जोऊं ज्यारे घरनी दिस तमने, त्यारे वली एम थाय अमने।
आ धामनां धणी ने में किहा कह्या वचन, त्यारे जीव विचारी दुख पामें मन।। १० ।।

हे धनी! फिर जब मैं घर (परमधाम) की तरफ देखती हूं तो फिर मुझे ऐसा लगता है कि यह वचन मैंने धाम के धनी को कहे हैं, तब जीव मन में विचार कर दुःखी होता है।

पण केम कहूं सब्द न पोहोंचे तमने, मारी जिभ्या थई माया अंगने।
वाला तमे थया छो सब्दातीत, मारी माया देह ऊभी सरीख।। ११ ।।

पर कैसे कहूं मेरे शब्द आप तक नहीं पहुंचते। मेरी जबान माया के अंग की है। हे वालाजी ! आप शब्दातीत हो और मेरा तन माया का है।

धणी लगतां वचन कहीस आवी धाम, त्यारे भाजीस मारा जीवनी हाम।
आ तां वचन में साथ माटे कह्या, ए वचन जोई साथ मूकसे माया।। १२ ।।

आपको आने वाले ज्ञान को कहकर ही मैं घर आऊंगी और तब मैं अपने जीव की चाहना मिटाऊंगी। यह वचन तो मैंने सुन्दरसाथ के वास्ते कहे हैं। वह इन वचनों को देखकर माया को छोड़ेंगे।

इंद्रावती कहे साथ ने तेडो तत्काल, ए माया कठण छे नितालं।
आ दुस्तर मांहें दुख देखे घणुं, नव ओलखाय कांई आपोपणुं।। १३ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि सुन्दरसाथ को तुरन्त बुलाओ। यह माया बड़ी प्रचण्ड है, अथाह है, कठिन है। इस कठिन माया में यह बहुत दुःख देख रहे हैं। इन्हें अपने आपकी पहचान नहीं हो पा रही है।

में तां ए लवो कह्यो मायाने सनमंध, हूं देखीती नव देखूं अंध।
एम कहिए तेने जे नव लिए सार, तमे ततखिण खबर लेओ छो आधार।। १४ ।।

मैंने तो माया की हकीकत देखकर थोड़े शब्दों में कहा है। मैं देखती हुई भी माया के रूप का वर्णन नहीं कर सकती। यह तो उसे कहा जाए जिसको खबर न हो। आप तो तुरन्त हमारी खबर लेते हो।

ते माटे वचन कह्या में एह, रखे अधखिण साथ विसारो तेह।
अधखिण रखे तमारी थाय, तो तेहेमां कै कलपांत वही जाय।। १५ ।।

हे धनी! इस वास्ते मैंने इन वचनों को कहा है कि आप आधे क्षण के लिए भी सुन्दरसाथ को मत भुलाओ। यह आधा क्षण कहीं आपका (परमधाम का) न होवे, जिसमें यहां के (इस माया के) कल्पान्त के कल्पान्त बीत जाते हैं।

मारा धणी हूं तो कहूं जो तमे अलगा हो,एक पाव पल अमारो विछोडो न सहो।
में एम तां कह्युं जो मारी ओछी मत, तमे अम माटे केटला करो छो खप।। १६ ।।

हे धनी ! मैं इसलिए कहती हूं कि आप हमसे अलग होकर एक चौथाई पल का भी वियोग सहन नहीं करते। मैं अपनी ओछी बुद्धि से कहती हूं। आप तो हमारे वास्ते बहुत मेहनत करते हो।

तमे आंही आव्या अम माटे देह धरी, दया अम ऊपर अति घणी करी।
तमे सामा आव्या आगल अम माट, लई आव्या तारतम देखाडी घर वाट।। १७ ।।

आप हमारे वास्ते यहां देह धारण करके आए और हमारे ऊपर बहुत कृपा की। आप हमारे लिए हमारे सामने हमसे पहले तारतम लेकर आए और घर (परमधाम) का रास्ता दिखाया।

Nijanand App

साथे माया मांगी ते थई अति जोर, तमे साद कीधां घणा करी बकोर।
पण केमे न वली अमने सुध, त्यारे व्रह देवा सरूपजी अद्रष्ट किध।। १८ ।।

सुन्दरसाथ ने जो माया मांगी थी वह जोरदार हो गई। आपने पुकार-पुकारकर घर की याद दिलाई, परन्तु हमें फिर भी सुध नहीं आई, तब विरह देने के लिए आपने तन छोड़ा।

पण तोहे न वली अमने सार, त्यारे वली बीजो देह धर्यो तत्काल।
ततखिण आवी अम भेला थया, वली वचन सागरना पूर ल्यावया।। १९ ।।

परन्तु फिर भी हमें खबर नहीं हुई, तो फिर आपने तुरन्त दूसरा तन धारण किया (इन्द्रावती के तन में आए)। उसी पल आकर आप हमको मिले और सागर के समान प्रवाह का प्रवाह यह वाणी (कुलजम सरूप) लाए।

में साथने कह्यूं ते केम तमने केहेवाय, कहिए तेहेने जे अलगां थाय।
एटलूं घणुए हूं जाणूं सही, ए वचन धणीने केहेवाय नहीं।। २० ।।

मैं सुन्दरसाथ से जो कहती हूं उसे आपसे कैसे कहा जाय? कहा तो उससे जाता है जो अलग रहता है। यह मैं निश्चित रूप से जानती हूं कि यह वचन धनी के लिए नहीं कहे जाते।

मारा मन मांहें एम आवी थयूं, साथ रखे जाणे अम माटे कां नव कह्यूं।
जो एम न कहूं तो खबर केम पडे, जे धणी साथ ऊपर दया एम करे।। २१ ।।

मेरे मन में ऐसा आया कि सुन्दरसाथ ऐसा न समझ बैठे कि हमारे लिए कुछ नहीं कहा। यदि ऐसा न कहूं तो सुन्दरसाथ को कैसे खबर मिले कि धनी हमारे ऊपर दया करते हैं।

साथने जणाववा माटे कह्या ए वचन, धणी तमारी दया हूं जाणूं जीवने मन।
साथ चरणे छे ते तां वचिखिण वीर, वली भले वचन विचारे द्रढ धीर।। २२ ।।

सुन्दरसाथ के समझने के लिए ही यह वचन कहे हैं। हे धनी! आपकी मेहर को तो मैं जीव और मन से अच्छी तरह जानती हूं। सुन्दरसाथ जो चरणों में हैं, वह बुद्धिमान (चतुर) हैं। वह इन वचनों पर अच्छी तरह दृढ़ता पूर्वक विचार करेंगे।

पण घणो खप करूं साथ पाछला माट, साथ जोई वचन आवसे आणी वाट।
साथ जोजो तमे दया धणीतणी, ए दयानी वातों छे अति घणी।। २३ ।।

परन्तु जो पीछे रह गए हैं उनके लिए यह प्रयत्न करती हूं। इन वचनों को देखकर पिछले सुन्दरसाथ (जो अभी नहीं जागे) इसी रास्ते पर आएंगे। हे सुन्दरसाथजी! तुम धनी की दया को देखो। यह कृपा की बात बहुत बड़ी है।

ए दयानी विध हूं जाणूं सही, पण आणी जिभ्याए केहेवाय नहीं।
जो जीवसूं वचन विचार सो प्रकास, तो ततखिण जीवने थासे अजवास।। २४ ।।

इस कृपा की हकीकत मैं जानती हूं, परन्तु इस जबान से कही नहीं जाती। अपने जीव से इन वचनों को (प्रकाश वाणी के) विचार कर देखो, तो ततखिन (तत्क्षण) जीव को उजाला हो जाएगा (पहचान हो जाएगी)।

Nijanand App

इंद्रावती सुन्दरबाईने चरणे, श्रीवालाजीनी सेवा करीस वालपण घणे।
सेवा जेहेवो बीजो पदारथ नथी, जाण जोई लेसे वचनज थकी।। २५ ।।

श्री इन्द्रावतीजी श्री श्यामाजी (सुन्दरबाई) के चरणों में लगकर कहती हैं कि वालाजी की सेवा बड़े प्यार से करूंगी। सेवा के समान और कोई वस्तु नहीं है। जो मन से विचार करके देखेगा, वही इसका लाभ लेगा।

॥ प्रकरण ॥ २४ ॥ चौपाई ॥ ६०४ ॥

कत्तण जो द्रष्टांत

खुई सा निद्रडी रे, जे अजां न छडे जीव।
तोहे नी सांगाए न वरे, जे पसां मथे हेडी भाइयां।। १ ।।

इस नींद को आग लग जाए जो अभी तक जीव को नहीं छोड़ती। अभी तक इसकी पहचान नहीं होती, इसलिए अपने ऊपर ऐसी बीत गई।

आंके निद्र उडाणके अदियूं मूजियूं, आंके डियां हिकमी साख।
अंईं अगईं पर पसी करे, हांणे मान सांगायो रे साथ।। २ ।।

तुम्हारी नींद उड़ाने के लिए, हे मेरी बहन! एक दृष्टान्त देती हूं। तुम पहले से ही इसको देखकर, हे साथजी! अपनी बड़ाई का ख्याल रखना।

आतण मंझे जे आवयो, जेडियूं हेरे मिडी।
किंनीनी कींझो कत्तयो, किन न भगी रे भींडी।। ३ ।।

सूत कातने के लिए आंगन में जितनी मिलकर जो सखियां आई हैं—उनमें किसी ने बारीक सूत काता और किसी ने तो रुई की पूनियों की बंधी गड्डी भी नहीं खोली।

कपाइतियूं आवयूं, कतण कोड करे।
केहे केहे संनो कत्तयो, घणो नेह धरे।। ४ ।।

वह हंसते-हंसते सूत कातने के लिए आई, किन्हीं-किन्हीं ने अधिक चित्त लगाकर बारीक सूत काता।

के बेठियूं मय विच थेई, पण नाडी तंद न चढे।
कत्तणके जे विसरयूं, से उथियूं ओराता धरे। ।५ ।।

कई अभिमान में बैठी हैं और तकले पर सूत नहीं चढ़ाया। जो यहां कातना भूल गईं, वह घर जाते समय पछताएंगी।

किंनी कतया सोहागजा, सूतर भरया सेर।
के बेठियूं मय विच थेई, पेर मथे चाडे पेर।। ६ ।।

कइयों ने पति को खुश करने के लिए सेर भर सूत कात डाला। कई पैर पर पैर चढ़ाकर सबके बीच बैठी रहीं।

के तंदू चाडीन तकडूं, लधाऊं ही वेर।
के नारींदयू भूं अडूं, के मथे चढयूं सिर मेर।। ७ ।।

कइयों ने तकले पर ऐसा समय पाकर जल्दी से सूत चढ़ाया, कई धरती की तरफ देख रही हैं। कई पहाड़ों की भांति सिर ऊपर कर बैठी हैं (अहंकार में)।

Nijanand App

इंद्रावती सुन्दरबाईने चरणे, श्रीवालाजीनी सेवा करीस वालपण घणे।
सेवा जेहेवो बीजो पदारथ नथी, जाण जोई लेसे वचनज थकी।। २५ ।।

श्री इन्द्रावतीजी श्री श्यामाजी (सुन्दरबाई) के चरणों में लगकर कहती हैं कि वालाजी की सेवा बड़े प्यार से करूंगी। सेवा के समान और कोई वस्तु नहीं है। जो मन से विचार करके देखेगा, वही इसका लाभ लेगा।

॥ प्रकरण ॥ २४ ॥ चौपाई ॥ ६०४ ॥

कत्तण जो द्रष्टांत

खुई सा निद्रडी रे, जे अजां न छडे जीव।
तोहे नी सांगाए न वरे, जे पसां मथे हेडी भाइयां।। १ ।।

इस नींद को आग लग जाए जो अभी तक जीव को नहीं छोड़ती। अभी तक इसकी पहचान नहीं होती, इसलिए अपने ऊपर ऐसी बीत गई।

आंके निद्र उडाणके अदियूं मूजियूं, आंके डियां हिकमी साख।
अंईं अगईं पर पसी करे, हांणे मान सांगायो रे साथ।। २ ।।

तुम्हारी नींद उड़ाने के लिए, हे मेरी बहन! एक दृष्टान्त देती हूं। तुम पहले से ही इसको देखकर, हे साथजी! अपनी बड़ाई का ख्याल रखना।

आतण मंझे जे आवयो, जेडियूं हेरे मिडी।
किंनीनी कींझो कत्तयो, किन न भगी रे भींडी।। ३ ।।

सूत कातने के लिए आंगन में जितनी मिलकर जो सखियां आई हैं—उनमें किसी ने बारीक सूत काता और किसी ने तो रुई की पूनियों की बंधी गड्डी भी नहीं खोली।

कपाइतियूं आवयूं, कतण कोड करे।
केहे केहे संनो कत्तयो, घणो नेह धरे।। ४ ।।

वह हंसते-हंसते सूत कातने के लिए आई, किन्हीं-किन्हीं ने अधिक चित्त लगाकर बारीक सूत काता।

के बेठियूं मय विच थेई, पण नाडी तंद न चढे।
कत्तणके जे विसरयूं, से उथियूं ओराता धरे। ।५ ।।

कई अभिमान में बैठी हैं और तकले पर सूत नहीं चढ़ाया। जो यहां कातना भूल गईं, वह घर जाते समय पछताएंगी।

किंनी कतया सोहागजा, सूतर भरया सेर।
के बेठियूं मय विच थेई, पेर मथे चाडे पेर।। ६ ।।

कइयों ने पति को खुश करने के लिए सेर भर सूत कात डाला। कई पैर पर पैर चढ़ाकर सबके बीच बैठी रहीं।

के तंदू चाडीन तकडूं, लधाऊं ही वेर।
के नारींद्यू भूं अडूं, के मथे चढ्यूं सिर मेर।। ७ ।।

कइयों ने तकले पर ऐसा समय पाकर जल्दी से सूत चढ़ाया, कई धरती की तरफ देख रही हैं। कई पहाड़ों की भांति सिर ऊपर कर बैठी हैं (अहंकार में)।

Nijanand App

हिक तंदू नारींदे वियनज्यूं, जमारो सभे वेई।
हिक फेरा डींदे फुटरयूं, पण हथ न छुताऊं पई।। ८ ।।

एक दूसरे का सूत देखकर अपनी उमर गंवाती है और इस प्रकार से एक रूपवती बनकर व्यर्थ घूमती है, पर हाथ से पूनी नहीं छुई।

के अची आतण मंझा, सुतियूं सुख करे।
उथियूं से उचाटमें, जडे सूतर संभारे।। ९ ।।

कई आतन (संसार) में आकर सुख से सोती हैं। जब उनको सूत की याद आएगी तब घबरा कर उठेंगी।

जिनीनी कींझो कतयो, तनके ता डेई।
सा जोर करे महें जेडिए, मरके मंझ बेही।। १० ।।

जिन्होंने अच्छा काता, शारीरिक मेहनत की, वह सब सखियों के बीच में हंसकर बैठेंगी (परमधाम में)।

जिंनी जाचो कतयो, फारी फुकारे।
सा माले मंझ सरतिए, सुहाग लधाई घरे।। ११ ।।

जिन्होंने बारीक सूत काता और बीच में सांस भी नहीं ली, वे सखियों के बीच में खुश होकर घर जाएंगी।

जडे सूतर सभनी न्हारयो, वीयन हथ पाए।
जिंनी मूर न कतयो, पोएसे मोंहों लिकाए।। १२ ।।

जब सबके सूत को धनी हाथ में लेकर देखेंगे, तो जिन्होंने कुछ भी नहीं काता वे मुंह छिपाकर (शर्म से) खड़ी होंगी।

सूतरवारियूं सुहागण्यूं, न्हारीन कर खणी।
हिक डिंनी स्याबासी जेडिए, व्यो मान लधाऊं धणी।। १३ ।।

जिन सुहागनियों ने बारीक सूत काता है, उनका सूत उठा-उठा कर देखेंगी। उनको सखियां शाबासी देंगी और उनका धनी उनको मान देगा।

हिक फेरीन अरट उतावरो, तनके ता डेई।
राती कन उजागरा, सुत्र कतींदियूं पण सेई।। १४ ।।

एक शरीर की ताकत से चरखे को तेजी से घुमाती है और रात को भी जागती है। वही सूत कातेगी।

जे कन गाल्यूं विचमें, तंद न उकले तिन।
पई रही तिन हथमें, पोए बेठ्यूं फेरीन मन।। १५ ।।

जो बीच में बातें करती हैं, उनसे तांत (तंद, तार) भी नहीं निकलता और पूनी उनके हाथ में ही रह जाती है। फिर पीछे मन को उदास कर बैठेंगी।

सभा विच सरतिए, गाल्यूं कंदियूं बेही।
पण जिंनी कीं न कतयो, तिंनी पर केही।। १६ ।।

सखियों की सभा के बीच में (घर में) बातें करेंगी। जिन्होंने कुछ भी नहीं काता है, उनकी हालत कैसी होगी?

Nijanand App

न कीं कत्यो रातमें, न कीं कत्यो डींह।
से सांणे मंझ सरतिए, मोंह खणदिंयूं कींह।। १७ ।।

जिन्होंने न रात में काता और न दिन में काता, वह सखियों के बीच में कैसे मुंह उठाएंगी?

अदी रे संनो थूलो अघयो, जे कीं कत्याऊं।
पण किंनी विचथी विसरयो, पई हथ न छुताऊं।। १८ ।।

कइयों ने मोटा, बारीक या अधिक काता। सूत तो काता, किन्तु कइयों ने हाथ से पूनी भी नहीं छुई और यहां आकर सब भूल गई।

तिंनी सांणे विच सरतिए, पोए मिहीणां लधाऊं।
न तां चेताणवारिए बंग लाथा, परी परी करे धाऊं।। १९ ।।

वे घर में सखियों के बीच में ताने सहेंगी, इसलिए चेतावनी देकर अपने फर्ज को उतारती हूं। बार-बार पुकार कर रही हूं।

आंके धांऊं सुणंदे धणीज्यूं, जमारो सभे वेई।
अंईं अगियां थींदियूं अणसरयूं, अंईं कतो को न बेही।। २० ।।

हमारी सारी उम्र तुमको धनी की वाणी सुना-सुनाकर बीत गई। तुम आगे चलकर पछताओगी। यहां बैठकर सूत क्यों नहीं कातती?

जिंनी अज न कतयो, सा रींदियूं सेई।
जडे गाल्यूं कंदयूं पाणमें, जेडियूं सभे बेही।। २१ ।।

जिन्होंने आज सूत नहीं काता है वह जब अपनी सखियों में बैठकर बातें करेंगी तो वह रोएंगी।

हिक गिनंदयूं सुहाग सुलतानजा, सुहागणियूं सेई।
से कर खणी गालियूं, कंदयूं विच बेही।। २२ ।।

एक अपने धनी का सुख लेगी। वही सुहागिन है। वही सबके बीच में बैठकर हाथ ऊंचा उठाएगी।

जिंनी कीं न जाणयो, तेहे हथ न छुती पई।
कोड करे घणवे आवई, पण उनी हाम रही।। २३ ।।

जिन्होंने कुछ नहीं जाना और हाथ से पूनी भी नहीं छुई वे बड़ी खुशी के साथ आयी थीं, पर उनकी चाहना बाकी रह गई।

।। प्रकरण ।। २५ ।। चौपाई ।। ६२७ ।।

खुईसो भरम जो घेंण, जे लाथो लहे न कींय।
अंख उघाडे सओ कुछण, पुण वरी तींय ज्यूं तींय।। १ ।।

आग पड़े भ्रम की गहरी नींद (नशे) को, जो उतारे नहीं उतरती, थोड़ा सावधान होकर देखा भी, पर फिर ज्यों की त्यों हो जाती है।

हिक त्रकू झोरीन ताव में, फोकट फेरा डींन।
हिक झोडा लगाईन पाणमें, अदी रे उनी न जातो कींन।। २ ।।

एक गुस्से में आकर तकले को तोड़ देती है और बेकार में घूमती है। एक ऐसी है जो आपस में झगड़ा कराती है, हे बहन! उनका कुछ नहीं जाता।

Nijanand App

न कीं कत्यो रातमें, न कीं कत्यो डींह।
से सांणे मंझ सरतिए, मोंह खणदिंयूं कींह।। १७ ।।

जिन्होंने न रात में काता और न दिन में काता, वह सखियों के बीच में कैसे मुंह उठाएंगी?

अदी रे संनो थूलो अघयो, जे कीं कत्याऊं।
पण किंनी विचथी विसरयो, पई हथ न छुताऊं।। १८ ।।

कइयों ने मोटा, बारीक या अधिक काता। सूत तो काता, किन्तु कइयों ने हाथ से पूनी भी नहीं छुई और यहां आकर सब भूल गईं।

तिंनी सांणे विच सरतिए, पोए मिहीणां लधाऊं।
न तां चेताणवारिए बंग लाथा, परी परी करे धाऊं।। १९ ।।

वे घर में सखियों के बीच में ताने सहेंगी, इसलिए चेतावनी देकर अपने फर्ज को उतारती हूं। बार-बार पुकार कर रही हूं।

आंके धांऊं सुणंदे धणीज्यूं, जमारो सभे वेई।
अंईं अगियां थींदियूं अणसरयूं, अंईं कतो को न बेही।। २० ।।

हमारी सारी उम्र तुमको धनी की वाणी सुना-सुनाकर बीत गई। तुम आगे चलकर पछताओगी। यहां बैठकर सूत क्यों नहीं कातती?

जिंनी अज न कतयो, सा रींदियूं सेई।
जडे गाल्यूं कंदयूं पाणमें, जेडियूं सभे बेही।। २१ ।।

जिन्होंने आज सूत नहीं काता है वह जब अपनी सखियों में बैठकर बातें करेंगी तो वह रोएंगी।

हिक गिनंदयूं सुहाग सुलतानजा, सुहागणियूं सेई।
से कर खणी गालियूं, कंदयूं विच बेही।। २२ ।।

एक अपने धनी का सुख लेगी। वही सुहागिन है। वही सबके बीच में बैठकर हाथ ऊंचा उठाएगी।

जिंनी कीं न जाणयो, तेहे हथ न छुती पई।
कोड करे घणवे आवई, पण उनी हाम रही।। २३ ।।

जिन्होंने कुछ नहीं जाना और हाथ से पूनी भी नहीं छुई वे बड़ी खुशी के साथ आयी थीं, पर उनकी चाहना बाकी रह गई।

।। प्रकरण ।। २५ ।। चौपाई ।। ६२७ ।।

खुईसो भरम जो घेंण, जे लाथो लहे न कींय।
अंख उघाडे सओ कुछण, पुण वरी तींय ज्यूं तींय।। १ ।।

आग पड़े भ्रम की गहरी नींद (नशे) को, जो उतारे नहीं उतरती, थोड़ा सावधान होकर देखा भी, पर फिर ज्यों की त्यों हो जाती है।

हिक त्रकू झोरीन ताव में, फोकट फेरा डींन।
हिक झोडा लगाईन पाणमें, अदी रे उनी न जातो कींन।। २ ।।

एक गुस्से में आकर तकले को तोड़ देती है और बेकार में घूमती है। एक ऐसी है जो आपस में झगड़ा कराती है, हे बहन! उनका कुछ नहीं जाता।

Nijanand App

हिक पाण त्रकू सारीन वियन ज्यूं, हकले कताईंन।
हिक जेडियूं जाणे जोर करे, पाण आयतूं कराईंन।। ३ ।।

एक ऐसी है जो अपने साथ-साथ दूसरे के तकले को भी संवारती है, ताकि दूसरी भी जल्दी से काते। एक ऐसी है जो अपना समझकर काम कराती है।

हिक खोटी करीन पाण वियनके, त्रके पाईन वर।
जडे उथींदियूं आतण मंझा, तडे गाल्यूं थिंदयूं घर।। ४ ।।

एक ऐसी है जो अपना और दूसरों का समय नष्ट करती है और उनके तकले को टेड़ा करती है। जब वह आतन (शरीर) से उठकर घर जाएंगी तब घर में जाकर बातें करेंगी।

हिक त्रकू झोरीन वियनज्यूं, ते पर थींदी कींय।
कतंण उनी पूरो थेई, पण मिहीणां लेहेंदियूं नींय।। ५ ।।

एक ऐसी है जो दूसरी का तकला ही तोड़ देती है। उनकी क्या हालत होगी? उनका कातना तो खत्म ही हो गया। वह दूसरों के ताने भी सुनेंगी।

जा झोडा लगाय पांणमें, सा कंदी उचाट घणी।
मनसे भाय कोय न पसे, पण महे बेठो सुणे धणी।। ६ ।।

जो आपस में झगड़ती ही रहती हैं वह अधिक उदास रहेंगी। मन में समझ बैठी हैं कि हमें कोई देखता नहीं, पर धनी तो अन्दर बैठे-बैठे देखते-सुनते हैं।

जीव करे मनसे गालडी, सा सभे थींदी घर।
पाय न रेहेंदी तिर जेतरी, अंईं जिन विसरो इन पर।। ७ ।।

जीव मन से बातें करता है, वह सब घर में बातें होंगी। तिल भर की बात भी छिपी न रहेगी, इसलिए तुम मत भूलो।

हिक कतंण महे माठ थेई, सेहन भिंने रे वेंण।
तंदू चाडीन तकड्यूं, नीचा ढारे नेंण।। ८ ।।

एक कातते समय चुप बैठी है। वह दूसरों के मजाक सुनेगी। वह जल्दी से तांत को चढ़ाती है और आंखों को नीचा कर लेती है।

सा गिनंदी सुहाग धणीजा, जेडिए विच बेही।
सा उथींदी आतन मंझा, पेर पडतारो डेई।। ९ ।।

वह सखियों में बैठकर धनी का सुहाग लेंगी। सो आतन में से पांव धरती पर पटक कर उठेंगी।

घणो सा गेहेंदी हथडा, जा चुकंदी हेर।
निद्र लथे ओरातवी, पण वरी हथ न ईंदी हीय वेर।। १० ।।

जो समय गंवा बैठेगी वह हाथ मलती रह जाएगी। वह नींद नहीं उतार सकेगी, यह समय बार-बार हाथ नहीं आएगा।

Nijanand App

हित अंख उघाडींदी जोरसे, नसूं चढाए निलाड।
जा हित थींदी निद्र खरी, सा घर उथींदी ओलाड।। ११ ।।

जिन्होंने जोर से आंख खोल ली और जोर से अपनी नसों को ऊपर चढ़ा लिया। जो यहां पर गहरी नींद में सोती हैं वह घर में ऊंघती हुई उठेंगी।

जा हित लाहिंदी निद्रडी, सा घर उथींदी छिडकाय।
हिन आतण संदियूं गालियूं, कंदीसा कोड मंझाय।। १२ ।।

जिनकी नींद यहां उतर जाती है वह घर में हंसकर उठेंगी और इस आतन (संसार) की बातें हंसकर करेंगी।

अंख भुसींदी जा उथींदी, केही गाल कंदीसा।
कोड करे घणवे आवई, पण निद्र न कढई नेंण मंझा।। १३ ।।

जो आंख मलती हुई उठेगी, वह क्या बात करेगी? बड़ा हर्ष करके आई थी पर आंखों से नींद नहीं हटी।

इंद्रावती चोएनी अदियूं, अंईं को कऱ्यो ईंय।
कोड करे अंईं आवयूं, अदी हांणे को अंईं हींय।। १४ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, हे बहन! तुम ऐसा क्यों करती हो? घर से उम्मीदें (भरोसा, चाह) करके आई थीं। अब यहां ऐसा क्यों करती हो?

साणें सिपरियन से, अंईं गाल्यूं कंदियूं कींय।
पाण संभारे न्हारयो, आंके ही वेर न रेहेंदीय।। १५ ।।

घर में प्रीतम से कैसे बातें करोगी? तुम अपने आपको याद करो। फिर तुमको यहां समय नहीं मिलेगा।

कतण के उतावऱ्यूं, अंईं आतण आवयूं।
कतण निद्रडी विसाऱ्यो, हाणें लूडो लाड गेहेलियूं।। १६ ।।

तुम आतन (संसार) में कातने के वास्ते बड़ी उतावली में आई थीं, किन्तु नींद ने तुम्हें भुला दिया और अब नींद में कातना भूलकर झोंका खा रही हो।

पिरी कोठणके आवया, सुणियो सजण वेंण।
को न सुजाणो सिपरी, मथे खणी नेंण।। १७ ।।

प्रीतम बुलाने के वास्ते आए हैं। उनके वचनों को सुनो। न अपने प्रीतम को पहचानती हो और न आंख उठाकर देखती ही हो।

ही आतण थींदो अलखामणो, जडे हलंदा सजण साणे।
निद्र लहाए न्हारयो, हिन वलहे जे वेंणे।। १८ ।।

जब प्रीतम के घर जाओगी तो यह आतन (संसार) दुःखदाई हो जाएगा, इसलिए नींद उड़ाकर धनी के वचनों को विचारो।

खुई कऱ्यो ही निद्रडी, ही हंद ओखो घणूं आय।
जे हिंनी वेंणे न उथियूं, त केही पर कंदियूं ताय।। १९ ।।

इस नींद को आग में डालो, यह ठिकाना (स्थान) बहुत बुरा है। जो यह वचन सुनकर नहीं उठीं, तो उनकी क्या हालत होगी?

Nijanand App

पर पसो पिरियनजी, पाणसे के के पर करे।
इंद्रावती चोए अदियूं, अंईं हांणे हलो नी घरे।। २० ।।

धनी की हकीकत को देखो। हमसे किस तरह की बातें करते हैं। श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, हे बहन! अब आप अपने घर चलो।

धणी मंझ अची करे, आंके बेठा वेंण चाय।
वियनके मतू डिए, पण तो पर केही आय।। २१ ।।

धनी हमारे बीच में आकर, बैठकर वचन कहते हैं। तू दूसरे को तो ज्ञान सुनाती है, पर तेरी हालत क्या है?

॥ प्रकरण ॥ २६ ॥ चौपाई ॥ ६४८ ॥

हाणे तूं म भूलज रे, भोरडी सुजाणें तूं सेण।
साणे तो डिठां सिपरी, भोरी तोहेनी तोहजडे नेण।। १ ।।

हे मेरी भोली बहन! तू अब मत भूल, प्रीतम को पहचान। घर में तो धनी को तूने अपने नैनों से देखा है।

वेंण वडानी मोहें कढे, भोरी तूं ता तोहेनी जाग।
कींझो नी कत तूं घणीजो, अंईं तंद पेराईंदी आघ।। २ ।।

मैं बड़ी-बड़ी बातें तुझे कहती हूं। तू तो फिर भी नहीं जागी। धनी के लिए कुछ कातो। तुम तकले पर सूत डालो।

तें ता पा न कतयो, हुत घुरवो सेर।
जडे उथींदी आतण मंझां, तडे घणूं घुरंदी ही वेर।। ३ ।।

तूने अभी पाव भर भी नहीं काता। वहां सेर (किलो) भर चाहिए। जब आतन (संसार) से उठेगी, तो फिर दुबारा अवसर की चाहना करेगी।

हे जे डींह वंजाइयां, भोरी विसरी विच बेही।
हांणे हलंण संदा, डींहडा, भोरी आया से पेही।। ४ ।।

मेरे आतन (शरीर) में बैठकर तुमने इतने दिन व्यर्थ गंवाए हैं। बहन! अब चलने के दिन नजदीक आ गए हैं। अब प्रीतम ले चलने के वास्ते आए हैं।

रे कते जे उथिए, त तो पर केही।
कां कंनी ही निद्रडी, भोरी घरे साथ नेई।। ५ ।।

यदि बिना काते उठेगी, तो तेरे पर क्या बीतेगी? हे भोरी! क्या इस नींद को घर साथ ले चलेगी?

अंजा न जागे जोर करे, जे हेडी मथां थेई।
पिरी वभेरकां आइया, तोजी सिध को ईं वेई।। ६ ।।

तू अभी भी जोर करके नहीं उठती है, तेरे साथ इतनी हो गई। प्रीतम दुबारा आए हैं। तेरी सुध कहां गई?

Nijanand App

पर पसो पिरियनजी, पाणसे के के पर करे।
इंद्रावती चोए अदियूं, अंईं हांणे हलो नी घरे।। २० ।।

धनी की हकीकत को देखो। हमसे किस तरह की बातें करते हैं। श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, हे बहन! अब आप अपने घर चलो।

धणी मंझ अची करे, आंके बेठा वेंण चाय।
वियनके मतू डिए, पण तो पर केही आय।। २१ ।।

धनी हमारे बीच में आकर, बैठकर वचन कहते हैं। तू दूसरे को तो ज्ञान सुनाती है, पर तेरी हालत क्या है?

।। प्रकरण ।। २६ ।। चौपाई ।। ६४८ ।।

हाणे तूं म भूलज रे, भोरडी सुजाणें तूं सेण।
साणे तो डिठां सिपरी, भोरी तोहेनी तोहजडे नेण।। १ ।।

हे मेरी भोली बहन! तू अब मत भूल, प्रीतम को पहचान। घर में तो धनी को तूने अपने नैनों से देखा है।

वेंण वडानी मोहें कढे, भोरी तूं ता तोहेनी जाग।
कींझो नी कत तूं घणीजो, अंईं तंद पेराईंदी आघ।। २ ।।

मैं बड़ी-बड़ी बातें तुझे कहती हूं। तू तो फिर भी नहीं जागी। धनी के लिए कुछ कातो। तुम तकले पर सूत डालो।

तें ता पा न कतयो, हुत घुरवो सेर।
जडे उथींदी आतण मंझां, तडे घणूं घुरंदी ही वेर।। ३ ।।

तूने अभी पाव भर भी नहीं काता। वहां सेर (किलो) भर चाहिए। जब आतन (संसार) से उठेगी, तो फिर दुबारा अवसर की चाहना करेगी।

हे जे डींह वंजाइयां, भोरी विसरी विच बेही।
हांणे हलंण संदा, डींहडा, भोरी आया से पेही।। ४ ।।

मेरे आतन (शरीर) में बैठकर तुमने इतने दिन व्यर्थ गंवाए हैं। बहन! अब चलने के दिन नजदीक आ गए हैं। अब प्रीतम ले चलने के वास्ते आए हैं।

रे कते जे उथिए, त तो पर केही।
कां कंनी ही निद्रडी, भोरी घरे साथ नेई।। ५ ।।

यदि बिना काते उठेगी, तो तेरे पर क्या बीतेगी? हे भोरी! क्या इस नींद को घर साथ ले चलेगी?

अंजा न जागे जोर करे, जे हेडी मथां थेई।
पिरी वभेरकां आइया, तोजी सिध को ईं वेई।। ६ ।।

तू अभी भी जोर करके नहीं उठती है, तेरे साथ इतनी हो गई। प्रीतम दुबारा आए हैं। तेरी सुध कहां गई?

Nijanand App

त्रक तूं सारे सई कर, जोपे कर जोत्रा।
माल तूं बंध मूरडे करे, पई म छड हथां।।७।।

हे बहन! अपने तकले को सीधा कर, अदवान को कस के बांध, माल को मरोड़ कर गांठ लगा और पूनी हाथ से मत छोड़।

अरट फेर उतावरो, तन के डेई ता।
तूं तां गिनंदी सुहाग धणीयजो, तोजे संने हिन सुत्रा।।८।।

शरीर से जोर लगाकर चरखे को जल्दी घुमा। तब तू अपने बारीक सूत का (धनी के सुहाग का) सुख पाएगी।

कतण रेहेंदो अधविच, आए डींह मथां।
कतण वारयूं हलयूं, डिसे न तूं पासां।।९।।

कातना आधा बीच में ही छूट जाएगा। चलने के दिन आ गए हैं। कातने वाली चली गई। तू अपनी तरफ क्यों नहीं देखती?

हांणे जिन थिए बिसरी, कत तूं कोड मंझां।
सुहाग संदो सुत्रडो, संनो थींदो तो हथां।।१०।।

अब तू मत भूल और हिम्मत के साथ सूत कात। तू बारीक सूत कातेगी, तो तुझे सुहाग का सुख मिलेगा।

हांणे तूं म किज निद्रडी, निद्रडी डेरे दुहाग।
तूं तां जागी जोर करे रे, गिंन तूं वंजी रे सुहाग।।११।।

अब तू नींद में मत रह। नींद दुःख देगी। तू जोर लगाकर जाग और अपने सुहाग का सुख ले।

ही सुत्र घणो सुहामणो, मोघो थींदो जोर।
सुजाणी तूं सिपरी, जीव मथांई घोर।।१२।।

यह सूत बड़ा सुहावना है, और महंगा हो जाएगा। तू अपने धनी की पहचान कर और अपने जीव को कुर्बान कर दे।

गिंन स्याबासी जेडिऐं, कर कां एहेडी पर।
हांणे को थिए विसरी, जे तो पिरी सुजातां घर।।१३।।

कुछ ऐसा कर कि सखियों में शाबासी मिले। प्रीतम घर बुलाने के लिए आए हैं। तू क्यों भूलती है?

।। प्रकरण ।। २७ ।। चौपाई ।। ६६१ ।।

भोरी तूं म भूल इंद्रावती, हीं वेर एहेडी आय।
पिरी पांहिंजडो गिंनी करे, भोरी वीए तूं कां मसलाय।।१।।

हे इन्द्रावती! तू मत भूल। ऐसा धनी का समय पाकर तू अपना धनी ले और दूसरों से सलाह मत ले।

ही पिरी तोके कडे मिडंदा, गिन तूं सुजाणी सुहाग।
एहेडी एकांत तूं कडे लेहेनी, आए तोहेजडो लाग।।२।।

अपने प्रीतम को पहचान कर सुख ले। यह प्रीतम तुझे कब मिलेंगे? ऐसा एकान्त समय फिर कब मिलेगा? आज तुझे समय मिला है।

Nijanand App

त्रक तूं सारे सई कर, जोपे कर जोत्रा।
माल तूं बंध मूरडे करे, पई म छड हथां।। ७ ।।

हे बहन! अपने तकले को सीधा कर, अदवान को कस के बांध, माल को मरोड़ कर गांठ लगा और पूनी हाथ से मत छोड़।

अरट फेर उतावरो, तन के डेई ता।
तूं तां गिनंदी सुहाग धणीयजो, तोजे संने हिन सुत्रा।। ८ ।।

शरीर से जोर लगाकर चरखे को जल्दी घुमा। तब तू अपने बारीक सूत का (धनी के सुहाग का) सुख पाएगी।

कतण रेहेंदो अधविच, आए डींह मथां।
कतण वारयूं हलयूं, डिसे न तूं पासां।। ९ ।।

कातना आधा बीच में ही छूट जाएगा। चलने के दिन आ गए हैं। कातने वाली चली गई। तू अपनी तरफ क्यों नहीं देखती?

हांणे जिन थिए बिसरी, कत तूं कोड मंझां।
सुहाग संदो सुत्रडो, संनो थींदो तो हथां।। १० ।।

अब तू मत भूल और हिम्मत के साथ सूत कात। तू बारीक सूत कातेगी, तो तुझे सुहाग का सुख मिलेगा।

हांणे तूं म किज निद्रडी, निद्रडी डेरे दुहाग।
तूं तां जागी जोर करे रे, गिंन तूं वंजी रे सुहाग।। ११ ।।

अब तू नींद में मत रह। नींद दुःख देगी। तू जोर लगाकर जाग और अपने सुहाग का सुख ले।

ही सुत्र घणो सुहामणो, मोघो थींदो जोर।
सुजाणी तूं सिपरी, जीव मथांई घोर।। १२ ।।

यह सूत बड़ा सुहावना है, और महंगा हो जाएगा। तू अपने धनी की पहचान कर और अपने जीव को कुर्बान कर दे।

गिंन स्याबासी जेडिऐं, कर कां एहेडी पर।
हांणे को थिए विसरी, जे तो पिरी सुजातां घर।। १३ ।।

कुछ ऐसा कर कि सखियों में शाबासी मिले। प्रीतम घर बुलाने के लिए आए हैं। तू क्यों भूलती है?

॥ प्रकरण ॥ २७ ॥ चौपाई ॥ ६६१ ॥

भोरी तूं म भूल इंद्रावती, हीं वेर एहेडी आय।
पिरी पांहिंजडो गिंनी करे, भोरी वीए तूं कां मसलाय।। १ ।।

हे इन्द्रावती! तू मत भूल। ऐसा धनी का समय पाकर तू अपना धनी ले और दूसरों से सलाह मत ले।

ही पिरी तोके कडे मिडंदा, गिन तूं सुजाणी सुहाग।
एहेडी एकांत तूं कडे लेहेनी, आए तोहेजडो लाग।। २ ।।

अपने प्रीतम को पहचान कर सुख ले। यह प्रीतम तुझे कब मिलेंगे? ऐसा एकान्त समय फिर कब मिलेगा? आज तुझे समय मिला है।

Nijanand App

हीं वेर घणूं सुहामणी, जा पिरिए डिंनी तोके पांण।
जगायाऊं जोर करे, सुहागणियन के सुलतांन।। ३ ।।

यह समय बड़ा लाभदायक है जो धनी ने तुझे दिया है। सुहागनियों के धनी जगा रहे हैं। वही धनी तुझे खुद जगा रहे हैं।

अंख उघाडे ढकजे, भोरी जिन चूके हितरी वेर।
रातो डींहा राजजो, सुत्र संनो कत सवा सेर।। ४ ।।

आंख खोलकर ढांपने में जितना समय लगता है, हे भोली बहन! इतना भी समय नष्ट न कर। रात-दिन धनी के नाम का सवा सेर (किलो) सूत कात।

नेणे सेनी नेह धर, मूंजे चस्मे से कतां।
सुत्र संनो हीं कती करे, मूंजी अंखिए भर अचां।। ५ ।।

नैनों से प्यार कर और निगाहों से कात। इस प्रकार बारीक सूत कात। उतना ही कात जितना मैं सोचती हूं।

भले सो कतंदी हीं सुत्रडो, अदी भले लधिम हीं वेर।
भले सो भगी हीं निद्रडी, मूंके भले धणी मिड्या हेर।। ६ ।।

भला सूत काता और समय भी तुझे अच्छा मिला। अच्छा हुआ जो तेरी नींद हट गई और यहां धनी भी अच्छी तरह से मिले।

धणी धारा हीं निद्रडी, व्यो ल्हाए ईं केर।
पिरी उतां जिंदुओ अदी, आऊं घोरे वंजां हिन वेर।। ७ ।।

धनी के बिना इस नींद से दूसरा कौन निकालेगा? ऐसे धनी पर इस समय मैं अपने जीव को कुर्बान करती हूं।

मूंनी कारण मूंजी अदियूं, पिरी डिंना हित पेर।
जिंनी पेरे आया अदियूं, आऊं घोरे वंजां हिन सेर।। ८ ।।

हे बहन! मेरे लिए प्रीतम यहां आए हैं। जिन पैरों से यहां आए हैं मैं उन पर कुर्बान जाती हूं।

अदी तूं धणी गिंनी बेठी मूहजो, बेओ न पसे कोय।
पस तूं गिंना धणी पांहिजो, अदी त तूं भाइज जोय।। ९ ।।

हे बहन! तू मेरे प्रीतम को लेकर बैठी है। दूसरा कोई नहीं देखता। तू अपने धनी को पहचान कर देख। तब तू सुहागन (सौभाग्यवती) कहलाएगी।

इंद्रावती चोए अदी मूंहजी, मूंके मिड्या मूजा पिरी।
जिंनी कोडे आऊं आवईं, से पूरण केआं उंनी।। १० ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, हे बहन! मुझे मेरे प्रीतम मिल गए हैं। मैंने जो चाहना की थी, वह सब उन्होंने पूरी कर दी है।

Nijanand App

रतनबाई अदी मूंहजी, आऊं करियां आंसे गाल।
सुहाग मूके डिनाऊं घणों, अदी थेईस आऊं निहाल।। ११ ।।

हे मेरी बहन रतनबाई! (बिहारीजी) मैं तुमसे बातें करती हूं। मेरे धनी ने बहुत सुख दिया जिससे मैं निहाल (कृतकृत्य) हो गई।

मूं पर मंगई हिकडी, पिरी सुख डिंना घणी पर।
हिंनी सुखे संदियूं गालियूं, अदी कंदासी वंजी घर।। १२ ।।

मैंने धनी से एक मांग रखी थी, पर धनी ने कई तरह से सुख दिए। इन सुखों की बातें घर चलकर करूंगी।

।। प्रकरण ।। २८ ।। चौपाई ।। ६७३ ।।

श्री लखमीजीनूं द्रष्टांत

हूं जाणूं निध एकली लऊं, धणी तणां सुख सघला सहूं।
ए सुख बीजा कोणे नव दऊं, वली वली तमने स्या ने कहूं।। १ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि मुझे ऐसा लगता है कि धनी के सब सुखों को मैं अकेली ले लूं और यह सुख और किसी को न दूं। बार-बार मैं तुमको किसलिए कहूं?

ए वचन कांई एम न केहेवाय, जीव मारो मांहें दुखाय।
मूने घणूं विमासण थाय, पण जाक्यो मारो नव जकाय।। २ ।।

यह वचन ऐसे ही नहीं कहे जाते। मेरा जीव दुःखी होता है, परन्तु विचार करके देखती हूं तो यह रोकने से रुकता नहीं है।

धणी कहावे तो हूं कहूं, नहीं तो ए निध कांई एम न दऊं।
देतां मारो जीव निसरे, ए वचन कांई मूने न विसरे।। ३ ।।

धनी कहलाते हैं तो कहती हूं। नहीं तो, यह वस्तु ऐसे ही नहीं देना चाहती। यह वस्तु देने में मेरा जीव निकलता है। यह वचन मुझे भूलते नहीं हैं।

में लीधा कठणाई करी, श्री धणी तणे चरणे चित धरी।
हूं घणुंए राखूं अंतर, पण सागर पूर प्रगट करे घर।। ४ ।।

मैंने धनी के चरणों को चित्त में लगाकर बड़ी कठिनाई से ग्रहण किया है, बड़े तरीके से इन्हें रखना चाहती हूं, परन्तु सागर की लहरों समान यह सुख हमारे घर की बात प्रकट करते हैं।

धणी कहावे अंतरगत रही, कह्यानी सोभा कालबुतने थई।
नही तो ए वचन केम प्रगट थाय, केहेतां घणूं कालजु कपाय।। ५ ।।

धनी मेरे अन्दर बैठकर इन वचनों को कहला रहे हैं। मेरे तन को तो कहने की शोभा मिल रही है। नहीं तो, यह वचन ऐसे नहीं कहे जाते, कहने में मेरा कलेजा फटता है।

रखे जाणो वचन कह्या अचेत, केहेतां जीवे दुख दीठां अनेक।
ज्यारे जीवसूं विचारी जोयूं मन, जे आ हूं केहा कहूं छूं वचन।। ६ ।।

ऐसा भी नहीं समझना कि यह वचन मैं बेहोशी में कह रही हूं, क्योंकि इनके कहने में जीव को बहुत दुःख हुआ है। जीव और मन से विचार करके देखती हूं कि मैं यह कौन से वचन तुमको कह रही हूं।

Nijanand App

रतनबाई अदी मूंहजी, आऊं करियां आंसे गाल।
सुहाग मूके डिनाऊं घणों, अदी थेईस आऊं निहाल।। ११ ।।

हे मेरी बहन रतनबाई! (बिहारीजी) मैं तुमसे बातें करती हूं। मेरे धनी ने बहुत सुख दिया जिससे मैं निहाल (कृतकृत्य) हो गई।

मूं पर मंगई हिकडी, पिरी सुख डिंना घणी पर।
हिंनी सुखे संदियूं गालियूं, अदी कंदासी वंजी घर।। १२ ।।

मैंने धनी से एक मांग रखी थी, पर धनी ने कई तरह से सुख दिए। इन सुखों की बातें घर चलकर करूंगी।

।। प्रकरण ।। २८ ।। चौपाई ।। ६७३ ।।

श्री लखमीजीनूं द्रष्टांत

हूं जाणूं निध एकली लऊं, धणी तणां सुख सघला सहूं।
ए सुख बीजा कोणे नव दऊं, वली वली तमने स्या ने कहूं।। १ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि मुझे ऐसा लगता है कि धनी के सब सुखों को मैं अकेली ले लूं और यह सुख और किसी को न दूं। बार-बार मैं तुमको किसलिए कहूं?

ए वचन कांई एम न केहेवाय, जीव मारो मांहें दुखाय।
मूने घणूं विमासण थाय, पण जाक्यो मारो नव जकाय।। २ ।।

यह वचन ऐसे ही नहीं कहे जाते। मेरा जीव दुःखी होता है, परन्तु विचार करके देखती हूं तो यह रोकने से रुकता नहीं है।

धणी कहावे तो हूं कहूं, नहीं तो ए निध कांई एम न दऊं।
देतां मारो जीव निसरे, ए वचन कांई मूने न विसरे।। ३ ।।

धनी कहलाते हैं तो कहती हूं। नहीं तो, यह वस्तु ऐसे ही नहीं देना चाहती। यह वस्तु देने में मेरा जीव निकलता है। यह वचन मुझे भूलते नहीं हैं।

में लीधा कठणाई करी, श्री धणी तणे चरणे चित धरी।
हूं घणुंए राखूं अंतर, पण सागर पूर प्रगट करे घर।। ४ ।।

मैंने धनी के चरणों को चित्त में लगाकर बड़ी कठिनाई से ग्रहण किया है, बड़े तरीके से इन्हें रखना चाहती हूं, परन्तु सागर की लहरों समान यह सुख हमारे घर की बात प्रकट करते हैं।

धणी कहावे अंतरगत रही, कह्यानी सोभा कालबुतने थई।
नही तो ए वचन केम प्रगट थाय, केहेतां घणूं कालजु कपाय।। ५ ।।

धनी मेरे अन्दर बैठकर इन वचनों को कहला रहे हैं। मेरे तन को तो कहने की शोभा मिल रही है। नहीं तो, यह वचन ऐसे नहीं कहे जाते, कहने में मेरा कलेजा फटता है।

रखे जाणो वचन कह्या अचेत, केहेतां जीवे दुख दीठां अनेक।
ज्यारे जीवसूं विचारी जोयूं मन, जे आ हूं केहा कहूं छूं वचन।। ६ ।।

ऐसा भी नहीं समझना कि यह वचन मैं बेहोशी में कह रही हूं, क्योंकि इनके कहने में जीव को बहुत दुःख हुआ है। जीव और मन से विचार करके देखती हूं कि मैं यह कौन से वचन तुमको कह रही हूं।

Nijanand App

एक लवो मारी बुधे न निसरे, पण धणी आपोपूं प्रगट करे।
हवे जो साथ करो कांई बल, तो पूरण सोभा लेओ नेहेचल।। ७ ।।

एक शब्द भी मेरी बुद्धि से नहीं निकलता, परन्तु आप धनी स्वयं प्रकट कर रहे हैं। अब सुन्दरसाथ तुम कुछ ताकत लगाओ, तो तुम्हें पूर्ण अखण्ड सुख की शोभा मिले।

भारे वचन छे जो घणूं, जो कांई ग्रहसो आपोपणूं।
ए वचन ऊपर एक कहूं विचार, सांभलो साथ मारा धामना आधार।। ८ ।।

यह वचन बहुत भारी (गम्भीर) हैं, किन्तु आप अपना समझकर ही ग्रहण करना। इन वचनों के लिए एक विचार बताती हूं। मेरे धाम के सुन्दरसाथ! ध्यान से सुनना।

धडथी मस्तक कोई अलगूं करे, तो अर्ध वचन मुखथी नव परे।
जो कोई सारे सघला संधाण, तो अर्ध लवो न केहेवाय निरवाण।। ९ ।।

धड़ से कोई सिर अलग कर दे तो भी आधा वचन मुख से नहीं निकलता। यदि कोई सारे शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर दे तो भी एक शब्द भी नहीं कहा जा सकता।

साथ माटे कहूं सगाई जाणी, धणी ओलखजो घर रुदे आणी।
एम हाथ झालीने बीजो कोई नव दिए, अने एम देतां अभागी नवलिए।। १० ।।

सुन्दरसाथ को अपना सम्बन्धी जानकर कहती हूं कि अपने धनी को अपने तन के हृदय में बिठाकर पहचान करो। ऐसा हाथ पकड़ कर ज्ञान कोई नहीं देता और इस तरह से देने में जो नहीं लेता वह अभागा है।

तमे साथ मारा सिरदार, हवे आ द्रष्टांत जो जो विचार।
पाधरो एक कहूं प्रकास, सुकजी पाए पुरावुं साख।। ११ ।।

हे मेरे सुन्दरसाथ! तुम प्रधान हो। अब इस दृष्टान्त को देखकर विचार करना, मैं तुम्हें एक सीधी बात बताती हूं और शुकदेवजी की गवाही देती हूं।

एह जोईने टालो भरम, जीव कांईक हवे करो नरम।
वचन जीवसूं करो विचार, त्यारे ततखिण जीव ओलखसे आधार।। १२ ।।

इसे देखकर अपने संशय को मिटाओ और अपने जीव को कोमल करो। धनी के इन वचनों का जीव से विचार करो। तुरन्त अपने जीव से धनी को पहचान लोगे।

ओलखीने टालो अंतर, आपोपूं संभारो घर।
हवे घर तणी केही कहूं वात, वचन विचारी जो जो प्रकास।। १३ ।।

पहचान कर इस भेद को हटा दो। अपने आपको तथा घर को याद करो। अब घर की बात कहां तक कहूं? इन वचनों को विचार करके ज्ञान से देखना।

हवे सांभलो आ पाधरू द्रष्टांत, जीव जगवी जो जो एकांत।
चौद भवननो कहिए धणी, लीला करे वैकुंठ विखे घणी।। १४ ।।

अब एक सीधा दृष्टान्त सुनो और अपने जीव को जगाकर एकान्त में देखो। चौदह लोकों के जो धनी भगवान विष्णु हैं, वह बैकुण्ठ में अपनी लीला करते हैं।

Nijanand App

लखमीजी सेवे दिन रात, ऐहेनी छे मोटी विख्यात।
जे जीव वांछे पोते हेत घर, ते सेवे श्री परमेस्वर।। १५ ।।

लक्ष्मीजी दिन-रात इनकी सेवा करती हैं। इनकी भी बड़ी बात है। जो जीव अपनी भलाई के लिए बैकुण्ठ की चाहना करता है वह परमेश्वर (विष्णु भगवान) की सेवा करता है।

ब्रह्मादिक नारद छे देव, बीजा सुर नर अनेक करे एनी सेव।
ब्रह्मांड विखे केटला लऊं नाम, सहु कोई सेवे श्री भगवान।। १६ ।।

ब्रह्मा, नारद, आदि देवता हैं। दूसरे देव और मनुष्य सब इनकी सेवा करते हैं। ब्रह्माण्ड में कितने भी गिनाएं, सभी विष्णु भगवान की सेवा करते हैं।

सेवता न पामे पार, ए लीला एहनी छे अपार।
आगे सेवा कीधी छे घणे, ते जो जो वचन सुकजी तणें।। १७ ।।

इनकी सेवा करने पर भी पार नहीं मिला। इनकी लीला अपार (अनगिनत) है। पहले भी बहुत से लोगों ने इनकी सेवा की है। शुकदेवजी के वचनों से देखो।

एह छे एवो समरथ, सेवकना सारे अरथ।
हवे एह तणो जो जो गिनांन, मोटी मतनो धणी भगवान।। १८ ।।

यह ऐसे समर्थ हैं कि अपने सेवकों (भक्तों) के सब कार्य सिद्ध करते हैं। अब इनका भी इस प्रकार ज्ञान देखो। विष्णु भगवान भी बड़ी बुद्धि के मालिक हैं (पांच वासनाओं में से हैं)।

एक समे करि बेठा ध्यान, विसरी सरीर तणी सुध सान।
ए सदीवे चितवणी करे, पण बाहेर केहेने खबर न पडे।। १९ ।।

एक समय यह बैकुण्ठ में बैठे ध्यान कर रहे थे, इन्हें अपने तन की भी सुध नहीं थी। यह सदा ही इस प्रकार से मग्न होकर चिन्तन (योगमाया का) करते हैं, पर बाहर किसी को भी पता नहीं चलता।

एणे समे ध्यान थयो अति जोर, प्रेम तणी चंपाणी कोर।
लखमीजी आव्या एणे समे, मन अचरज पाम्या विस्मे।। २० ।।

एक बार यह ध्यान में ज्यादा मग्न हो गए और प्रेम की लीला में मस्त हो गए। इसी समय लक्ष्मी जी आईं। उनके मन में बड़ी हैरानी हुई।

आवी लखमीजी ऊभा रह्या, श्री भगवानजी तिहां जाग्रत थया।
लखमीजी करे विनती, अमे बीजो कोई देखतां नथी।। २१ ।।

लक्ष्मीजी आकर खड़ी रहीं। भगवानजी जब जागृत हुए तो लक्ष्मीजी ने विनती की कि हम आपके सिवा दूसरे किसी को देखते नहीं (जानते नहीं हैं)।

केहेनो तमे करो छो ध्यान, ते मूने कहो श्री भगवान।
मारा मनमां थयो संदेह, कही प्रीछवो मूने एह।। २२ ।।

हे भगवान! आप किसका ध्यान करते हो? यह मेरे मन में संशय हो गया है। मुझे समझा कर बताओ।

किहां वसे ने कीहो ठाम, ते मूने कहो श्री भगवान।
ए लीला सांभलू श्रवणे, वली वली लागूं चरणे।। २३ ।।

वह कहां रहता है, उसका ठिकाना कहां है, जिसका आप ध्यान करते हो। मैं इस लीला को अपने कान से सुनना चाहती हूं, इसलिए बार-बार आपके चरणों में प्रणाम करती हूं। हे भगवान! यह हकीकत मुझे बताओ।

Nijanand App

सांभलो लखमीजी कहूं तमने, ए आगे सिवे पूछ्यूं अमने।
पण ए लीलानी मूने खबरज नथी, तो केम कहूं तमने मुख थकी।। २४ ।।

भगवानजी कहते हैं, हे लक्ष्मीजी! सुनो, मैं तुम्हें कहता हूं। आगे भी शिवजी ने मुझसे पूछा था, परन्तु इस लीला की मुझे खबर ही नहीं है, तो अपने मुख से तुम्हें कैसे कहूं?

कहूं तमने सांभलो मारी वात, ए वचन रखे मुखथी करो प्रकास।
लखमीजी तमे कहो तेम करूं, म्हारू आप नथी कांई तमथी परूं।। २५ ।।

मैं तुमसे कहता हूं, मेरी बात सुनो। मैं अपने मुख से इसका वर्णन नहीं कर सकता। लक्ष्मीजी तुम जैसा कहो मैं वैसा करूं। मैं तुमसे कोई अलग नहीं हूं।

मुखथी वचन रखे ओचरो, नहीं तो घणूं थासे खरखरो।
चौद भवननी पूछो वात, ते तमने कहूं विख्यात।। २६ ।।

मुख से यह वचन मत कहो, नहीं तो बड़ा दुःख होगा। चौदह लोकों की बात पूछो तो तुमको विस्तार से बताऊं।

रखे आसंका आणो एह, एह रखे राखो संदेह।
लखमीजी तमे करो करार, मारा मुखथी वचन न आवे बहार।। २७ ।।

कोई संशय मत लाओ और न कोई सन्देह करो। हे लक्ष्मीजी! तुम आराम से बैठो। मेरे मुख से यह वचन बाहर ही नहीं आते।

त्यारे लखमीजी दुखाणा घणूं, मनसूं जाणे हूं केही पेर करूं।
मोसूं तां राख्यो अंतर, हवे करीस हूं केही पर।। २८ ।।

तब लक्ष्मीजी को बहुत दुःख हुआ। मन से विचार करने लगीं कि मैं क्या करूं? मुझसे तो बात छिपा ली अब मैं क्या करूं?

नेणे आंसू बहु जल झरे, अने वली वली रमा विनती करे।
धणी ए अंतर तां में न खमाय, जीव मारो आकुल व्याकुल थाय।। २९ ।।

लक्ष्मीजी की आंखों से आंसू टपकने लगे। बार-बार लक्ष्मीजी विनती करती हैं और कहती हैं कि हे धनी! यह अन्तर मुझसे सहन नहीं होता, मेरा जीव व्याकुल होकर दुःखी हो रहा है।

ए दुखतां में सह्यो न जाय, अने कालजडूं मारूं कपाय।
कंपमान थई कलकले, करे निस्वास अंतस्करन गले।। ३० ।।

यह दुःख मेरे से सहन नहीं होता। मेरा कलेजा फटा जा रहा है। ऐसा कहकर बिलख-बिलख कर रोने लगीं तथा सिसकियां भरने लगीं।

हवे जो धणी करो मारी सार, तो ए वचन केहेवुं निरधार।
तमे घणवे मूने वार्‍या सही, अनेक पेरे सिखामण कही।। ३१ ।।

हे धनी! यदि आप मेरी तरफ ध्यान दो तो एक वचन आपसे मैं कहूं। आपने बहुत तरह से मुझे रोका और समझाया।

पण मारो जीव केमे नव रहे, लखमीजी वली वली एम कहे।
त्यारे वली बोल्या श्री भगवान, लखमीजी तूं निश्चे जाण।। ३२ ।।

परन्तु मेरा जीव कैसे रहे? ऐसा लक्ष्मीजी बार-बार विनती करके कहती हैं। तब श्री भगवानजी बोले, हे लक्ष्मीजी! तुम निश्चय जानो।

Nijanand App

जो कोटाण कोट करो प्रकार, तो एटलूं तमे जाणो निरधार।
मारी जिभ्याए न वले एह वचन, ए द्रढ करो जीव ने मन।। ३३ ।।

चाहे करोड़ों उपाय तुम करो, तो भी इतना निश्चित जानो कि इन वचनों को कहने के लिए मेरी जुबान नहीं चलती (अर्थात् कहने की शक्ति मेरी नहीं है)। इस बात को विश्वास के साथ ग्रहण कर लो।

हवे लखमीजी कहे सांभलो राज, मारा जीवने उपनी अति दाझ।
स्यो वांक तमारो धणी, कांई अप्राप्त दीसे अम तणी।। ३४ ।।

अब लक्ष्मीजी कहती हैं, हे सर्वशक्तिमान! मेरे जीव में आग जल रही है। धनी! इसमें आपका कोई कसूर नहीं है। ऐसा लगता है कि मैं ही इसे प्राप्त करने की पात्र नहीं हूं।

हवे सरीर मारो केम रहे, जीव मारो मूने घणूं दहे।
हवे अग्यां मागूं मारा धणी, करूं आरम्भ तपस्या तणी।। ३५ ।।

अब मेरा तन कैसे रहे? मेरा जीव आग में बहुत जल रहा है। अब आपसे आज्ञा मांगती हूं कि मैं अब (पात्र बनने के लिए) तपस्या करूं।

त्यारे भगवानजी बोल्या तत्काल, लखमीजी म लावो वार।
त्यारे कलप्यो जीव दुख अनंत करी, उपनो वैराग सोक मन धरी।। ३६ ।।

तब भगवानजी तुरन्त बोले, हे लक्ष्मीजी! देर मत करो। तब लक्ष्मीजी का जीव बड़े दुःख से कलपने लगा। दुःख से वैराग्य पैदा हो गया।

जीवने आसा पूरण हती घणी, जाणुं मूने छेह नहीं दिए मारो धणी।
चरणे लागी लखमीजी चाल्या, अने रुदन करे जाय पाला पल्या।। ३७ ।।

उनके जीव को पूरा भरोसा था कि उनके धनी (भगवान विष्णु) उन्हें अलग नहीं करेंगे। अब लक्ष्मीजी भगवानजी के चरणों में प्रणाम करके रोते-रोते पैदल चल पड़ीं।

एणे समे विरह कीधो अति जोर, ते हूं केटलो कहूं बकोर।
एक ठामे बेठा दमे देह, श्री भगवानजीसुं पूरण सनेह।। ३८ ।।

इस समय उनको बहुत अधिक विरह उत्पन्न हुआ। कितना चिल्लाकर रोईं उसका बयान कैसे करूं? एक ठिकाने बैठकर वह देह का दमन करने लगीं (तन को कष्ट देने लगीं)। अपनी चित्त-वृत्ति बड़े प्रेम से भगवानजी में लगाई (भगवान विष्णु में ही)।

वाए तडको टाढक नव गणे, करे तपस्या जोर अति घणे।
सनेह धरी बेठा एकांत, एटले सात थया कल्पांत।। ३९ ।।

हवा, धूप, ठण्डक की परवाह न करते हुए जोर से तपस्या करने लगीं। एकान्त में बैठकर भगवान का ध्यान करते-करते सात कल्पान्त बीत गए।

त्यारे ब्रह्मा ने खीर सागर मली, आव्या वैकुंठ भगवानजी भणी।
एवडो स्वामीजी स्यो उतपात, लखमीजी तप करे कल्पांत सात।। ४० ।।

तब क्षीरसागर और ब्रह्माजी मिलकर भगवान (विष्णु) के पास आए और बोले, हे स्वामी! यह क्या उत्पात (झगड़ा) है कि लक्ष्मीजी सात कल्पान्त से तपस्या कर रही हैं।

Nijanand App

त्यारे भगवानजी एम बोल्या रही, जे वांक अमारो कांइए नहीं।
स्वामी तोहे वचन तमने केहेवाय, जे लखमीजी घणूं दुखी थाय।। ४१ ।।

तब भगवानजी इस तरह से बोले कि इसमें हमारा कोई कसूर नहीं है। तब दोनों ने कहा कि हे स्वामी! फिर भी तुम कुछ तो बताओ, लक्ष्मीजी बड़ी दुःखी हैं।

एवडो रोष तमे मां धरो, लखमीजी पर दया करो।
तमे स्वामी मोटा दयाल, लखमीजी दुख पामे बाल।। ४२ ।।

इतना गुस्सा मन में मत रखो। लक्ष्मीजी पर कृपा करो। हे स्वामी! तुम बड़े दयालु हो, लक्ष्मीजी अबोध हैं तथा दुःखी हैं।

अधखिण एक म लावो वार, लखमीजी तेडो तत्काल।
चरण ग्रह्या तिहां खीर सागरे, वली वली ब्रह्मा विनती करे।। ४३ ।।

दोनों कहते हैं कि आधे पल की भी देर न करें। लक्ष्मीजी को तुरन्त बुलाइए। तब क्षीरसागर ने भगवानजी के चरण पकड़ लिए, ब्रह्माजी बार-बार विनती करते हैं।

लखमीजी लगे चालो सही, तेडी आविए तिहां लगे जई।
त्यारे आव्या चाली श्री भगवान, लखमीजी बेठा जेणे ठाम।। ४४ ।।

वह दोनों कहते हैं कि लक्ष्मीजी के पास चलो तो सही। वहां चलकर उनको बुला लाएं। तब भगवानजी चलकर वहां आए जहां लक्ष्मीजी बैठी थीं।

त्यारे लखमीजीए कीधां परणाम, त्यारे वली बोल्या श्री भगवान।
लखमीजी तमे चालो घरे, त्यारे वली रमा वाणी ओचरे।। ४५ ।।

लक्ष्मीजी ने प्रणाम किया। तब भगवानजी बोले, लक्ष्मीजी घर चलो। लक्ष्मीजी फिर बोलती हैं।

म्हारा धणी तमे कहो तेज वचन, जीव घणूं दुख पामे मन।
जो तप करो कल्पांत एकवीस, तोहे न वले जिभ्या एम कहे जगदीस।। ४६ ।।

हे मेरे धनी! वही वचन कहो। हमारा जीव बड़ा दुःखी है। भगवानजी कहते हैं कि हे लक्ष्मीजी! तुम भले ही इक्कीस कल्पान्त तक तपस्या करो, फिर भी मेरी जुबान नहीं कहेगी।

पण देखाडीस हूं चेहेने करी, त्यारे तमे लेजो चित धरी।
त्यारे ब्रह्मा ने खीर सागर बे, लखमीजीने वचन कहे।। ४७ ।।

परन्तु मैं लीला करके तुम्हें दिखाऊंगा, तब तुम चित्त में धारण कर लेना। तब ब्रह्मा और क्षीरसागर दोनों ने लक्ष्मीजी से कहा।

लखमीजी उठो तत्काल, दया कीधी स्वामी दयाल।
हवे रखे तमे हठ करो, आनंद मनमां अति घणो धरो।। ४८ ।।

लक्ष्मीजी! तुरन्त उठो, दयालु भगवान ने कृपा कर दी है। अब तुम हठ मत करो। मन में आनन्दित होकर घर चलो।

त्यारे लखमीजी लाग्या चरणे, एम तेडी आव्या आनंद अति घणे।
ब्रह्मा ने खीर सागर वल्या, चरणे लागी अस्थानक आव्या।। ४९ ।।

तब लक्ष्मीजी ने चरणों में प्रणाम किया, इस तरह से बुलाकर अति आनन्द से घर आए। ब्रह्मा और क्षीरसागर चरणों में प्रणाम कर अपने-अपने घर वापस गए।

Nijanand App

हवे एह विचारी तमे जो जो साथ, न वली जिभ्या वैकुंठ नाथ।
ग्रही वस्त भारे करी जाण, नेठ वचन नव कह्या निरवाण।।५० ।।

अब इन्द्रावतीजी कहती हैं कि हे मेरे सुन्दरसाथ! तुम यह विचार करके देखो कि बैकुण्ठनाथ विष्णु भगवान की जबान नहीं खुली। पार की वस्तु को भारी जानकर हृदय में रखा। कोई वचन मुंह से नहीं निकाले।

नहीं तो वैकुंठ नाथने केही खबर, विना तारतम सूं जाणे मूलघर।
बीजिए खबर कांइए नव कही, तो पण निध भारे करी ग्रही।।५१ ।।

नहीं तो बैकुण्ठनाथ को क्या खबर? बिना तारतम के मूल घर की कैसे पहचान करें? दूसरे को खबर भी नहीं बताई। ऐसी भारी न्यामत समझकर अपने अन्दर ग्रहण कर रखा।

भारे विना भार न उपडे, मुखथी वचन जुआ केमे नव पडे।
ज्यारे थयो कृष्ण अवतार, रुकमणी हरण कीधूं मुरार।।५२ ।।

सामर्थ्य के बिना भार नहीं उठाया जाता। मुख से वचन क्यों नहीं निकलते? जब कृष्णावतार हुआ और उन्होंने रुक्मिणी हरण किया।

माधवपुर परण्या रुकमणी, धवल मंगल गाए सुहागणी।
गातां गातां लीधूं वृज नूं नाम, त्यारे पाछा भोम पड्या भगवान।।५३ ।।

माधवपुर जाकर रुक्मिणी के साथ शादी की। उस समय स्त्रियां मंगल गीत गा रही थीं। गाते-गाते उन्होंने ब्रज का नाम लिया तो भगवानजी गिर पड़े।

त्यारे सहु कोई पाम्यो मन अचरज, एम लखमीजीने देखाड्यूं वृज।
समा थई बेठा भगवान, लखमीजीनी एम भाजी हाम।।५४ ।।

तब सबको आश्चर्य हुआ। इस प्रकार लक्ष्मीजी को ब्रज की लीला बताई। भगवान शान्त होकर बैठ गए और लक्ष्मीजी की चाहना मिट गई।

ए विचार तमे जो जो रही, ए लीला सुकजीए कही।
जे लीला कीधी जगदीस, ते मांहें आपण हुता सरीख।।५५ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, हे सुन्दरसाथजी! इस हकीकत को शुकदेवजी ने बयान किया है। यह तुम देखो, जो लीला जगत के भगवान विष्णु ने की, उसमें हम शामिल थे (ब्रज की लीला हमारी थी)।

तो वचन तमने केहेवाय, नहीं तो अर्ध लवो नव प्रगट थाय।
आ वृजवालो वालो ते एह, वचन आपणने कहे छे जेह।।५६ ।।

हे साथजी! इसलिए तुमको यह वचन कहे हैं। नहीं तो आधे अक्षर की भी जानकारी न मिलती। यह ब्रज के वही वालाजी हैं जो अन्दर बैठकर अपने को वचन कह रहे हैं।

रास माहें रमाड्या जेणे, प्रगट लीला आ कीधी तेणे।
श्री धाम तणा धणी छे जेह, तेड़वा आपण ने आव्या तेह।।५७ ।।

जिन्होंने रास में रास खिलाया, यह लीला उन्होंने ही जाहिर की है, जो धाम के धनी हैं। वह हमको बुलाने के लिए आए हैं। [नोट—सार यही निकला कि धाम के धनी श्री प्राणनाथजी ने ही सब लीलाएं की हैं।]

Nijanand App

ते माटे तमने कह्यूं द्रष्टांत, जीवसूं वचन विचारो एकांत।
ठेकाणूं वैकुंठ विश्राम, केहेवा वालो श्री भगवान।।५८ ।।

इस वास्ते तुमको दृष्टान्त देकर कहा, एकान्त में अपने जीव में यह वचन विचारो। ऊपर के दृष्टान्त में कहने वाले भगवानजी हैं, जो वैकुण्ठ में रहते हैं।

लखमीजी तिहां श्रोता थया, केटलू खप करीने रह्या।
तोहे न पाम्या एक वचन, अने तमे कीहू लई बेठा छो धन।।५९ ।।

और लक्ष्मीजी यहां सुनने वाली हैं। वह अत्यधिक मेहनत करके एक वचन को भी प्राप्त न कर सकीं, तुम कौनसा धन लेकर बैठे हो?

हजिए न टालो तमे भरम, अने जीव कांय नव करो नरम।
आ नौतनपुरी कहिए नगरी, जिहां श्री देवचन्दजीए लीला करी।।६० ।।

अब तुम अपना भ्रम नहीं मिटाते। अपने जीव को क्यों नरम नहीं करते? यह वह नौतनपुरी नगरी है (चाकला मन्दिर) जहां श्री देवचन्द्रजी ने लीला की है।

आ प्रगट वचन कीधां अपार, तोहे न वली तमने सार।
अमल उतारो तमे जोपे करी, अनेजीव जगाओ वचन चित धरी।।६१ ।।

इन वचनों को उन्होंने तमाम तरीकों से कहा, फिर भी तुमको सुध नहीं आई। अपनी नींद का नशा उतार कर अच्छी तरह से देखो। उनके वचनों को विचार कर चित्त में रखो। जीव को जगाओ।

माया जुओ तमे अलगां थई, तारतमने अजवाले रही।
जे वाणी श्री धणिए कही, ते जीवने वचन केम दीजे नहीं।।६२ ।।

अब तुम तारतम के उजाले में माया देखो। जो वाणी धनीजी ने कही है, वह जीवों को हम क्यों न दें? अर्थात् देनी चाहिए।

हवे गुण सघलाने करो हाथ, अने ओलखो प्राणनो नाथ।
हवे एटलो जीवसूं करो विचार, जे केहा वचन आ कह्या आधार।।६३ ।।

अब तुम सब अपने गुण, अंग, इन्द्रियों को वश में करो और अपने प्राणनाथ को पहचानो। अपने जीव से इतना विचार करो कि अपने प्राणनाथजी ने कौनसे वचन कहे हैं?

जिहां लगे जीव न विचारे मन मांहें, तो चोपडे घडे जेम छांटो थाए।
हवे इंद्रावती कहे सांभलो वात, चरणे लागूं मारा धामना साथ।।६४ ।।

जब तक जीव मन में विचार नहीं करता, तब तक चिकने घड़े पर छींटें नहीं लगतीं। श्री इन्द्रावतीजी धाम के सुन्दरसाथ के चरणों में लगकर कहती हैं कि मेरी बात सुनो।

वली वली नहीं आवे ए अवसर, रखे हाम लई जागो घर।
थोडा मांहें कह्यूं छे अति घणूं, अने जाण्यूं धन कां निगमो आपणूं।।६५ ।।

यह समय बार-बार नहीं आएगा। अपनी चाहना पूरी करके ही घर चलो। हमने इतनी बड़ी बात तुमसे थोड़े में कह दी है। अब जानकर भी अपने धन को मत गंवाइए।

Nijanand App

आगे आपण विहिला थया, तो श्री देवचन्दजीए वंचया।
नहीं तो केम वंचे आपणने एह, जो राख्यो होत कांई आपणे सनेह।। ६६ ।।

आगे भी हम धनी से विमुख हुए, तो श्री देवचन्द्रजी हमें छोड़ गए। यदि हमने उनसे स्नेह किया होता तो वह हमें कैसे छोड़ते?

हवे वली आव्या बीजी देह धरी, आपण ऊपर दया अति करी।
चेतन करी दीधो अवसर, लई लाभ ने जागिए घर।। ६७ ।।

हमारे ऊपर दया करके दुबारा तन धारण करके आए हैं, तुम्हें मौका देकर सावधान किया है। अब लाभ लेकर अपने घर चलें।

मनोरथ सर्वे पूरण थाए, जो आ द्रष्टांत जुओ जीव मांहें।
ते माटे इंद्रावती कहे फरी फरी, जो धणिए कृपा तमने करी।। ६८ ।।

हमारे मनोरथ पूर्ण तब होंगे जब हम इस दृष्टान्त को जीव में विचार कर देखें। श्री इन्द्रावतीजी इसलिए बार-बार कहती हैं कि धनीजी ने हमारे ऊपर मेहर की है।

।। प्रकरण ।। २९ ।। चौपाई ।। ७४१ ।।

प्रगटवाणी प्रकासनी

सुईने सुई सूता सूं करो रे, आ विखम ठिकाणा मांहे जी।
जागीने जुओ उठी आप संभारी, एणी निद्राए लेवाणां कांय जी।। १ ।।

हे सुन्दरसाथजी! इस कठिन ठिकाने (स्थान) में सोते-सोते क्या करोगे? जागो, देखो। उठकर अपने आपको संभालो। इस निद्रा में कुछ नहीं मिलने वाला।

एणी निद्राए जे कोई लेवाणा, नहीं ते आपणा साथी जी।
एणी रे भोमे घणां छेतरिया, तमे उठो इहां थकी जी।। २ ।।

इस माया में जिसने कुछ लिया है (माया की चाह की है) वह अपने साथी नहीं हैं। इस भूमि में बहुत लोग ठगे गए, इसलिए तुम यहां से उठो।

नहीं रे निद्रा कोई घेण धारण, निद्रा होय तो जगव्यो जागे जी।
उठाडी जीवने ऊभो कीजे, वली न मूके पोतानो माग जी।। ३ ।।

यह नींद नहीं है। यह तो कोई नशा है। नींद में हो तो जगा लें। उठाकर जीव को खड़ा कर लें और फिर अपना रास्ता न छोड़ें।

तेज गेहेन ने तेहज धारण, तेज घूटन अधको आवे जी।
एणी भोंमने ए निद्रा मांहेंथी, धणी विना कोण जगावे जी।। ४ ।।

यह वही नशा है। उसी नशे की नींद है। इससे जीव का दम घुटता है इस भूमि पर इस नींद से धनी बिना कौन जगाएगा?

एणे ठेकाणे तां कोई न उगरियो, तमे सूता तेणे ठाम जी।
ए ठाम घणूं विखम लागसे, प्रगट कहूं गत भोम जी।। ५ ।।

इस ठिकाने से कोई नहीं निकला। जिसमें तुम सोए पड़े हो, यह ठिकाना बहुत दुःखदाई लगेगा, इसलिए इस भूमि के गुण को बताती हूं।

Nijanand App

आगे आपण विहिला थया, तो श्री देवचन्दजीए वंचया।
नहीं तो केम वंचे आपणने एह, जो राख्यो होत कांई आपणे सनेह।। ६६ ।।

आगे भी हम धनी से विमुख हुए, तो श्री देवचन्द्रजी हमें छोड़ गए। यदि हमने उनसे स्नेह किया होता तो वह हमें कैसे छोड़ते?

हवे वली आव्या बीजी देह धरी, आपण ऊपर दया अति करी।
चेतन करी दीधो अवसर, लई लाभ ने जागिए घर।। ६७ ।।

हमारे ऊपर दया करके दुबारा तन धारण करके आए हैं, तुम्हें मौका देकर सावधान किया है। अब लाभ लेकर अपने घर चलें।

मनोरथ सर्वे पूरण थाए, जो आ द्रष्टांत जुओ जीव मांहें।
ते माटे इंद्रावती कहे फरी फरी, जो धणिए कृपा तमने करी।। ६८ ।।

हमारे मनोरथ पूर्ण तब होंगे जब हम इस दृष्टान्त को जीव में विचार कर देखें। श्री इन्द्रावतीजी इसलिए बार-बार कहती हैं कि धनीजी ने हमारे ऊपर मेहर की है।

।। प्रकरण ।। २९ ।। चौपाई ।। ७४१ ।।

प्रगटवाणी प्रकासनी

सुईने सुई सूता सूं करो रे, आ विखम ठिकाणा मांहे जी।
जागीने जुओ उठी आप संभारी, एणी निद्राए लेवाणां कांय जी।। १ ।।

हे सुन्दरसाथजी! इस कठिन ठिकाने (स्थान) में सोते-सोते क्या करोगे? जागो, देखो। उठकर अपने आपको संभालो। इस निद्रा में कुछ नहीं मिलने वाला।

एणी निद्राए जे कोई लेवाणा, नहीं ते आपणा साथी जी।
एणी रे भोमे घणां छेतरिया, तमे उठो इहां थकी जी।। २ ।।

इस माया में जिसने कुछ लिया है (माया की चाह की है) वह अपने साथी नहीं हैं। इस भूमि में बहुत लोग ठगे गए, इसलिए तुम यहां से उठो।

नहीं रे निद्रा कोई घेण धारण, निद्रा होय तो जगव्यो जागे जी।
उठाडी जीवने ऊभो कीजे, वली न मूके पोतानो माग जी।। ३ ।।

यह नींद नहीं है। यह तो कोई नशा है। नींद में हो तो जगा लें। उठाकर जीव को खड़ा कर लें और फिर अपना रास्ता न छोड़ें।

तेज गेहेन ने तेहज धारण, तेज घूटन अधको आवे जी।
एणी भोंमने ए निद्रा मांहेंथी, धणी विना कोण जगावे जी।। ४ ।।

यह वही नशा है। उसी नशे की नींद है। इससे जीव का दम घुटता है इस भूमि पर इस नींद से धनी बिना कौन जगाएगा?

एणे ठेकाणे तां कोई न उगरियो, तमे सूता तेणे ठाम जी।
ए ठाम घणूं विखम लागसे, प्रगट कहूं गत भोम जी।। ५ ।।

इस ठिकाने से कोई नहीं निकला। जिसमें तुम सोए पड़े हो, यह ठिकाना बहुत दुःखदाई लगेगा, इसलिए इस भूमि के गुण को बताती हूं।

Nijanand App

विखनी भोम अने विख पाथरियूं, आहार करे विख वेल जी।
सरीर विखनूं मांहेंली जोगवाई विखनी, एक मांहें ते जीव नेहे केवल जी।। ६ ।।

यह भूमि विष की है। सेज (शय्या) भी विष की है। आहार भी विष की बेल का है। शरीर भी विष का है और इसके अन्दर सारी सामग्री विष की है। केवल एक जीव है जो विष का नहीं है, वह विष से मुक्त है।

विखनी तलई ने विखना ओढना, विखनो ढोलियो ढलाए जी।
विखनो ओसीसो ने विखनो ओछाड, वली विजणे ते विखनो वाए जी।। ७ ।।

विष का गद्दा है। विष की रजाई है। विष का पलंग है और विष का बिछौना है। विष का तकिया है। विष की चादर है। विष के पंखे हैं। चल रही हवा विष की है।

जागतां विखने सुपने विख रे, निद्रामां विख निरवाण जी।
बाहेर तणो विख केही पेरे कहूं रे, तेतां वाए ते विख उधाण जी।। ८ ।।

जागने में विष, स्वप्न में विष और नींद में भी निश्चित रूप से विष है। बाहर के विष का वर्णन किस तरह से करूं? यहां तो विष की हवा उलटी चल रही है।

वस्तर विखने भूखण विख रे, सर्वा अंगे विख साज जी।
ए विख जीवने गेहेन घारण रे, ते केम टले विना श्रीराज जी।। ९ ।।

वस्त्र विष के हैं। भूषण विष के हैं। शरीर को सजाने की सब सामग्री विष की है। इस तरह के विष से जीव गहरे नशे में पड़ा है। यह बिना श्री राजजी की मेहर के हट नहीं सकता।

जोर करी तमे जगवो रे जीवने, नहीं सूतानी आ भोम जी।
जेमने सुइए तेम वाधे विस्तार, पछे नहीं उठाय केमे जी।। १० ।।

हे जीव! तुम जोर लगाकर जागो। यह सोने की जगह नहीं है। जितना सोओगे उतना विष का विस्तार बढ़ता जाएगा। बाद में किसी तरह से नहीं उठा जाएगा।

ए भोमलडी तमे कांय न मूको, हजी नथी घारण जाती जी।
एणी भोमे दुखडा दीसे घणा रे, ते तमे जुओ कां आघी जी।। ११ ।।

इस भूमि को तुम क्यों नहीं छोड़ते हो? अभी तक तुम्हारी नींद नहीं जाती। इस भूमि पर दुःख अधिक दिखाई पड़ते हैं, उन्हें तुम दूर रहकर क्यों नहीं देखते?

आघी जुए दुख अनेक उपजसे, ते माटे उठो तत्काल जी।
जल ना जीवनो घर जल मांहें, जेम रहे करोलियो मांहें जाल जी।। १२ ।।

दूर से देखने में भी अनेक दुःख उत्पन्न होंगे, इसलिए तुरन्त उठो। जल के जीव का घर जल में ही है, जैसे मकड़ी जाल में ही रहती है।

सहु कोई जाली गूंथे पोतानी, अने मांहेना मांहें मुझाय जी।
मुझाणा पछी दुख अनेक देखे, घणूं दुखे जीवड़ो जाय जी।। १३ ।।

सभी कोई अपना जाल स्वयं बुनते हैं और फिर उसी में फंस जाते हैं। फंसकर अन्दर ही अन्दर उलझ जाते हैं। उलझने के बाद अनेक दुःख होते हैं और फिर बड़े दुःख के साथ प्राण निकलते हैं।

Nijanand App

घणूं दुख देखे जीव जातां, वली ते गूंथे तत्काल जी।
केम दोष दीजे करोलियाने, एहेना घर थया मांहें जाल जी।। १४ ।।

जीव को जाते समय देखकर बड़ा दुःख होता है। वह जीव तुरन्त जाल बुनते हैं। इन्द्रावतीजी कहती हैं मकड़ी को दोष क्यों देते हो इसका तो घर ही जाल है।

आपणां घर तां नहीं एणे ठामे, चौद भवनमां क्यांहे जी।
ते माटे वालोजी करे रे पुकार, केहे स्या ने सूता छो आंहे जी।। १५ ।।

अपना घर चौदह भुवनों में कहीं नहीं है, इसीलिए वालाजी पुकार-पुकार कर कहते हैं कि तुम यहां क्यों सोते हो?

ओल्या दुखना घरतेपण मेले नहीं, तमे सुखना घर न संभार जी।
सघला ग्रन्थ पाए साख पुरावी, साथ हवे तो दोष तमारो जी।। १६ ।।

दुःख के जीव अपने घर को नहीं छोड़ते तो तुम अपने सुख के घर को क्यों याद नहीं करते? सब ग्रन्थों से तुम्हें गवाही दे दी है। हे सुन्दरसाथजी! अब दोष तुम्हारा है।

बेहद घर ने बेहद सुख रे, बेहद मारा श्री राज जी।
अविचल सुख अनन्त देवाने, हूं जगवुं तमारे काज जी।। १७ ।।

अपना घर बेहद के पार है और वहां सुख भी बेहद हैं। मेरे श्री राजजी महाराज की कृपा भी बेहद है, इसलिए तुमको अनगिनत अखण्ड सुख देने के लिए ही तुम्हारे लिए तुमको जगा रही हूं।

पिउजी पुकार करी करी थाक्या, तमे कांय न जागो मारा साथ जी।
ऊगीने दिन आथमवा आव्यो, अने पछेते पडसे आडी रात जी।। १८ ।।

पियाजी पुकार-पुकार के थक गए हैं। हे मेरे साथजी! तुम क्यों नहीं जागते। दिन उग करके संध्या हो गई। अब पीछे रात हो जाएगी।

रात पडी त्यारे कोई नव जागे, कोई न करे पुकार जी।
निसाए निद्रा जोर थासे, पछे वाधसे ते विख विस्तार जी।। १९ ।।

रात हो गई तो फिर कोई नहीं जागेगा। कोई पुकार कर जगाएगा भी नहीं। रात्रि में नींद बड़े जोर से आएगी, तब विष का विस्तार बड़ी तेजी से बढ़ जाएगा।

संझा लगे रह्या धणी आपण माटे, ते तमे कांय न संभारो जी।
ओलखी धणीने सुखडा लीजिए, तमें आपोपूं वारणे वारो जी।। २० ।।

अपने लिए धनी संध्या तक रहेंगे, तो तुम अपने को क्यों नहीं जगाते हो? धनी को पहचान कर सुख लो, अपने आपको कुर्बान कर दो।

पुकार करतां रात पडी रे, वालो रात न रहे निरधार जी।
जेणे रे तमने एवा भोलवया, ते वेरीडा कां न अविधारो जी।। २१ ।।

पुकार करते-करते रात हो जाएगी। फिर रात में प्रीतम निश्चय ही नहीं रहेंगे। जिसने तुम्हें इतना भुलाया है, उस दुश्मन की तुम पहचान क्यों नहीं करते हो? (यह सगे सम्बन्धी, अंग, इन्द्रिय)।

Nijanand App

आ भोम मूकतां जे आडी करे रे, घेर जातां जे कोई वारे जी।
ए वेरीडा तमारा प्रगट पाधरा, ते तां जुओने विचारी जी।। २२ ।।

इस भूमि को छोड़ने में जो रुकावट डाले तथा घर जाते कोई रोके तो वह भी तुम्हारा पक्का दुश्मन है। उसको तुम विचार करके देखो।

ए वेरीडा घणूं विख भरियां रे, जेणे खाधो ते सर्व संसार जी।
ते तमने भूलवे छे जुई भांते, पण तमे रखे लेवाओ आवार जी।। २३ ।।

यह सभी दुश्मन विष से भरे हुए हैं। इन्होंने सारे संसार को खा डाला है। तुमको भी वह अलग ही ढंग से भुला रहे हैं, किन्तु इस बार उनके चक्कर में नहीं आना।

वली तमने देखाडूं दुरजन, जेणे न मूक्यो कोय जी।
ते तमने प्रकासूं रे प्रगट, तारा माहेला गुण तूं जोय जी।। २४ ।।

अब तुमको दुष्ट की पहचान कराती हूं। इसने किसी को नहीं छोड़ा है। वह मैं तुमको प्रकट कर दिखलाती हूं। तुम अपने अन्दर के गुणों को देखो।

वली गुण इंद्री जुओ रे जातां, जे अवला वहे संसार जी।
ए वेरीडा विसेखे आपणां, ते तमे कांए न मारो जी।। २५ ।।

फिर अपने गुण, अंग, इन्द्रियों को देखो जो उलटे संसार की तरफ जा रहे हैं (लगे हैं)। ये ही विशेषकर अपने दुश्मन हैं। इनको तुम क्यों नहीं मारते?

मारी ने मरडी भांजी करीने, वली जगवी करो तमे जोर जी।
गुण अंग इंद्री ज्यारे जीव जागसे, त्यारे करसे ते पाधरा दोर जी।। २६ ।।

इनको तोड़ मरोड़ कर फिर अपनी ताकत से जीव को जगाओ। जब जीव जाग जाएगा, तब गुण, अंग, इन्द्रिय सीधे रास्ते (राजजी के काम में) दौड़ने लगेंगे।

वासना जाणीनें कहूं छूं वचन रे, आ जल ना जीवने कोण कहे जी।
वचन सुणी जे होय वासना, ते आणी भोमे कैम रहे जी।। २७ ।।

हे सुन्दरसाथजी! आप परमधाम की वासना हो (आत्मा हो), इसलिए मैं तुमको कहती हूं, अन्यथा इन जल के जीवों (माया के जीवों) को कौन कहेगा? वचन भी वही सुनेगा जो वासना (आत्मा) होगी। जो वासना होगी, वह इस भूमि में कैसे रहेगी?

ए दुस्तर भोम घणूं रे दोहेली, वली ने वसेखे दुख रात जी।
ते माटे हूं करूं रे पुकार, मारो भली गयो मायामां साथ जी।। २८ ।।

यह कठिन भूमि बहुत दुःखदाई है। विशेषकर रात में दुःख बढ़ जाता है। इस वास्ते मैं पुकार-पुकार कर कह रही हूं कि मेरा सुन्दरसाथ माया में भूल गया है।

ततखिण रातडी आवी देखसो, मांहें प्रगट थासे अंधेर जी।
जीव अंधेर ज्यारे देखी मुझासे, त्यारे विखना ते आवसे फेर जी।। २९ ।।

शीघ्र ही रात्रि को आता देखोगे और तुम्हें अंधेरे का अनुभव होगा। जीव भी अंधेरे को देखकर उलझ जाएगा। जो विष नहीं आता था वह रात के आने से आ जाएगा।

Nijanand App

विख चढे फेर अनेक उपजसे, करम केरा जे दुख जी।
वली फरसे फेर अनेक काया, आखी रात चढसे फेर विख जी।। ३० ।।

विष चढ़ने पर किए हुए कर्म के अनेक दुःख होंगे, फिर अनेक तन धारण करने पड़ेंगे और पूरी रात विष का असर होगा।

मारो साथ होय ते तमे सांभलो, रखे आंही पाडो रात जी।
ए रातना दुख घणा रे दोहेला, पछे निद्रा उडसे प्रभात जी।। ३१ ।।

मेरे धाम के सुन्दरसाथ हो, तो सुनो। यहां रात्रि मत आने दो। इस रात के दुःख बहुत हैं, प्रभात होने पर ही नींद उड़ेगी।

प्रभात थासे अति वेगलो रे, रात छेडो केमे न आवे जी।
दुखनी रात घणूं जासे दोहेली, पछे वहाणू ते केमे न वाए जी।। ३२ ।।

सवेरा बहुत देर से आएगा। रात का अन्त आएगा ही नहीं। दुःख की रात बड़ी कठिनाई से बीतेगी। पीछे सवेरा किसी तरह से नहीं होगा।

महाप्रले काल ज्यारे थासे, तिहां लगे रेहेसे अंधेर जी।
ते माटे पिउजी करे रे पुकार, तमे आवजो ते आणे सेर जी।। ३३ ।।

महाप्रलय होने तक यह अंधेरा रहेगा। इस वास्ते पियाजी पुकार-पुकार के कहते हैं कि तुम सीधे रास्ते पर आ जाओ।

तारतमनूं अजवालूं लईने, वालो आव्या छे बीजी वार जी।
फोडी ब्रह्मांडने पाडयो मारग, आंही अजवालूं अपार जी।। ३४ ।।

तारतम का उजाला लेकर वालाजी दूसरी बार आए हैं। उन्होंने ब्रह्माण्ड को फोड़कर नया रास्ता बताया है। इसमें उजाला ही उजाला है (दूसरे तन में बैठ जाएंगे)।

पिउजी पधारया तेडवा तमने, तो थाय छे आटलो पुकार जी।
एम करतां जो नहीं मानो, तो वालो नहीं रहे निरधार जी।। ३५ ।।

पियाजी तुम्हें बुलाने आए हैं, तो इतनी पुकार की जा रही है। ऐसा करने पर भी यदि नहीं मानोगे तो वालाजी निश्चित नहीं रहेंगे।

विखम वाट जल मांहें अंधेरी रे, तमने लागसे लेहेर निघात जी।
वलीने वसेके जीव बेसुध थासे, नहीं सांभलो ते घरनी वात जी।। ३६ ।।

इस भवसागर के अंधेरे में भयंकर रास्ता होगा, जिसकी लहरें तुम्हें चोट पहुंचाएंगी। इससे जीव फिर से बेसुध हो जाएगा, इसलिए अच्छा है कि अपने घर की बात सुनो।

मछ गलागल मांहे छे सवला, अने पूरतणा प्रवाह जी।
दिस एके नव सूझे सागर मां, तमे रखे ते विहिला थाओ जी।। ३७ ।।

इस भवसागर में बड़े-बड़े ताकतवर मगरमच्छ हैं तथा सागर की धारा भी तेज है। ऐसे सागर में से निकलने की कोई दिशा दिखाई नहीं पड़ती। इसलिए, हे साथजी! तुम अपने को दुःख से बचाओ।

Nijanand App

तमे उठो ते अंग मरोडीने, म जुओ मायानो मरम जी।
धणी पधारया छे तम माटे, तमने हजी न आवे सरम जी।। ३८ ।।

तुम अंग मरोड़ कर उठो और माया का रस (मर्म-भेद-स्वाद) मत देखो। धनी तुम्हारे वास्ते आए हैं। तुमको अभी तक शर्म नहीं आती?

ए निद्रा तमे केम रे उडाडसो, जिहां नहीं करो कोई पर जी।
ओलखी धणी तमे आप संभारी, जागी जुओ तमे घर जी।। ३९ ।।

इस नींद को तुम कैसे छोड़ोगे? यहां कोई दूसरा होगा ही नहीं। इसलिए धनी की पहचान करके तुम अपने आपको संभालो और जागकर अपना घर देखो।

ए रे अमल तमने केम रे उतरसे, जे जेहेर चढ्यूं अति भारी जी।
जिहां लगे जीवने वाण न लाग्यो, थाक्या ते धणी पुकारी जी।। ४० ।।

तुम्हारा यह नींद का नशा कैसे उतरेगा? इसका तुम्हें बहुत ज्यादा जहर चढ़ गया है। जब तक तुम्हारे जीव को चोट नहीं लगती, तब तक धनी पुकार-पुकार कर थक जाएंगे।

हवे जो जाणो घर पामूं पोतानूं, तो राखजो वैरागनी सेर जी।
सर्वा अंगे सुध सेवा करजो, एम जागसो पोताने घेर जी।। ४१ ।।

यदि तुम अब अपना घर चाहते हो तो वैराग्य का रास्ता पकड़ना (दुनियां से वैर धनी से राग)। सब अंगों से सावचेत होकर धनी की सेवा करना। इस प्रकार से अपने घर में जागोगे।

जो जाणो जीवने जगवुं रे आहीं, तो तां जोजो ते रास प्रकास जी।
एम केहेजो जीवने आ कह्यूं सर्व तूंने, त्यारे जीवने थासे अजवास जी।। ४२ ।।

यदि तुम जानते हो कि जीव को यहीं जगाना है तो तुम रास और प्रकास (प्रकाश) के वचनों को देखना, जीव से कहना कि यह सब तेरे लिए ही कहा है। तब जीव को प्रकाश मिल जाएगा अर्थात् जाग जाएगा।

एणे अजवाले जेहेर उतरसे, त्यारे जीव ते करसे जोर जी।
परआतम ने आतम जोसे, त्यारे टलसे ते तिमर घोर जी।। ४३ ।।

इस उजाले में (रास और प्रकाश के ज्ञान से) जहर उतर जाएगा। जब जीव जोर पकड़ेगा, तब आत्मा परआत्म को देखेगी, तब घोर अन्धकार मिट जाएगा।

एणी पेरे तमे जीव जगवसो, त्यारे थासे ते जोत प्रकास जी।
प्रेमतणा पूर प्रघल आवसे, थासे ते अंधकारनो नास जी।। ४४ ।।

इस तरह से तुम अपने जीव को जगाओगे तब ज्ञान का प्रकाश होगा। प्रेम के पूर के पूर आएंगे तथा अन्धकार का नाश हो जाएगा।

कोमल चित करी वचन रुदे धरी, जोजो ते सर्व संभारी जी।
खरा जीवने वचन कह्या छे, माया जीवने थासे ए भारी जी।। ४५ ।।

अपने कोमल चित्त और हृदय में इन वचनों को धारण करो और इनको देख करके याद करो। यह वचन खरे जीव को कहे हैं। माया के जीव को यह भारी होंगे।

Nijanand App

माया जीव आंही टकी न सके रे, तेणे नहीं लेवाय ए वचन जी।
ए वचन घणुऐ लागसे मीठा, पण रेहेवा न दे खोटानूं मन जी।। ४६ ।।

माया के जीव यहां टिक नहीं सकेंगे और न एक वचन बोल सकेंगे। यह वचन मीठे तो लगेंगे, पर उनका पापी मन इन्हें उनके पास रहने नहीं देगा।

ब्रह्मांड माहेलो जीव जे होय रे, ते तां जाजो पोतानी वाटे जी।
बेहद जीव जे होय रे अमारो, आ वचन कहवाय ते माटे जी।। ४७ ।।

यदि कोई माया का जीव हो तो अपने रास्ते (बैकुण्ठ) जाए। यदि कोई बेहद का हमारा साथी है तो यह वचन उसके लिए कहे हैं।

वासनाने तां जीव न केहेवाय, घणुए दुख मूने लागे जी।
खोटानी संगते खोटूं कहूं छूं, पण सूं करूं मान केमे जागे जी।। ४८ ।।

वासना (आत्मा) को जीव नहीं कहना। मेरे को बड़ा दुःख लगता है। खोटे की संगत से ही हमने (आत्मा को जीव कहा है) खोटा कहा है अर्थात् वासना को जीव कहा है। पर क्या करूं? मेरे सुन्दरसाथ जो अभिमान में हैं (माया में हैं) वह कैसे जागेंगे?

कठण वचन हूं तोज कहूं छूं, नहीं तो केम कहूं वासनाने जीव जी।
रखे दुख देखे वासना ते माटे, ए प्रगट वाणी हूं कही जी।। ४९ ।।

कठिन वचन तो मैं इसीलिए कहती हूं, नहीं तो वासना (आत्मा) को जीव कौन कह सकता है? वासना (आत्मा) इसके लिए दुःख न माने, इसीलिए मैंने इस बात को स्पष्ट (खुलासा) कर दिया है।

प्रकास वाणी तमे जोजो जोपे करी, रखे मूको ते एक वचन जी।
द्रढ थई तमे देजो जीवने, लेजो ते मांहेलूं धन जी।। ५० ।।

प्रकाश वाणी के ज्ञान को तुम अपनी तरह से देखना। एक वचन को भी मत छोड़ना। दृढ़ निश्चय करके यह ज्ञान जीव को देना और इसके अन्दर का धन (ज्ञान) अपने पास रखना।

ए धननो ते लेजो अर्थ, त्यारे प्रगट थासे प्रकास जी।
एणे अजवाले जीव जागसे, त्यारे वृथा न जाए एक स्वास जी।। ५१ ।।

इस वचन रूपी धन का अर्थ निकालो तो तुमको उजाला हो जाएगा। उस उजाले (प्रकाश) से जीव जागेगा। फिर एक सांस भी व्यर्थ नहीं जाएगी।

प्रगट वाणी प्रकास कही छे, इंद्रावती चरणे लागे जी।
ते लाभ लेसे बंने ठामनो, जेहेनो जीव आंहीं जागे जी।। ५२ ।।

यह प्रगट वाणी प्रकाश की ज्ञान के लिए कही है। श्री इन्द्रावतीजी साथ के चरणों में लगकर कहती हैं कि जिसका जीव यहां जाग जाएगा उसको दोनों ठिकानों का सुख मिलेगा (लाभ मिलेगा)।

॥ प्रकरण ॥ ३० ॥ चौपाई ॥ ७९३ ॥

Nijanand App

बेहद वाणी

नोट : यह बेहद वाणी जब श्री प्राणनाथजी महाराज गुजरात (अहमदाबाद) से दीपबन्दर जा रहे थे, तब समुद्र में उतरी।

बेहदी साथ तमे सांभलो, बोली बेहद वाणी।
मोटा मोटेरा थई गया, कोणे नव जाणी।। १ ।।

हे बेहद के सुन्दरसाथजी! तुमको क्षर के पार का ज्ञान जो मैंने सुनाया है, मेरे से पहले बड़े-बड़े ज्ञानी, देवी-देवता हो गए, पर किसी को भी चौदह लोकों तथा नारायण से आगे की जानकारी नहीं हुई। यह जानकारी किसी को प्राप्त नहीं हुई।

अनेक उपाय कीधां घणे, केमे न कलाणी।
कोणे न ओलखांणी ए निध, बुध विना कोणे न जाणी।। २ ।।

सभी ने अनेक प्रकार के प्रयत्न किए, पर किसी को पहचान नहीं हुई। किसी को इस ज्ञान की पहचान नहीं हुई, क्योंकि उनके पास जागृत बुद्धि (पराशक्ति) नहीं थी।

आव्या ते बुधना सागर, बुध रुदे भराणी।
भगवानजी ने महादेवजी, पूछे बेहद वाणी।। ३ ।।

वरना बड़े-बड़े शास्त्रों के ज्ञाता ज्ञान से भरे पूरे आये, परन्तु उन्हें भी इस ज्ञान की पहचान नहीं हुई। यहां तक कि भगवान शंकर भी भगवान विष्णु से इस ज्ञान को जानने की चाह करते हैं।

ब्रह्मांड कोट वही गया, कोणे न सुणाणी।
चौद भवनना जे धणी, खंते खोलाणी।। ४ ।।

करोड़ों ब्रह्माण्ड हो गए, पर बेहद के ज्ञान को किसी ने नहीं सुनाया। चौदह लोकों के मालिक भगवान विष्णु ने भी बहुत खोज की।

सुकजी सनकादिक ने कबीर, रह्या घणुए ताणी।
कोणे न आवी एणी प्रेमल, रह्या रुदेमां आणी।। ५ ।।

शुकदेवजी, सनकादिक (सनक, सनन्दन, सनातन, सनत कुमार) और कबीर ने भी बहुत प्रयत्न किया, किन्तु उन्हें इसकी सुगन्ध तक नहीं मिली। हृदय में सोचते ही रह गए।

एक लवाने कारणे, लखमी जी राणी।
सात कल्पांत लगे तप कर्या, तोहे न केहेवाणी।। ६ ।।

एक शब्द के लिए लक्ष्मीजी को भी ठुकरा दिया गया। जिन्होंने सात कल्पान्त तक तप किया फिर भी उनको नहीं कही।

ए रसनी जे वासना, केहेने न अपाणी।
ते वृज सुन्दरी सुखमां, अणजाणे माणी।। ७ ।।

इस रस को लेने वाली जो वासनाएं (आत्माएं) हैं, उनको भी किसी ने नहीं दिया। ब्रज की गोपियों ने (जिनके अन्दर परमधाम की आत्माएं थीं) उस सुख को अनजाने में प्राप्त किया।

ए निध पोताना घरतणी, एम बोले वाणी।
श्री धाम धणी सूं रामत, रमे धणियाणी।। ८ ।।

यह न्यामत अपने घर की है, ऐसा वाणी बताती है। धाम के धनी से उनकी अंगनाओं ने ही ब्रज की रामत का सुख लिया।

Nijanand App

अणू चोंच पात्र एह विना, बीजा कोणे न देवाणी।
दोड कीधी मोटे घणी, कोणे न लेवाणी।। ९ ।।

इनके बिना कण के समान भी दूसरे किसी को भी नहीं मिला। इस ब्रह्माण्ड के बड़े-बड़े देवी-देवताओं ने (पात्रों ने) बहुत परिश्रम किया फिर भी कोई नहीं पा सका।

साथ सुपने आवियो, इछा रामत जाणी।
बेहद धणी पधारिया, बेहद वात वंचाणी।। १० ।।

ब्रह्मसृष्टियां स्वप्न में खेल देखने की इच्छा से आईं। उनके लिए उनके बेहद के धनी यहां पधारे तो बेहद की वाणी (बात) उनको बताई।

तेडी सिधावसे साथने, प्रगट थासे वाणी।
बुधतणो अवतार कहिए, मोटी बुध जणाणी।। ११ ।।

इस वाणी से सुन्दरसाथ को बुलाकर घर ले जाएंगे। इन धनी को बुद्धि (जागृत बुद्धि—पराशक्ति) के अवतार ही कहना। इन्होंने ही बड़ी बुद्धि की जानकारी दी है।

जेणे ए निध खोली खंत करी, रुदयामां आणी।
धंन धंन कहिए मोटी बुध, निध ए निरखाणी।। १२ ।।

जिन्होंने इस न्यामत को लगन से खोजकर अपने हृदय में बिठाया, ऐसे बड़ी बुद्धि के धनी धन्य हैं। उन्होंने ही जागृत बुद्धि की पहचान कराई।

नौतनपुरी मां ए निध, सारी सनंधे गोताणी।
निरखी गोती ने नेहकरी, साथमां संभलाणी।। १३ ।।

नौतनपुरी में यह निधि हर तरह से खोजी गई, परखी गई और बड़े प्यार से सुन्दरसाथ को सुनाई गई।

बेहद केरी वाटडी, जोजो तमे साथ।
तारतम तेज छे निरमल, जोत अति अजवास।। १४ ।।

बेहद के इस रास्ते को, हे सुन्दरसाथजी! तुम देखो। तारतम की रोशनी साफ है और इसकी ज्योति में उजाला अधिक है।

प्रगट थासे पाधरी, जोजो रास प्रकास।
ग्रन्थ सघलानी उतपन, वाणी वेद व्यास।। १५ ।।

इससे रास्ता सीधा मिल जाएगा। रास और प्रकाश को व्यासजी की वाणी तथा सब धर्म ग्रन्थों की वाणी से तोलकर देखो।

रुदे एहना सुत तणे, भागवत अभ्यास।
बेहद वाटे आवियो, सुकजी पूरवा साख।। १६ ।।

व्यासजी के पुत्र शुकदेवजी के हृदय में भागवत का ज्ञान प्रकट हुआ। शुकदेवजी बेहद की गवाही देने के लिए आगे आए।

Nijanand App

ब्रह्मांड विखे वाणी घणी, केहेना नाम लेवाय।
साख पूरे सहु ए वाटनी, जो जीवे जोवाय।। १७ ।।

इस ब्रह्माण्ड में बहुत-सी वाणी हैं, किन-किनका नाम लूं? सभी इस रास्ते की गवाही देती हैं। यदि कोई जीव इन वाणियों को देखे तो समझ जाएगा कि सब ग्रन्थ बेहद के ज्ञान की गवाहियां देते हैं।

ए वाणी ए वाटडी, कहींए प्रगट न थई।
धणी ब्रह्मांडने खप करया, रह्या जोई जोई।। १८ ।।

यह वाणी और यह रास्ता कहीं भी जाहिर न हुआ। ब्रह्माण्ड के धनी विष्णु भगवान भी मेहनत कर थक गए और देखते ही रह गए।

ए वाट वाणी जोई घणे, केहेने हाथ न आवी।
नाम ब्रह्मांडना धणी कह्या, बीजा सूं करूं सुणावी।। १९ ।।

यह रास्ता और वाणी बहुतों ने देखी, पर यह किसी को नहीं मिली। ब्रह्माण्ड के मालिक विष्णु भगवान कहलाते हैं, जब यह वाणी उनको ही नहीं मिली तो दूसरे का नाम कैसे कहूं?

ते वाट प्रगट पाधरी, कीधी आवार।
धंन धंन ब्रह्मांड ए थयो, धंन धंन नर नार।। २० ।।

अब यह रास्ता सीधा है। इस बार के नर-नारी धन्य हैं तथा यह ब्रह्माण्ड भी धन्य है।

धंन धंन जुग ते कलजुग, जेमां ए निध आवी।
धंन धंन खंड ते भरथनो, लीला ए पधरावी।। २१ ।।

कलियुग भी धन्य हो गया जिसमें यह न्यामत (बेहद वाणी) आई। भरतखण्ड भी धन्य है जिसमें यह लीला आई।

धंन धंन गोकुल जमुना त्रट, धंन धंन वृजवासी।
अग्यार वरस लगे लीला करी, चौद भवन प्रकासी।। २२ ।।

गोकुल भी धन्य है और यमुना के तट भी धन्य हैं। (जो गोकुल अखण्ड हो गया है)। ब्रजवासी भी धन्य हैं। ब्रज के अन्दर ग्यारह वर्ष लीला कर (उनको अखण्ड कर दिया और अब उस लीला और उस ब्रह्माण्ड जिसको कोई जानता ही नहीं) यहां चौदह लोकों में इस बेहद वाणी के ज्ञान से जाहिर कर दिया।

चौद भवन सुपन तणा, जोवा आव्यो छे साथे।
ए ब्रह्मांड मुक्त पामसे, सोणो जागे समासे।। २३ ।।

चौदह भुवन स्वप्न के समान हैं, इन्हें देखने के लिए सुन्दरसाथ आया है। अब यह ब्रह्माण्ड भी मुक्ति पा जाएगा। जागने पर स्वप्न समाप्त हो जाएगा (ब्रह्माण्ड अखण्ड हो जाएगा)।

वली जोगमायानो ब्रह्मांड, कीधो रमवा रास।
रामत रमे श्री राज सूं, साथ सकल उलास।। २४ ।।

फिर रास खेलने के लिए योगमाया का ब्रह्माण्ड बनाया गया, इसमें सब सुन्दरसाथ ने उमंग में श्री राजजी के साथ रामत (लीला) खेली।

Nijanand App

रास रामत छे नित नवी, केमे नव थाय भंग।
साथ रमे सुपनमां, जोगमाया ने रंग।। २५ ।।

रास की नई-नई रामतें (लीलाएं) योगमाया के ब्रह्माण्ड में खेले जाने से किसी प्रकार भंग नहीं होंगी। सुन्दरसाथ योगमाया के ब्रह्माण्ड में अनजाने से खेले।

जुओ साथ सुपन विखे, रामत रमे छे जेम।
एक पखे साथ जागियो, रामत तेमनी तेम।। २६ ।।

हे सुन्दरसाथ ! देखो, हमने जो अनजाने में रामत खेली थी, वह रामत तो आज भी ज्यों की त्यों हो रही है और हम उसे देखकर इस तरीके से परमधाम गए।

वली ते ब्रह्मांड उपनो, जेमां आपण आव्या।
धाख रही जोया तणी, आपण तेहज लाव्या।। २७ ।।

इसके बाद यह ब्रह्माण्ड नया बना जिसमें हम आए हैं। खेल देखने की जो इच्छा बाकी थी उसी इच्छा को लेकर आए हैं।

ब्रह्मांड त्रणे दीठा अमे, रामत अलेखे।
जागीने करसूं वातडी, जे सुपन मांहें देखे।। २८ ।।

तीन ब्रह्माण्ड (ब्रज-रास-जागनी) हमने देखे और अनगिनत खेल खेले। अब जागकर परमधाम में बातें करेंगे जो हमने स्वप्न में देखीं।

वली आ ते ब्रह्मांड उपनो, जेमां राख्यो छे सेर।
आंहीं पण कीधी वातडी, साथ सिधाव्यो घेर।। २९ ।।

ब्रज रास के बाद में फिर यह ब्रह्माण्ड बना जिसमें ज्ञान आया। ब्रज रास की लीला करके सुन्दरसाथ घर गए जिसका ज्ञान भी हमने यहां बताया।

जेम हर्‌या ब्रह्माए वाछरू, गोवाल संघाते।
ततखिण नवा निपना, आपोपणी भांतें।। ३० ।।

जिस तरह से ब्रह्माजी ने ग्वाल-बाल सहित बछड़ों का हरण किया था और वालाजी ने उसी पल नए बना दिए थे।

गोकुल मांहें आप आपणे, घेर सहु कोई आव्या
खबर न पडी केहेने, एवी रची माया।। ३१ ।।

गोकुल में सभी ग्वाल-बाल, बछड़े अपने घर आए। यह माया के बने हुए हैं, परन्तु इस बात की खबर किसी को नहीं लगी। ऐसी माया रच दी।

एणे द्रष्टांते प्रीछजो, सेर राख्यो ए भांते।
माया तणो ए बल जुओ, केवो रच्यो छे खांते।। ३२ ।।

इस दृष्टान्त से समझना, इस तरह से यह ब्रह्माण्ड बना। किसी को यह खबर ही नहीं हुई कि हम नए बने हैं। माया की ताकत देखो कि उसने धनी के आदेश से ज्यों की त्यों रचना कर दी।

Nijanand App

साथ सकल सिधावियो, श्रीकृष्ण जी संघाते।
ते रमे छे रामत रासनी, आंही उठ्या प्रभाते।। ३३ ।।

सब सुन्दरसाथ श्री कृष्णजी के साथ चले गए और वह आज भी योगमाया के ब्रह्माण्ड में रास खेल रहे हैं तथा इस कालमाया के ब्रह्माण्ड में नए स्वरूप आ गए। श्री कृष्ण और गोपियों के रूप बन गए जो वेद ऋचा कहलाती है।

तेहज गोकुल जमुना त्रट, जाणे ते वृजवासी।
जाणे रामत रास रमी करी, सहु उठ्या उलासी।। ३४ ।।

सबको यही लगा कि यह वही गोकुल है। वही यमुना तट है और वही ब्रजवासी हैं जो रास की रामत खेलकर आए हैं।

जाणे तेज ब्रह्मांड ते रामत, जेम रमतां सदाय।
आ ते ब्रह्मांड उपनूं, एणीं रे अदाय।। ३५ ।।

अब वह जानते हैं कि यह वही ब्रह्माण्ड है और वही खेल है जो सदा से ब्रज में खेलते थे। इस तरीके से यह नया ब्रह्माण्ड (तीसरा जागनी का) बना।

बंने ब्रह्मांड वचमां, सेर राख्यो छे सार।
खबर न पडी केहेने, बेहदनो बार।। ३६ ।।

दोनों ब्रह्माण्डों के बीच में घर जाने के रास्ते हैं (पर किसी को यह पता नहीं है)। इस बेहद के रास्ते की (ज्ञान की) किसी को भी खबर नहीं हुई।

बेहदी साथ आवियो, एणे दरवाजे।
आ ब्रह्मांड मायातणो, रामत जोवा काजे।। ३७ ।।

बेहद के साथी अब इस तीसरे ब्रह्माण्ड में माया की रामत देखने के लिए उसी रास्ते से आए हैं।

सूं जाणे हदना जीवडा, बेहदनी वाते।
मांहें रमे ते रामत रातडी, आंहीं उठियां प्रभाते।। ३८ ।।

इन बेहद की बातों को माया के जीव क्या समझें। यह बेहद के जीव जो इस ब्रह्माण्ड में प्रतिबिम्ब की लीला में बने हैं, यही समझते हैं कि हम ही हैं जो रात को रास खेल रहे थे। अब हम ही यहां प्रातः उठे हैं।

पाछला साथमां रामत, दिन अग्यार कीधी।
अक्रूर तेडी सिधावियो, जई मथुरा लीधी।। ३९ ।।

यह जो, इस नए ब्रह्माण्ड में ग्वाल गोपी-कृष्ण बने, उन्होंने ग्यारह दिन लीला की। अक्रूर इनको बुलाकर मथुरा ले गये।

तिहां लगे वेख वालातणो, मुक्त कंसने दीधी।
रास पाछली रामत, लीला जाणजो बीजी।। ४० ।।

यहां तक भेष, हमारे वालाजी ने जो अखण्ड रास में धारण किया था, उसी की नकल रही। उन्होंने कंस को मुक्त किया। इस तरह से रास की रामत के बाद की यह दूसरी लीला है (पहली गोकुल की सात दिन और दूसरी मथुरा की चार दिन की)।

Nijanand App

टीलू दई उग्रसेंनने, वेख सहित सिधाव्या।
इहांथी लीला अवतारनी, वसुदेव वधाव्या।। ४१ ।।

उग्रसेन को टीका देकर भेष सहित चले गए। अब यहां से विष्णु भगवान के अवतार की लीला शुरू होती है। कारागृह (जेल) में वसुदेव से मिले।

हवे एह लीला हदतणी, तेतां सहु कोई केहेसे।
पण बेहद वाणी अम विना, बीजो कोंण देसे।। ४२ ।।

अब यहां से लीला हद की (चौदह लोकों) है, जिसका सब कोई वर्णन करेंगे, परन्तु बेहद की वाणी हमारे बिना दूसरा कौन देगा?

एणी वाटे ऊभो नरसैयो, लीला बेहद गाय।
जोर करे बलियो घणो, रासमां ना पेसाय।। ४३ ।।

इस रास्ते पर नरसैयां खड़ा होकर बेहद की लीला गाता है। उसने बड़ी ताकत लगाई फिर भी रास के अन्दर नहीं जा सका।

जे बल कीधूं नरसैए, एवो करे न कोय।
हदनो जीव बेहदनी, ऊभो लीला जोय।। ४४ ।।

जो ताकत नरसैयां ने लगाई ऐसी दूसरा कोई नहीं लगाता। यह हद का जीव था जिसने बेहद की लीला को खड़े होकर देखा (सुना)।

ए रस काजे दोड्यो नरसैयो, वाणी करे रे पुकार।
रस थयो मांहेंली गमां, आडा दरवाजा चार।। ४५ ।।

इस रास के वास्ते नरसैयां दौड़ा, ऐसा वाणी बताती है। इस प्रतिबिम्ब के अन्दर रास का रस रह गया उसके आड़े तन के चार परदे आ गए। क्षर ब्रह्माण्ड के स्वरूप नारायण के शरीर के चार भाग स्थूल, सूक्ष्म, कारण, महाकारण जिसका उसे ज्ञान नहीं था।

बारणे इन बेहद तणे, लेहेर टाढक आवे।
प्रेमल कांईक रसतणी, बारणे रे जणावे।। ४६ ।।

बेहद के इस दरवाजे पर ठंडी हवा की लहरें आ रही हैं। उसके प्रेम रस की सुगन्ध दरवाजे में खड़ा होकर ले रहा है।

एणे बारणे नरसैयो, घणूं टाढक पाम्यो।
लीला पाछला साथमां, सुख लईने जाम्यो।। ४७ ।।

इस दरवाजे में से नरसैयां ने बहुत शीतलता पाई और उस नए संसार के जीवों की लीला (प्रतिबिम्ब की रास जो यहां हुई) का सुख लिया।

सुकजीए लीला वरणवी, वृज रास वखाण्यो।
बेहदनी वाणी विना, ठाम ठाम बंधाण्यो।। ४८ ।।

शुकदेवजी ने यहां खेली गई ब्रज की लीला (सात दिन की) और छः महीने की रास की एक रात्रि जो यहां हुई का बखान किया, परन्तु बेहद के ज्ञान के बिना संदेहों से भर गया। यह वर्णन स्पष्ट रूप से स्थान-स्थान पर इस भेद को न खोल सका।

Nijanand App

नहीं तो एम केम वरणवे, केम थाय पंच अध्याई।
स्कंध बारे भागवतना, तेथी थाय कोट सवाई।।४९ ।।

नहीं तो ऐसे किस तरह वर्णन करते और रास का वर्णन पांच अध्यायों में ही कैसे समाप्त कर देते? भागवत के बारह स्कन्ध हैं। यदि अखण्ड रास का ज्ञान हो जाता तो करोड़ों गुना विस्तार हो जाता।

न थई प्रगट पाधरी, मुख एहेने वाणी।
धाख रही रुदे घणी, कलप्या दुख आणी।।५० ।।

शुकदेवजी के मुख से भी इस वाणी का खुलासा नहीं हो सका। उनके मन में वर्णन करने की बड़ी चाहना थी। इसे न कर सकने से वह दु:खी हुआ।

कलकली कम्पमान थयो, रस टलियो एथी।
केम ते ए दुख खमी सके, ए रस जाय जेथी।।५१ ।।

कलकलाते (क्रोधित होते) हुए, कांपते हुए दु:खी हुए, क्योंकि इस आनन्द से वह वंचित रह गये (नहीं मिला)। ऐसा रस जिससे चला जाए वह कैसे सहन कर सकता है?

रास वाणी कह्या तणो, हुतो हरख अपार।
वाणी ब्रह्मांडनी सकलमां, रस रह्यो ए सार।।५२ ।।

रास की वाणी का वर्णन करने को उसे बड़ा हर्ष था, क्योंकि सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की वाणी में यही रस सर्वश्रेष्ठ है।

रासनी रातनो वरणव, कीधो जुओ रे विचार।
नारायणजी नी रातनो, कोईक पामे पार।।५३ ।।

रास रात्रि का वर्णन, विचार करके देखो जो वर्णन किया गया है। नारायणजी की रात्रि का तो कोई-कोई पार पा भी जाते हैं (वर्णन कर लेते हैं)।

पण पार नथी रास रातनो, ए तो बेहद कही।
ते मांहें लीला बेहदनी, पंच अध्याई थई।।५४ ।।

परन्तु रास की रात्रि तो बेहद की है। उसका कोई पारावार नहीं है। उस बेहद की लीला का वर्णन पांच अध्याय में ही समाप्त कर दिया।

एनो अर्थ कहूं पाधरो, सुणजो तमे साथ।
रात एवी मोटी तो कही, जो लीला मोटी छे रास।।५५ ।।

इसका अर्थ मैं स्पष्ट बताती हूं। हे सुन्दरसाथजी ! तुम सुनो। रास की लीला बहुत भारी है, इसलिए रास की रात्रि भारी कही है।

न थाय पंच अध्याई केमे, मारा मुनीजी नी वाण।
पण नेठ लेवाणों निध समे, रस आवे सुजाण।।५६ ।।

शुकदेव मुनिजी की वाणी से यह पांच अध्याय में समाप्त नहीं हो सकती। वर्णन में रास का रस आ रहा था और इसे लेते समय कुछ रुकावट आ गयी। यह रुकावट परीक्षित के प्रश्न से आ गई।

Nijanand App

कलकली दुख कीधो घणो, पण सूं करे जाण।
पात्र विना पामे नहीं, रस बेहद वाण।।५७ ।।

शुकदेवजी को बड़ा दुःख हुआ, वह रोए, पर क्या करते? बेहद की वाणी का रस सुपात्र के बिना रह नहीं सकता।

पात्र विना तमे पामियां, मुनीजी कां करो दुख।
आज लगे ए रस तणो, कोणे लीधो छे सुख।।५८ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, हे मुनिजी! तुम क्यों रोते हो? तुमने तो बिना पात्रता के ही इतना रस पा लिया है। नहीं तो आज दिन तक इस रस का सुख किसने लिया है?

ए कागल तां अम तणो, तम साथे आव्यो।
रामत जोवा ब्रह्मांडनी, विध सघली लाव्यो।।५९ ।।

हे मुनिजी! यह कागज तो हमारा है जो तुम्हारे साथ आया था। इस ब्रह्माण्ड की पूर्ण लीला देखने के लिए यह ज्ञान हमारी हकीकत लाया था।

हद बेहदनी विगत, कागल मांहें विचार।
मुनीजी हाथ संदेसड़ो, आव्यो समाचार।।६० ।।

हद का और बेहद का भेद इस कागज (पंचाध्यायी) में है। हे मुनिजी! आपके हाथ से यह हमारा सन्देश आया था।

ए सुध सघली लई करी, वाले कह्यो सर्व सार।
बीजाने ए कोहेडा, नव लाधे बार।।६१ ।।

यह सम्पूर्ण सुध लाकर वालाजी ने हकीकत का ज्ञान बताया। दूसरों के लिए (जीवों के लिए) यह धुन्ध है, कुहेड़ा (उलझन, रहस्यमयी) है, जिससे वह आगे नहीं जा सकते। उनको दरवाजा ही नहीं मिलता।

बीजा सूं जाणे बापडा, जेणो होय ते जाणे।
अम विना बार बेहद तणा, बीजो कोण उघाडे।।६२ ।।

दूसरे बेचारे क्या जानें? जिसकी बात है वही जानेंगे। हमारे बिना बेहद के दरवाजे कौन खोलेगा?

लाख वार जुए फरी, एक कडी नव लाधे।
ब्रह्मांडना धणियो मांहें, पग मूकतां बांधे।।६३ ।।

लाख बार प्रयत्न करके देखो तो एक कड़ी भी किसी से खुलती नहीं। ब्रह्माण्ड के धनी (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) भी थोड़ा-सा वर्णन करने में ही बंध जाते हैं।

ऐ रे कोहेडो हद तणो, बेहदी समाचार।
अमे देखाडूं पाधरा, बेहदना बार।।६४ ।।

यह हद के जीवों को कोहेड़ा है, धुन्ध है। बेहद के रहने वालों को घर की खबर है। अब मैं बेहद का सीधा दरवाजा दिखाती हूं।

Nijanand App

सुकजीनी वाणी सोहामणी, जोत बेहद ल्यावी।
फेर टालो तमे मांहेलो, जुओ आंख उघाडी।। ६५ ।।

शुकदेवजी की वाणी अच्छी है। जो बेहद की बात आई है, तुम आंख खोलकर देखो और अन्दर का अन्धकार (संशय) मिटाओ।

स्कंध बीजो मुनिए कह्यो, चत्रस्लोकी जांहें।
ब्रह्मांडनी जिहां उतपन, अर्थ जुओ तांहें।। ६६ ।।

शुकदेव मुनि ने दूसरे स्कन्ध में चार श्लोकों वाले भागवत का वर्णन किया है, जहां ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति हुई बतायी है, उनके अर्थ देखो।

दीसे छे द्वार पाधरो, बेहदनो बार।
इंडाने कह्यूं सुपन, सुपन संसार।। ६७ ।।

बेहद का दरवाजा सामने स्पष्ट दिखाई दे रहा है। संसार के जीवों को स्वप्न कहा है और यह सारा संसार ही स्वप्न का है।

बेहद घरनी वाटडी, बेहदी जाणे।
हदनो जीव बेहदना, बार केम उघाडे।। ६८ ।।

यह बेहद के घर का रास्ता बेहद के रहने वाले ही जान सकते हैं। अब हद के जीव बेहद के दरवाजे कैसे खोल सकते हैं?

बार उघाडवा दोडियो, सुकजी सपराणो।
साथे परीछित चालियो, ते तां भारे चंपाणो।। ६९ ।।

बेहद का दरवाजा खुला। शुकदेवजी दौड़े और फंस गए। उनके साथ राजा परीक्षित भी चला था। उसके भार से शुकदेवजी भी दब गए।

बल कीधूं बलिए घणूं, द्वार द्वार पछटाणो।
साथे संघाती हद तणो, ते तां पाछल तणांणो।। ७० ।।

इसके बाद शुकदेवजी ने बहुत ताकत लगाई। दरवाजे-दरवाजे पर ठोकर खाई, क्योंकि उनके साथ में परीक्षित हद का साथी था, जिसके कारण वह भी पीछे खिंच गए।

रास तणो सुख सागर, ते तो नव केहेवाणो।
पाछल ताण थई घणी, अध वचे लेवाणो।। ७१ ।।

रास के सुख के सागर का वर्णन इसलिए नहीं कर सके, क्योंकि पीछे खिंचाई ज्यादा हो गई और अधबीच में वह लटक गये।

पात्र विना रस केम रहे, आवतो ढोलाणो।
पात्र हुता ते पामियां, रस इहां बंधाणो।। ७२ ।।

पात्र के बिना रस रह नहीं सकता, इसलिए जो रस आ भी रहा था वह भी गिर गया। जो इस रस के पात्र थे (ब्रह्मसृष्टियां) उनको यह रस अब मिला।

Nijanand App

ए रस वरस ऐंसी लगे, सारी पेरे सचवाणो।
लीधो पीधो साथमां, वखतो वखत वेहेचाणो।।७३ ।।

यह रस अस्सी वर्ष तक अच्छी तरह से सुरक्षित रहा। इसे समय-समय पर सुन्दरसाथ में बांटा गया। इसे लेकर सुन्दरसाथ ने पान किया।

नोट : यह अस्सी वर्ष, देवचन्द्रजी के जन्म १६३८ से १७१८ की मंजिल तक, जब श्रीजी ने जूनागढ़ में सबसे पहले हरजी व्यास को बेहद का ज्ञान दिया, थे।

एक टीपू ते बाहेर न निकल्यूं, साथ मांहें समाणो।
जेनो हतो तेणे माणियो, मांहोमांहें गंठाणो।।७४ ।।

इतने समय तक यह सुन्दरसाथ में ही सुरक्षित रहा। एक बूंद भी बाहर नहीं निकला। यह जिनका ज्ञान था उन्होंने गांठ में ही बांधकर रखा।

ए रस वाणी अमतणी, आंहीं आवी छलकाणो।
छोल आवी जेम सागर, रस तो प्रगटाणो।।७५ ।।

यह हमारी वाणी का रस है जो यहां आकर छलक गया अर्थात् (हरजी व्यास को मिला)। ज्ञान की छोल (पूर) सागर की तरह आई और यहां प्रकट हुई।

जोर कीधो घणुंए अमे, रस केमे न रखाणो।
प्रगट थासे पाधरो, रस बाहेर नंखाणो।।७६ ।।

हमने तो बहुत प्रयत्न किया पर यह रस हमसे ढांपा नहीं गया और प्रकट हुआ। अब यह रस बाहर प्रकट हो गया, इसलिए अब सबको जाहिर हो जाएगा।

ए रस आजना दिन लगे, क्यांहे न कलाणो।
लीला राखवा पाछल, जाण होय ते जाणो।।७७ ।।

इस रस को आज दिन तक किसी ने पहचाना नहीं, इसलिए ढका रहा। जो इस रस के पारखी (चाहने वाले) होंगे वह परख कर ले लेंगे।

साथ एणी पेरे आवसे, एणे रसे तणाणो।
वचन सर्वे सांभली, आवसे बंधाणो।।७८ ।।

इस प्रकार सुन्दरसाथ इस रस के खिंचाव से आएगा और तब वचनों को सुनकर हम में शामिल हो जाएगा।

ए वाणी बेहद प्रगटी, इंद्रावती मुख।
घणी विधे ए रस पिए, बेहदने सुख।।७९ ।।

यह बेहद की वाणी श्री इन्द्रावतीजी के मुख से प्रकट हुई। उन्होंने इस बेहद के सुख को अच्छी तरह से पिया।

ए वाणीने कारणे, घणे तपस्या कीधी।
ए वाणीने कारणे, घणे अगनज पीधी।।८० ।।

इस वाणी के लिए बहुतों ने तपस्या की तथा बहुतों ने अग्निपान किया।

Nijanand App

ए वाणीने कारणे, घणा देहज दमिया।
ए वाणीने कारणे, घणा कष्टज खमिया।। ८१ ।।

इस वाणी के वास्ते बहुतों ने अपने शरीर का दमन किया तथा अधिक कष्ट सहे।

ए वाणीने कारणे, घणा भैरव झंपावे।
ए वाणीने कारणे, तिल तिल देह कपावे।। ८२ ।।

इस वाणी के वास्ते बहुतों ने भैरव झांप खाई (पहाड़ों पर चढ़कर कूदे) तथा अपने देह को तिल तिल कटवाया।

ए वाणीने कारणे, घणा संधाण सारे।
ए वाणीने कारणे, सिर अगनज बारे।। ८३ ।।

इस वाणी के वास्ते बहुतों ने अपने तन के जोड़ों के टुकड़े-टुकड़े किए तथा सिर को आग में जलाया।

ए वाणीने कारणे, अनेक दुख देखे।
एणी विधे ए रसने, केटला कहूं रे अलेखे।। ८४ ।।

इस वाणी के वास्ते बहुतों ने अनेक दुःख देखे। इस तरह से इस रस के वास्ते मैं कितना कहूं? यह लिखने में नहीं आता।

एक टीपू ते कोय न पामियो, एहेना रस तणी।
नाथ चौद भवनना, जे ब्रह्मांडना धणी।। ८५ ।।

इस वाणी के रस की एक बूंद भी किसी ने नहीं पाई। यहां तक कि चौदह लोकों के मालिक भगवान विष्णु भी वंचित रह गए।

बीजा नाम अनेक छे, पण लऊं केहेना।
ब्रह्मांडना धणी ऊपर, लेवाय नहीं तेहेना।। ८६ ।।

दूसरे भी अनेक नाम हैं, पर किस-किसके नाम बताऊं? ब्रह्माण्ड के मालिक के नाम के ऊपर वह शोभा नहीं देते।

ए रस आंहीं उभरयो, आवी अम मांहें।
नौतनपुरीमां जे निध, एहेवी नहीं क्यांहें।। ८७ ।।

यह रस हमारे अन्दर यहां आकर उछाल मार गया और नौतनपुरी में जो न्यामत आई, ऐसी कहीं नहीं आई।

जे निध गोकुल प्रगटी, तेतां सुख अलेखे।
अणजाणे सुख माणिया, घर कोई ना देखे।। ८८ ।।

जो न्यामत गोकुल में प्रकट हुई थी, उसके सुख तो बेशुमार थे। अनजाने में सुख तो लिए, किन्तु घर की पहचान नहीं थी।

ए सुख माण्यां सुपनमां, साथ राज संघाते।
घर दीठे भाजे सुपना, जोईए केणी भांते।। ८९ ।।

इस सुख को राजजी के साथ स्वप्न के संसार में लिया। घर को याद करके स्वप्न हट जाता है। उसकी हकीकत कैसे देखें?

Nijanand App

सुपन भागे सुख केम थाय, माया केम जोवाय।
घर तणो सुख जोईए, निद्रा उडीने जाय।। ९० ।।

स्वप्न भागने पर सुख कैसे होता है? माया कैसे देखी जाती है? घर के सुख देखने से यह नींद उड़ जाती है।

निद्रा उडे भाजे सुपन, त्यारे उथलो थाय।
सुख घेरनू ने सुपननू, बंने केम लेवाय।। ९१ ।।

नींद उड़ जाने पर स्वप्न टूट जाता है। तब यह हालत बदल जाती है। घर का सुख तथा स्वप्न का सुख दोनों साथ में कैसे ले सकते हैं? (नहीं मिल सकते)।

एणी विधे साथ प्रीछजो, सुख घणुए आण्यूं।
सुख सुपने गोकुल तणूं, अणजाणे माण्यूं।। ९२ ।।

इस तरह से सुन्दरसाथजी! समझना। तुम्हारे वास्ते बहुत सुख लाए हैं। गोकुल के सुख तो स्वप्न के थे और अनजाने में लिए थे।

रास तणा सुख सूं कहूं, जाणे मूलगां होय।
ए सुख साथ धणी विना, नव जाणे कोय।। ९३ ।।

रास के सुख की क्या कहूं? लगता था जैसे मूल घर के हों। इस सुख को सुन्दरसाथ और धनी के बिना और कोई नहीं जानता।

नवलो सरूप धणी तणो, नवलो सिणगार।
नवलो नेह ते आपणो, नवलो आकार।। ९४ ।।

अब यह धनी का नया स्वरूप है (योगमाया में रास का) नया सिनगार (शृंगार) है। अपना नया प्रेम है और आकार भी अपने नए हैं।

नवलो वन सोहामणो, नवलो वा वाय।
नवला जल जमुनातणा, लेहेरों ले वनराय।। ९५ ।।

नया वृन्दावन सुन्दर सुहावना है। नई हवा चल रही है। यमुनाजी का नया जल है और वन की बेलें लहरें ले रही हैं।

नवली प्रेमल वेलडी, नवी रेत सेत प्रकास।
नवलो पूनम चांदलो, सकल कला अजवास।। ९६ ।।

बेलों की सुगन्ध नई है, नई रेत का सुन्दर तेज है। पूर्णिमा का चन्द्रमा नया है जो सम्पूर्ण कलाओं के साथ उजाला कर रहा है।

नवला रंग पसु पंखी, वनमा करे टहुंकार।
नवला सुख श्री राजसुं, साथ लिए अपार।। ९७ ।।

नए रंग के पशु-पक्षी हैं जो वन में आवाज कर रहे हैं। नए सुख श्री राजजी के साथ सुन्दरसाथ बेशुमार लेते हैं।

Nijanand App

ए सुख केरी वातडी, जीव रुदे जाणे।
ए सुख साथ धणी विना, बीजो कोण माणे।। ९८ ।।

इस सुख की बातें जीव हृदय में ही जानता है। इस सुख को सुन्दरसाथ और धनी के बिना कौन मानेगा?

पण सुख सहु सुपनना, नेठ निद्रा मांहें।
ए सर्व जोगमाया तणां, घर द्रष्ट न थाए।। ९९ ।।

स्वप्न के सम्पूर्ण सुख निश्चित ही नींद में थे। यह सब सुख योगमाया के होने पर भी परमधाम के सुख की पहचान नहीं देते थे।

एक विध कही गोकुल तणी, आगल जोगमायानूं सुपन।
बंने सुख केम उपजे, विचारजो मन।। १०० ।।

एक हकीकत तुमको ब्रज की बताई, जो स्वप्न की है, और योगमाया की रास की बताई। दोनों का सुख कैसे मिला, यह मन में विचार करना।

ज्यारे सुख मायाना माणिए, घर ना आवे द्रष्ट।
ज्यारे घरतणा सुख जोइए, नहीं सुपननी सृष्ट।। १०१ ।।

जब माया के सुख में लीन हो जाते हैं, तो परमधाम की सुध नहीं रहती (नजर नहीं आता)। जब घर के सुखों को देखते हैं तो लगता है स्वप्न की सृष्टि कुछ नहीं है।

एम सुख सुपने माणिया, अणजाणे एह।
बंने लीलामां घर तणी, खबर नहीं तेह।। १०२ ।।

ब्रज और रास के सुखों को हमने अनजाने में लिया। ब्रज और रास में दोनों की लीलाओं में घर की सुध नहीं थी।

एणी विधे लीला बंने करी, घेर रे सिधाव्या।
आ त्रीजो ब्रह्मांड मायातणो, आपण लई आव्या।।१०३।।

इस तरह दोनों लीलाएं ब्रज और रास देखकर हम घर वापस गए और इस तीसरे ब्रह्माण्ड में माया की चाह लेकर हम आए।

इछा हुती जोयातणी, ते तां पूरण न थई।
अणजाणे सुख माणिया, धाख ऐणी पेरे रही।। १०४ ।।

हमारी माया देखने की जो इच्छा थी वह पूर्ण नहीं हुई थी। हमने बिना पहचान के ब्रज और रास को देखा, इसलिए हमारी चाहना पूरी नहीं हुई।

केम रहे धाख ते आपणी, त्रीजो ब्रह्मांड लाव्या।
साथे धणी पधारिया, तारतम लई आव्या।। १०५ ।।

हमारी कोई इच्छा बाकी न रहे, इसलिए इस तीसरे ब्रह्माण्ड में धनी हमको लाए। हमारे साथ में धाम धनी जागृत बुद्धि का ज्ञान लेकर आए।

Nijanand App

तारतम जोत उद्योत छे, तेणे सूं थाय।
एकी द्रष्टे घर जोइए, बीजी माया जोवाय।। १०६ ।।

तारतम के ज्ञान का उजाला साफ है। इससे एक दृष्टि से घर दिखाई देता है (घर का ज्ञान मिलता है) और दूसरी दृष्टि (तरफ) से माया भी दिखती है।

घर दीसे छे पाधरा, बीजी बे लीला जे कीधी।
ते ए सर्वे सांभरे, वली आ लीला त्रीजी।। १०७ ।।

इस तारतम ज्ञान से घर स्पष्ट दिखाई देता है। पहली लीला हमने ब्रज और रास में की थी। वह सब यहां याद आती है। इस तीसरी लीला की पहचान होती है।

सांभरे सर्वे वातडी, जीव द्रष्टे देखे।
आ तारतम जागी जोइए, ए तां बल अलेखे।। १०८ ।।

इन सब बातों की याद आने पर जीव को सब नजर आने लगता है। जब हम जागृत होकर देखते हैं तो समझ आती है कि तारतम की शक्ति अपार है।

आ लीलानी वातडी, जिभ्याए कही न जाय।
सुख जागतां माणिए, मनोरथ पुराय।। १०९ ।।

इस लीला की बात जुबान से कही नहीं जाती, पर जागृत होकर सुखों का अनुभव करते हैं, सब इच्छाएं पूरी हो जाती हैं।

ए बल आ लीलातणो, सर्वे वचन केहेसे।
रास प्रकास सुणी करी, बेहद वाणी लेहेसे।। ११० ।।

इस तारतम ज्ञान के बल से जो लीला देख रहे हैं इसका सब बयान होगा। जीव रास और प्रकाश की वाणी को सुनकर बेहद की वाणी (ज्ञान) ग्रहण कर लेगा।

धंन धंन ब्रह्मांड आ थयो, धंन धंन भरथ खंड।
धंन धंन जुग ते कलजुग, जेमां लीला प्रचंड।। १११ ।।

इसलिए यह ब्रह्माण्ड धन्य हुआ और भरतखण्ड भी धन्य हुआ। यह कलियुग भी धन्य हुआ जिसमें यह प्रबल लीला हुई।

धंन धंन पुरी नौतन, जेमां ए लीला थई।
लीला बंने पाधरी, रास प्रकासे कही।। ११२ ।।

नौतनपुरी भी धन्य हुई जिसमें यह लीला हुई। ब्रज और रास की दोनों लीलाएं रास और प्रकाश के ज्ञान द्वारा जाहिर हो गईं (पहले किसी को अखण्ड ब्रज और रास का पता ही नहीं था।)

धंन धंन धणी साथसो, बीजी वार जे आव्या।
धंन धंन तेज ते तारतम, प्रगट प्रकास लाव्या।। ११३ ।।

धन्य हैं हमारे धनी जो सुन्दरसाथ के लिए दूसरी बार आए। धन्य है तारतम का तेज जो साक्षात् ज्ञान लाया है।

Nijanand App

तारतमे रस बेहद तणो, सर्वे प्रगट कीधो।
घणी विधे सुख साथने, माया जोतां दीधो।। ११४ ।।

तारतम के ज्ञान (जागृत बुद्धि ने) बेहद के सभी सुखों को बता दिया तथा माया के ब्रह्माण्ड में बैठकर सुन्दरसाथ को हर तरह से सुख दिया।

तारतम रस वाणी करी, हूं पाऊं जेहेने।
जेहेर चढ्यूं होय भोमनो, सुख थाय तेहेने।। ११५ ।।

तारतम ज्ञान की वाणी के रस को मैं जिसको पिलाती हूं, उसको माया का जहर (जिसको चढ़ा हो) उतर जाता है और उसे अखण्ड सुख की प्राप्ति होती है।

जे जीव निद्रा मूके नहीं, रस पाईए वाणी।
धणी लाव्या एटला माटे, माया बल जाणी।। ११६ ।।

यदि जीव नींद (माया) को न छोड़े तो उसको तारतम वाणी का रस पिलाइए। माया के बल को जानकर ही धनी तारतम ज्ञान लाए हैं।

जेहेर उतारवा साथनूं, लाव्या तारतम।
बेहद रस श्रवणे करी, अमे पाऊं एम।। ११७ ।।

सुन्दरसाथ के माया का जहर उतारने के लिए (माया छुड़ाने के लिए) तारतम वाणी लाए हैं, इसलिए हम इस बेहद की वाणी का रस सुनकर सुन्दरसाथ को पिलाएंगे।

ए रस श्रवणें जेहेने झरे, तेणे सूं करे जेहेर।
जागतां सुपन न उपजे, जोतां वेर।। ११८ ।।

यह बेहद की वाणी का रस जिसके कानों में चला जाए, उसे माया का जहर क्या कर सकता है? जागृत होने पर स्वप्न रहता नहीं है। जागृत अवस्था को स्वप्न से वैर है, अर्थात् जागृतावस्था में स्वप्न नहीं होता।

सुपन होय निद्रातणो, बहु ब्रह्मांड अलेखे।
जेणी खिणे आंख उघाडिए, त्यारे कांई न देखे।। ११९ ।।

सपना नींद में आता है। इसमें बहुत से ब्रह्माण्ड बनते हैं। जिस पल नजर खोलकर देखते हैं उस समय कुछ दिखाई नहीं देता है, अर्थात् यह सब ब्रह्माण्ड लय हो जाते हैं।

एम रस तारतम तणो, चढ्यूं जेहेर उतारे।
निरविखी काया करे, जीव जागे करारे।। १२० ।।

इस तरह से माया का जहर (नशा) उतारने के लिए यह तारतम वाणी है। यह तारतम वाणी का रस तन के सब जहर उतार देता है (सब नशे उतर जाते हैं) और जीव जागकर दृढ़ हो जाता है।

जागे सुख अनेक छे, आंहीं अलेखे।
चार पदारथ पामिए, जीव द्रष्टें देखे।। १२१ ।।

यहां जागृत होने पर अपार सुख है। जब जीव जागृत होकर देखता है तो चारों पदार्थ यहीं मिलते हैं (मनुष्य तन, भरतखण्ड, कलियुग में ब्रह्मसृष्टि का आना, तथा सबके सिरदार (प्रमुख) अक्षरातीत धाम धनी का आना)।

Nijanand App

पदारथ तारतम तणा, केम प्रगट कीजे।
आफणिए ए देखसे, जीव जगवी लीजे।। १२२ ।।

तारतम के इन पदार्थों को कैसे जाहिर करें? अपने आपको जगा लो (जीव को जगा लो)। जीव अपने आप देख लेगा।

ए वचन प्रगट पाधरा, हूं ता बाहेर पाड्या।
दरवाजा बेहदतणा, अनेक उघाड्या।। १२३ ।।

यह वचन बिल्कुल सीधे हैं जो मैंने कहे हैं। बेहद के सब दरवाजे खोल दिये हैं।

एक अखरनो पा लवो, कहीं ए प्रगट न थाय।
श्री धाम धणी पधारिया, वाणी तो केहेवाय।। १२४ ।।

एक अक्षर का चौथाई मात्र भी किसी ने जाहिर नहीं किया। धाम के धनी जब पधारे तब उन्होंने यह वाणी कही।

साथ जुए मायातणी, रामत जुजवा थई।
तेडी घरे सिधाविए, वाणी ते माटे कही।। १२५ ।।

सुन्दरसाथ माया के खेलों को अलग होकर देखने लगे हैं (कमल के पत्ते के समान)। सुन्दरसाथ को बुलाकर घर ले जाना है, इसलिए धाम धनी ने यह वाणी कही है।

ए रामत मायातणी, मुकाय नहीं।
ब्रह्मांडनी कारीगरी, सारी कीधी सही।। १२६ ।।

यह माया का खेल छोड़ा नहीं जाता है, इसलिए धाम धनी ने ब्रह्माण्ड की सारी कारीगरी (माया के झंझटों को) को सीधा कर दिया है।

पारेवडा गुडिया तणां, जेम कंडियो भरियो।
फूंक मारी जुए फरी, तरत खाली करियो।। १२७ ।।

मदारी अपनी चमत्कारी विद्या से पिटारी (करेंडिया) कबूतर और गुड़ियों से भर देता है और फूंक मारते ही कबूतर और गुड़ियों को गायब कर देता है।

एम बाजी मायातणी, ब्रह्मांडज रचियो।
देखी बाजी पारेवडा, साथ मांहें मचियो।। १२८ ।।

इसी तरह से माया के ब्रह्माण्ड को बाजीगर ने बनाया है और सुन्दरसाथ इस माया के लोगों को देखकर भूला पड़ा है।

आंबो वावी जल सीचियो, खिणमां फूले फलियो।
विध विधनी रंग वेलडी, वन ऊपर चढियो।। १२९ ।।

जिस तरह से बाजीगर आम की गुठली बोता है, पानी सींचता है, तुरन्त उस पर आम का फल लगा दिखाता है और तरह-तरह के रंग की बेलें उस पेड़ पर चढ़ी दिखाता है।

Nijanand App

ते देखी चित भरमियो, सुध नहीं सरीर।
विकल थई रंग वेलडी, चित ना रहे धीर।। १३० ।।

ऐसा देखकर चित्त भ्रम में भटक जाता है और देखने वाले को अपने शरीर की सुध नहीं रहती। बेल और पेड़ जब रहते नहीं तो मन विचलित हो जाता है।

ततखिण ते दीसे नहीं, बाजीगर हाथ।
आंबो न कांई वेलडी, एणे रंगे बांध्यो साथ।। १३१ ।।

उस समय आम और बेल कुछ दिखाई नहीं देते। बाजीगर के हाथ खाली होते हैं। ऐसे ही सुन्दरसाथ यहां माया के मोह में फंसकर भटक गए हैं।

सुध सरीर विसरी गई, विसरी गया घर।
कीडी कुंजर गली गई, अचरज या पर।। १३२ ।।

संसार में आकर ब्रह्मसृष्टि को अपने शरीर की सुध भूल गई तथा घर बिसर गया। इस तरह से यह चींटी कुंजर (हाथी) को निगल गई (माया ब्रह्मसृष्टि को खा गई)।

अदभुत एक जुओ सखी, ए अचरज मोटो।
वस्त खरी ने लई गयो, जेहेनो मूल छे खोटो।। १३३ ।।

हे सुन्दरसाथजी! एक बड़ा भारी आश्चर्य यह देखो। जिस माया का मूल ही खोटा है, वह खरी वस्तु (ब्रह्मसृष्टि को) ले गई, खा गई।

निद्रा साथने जोर थई, एम सुपन वाध्यो।
रामत मांहेंथी बल करी, नव जाए काढ्यो।। १३४ ।।

सुन्दरसाथ को माया के इस नशे ने घेर लिया और वह इस तरह से माया के स्वप्न में बंध गया है। ऐसे खेल में से ताकत करके निकालना कठिन है।

ते माटे वाणी बेहद तणी, केहे निद्रा टालूं।
सुपन न दऊं वाधवा, चढ्यूं जेहेर उतारूं।। १३५ ।।

इसलिए इस बेहद वाणी का ज्ञान सुनाकर सुन्दरसाथ की नींद को हटा देती हूं। सपने को और नहीं बढ़ने दूंगी। माया का चढ़ा हुआ जहर उतार दूंगी।

कुंजर काढूं कीडी मुख, सुध आणूं सरीर।
वचन कही ने जुजवा, करूं खीर ने नीर।। १३६ ।।

हाथी को चींटी के मुख में से निकालकर (ब्रह्मसृष्टि को माया में से निकालकर) उन्हें मूल घर की सुध दूंगी तथा बेहद के वचन कह करके माया और ब्रह्म (दूध और पानी) को अलग-अलग कर दूंगी।

खोटाने खोटू करूं, साचा सागर तारूं।
वाणिए रस पाई करी, साथ ना कारज सारूं।। १३७ ।।

माया के जीवों को माया में, और सच्ची ब्रह्मसृष्टियों को वाणी का रस पिलाकर परमधाम के सुख के सागर में ले जाऊंगी। इस तरह से सुन्दरसाथ के कार्य सिद्ध कर दूंगी।

Nijanand App

तारतम रस पाई करी, साथ घेर पोहोंचाडूं।
धंन धंन कहिए तारतम, जेणे थयूं अजवालूं।। १३८ ।।

तारतम वाणी का रस (ज्ञान) पिलाकर सुन्दरसाथ को घर (परमधाम) पहुंचा दूंगी। इसलिए यह तारतम वाणी धन्य-धन्य है, जिससे ज्ञान का उजाला हुआ।

ए अजवालूं साथने, रामत जोवा लाव्या।
बीजा बंधाणा बंधसूं, विध विधनी माया।। १३९ ।।

इस तारतम के उजाले में सुन्दरसाथ को खेल दिखाने के लिए लाई हूं। दूसरे जीव माया के तरह-तरह के बन्धनों से बंधे पड़े हैं।

बीजा त्रीजा हूं तो कहुं, जो साथने माया थइ भारी।
साथ सुपन जुए सत करी, तो हूं कह्यूं विचारी।। १४० ।।

दूसरा और तीसरा मुझे इसलिए कहना पड़ रहा है कि सुन्दरसाथ माया में फंसे पड़े हैं। अब सुन्दरसाथ माया को ही सत (सत्य, अखण्ड) समझ कर देख रहे हैं, इसीलिए मैं विचार करके कहती हूं।

विचारी सुपन मुकाविए, तो थाय बंने पेर।
सुख ते सुपने जोइए, हरखे जागिए घेर।। १४१ ।।

विचार करके स्वप्न को छुड़ाएं तो दोनों काम बन जाएं। सपने के सुख भी देख लें और हंसते हुए घर में भी उठें।

तारतम पख बीजो कोई नथी, साथ विना सहु सुपन।
जगवुं माया खोटी करी, धाख रखे रहे मन।। १४२ ।।

तारतम वाणी से विचार कर यदि देखें तो सुन्दरसाथ के अलावा सब स्वप्न है, इसलिए माया के झूठ की पहचान कराकर सुन्दरसाथ को जगाऊं, ताकि सुन्दरसाथ के मन में चाहना न रह जाए।

ते माटे पेर बंने करूं, सुपन हरखे समावूं।
चरणे लागी कहे इंद्रावती, साथ जुगते जगावूं।। १४३ ।।

सुन्दरसाथ के चरणों में लगकर श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि मैं इन दोनों युक्तियों के साथ सुन्दरसाथ को जगाऊंगी कि वह सपने के सुख भी देख लेंगे और हंसते-गाते घर में भी उठेंगे।

।। प्रकरण ।। ३१ ।। चौपाई ।। ९३६ ।।

दूध पाणीनो विछोडो

वली वण पूछे कहूं विचार, कारण साथ तणे आधार।
रखे केहेने उत्कंठा रहे, श्री सुन्दरबाई ते माटे कहे।। १ ।।

सुन्दरसाथ के वास्ते बिना पूछे ही श्री श्यामाजी (सुन्दरबाई) कह रही हैं ताकि किसी का संशय न रहे।

आगे एम वचन केहेवाय, जे कीडी पग कुंजर बंधाय।
डूंगरतां त्रणे ढांकियो, पाधरो प्रगट कोणे नव थयो।। २ ।।

आगे ऐसा कहा जाता है कि चींटी के पैर में हाथी बंध गया और कहते हैं कि तिनके ने पहाड़ को ढांप लिया है, किन्तु किसी ने भी इसका भेद नहीं खोला।

Nijanand App

तारतम रस पाई करी, साथ घेर पोहोंचाडूं।
धंन धंन कहिए तारतम, जेणे थयूं अजवालूं।। १३८ ।।

तारतम वाणी का रस (ज्ञान) पिलाकर सुन्दरसाथ को घर (परमधाम) पहुंचा दूंगी। इसलिए यह तारतम वाणी धन्य-धन्य है, जिससे ज्ञान का उजाला हुआ।

ए अजवालूं साथने, रामत जोवा लाव्या।
बीजा बंधाणा बंधसूं, विध विधनी माया।। १३९ ।।

इस तारतम के उजाले में सुन्दरसाथ को खेल दिखाने के लिए लाई हूं। दूसरे जीव माया के तरह-तरह के बन्धनों से बंधे पड़े हैं।

बीजा त्रीजा हूं तो कहुं, जो साथने माया थइ भारी।
साथ सुपन जुए सत करी, तो हूं कह्यूं विचारी।। १४० ।।

दूसरा और तीसरा मुझे इसलिए कहना पड़ रहा है कि सुन्दरसाथ माया में फंसे पड़े हैं। अब सुन्दरसाथ माया को ही सत (सत्य, अखण्ड) समझ कर देख रहे हैं, इसीलिए मैं विचार करके कहती हूं।

विचारी सुपन मुकाविए, तो थाय बंने पेर।
सुख ते सुपने जोइए, हरखे जागिए घेर।। १४१ ।।

विचार करके स्वप्न को छुड़ाएं तो दोनों काम बन जाएं। सपने के सुख भी देख लें और हंसते हुए घर में भी उठें।

तारतम पख बीजो कोई नथी, साथ विना सहु सुपन।
जगवुं माया खोटी करी, धाख रखे रहे मन।। १४२ ।।

तारतम वाणी से विचार कर यदि देखें तो सुन्दरसाथ के अलावा सब स्वप्न है, इसलिए माया के झूठ की पहचान कराकर सुन्दरसाथ को जगाऊं, ताकि सुन्दरसाथ के मन में चाहना न रह जाए।

ते माटे पेर बंने करूं, सुपन हरखे समावूं।
चरणे लागी कहे इंद्रावती, साथ जुगते जगावूं।। १४३ ।।

सुन्दरसाथ के चरणों में लगकर श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि मैं इन दोनों युक्तियों के साथ सुन्दरसाथ को जगाऊंगी कि वह सपने के सुख भी देख लेंगे और हंसते-गाते घर में भी उठेंगे।

।। प्रकरण ।। ३१ ।। चौपाई ।। ९३६ ।।

दूध पाणीनो विछोडो

वली वण पूछे कहूं विचार, कारण साथ तणे आधार।
रखे केहेने उत्कंठा रहे, श्री सुन्दरबाई ते माटे कहे।। १ ।।

सुन्दरसाथ के वास्ते बिना पूछे ही श्री श्यामाजी (सुन्दरबाई) कह रही हैं ताकि किसी का संशय न रहे।

आगे एम वचन केहेवाय, जे कीडी पग कुंजर बंधाय।
डूंगरतां त्रणे ढांकियो, पाधरो प्रगट कोणे नव थयो।। २ ।।

आगे ऐसा कहा जाता है कि चींटी के पैर में हाथी बंध गया और कहते हैं कि तिनके ने पहाड़ को ढांप लिया है, किन्तु किसी ने भी इसका भेद नहीं खोला।

Nijanand App

कीडी कुंजरने बेठी गली, तेहेनी तां कोणे खबर न पडी।
केहेने तो कहूं छूं एम, जे माया भारे थइ छे तेम।। ३ ।।

चींटी हाथी को खा गई, इसकी जानकारी भी किसी को नहीं हुई। हे सुन्दरसाथ! मैं तुम्हें कहने के लिए शब्द से सम्बोधन इसीलिए करती हूं कि तुमको माया बहुत अच्छी लगी है।

सनकादिक ब्रह्माने कहे, जे जीव मन बेहू भेला रहे।
ते जुजवा करीने देयो, सनकादिके एम प्रश्न कह्यो।। ४ ।।

सनकादिक ब्रह्मा से पूछते हैं कि जीव और मन क्या इकट्ठे रहते हैं? यह हमें अलग करके बताओ।

त्यारे ब्रह्मा मन विमास्या रही, मन मांहें अति चिंता थई।
ए पडउत्तर हूं थी नव थयो, त्यारे वैकुंठनाथने सरणे गयो।। ५ ।।

तब ब्रह्माजी मन में विचारने लगे और उनके मन में अधिक चिन्ता हो गई और बोले इस प्रश्न का उत्तर मेरे से नहीं होगा। तब सनकादिक बैकुण्ठनाथ की शरण में गए।

भगवानजी त्यारे तेणे ताल, हंस रूप लाव्या तत्काल।
हंसजीने जीवे ओलख्यूं, त्यारे मन आडो फरीने वल्यूं।। ६ ।।

भगवान विष्णु ने तुरन्त हंस का रूप धारण किया। जीव ने हंस रूप को पहचान लिया कि यह साक्षात् भगवान हैं (और उनके चरणों में लगकर प्रणाम किया)। उसके बाद मन ने परदा डाला।

सनकादिके एम पूछ्यूं वचन, जीवने चांपी बेठो मन।
त्यारे हंसजीए कीधो जवाब, समझया सनकादिक भाग्योवाद।। ७ ।।

सनकादिक ऋषियों ने इस तरह पूछा कि क्या मन जीव को दबाकर बैठा है? तब हंस (विष्णु भगवान) ने जवाब दिया, तुम्हारा (सनकादिक ऋषियों) संशय मिट गया। तुम समझ गए?

वाधे भारे समझाविया, पण दूध पाणी नव जुजवा थया।
तेहेनो तमसुं करूं जवाब, समझावाने काजे साथ।। ८ ।।

इस तरह से भगवान विष्णु ने इशारे से समझा दिया, किन्तु दूध और पानी (जीव और आत्मा) का भेद नहीं खुला है, इसलिए सुन्दरसाथ को समझाने के वास्ते मैं जवाब देता हूं।

समझीने ओलखो धणी, चालो आपणे घरज भणी।
ए चारेनो अर्थज एह, रखे कांई तमने रहे संदेह।। ९ ।।

हे सुन्दरसाथजी! समझकर अपने धनी को पहचानो और अपने घर की तरफ चलो। इन चारों का यह एक अर्थ है [(१) चींटी हाथी को खा गई, (२) तिनके ने पर्वत को ढांप लिया (३) जीव और मन इकट्ठे हैं या अलग, (४) चींटी के पांव से हाथी बंधा है।] तुम्हें कोई संशय नहीं रह जाए इसलिए कहा है।

एहेनो जे जोतां अर्थ, तेहेने जवाब एम देता ग्रन्थ।
अकल अगम वैकुंठनो धणी, ए थोडी हजी करे घणी।। १० ।।

इनका जो अर्थ समझते हैं, उनका जवाब सांसारिक ग्रन्थ इस प्रकार देते हैं कि बैकुण्ठ के भगवान विष्णु बुद्धि में सबसे बड़े हैं। वह थोड़े में ही अधिक करके समझा देते हैं।

Nijanand App

एह करता सर्वे थाय, पण ओल्यूं अर्थ ते तणाण्यूं जाय।
अर्थ उत्कंठा रहे मन मांहें, समझ कोणे नव पडे क्याहें।। ११ ।।

इनके करने से सब कुछ होता है, पर वह खुलासा कर समझाते नहीं, इसलिए विचारों में खेंचा-खेंच (खींचतान) होती है और मन में अर्थ जानने की चाहना बनी रहती है। किसी को अर्थ समझ में नहीं आता।

हवे समझावुं जोजो वाणी, दूध विछोडा करी दऊं पाणी।
जो जीव साख पूरे आपणो, अर्थ खरो तो तारतम तणो।। १२ ।।

अब श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि अब मैं समझाती हूं। तुम मेरी वाणी को सुनना। मैं दूध और पानी (जीव और आत्मा) को अलग-अलग कर देती हूं। तारतम वाणी से अर्थ स्पष्ट हो जाता है और जीव का संशय मिट जाता है (स्वयं साक्षी देता है)।

हवे संभारजो जीवसुं वात, जीव तणो मोटो प्रकास।
चौद भवन अजवालूं करे, जो जीव जीवनने रुदे धरे।। १३ ।।

अब जीव की बात को याद करो। जीव का ज्ञान बड़ा है। यह चौदह लोकों में तब उजाला करता है जब जीव अपने परमात्मा को हृदय में धारण करे।

एह छे एवो समरथ, एहेना बलनो कहीस अर्थ।
नहीं राखूं संदेह लगार, जाणी साथ घरनो आधार।। १४ ।।

यह कितना बलवान है इसकी ताकत का मैं बयान करती हूं। सुन्दरसाथ को अपने घर का समझकर जरा भी संशय नहीं रहने दूंगी।

मन तणूं नथी कांई मूल, तेथी भारे आंकडा नूं तूल।
एक अरधी पांखडी नथी जेटलो, पण पग थोभ माटे कह्यो एटलो।। १५ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि मन का कुछ (कोई) भी रूप नहीं है। मन से बड़ा तो आक की रुई का फूहा (भुआ) होता है। उस भुए के आधी पंखुड़ी के बराबर भी मन नहीं होता, परन्तु सबके ऊपर पैर जमाकर बैठा है, इसलिए ऐसा कहा है।

ते बेठो जीवने ऊपर चढी, कीडी कुंजर एम बेठी गली।
एम त्रणे डूंगर ढांकयो, एम गज कीडी पग बांधयो।। १६ ।।

यह मन जीव के ऊपर चढ़कर बैठ गया है। इस तरह से यह मन रूपी चींटी हाथी रूपी जीव को खा गई और इसी प्रकार मन रूपी तिनके ने पहाड़ के समान जीव को ढांप लिया है तथा इस तरह हाथी की तरह जीव चींटी की तरह मन के पैर में बंध गया है।

जो जीव पोते करे अजवास, तो मने नव खमाय प्रकास।
ते ऊपर कहूं द्रष्टांत, जोजो पोतानू वृतांत।। १७ ।।

यदि जीव अपने बल पर चले तो मन का कुछ भी नहीं चलता। इसके ऊपर एक दृष्टान्त कहती हूं, जिससे अपनी हकीकत समझना।

सुकजीना कह्या प्रमाण, सात सागरनो काढ्यो निरमाण।
भव सागरनो न आवे छेह, सुकजी एम पाधरूं कहे।। १८ ।।

शुकदेवजी के वचनों में सात सागर का वर्णन किया गया है। वह भी स्पष्ट कहते हैं कि भवसागर का किनारा ही नहीं मिलता।

Nijanand App

हवे पगला जे भरिया प्रमाण, जोजो जीव तणूं बल जाण।
पेहेले फेरे आपण नीसर्‌यां, भवसागर ते केम करी तर्‌यां।। १९ ।।

अब जो प्रमाण देती हूं, उससे जीव के बल को देखो। पहली बार ब्रज से रास में जाते समय हम निकले थे तो भवसागर कैसे पार किया था।

जेनो नव काढ्यो निरमाण, सुकजीना वचन प्रमाण।
गोपद वछ वली सुकजीए कह्यो, भवसागर एम साथने थयो।। २० ।।

शुकदेवजी के वचनों में इसका खुलासा नहीं किया। शुकदेवजी ने भवसागर को गाय के बछड़े के पांव के आकार का गड्ढा कह दिया।

एटलो पण नथी द्रष्टे पड्यो, पग थोभ माटे पुस्तक चढ्यो।
जीव तणो जोजो ए बल, खरी वस्त जे कही नेहेचल।। २१ ।।

इतना भी उनकी नजर में नहीं आया, परन्तु समझाने के लिए सागर का रूप पुस्तक भागवत में लिख दिया। जीव की शक्ति देखो। यह खरी वस्तु है, सच्ची वस्तु है। जीव को भागवत में अखण्ड कहा है।

भवसागर केम एटलो थयो, जो जीव खरे जीवनजी ग्रह्यो।
त्यारे मन एकलो बेसी रह्यो, खोटो मन खोटामां भल्यो।। २२ ।।

गोपियों को भवसागर इतने छोटे आकार का क्यों हो गया? इसलिए कि उनके जीवों ने अपने वालाजी को पहचान कर ग्रहण (पकड़) कर लिया था। उस समय मन अकेला बैठा रहा। माया का मन माया में मिल गया।

दूध लीधूं एम जुओ करी, पाणीने मूक्यूं परहरी।
दूध पाणीनो जुओ विचार, जुआ करी ओलखो आधार।। २३ ।।

इस तरह से जीव को (दूध को) मन (पानी) से अलग कर लिया और मन (पानी) को छोड़ दिया। श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि दूध और पानी का विचार कर देखो और अपने धनी की पहचान करो।

आपण मांहें बेठा छे सही, चरण कमल रेहेजो चित ग्रही।
भरम भाजी ओलखजो धणी, दया आपण ऊपर अति घणी।। २४ ।।

धनी जो अपने बीच में बैठे हैं, उनके चरण कमल को अपने हृदय में रखो। अपने संशय मिटाकर धनी की पहचान करो। हमारे ऊपर धनी की अत्यन्त कृपा है।

इंद्रावती कहे ओलखो आधार, तारतम जीवसूं करो विचार।
सुफल फेरो थाय संसार, वली वली नहीं आवे आवार।। २५ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि अपने प्रीतम को पहचानो। तारतम से विचार कर जीव को दृढ़ करो जिससे यह तुम्हारा फेरा सफल हो जाए। फिर ऐसा अवसर बार-बार नहीं आयेगा।

।। प्रकरण ।। ३२ ।। चौपाई ।। ९६१ ।।

Nijanand App

श्री भागवतनो सार

सांभलो साथ कहूं विचार, फल वस्त जे आपणो सार।
ते जोईने आवो घरे, रखे अमल तमने अति चढे।। १ ।।

हे सुन्दरसाथजी! सुनो, मैं अपने विचार बताती हूं। इसको विचार कर अपनी सार वस्तु लेना और देखकर घर वापस आना, इसलिए विचार कर कहती हूं ताकि तुमको माया का असर न हो।

ए अमलतणो मोटो विस्तार, ते नेठ नव जोवो निरधार।
आगे आपणने वारया सही, श्री मुख वाणी धणिए कही।। २ ।।

इस माया के नशे का बड़ा विस्तार है। वह निश्चय ही देखने योग्य नहीं है। धनी ने अपने श्री मुख से पहले भी हमें रोका था।

ते माटे तमने देखाडूं सार, आपण घरने आपणा आधार।
विहिला थयानी नहीं आवार, आंहीं तमने नहीं मूकूं निरधार।। ३ ।।

इसलिए तुमको सार वस्तु अपने घर और अपने धनी को दिखाती हूं। अब धनी से विमुख होने का समय नहीं है। अब निश्चय करके तुम्हें यहां नहीं छोड़ेंगे।

वेदतणो सार भागवत थयो, तेहेनो सार दसमस्कन्ध कह्यो।
दसमतणा अध्याय नेऊ, तेहेनो सार काढीने देऊं।। ४ ।।

वेद का सार भागवत हुई। जिसका सार दसवां स्कन्ध कहा है। दसवें स्कन्ध में नब्बे अध्याय हैं। उनका सार निकाल कर देती हूं।

नेऊ मांहें अध्याय पांत्रीस, जे वृज लीला कीधी जगदीस।
जगदीस वचन एणे न केहेवाय, एम न कहूं तो विगत केम थाय।। ५ ।।

नब्बे अध्यायों में पैंतीस अध्यायों तक श्री कृष्ण (जगदीश) की ब्रज लीला का वर्णन है। इन श्री कृष्ण को जगदीश कहना ठीक नहीं है। यदि ऐसा न कहूं तो भेद कैसे खुलेगा?

ते माटे हूं कह्यूं एम, नहीं तो रामत जे कीधी श्री कृष्ण।
ए नामनुं तारतम में केम केहेवाय, साथ संभारी जुओ जीव मांहें।। ६ ।।

इसलिए मैंने ऐसा कहा। नहीं तो, जो लीला श्री कृष्ण ने की है उसका तारतम से मैंने खुलासा किया है। श्री कृष्ण को जगदीश कहना ठीक नहीं है, यह तुम अपने जीव में विचार कर देखो।

आपणां घरणी वातज थई, अने तमने थाकी हूं कही कही।
ए घर केम हूं प्रगट करूं, तम थकी नथी कांईए परूं।। ७ ।।

यह तो अपने घर की बात है। मैं तुम्हें कह-कहकर थक गई हूं। अपने घर को मैं कैसे जाहिर करूं, परन्तु तुमसे मैं अलग नहीं हूं।

ते माटे हूं कह्यूं घणुए, नहीं तो एटलूं केहेवूं स्या ने पडे।
आ प्रगट कीधूं ते तम माट, नहीं तो आ वचन कांई नव केहेवात।। ८ ।।

इस वास्ते मैंने बहुत कहा है। नहीं तो, इतना कहने की क्या आवश्यकता थी? यह तुम्हारे लिए मैंने बताया है। नहीं तो, यह वचन कोई नहीं कहता।

Nijanand App

हवे घर ओलखी ग्रहजो मन, घणूं तमने कह्यूं तारतम।
ए जाणजो मन जीवतणे, पेरे पेरे तमने कह्यूं विध घणे।। ९ ।।

अब घर को पहचान करके अपने मन में ग्रहण कर लेना। मैंने तुमको तरह-तरह से तारतम की वाणी से समझाया है। इस हकीकत को मन और जीव की तरह जानना। तुमको मैंने तरह-तरह से बहुत कहा है।

ते माटे हूं फरी फरी कहूं, जे माया अमल सवल चढ्यूं।
अमल उतारो प्रकास जोई करी, अने भरम गेहेन मूको परहरी।। १० ।।

इस वास्ते मैं बार-बार कहती हूं कि माया का बड़ा प्रबल नशा चढ़ा हुआ है। इसको ज्ञान के प्रकाश से देखकर उतार दो और संशय तथा सुस्ती को छोड़ दो।

अनेक विधें कह्यूं प्रबोध, हवे रखे रुदे राखो निरोध।
सुणजो ए अध्याय पांत्रीस, जुआ वली कीधां मांहेंथी त्रीस।। ११ ।।

मैंने तुमको अनेक प्रकार से सावचेत (सावधान) किया है। अब इसको हृदय में रखकर, रास्ते की रुकावटें छोड़ दो। उन पैंतीस अध्यायों को सुनो। इनमें भी तीस अध्याय अलग करके छोड़ो।

पंच अध्याई सुकजीए कही, पण परीछित नव सक्यो ते ग्रही।
प्रश्न चूक्यो थयो अजाण, रास लीला न वरणवी प्रमाण।। १२ ।।

शुकदेवजी ने पांच अध्यायों में ही रास का वर्णन किया है, परन्तु परीक्षित उसको भी ग्रहण नहीं कर सका। उसने भूल से प्रश्न कर दिया और इस तरह से रास लीला का वर्णन न हो सका।

त्यारे हाथ निलाटे नाख्यो सही, सुकजी कहे मुख मांहेंथी रही।
हूं जोगी तूं राजा थयो, रासतणो सुख नव जाए कह्यो।। १३ ।।

तब शुकदेवजी ने माथे पर हाथ ठोककर कहा कि मैं योगी और तू राजा रहा और रास के सुख का वर्णन अब नहीं किया जाता।

ए वचन मारे मुखथी नव पडे, न कांई तारे श्रवणा संचरे।
आ जोग आपण नथी बेहु, तो ए लीला सुख केणी पेरे सहूं।। १४ ।।

यह वचन मेरे मुख से नहीं निकलते और न तेरे कान इसे सुन सकते हैं। हम दोनों इसके योग्य नहीं हैं, तो इस लीला के सुख को कैसे सहन करें?

एहेना पात्र हसे ए जोग, आ लीलानो ते लेसे भोग।
केसरी दूध न रहे रज मात्र, उत्तम कनक विना जेम पात्र।। १५ ।।

इसके योग्य इसके पात्र होंगे। वही इस लीला का आनन्द लेंगे। शेरनी का दूध सोने के बर्तन के बिना अंश-मात्र भी (सुरक्षित) नहीं रखा जा सकता।

एह वचन सुणीने राय, पडयो भोम खाय मुरछाय।
कम्पमान थई कलकल्यो, रुदन करे रुदे अंतर गल्यो।। १६ ।।

इन वचनों को सुनकर राजा मूर्छित होकर धरती पर गिर गया तथा बिलख-बिलखकर रोया और कांपने लगा।

Nijanand App

आलोटे दुख पामे मन, अंग मांहें लागी अगिन।
त्यारे वली सुकजी ओचरया, आंसू लोवरावी बेठा करया।। १७ ।।

वह धरती पर दुःखी होकर लोट रहा है और उसके अंग में (चर्चा न सुन सकने की) आग लगी है। तब शुकदेवजी बोले और उसे आसूं पुंछवा कर बिठाया।

सांभल राजा द्रढ करी मन, अंतरगते केहेता वचन।
ते केहेवावालो उठी गयो, हूं एकलो बेसी रहयो।। १८ ।।

हे राजा! दृढ़ मन से सुनो। मेरे अन्दर बैठकर जो वर्णन कर रहा था, वह उठकर चला गया है। मैं अकेला ही बैठा हूं।

हवे पूछीस मूने तूं सूं, तुझ सरीखो बेठो हूं।
त्यारे परीछित चरण झालीने कहे, स्वामी रखे उत्कंठा मारा मनमां रहे।। १९ ।।

अब तू मेरे से क्या पूछता है? मैं अब तेरे समान ही बैठा हूं। तब परीक्षित ने चरण पकड़ कर कहा, हे स्वामी! कृपा करो जिससे मेरे मन में कोई चाहना न रह जाए।

मुनीजी हूं घणों दोहेलो थाऊं, रखे अगिन हूं लीधे जाऊं।
त्यारे भागे आवेस कही पंच अध्याय, पण रास न वरणव्यो तेणे ताय।। २० ।।

राजा परीक्षित कहते हैं, हे मुनिजी! मैं बहुत दुःखी हूं और यह चाहना पूरी न हो सकने की अग्नि से मुझे बचाएं। तब आवेश चले जाने के बाद पांच अध्याय कहे, लेकिन रास का वर्णन नहीं कर सके।

हवे सुकजीना वचन हूं केटला कहूं, हूं सार काढवा भागवत ग्रहूं।
सघलानो सार आ ते रास, जे इंद्रावती मुख थयो प्रकास।। २१ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि अब शुकदेवजी के वचनों को मैं कितना कहूं? उन वचनों का सार निकालने के लिए भागवत ग्रहण करती हूं। सम्पूर्ण भागवत का सार रास है। उस रास का वर्णन श्री इन्द्रावतीजी के मुख से रास ग्रन्थ में हुआ है।

हवे रासतणो सार तमने कहूं, तेतां आपणूं तारतम थयूं।
तारतम सार आ छे निरधार, जिहां वसे छे आपणा आधार।। २२ ।।

अब रास का सार तारतम कहती हूं। रास का सार ही अपना तारतम है। तारतम का सार अपना घर है, अपना धनी है जो निश्चित है।

घर श्री धाम अने श्री कृष्ण, ए फल सारतणो तारतम।
तारतमे अजवालूं अति थाय, आसंका नव रहे मन मांहें।। २३ ।।

घर श्री परमधाम और अनादि अक्षरातीत श्री कृष्ण—यह तारतम के सार का परिणाम हैं। तारतम से अत्यन्त उजाला हो जाता है। मन में किसी तरह की शंका नहीं रह जाती।

मन जीवने पूछे रही, त्यारे जीव फल देखाडे सही।
ए अजवालूं कीधूं प्रकास, तारतमना वचन मांहें रास।। २४ ।।

मन जीव से पूछता है, तब जीव सार बताता है। यह उजाला प्रकाश की वाणी से मिला। रास का वर्णन तारतम में है, भागवत में नहीं।

Nijanand App

ए अजवालूं जीवने करे, जे जीव घर भणी पगला भरे।
पोते पोतानी पूरे साख, ए तारतम तणो अजवास।। २५ ।।

रास की वाणी के ज्ञान से जीव को घर का प्रकाश (उजाला) मिल जाता है और वह घर की तरफ जाता है। तारतम के प्रकाश से उसे स्वयं अपने अन्दर साख (साक्ष्य) मिलती है।

ते लई धणी आव्या आंहें, साथ संभारी जुओ जीव मांहें।
एणे घरे तेडे आ वल्लभ, बीजाने ए घणूं दुर्लभ।। २६ ।।

उसको लेकर धनी हमारे बीच में आए हैं। इसलिए, हे साथजी! इस वाणी को याद कर जीव में देखो। इस वाणी से धनी घर बुलाते हैं। यह दूसरों को मिलना दुर्लभ है।

बीजा कहूं छूं एटला माट, जे माया भारे करो छो साथ।
तारतम पख बीजो कोय नथी, एक आव्या छो तमे घेर थकी।। २७ ।।

हे सुन्दरसाथ! दूसरा शब्द इसलिए कहा है कि तुम माया को जोर से पकड़ कर बैठ गए हो। तारतम के विचार से तुम ही घर (परमधाम) से आए हो और दूसरा कोई नहीं आया।

आ माया कीधी ते तम माट, तारतम मांहें पाडी वाट।
एणी वाटे चालिए सही, श्री वालाजीने चरणज ग्रही।। २८ ।।

यह माया तुम्हारे लिए ही बनाई है। इस माया में तारतम से ही घर का रास्ता खुला है। इसलिए वालाजी के चरण को ग्रहण कर इसी रास्ते पर चलें।

एह चरन छे प्रमाण, इंद्रावती कहे थाओ जाण।
तमे वचनतणा लेजो अर्थ, आपण जीवनो ए छे ग्रथ।। २९ ।।

वालाजी के यह चरण ही हमारा मूल खजाना है। श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि इन वचनों को जानकर इनके अर्थ को ग्रहण करो।

।। प्रकरण ।। ३३ ।। चौपाई ।। ९९० ।।

एक सौ आठ पक्ष का सार

हवे वली कहूं ते सुणो, अठोतर सो पखज तणो।
ए विचार जो जो प्रमाण, ऐहेनो सार कादूं निरवाण।। १ ।।

अब श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, एक सौ आठ पक्ष का वर्णन करती हूं, सो सुनो। इन विचारों को प्रमाण के साथ देखना, इनका सार निकाल कर मैं बताती हूं।

माया जीव कोई कोई छे समरथ, ते दोड करे छे कारण अरथ।
निसंक आपोपा नाख्या जेणे, निहकर्म मारग लीधां तेणे।। २ ।।

माया में कोई-कोई समर्थ जीव है। वह भी धन के लिए ही दौड़ रहा है। जिन्होंने अपने आपको कुर्बान कर दिया है वह निष्काम मार्ग पर चले।

पुष्ट मरजाद ने परवाह पख, एह तणी कीधी छे लख।
ते वेहेची कीधा नव भाग, चढे पगथी लई वेराग।। ३ ।।

पुष्ट, मर्यादा और प्रवाह तीन पक्ष हैं। इनको देखकर समझना है। इनको बांटकर नौ भाग किए (हर एक के तीन तीन)। जो इन पर चले उनको संसार से वैराग्य हो गया।

Nijanand App

ए अजवालूं जीवने करे, जे जीव घर भणी पगला भरे।
पोते पोतानी पूरे साख, ए तारतम तणो अजवास।। २५ ।।

रास की वाणी के ज्ञान से जीव को घर का प्रकाश (उजाला) मिल जाता है और वह घर की तरफ जाता है। तारतम के प्रकाश से उसे स्वयं अपने अन्दर साख (साक्ष्य) मिलती है।

ते लई धणी आव्या आंहें, साथ संभारी जुओ जीव मांहें।
एणे घरे तेडे आ वल्लभ, बीजाने ए घणूं दुर्लभ।। २६ ।।

उसको लेकर धनी हमारे बीच में आए हैं। इसलिए, हे साथजी! इस वाणी को याद कर जीव में देखो। इस वाणी से धनी घर बुलाते हैं। यह दूसरों को मिलना दुर्लभ है।

बीजा कहूं छूं एटला माट, जे माया भारे करो छो साथ।
तारतम पख बीजो कोय नथी, एक आव्या छो तमे घेर थकी।। २७ ।।

हे सुन्दरसाथ! दूसरा शब्द इसलिए कहा है कि तुम माया को जोर से पकड़ कर बैठ गए हो। तारतम के विचार से तुम ही घर (परमधाम) से आए हो और दूसरा कोई नहीं आया।

आ माया कीधी ते तम माट, तारतम मांहें पाडी वाट।
एणी वाटे चालिए सही, श्री वालाजीने चरणज ग्रही।। २८ ।।

यह माया तुम्हारे लिए ही बनाई है। इस माया में तारतम से ही घर का रास्ता खुला है। इसलिए वालाजी के चरण को ग्रहण कर इसी रास्ते पर चलें।

एह चरन छे प्रमाण, इंद्रावती कहे थाओ जाण।
तमे वचनतणा लेजो अर्थ, आपण जीवनो ए छे ग्रथ।। २९ ।।

वालाजी के यह चरण ही हमारा मूल खजाना है। श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि इन वचनों को जानकर इनके अर्थ को ग्रहण करो।

।। प्रकरण ।। ३३ ।। चौपाई ।। ९९० ।।

एक सौ आठ पक्ष का सार

हवे वली कहूं ते सुणो, अठोतर सो पखज तणो।
ए विचार जो जो प्रमाण, ऐहेनो सार काढूं निरवाण।। १ ।।

अब श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, एक सौ आठ पक्ष का वर्णन करती हूं, सो सुनो। इन विचारों को प्रमाण के साथ देखना, इनका सार निकाल कर मैं बताती हूं।

माया जीव कोई कोई छे समरथ, ते दोड करे छे कारण अरथ।
निसंक आपोपा नाख्या जेणे, निहकर्म मारग लीधां तेणे।। २ ।।

माया में कोई-कोई समर्थ जीव है। वह भी धन के लिए ही दौड़ रहा है। जिन्होंने अपने आपको कुर्बान कर दिया है वह निष्काम मार्ग पर चले।

पुष्ट मरजाद ने परवाह पख, एह तणी कीधी छे लख।
ते वेहेची कीधा नव भाग, चढे पगथी लई वेराग।। ३ ।।

पुष्ट, मर्यादा और प्रवाह तीन पक्ष हैं। इनको देखकर समझना है। इनको बांटकर नौ भाग किए (हर एक के तीन तीन)। जो इन पर चले उनको संसार से वैराग्य हो गया।

Nijanand App

वली कीधा वीस ने सात, चढतो जाय लिए एणी भांत।
एक्यासी पख केहेवाय, ते वैकुंठमां पोंहोंतो थाय।।४।।

इसी विधि से एक के (फिर तीन तीन किए) सत्ताईस भाग हुए। इस तरह से इनकी विचारधारा बढ़ती जाती है। फिर तीन तीन भाग करने से इक्यासी पक्ष हो गए। जिन्होंने इनको समझ लिया उनकी पहुंच बैकुण्ठ तक हो गई।

हवे पख व्यासिमो जे कह्यो, वल्लभाचारजे ते ग्रह्यो।
स्यामा वल्लभी एथी जोर, पण बंने रह्या इंडानी कोर।।५।।

बयासीवां पक्ष वल्लभाचार्य ने लिया है। इनसे अधिक श्यामा वल्लभी मत वालों ने ग्रहण किया, किन्तु दोनों ही ब्रह्माण्ड के किनारे पर (नारायण तक) रह गए।

छेक इंड मांहें कीधूं सही, पण अखंड ते लई सक्यो नहीं।
पाछा वली पडया प्रतिबिंब, एहोनी तां एह सनंध।।६।।

इन्होंने इस ब्रह्माण्ड को फोड़ा तो अवश्य, किन्तु अखण्ड का ज्ञान ले नहीं सके। बात तो यह अखण्ड ब्रज और रास की ही करते हैं, परन्तु घटाते इसे प्रतिबिम्ब लीला पर हैं जो इस ब्रह्माण्ड में हुई।

ए ऊपर वली पख छे एक, सांभलो तेहेनुं कहुं विवेक।
त्रासिमो पख प्रमांण, जे वासना पांचो ग्रह्यो निरवाण।।७।।

इस पर भी एक पक्ष और है, जिसका विवरण सुनो। इस तिरासीवें पक्ष को अक्षर की पांच वासनाओं ने ग्रहण किया।

पांचे नाम कहूं प्रगट, दऊं सिखामण जाणी घरवट।
नहीं तो प्रबोध स्या ने कहुं, श्री वालाजीना चरणज ग्रहूं।।८।।

इन पांचों के नाम मैं प्रकट करती हूं और समझाकर घर का रास्ता बताती हूं। यदि घर का रास्ता न बताना हो तो सिखापन की आवश्यकता ही क्या है? वालाजी के चरणों को ग्रहण करके स्वयं आनन्द लेती हूं।

पण साथ माटे कहूं फरी फरी, हवे पांचे नाम जो जो चित धरी।
एक भगवान जी वैकुंठनो नाथ, महादेवजी पण एणे साथ।।९।।

परन्तु सुन्दरसाथ के लिए मैं बार-बार कहती हूं। इन पांचों के नाम चित्त में धारण कर लेना। एक भगवानजी बैकुण्ठ के स्वामी हैं। इनके साथ महादेवजी को भी गिनना।

सुकजी ने सनकादिक बे, वली कबीर भेलो मांहें ते।
लखमी नारायण भेला अंग मांहें, एहनो विचार कांई जुओ न थाय।।१०।।

शुकदेव और सनकादिक दो हैं। कबीर भी इनमें शामिल हैं। लक्ष्मीनारायण इनके ही अंग हैं और इनमें शामिल हैं। इन सबके विचार एक से ही हैं। शुकदेव, सनकादिक, कबीर, शिवजी और नारायण भगवान जिनमें भगवान विष्णु और लक्ष्मीजी शामिल हैं।

ते माटे ए वासना पांच, इंडू फोडी निकली जुओ द्रष्टांत।
ए पुरुख प्रकृति ओलंघी ने गया, अछर मांहें जई ने भेला थया।।११।।

यह पांचों पुरुष प्रकृति को उलंघ कर आगे निकले और अक्षर में मिल गये (योगमाया तक का वर्णन किया)।

Nijanand App

ए वचन पाधरा प्रगट कहे, जाण होय ते जोईने लहे।
पखपचवीस ए ऊपर जेह, तारतमना वचन छे तेह।। १२ ।।

यह वचन बिल्कुल सीधे कहे हैं। जानना हो तो पहचान कर ग्रहण कर लेना। इनके ऊपर जो पच्चीस पक्ष हैं, इनकी जो पहचान है वही तारतम है।

एह वचनो मांहें श्री धाम, धणी आपणा ने साथ सर्वेस्थान।
ए तारतम तणो अजवास, धणी बेठा मांहें लई साथ।। १३ ।।

इन वचनों में (पच्चीस पक्ष हैं) परमधाम श्री धाम धनी तथा बारह हजार सुन्दरसाथ की तथा सब खेलने के स्थान की तारतम से पहचान होती है। जहां धनी सुन्दरसाथ को लेकर बैठे हैं (मूल मिलावा)।

हवे कां नव ओलखो रे साथ सुजाण, घणूं तेहेने कहिए जे होय अजाण।
वचिखिण छो तमे प्रवीण, गलजो जेम अगिन सूं मीण।। १४ ।।

हे मेरे जानकार सुन्दरसाथजी! तुम क्यों नहीं देखते? ज्यादा तो उसको कहा जाए जो नासमझ हो। तुम तो चतुर और बुद्धिमान हो। इस ज्ञान में मोम की तरह पिघल जाना (गल जाना)।

सनेह सों सेवा करजो धणी, गलित चित थई अति घणी।
तमे सेवाए पामसो पार, धणीतणा वचन निरधार।। १५ ।।

बड़े प्यार से मगन होकर धनी की सेवा करना। तुम सेवा से ही पार पाओगे। ऐसा धनी के वचनों में साफ कहा है।

पाछला साथ छे ते आवसे केम, ते जोसे प्रकास तणा वचन।
चरणे छे ते तो आव्या सही, पण हवे आवसे वचन प्रकास ना ग्रही।। १६ ।।

पीछे के सुन्दरसाथ प्रकाश की वाणी को देखकर आएंगे। जो चरणों में हैं वह तो आ ही गए हैं, परन्तु अब पीछे आने वाले सुन्दरसाथ प्रकाश वाणी को ग्रहण कर आएंगे।

धणीतणा वचन ग्रह्या मांहें रास, पाछला पार उतारवा साथ।
आवसे साथ एणे प्रकास, अंधकारनो कीधो नास।। १७ ।।

धनी के वचनों को हमने रास में ग्रहण किया, ताकि पीछे के सुन्दरसाथ को पार उतरने का रास्ता मिले। इस तरह से सुन्दरसाथ आएंगे और अन्धकार मिट जाएगा।

आवसे साथ सकल परवरी, रासतणा वचन चित धरी।
एह वचन हवे केटला कहूं, आ लीलानो पार नव लहूं।। १८ ।।

सब सुन्दरसाथ रास के वचनों को चित्त में धारण कर माया से छुटकारा पाकर आएगा। अब और कितना कहूं? इस लीला का पार नहीं है।

ए वचन आंहीं छे अपार, पण साथ केटलो करसे विचार।
ते माटे कांई घणूं नव केहेवाय, आ तां पूरतणों दरियाय।। १९ ।।

यह वचन यहीं पर बेशुमार हैं, परन्तु साथ कितना विचार करके देखेंगे। इसलिए अब ज्यादा नहीं कहा जाता। नहीं तो यह दरिया की बाढ़ के समान है।

Nijanand App

एनूं एक वचन विचारसे रही, ते ततखिण घर ओलखसे सही।
घरनी जे होसे वासना, नहीं मूके ते वचन रासना।। २० ।।

जो भी एक वचन का विचार कर लेगा वह तुरन्त ही घर की पहचान कर लेगा। अपने घर की जो वासना होगी (आत्मा होगी) वह रास के वचनों को नहीं छोड़ेगी (ब्रज से रास में जाते समय का ढंग नहीं छोड़ेंगे)।

खरी वस्त जे थासे सही, ते रेहेसे वचन रासना ग्रही।
जेम कहूं छे करसे तेम, ते लेसे फलतणो तारतम।। २१ ।।

जो अपनी परमधाम की ब्रह्मसृष्टि होगी, वह रास के वचन को अमल में लाएगी। माया छोड़ने का जो रास्ता बताया है, उस रास्ते पर चलेगी। वही तारतम का फल लेगी।

इंद्रावती कहे सुणजो साथ, वचन विचारे थासे प्रकास।
प्रकास करीने लेजो धन, जे हूं तमने कह्या वचन।। २२ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, मेरे साथ! सुनो, इन वचनों से ज्ञान हो जाएगा। ज्ञान से अपना धन (परमधाम और वालाजी) लेना। इसलिए तुमको यह वचन कहे हैं।

।। प्रकरण ।। ३४ ।। चौपाई ।। १०१२ ।।

गुणनी आसंका

हवे कांईक हूं मारी करूं, नहीं तो तमने घणुए ओचरूं।
वली एक कहूं वचन, रखे आसंका आवे मन।। १ ।।

अब तो मैं कुछ अपनी कहती हूं। नहीं तो तुमको अधिक समझाना पड़ेगा। दुबारा एक वचन कहती हूं, जिससे तुम्हारे मन के संशय मिट जाएं।

में धणीतणा गुण लखया सही, एक आसंका मारा मनमां थई।
जे ऊंडा वचन कह्या निरधार, साथ केम करसे विचार।। २ ।।

धनी के गुण लिखते समय मेरे मन में एक संशय हुआ कि जो गहरे वचन मैंने कहे हैं, उनका सुन्दरसाथ विचार कैसे करेगा?

जिहां लगे जीव न पूरे साख, तो भले प्रबोध दीजे दस लाख।
एक वचन नव लागे केमे, जिहां लगे जीव न समझे मने।। ३ ।।

जब तक जीव को भरोसा नहीं हो जाता, तब तक दस लाख बार समझाएं, क्या होगा? जब तक जीव मन से समझ नहीं लेगा, तब तक एक वचन का भी असर नहीं होगा (चोट नहीं लगेगी)।

ते माटे एम थाय अमने, रखे आसंका रहे तमने।
एक परवाही वचन एम कहे, मुखथी कहे पण अर्थ नव लहे।। ४ ।।

इस वास्ते मुझे ऐसा लगता है कि तुम्हें किसी प्रकार का संशय न रह जाए। वैसे तो माया के जीव भी मुख से कहते हैं, पर वह उनके अर्थ (मायने) नहीं समझते।

Nijanand App

एनूं एक वचन विचारसे रही, ते ततखिण घर ओलखसे सही।
घरनी जे होसे वासना, नहीं मूके ते वचन रासना।। २० ।।

जो भी एक वचन का विचार कर लेगा वह तुरन्त ही घर की पहचान कर लेगा। अपने घर की जो वासना होगी (आत्मा होगी) वह रास के वचनों को नहीं छोड़ेगी (ब्रज से रास में जाते समय का ढंग नहीं छोड़ेंगे)।

खरी वस्त जे थासे सही, ते रेहेसे वचन रासना ग्रही।
जेम कहूं छे करसे तेम, ते लेसे फलतणो तारतम।। २१ ।।

जो अपनी परमधाम की ब्रह्मसृष्टि होगी, वह रास के वचन को अमल में लाएगी। माया छोड़ने का जो रास्ता बताया है, उस रास्ते पर चलेगी। वही तारतम का फल लेगी।

इंद्रावती कहे सुणजो साथ, वचन विचारे थासे प्रकास।
प्रकास करीने लेजो धन, जे हूं तमने कह्या वचन।। २२ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, मेरे साथ! सुनो, इन वचनों से ज्ञान हो जाएगा। ज्ञान से अपना धन (परमधाम और वालाजी) लेना। इसलिए तुमको यह वचन कहे हैं।

।। प्रकरण ।। ३४ ।। चौपाई ।। १०१२ ।।

गुणनी आसंका

हवे कांईक हूं मारी करूं, नहीं तो तमने घणुए ओचरूं।
वली एक कहूं वचन, रखे आसंका आवे मन।। १ ।।

अब तो मैं कुछ अपनी कहती हूं। नहीं तो तुमको अधिक समझाना पड़ेगा। दुबारा एक वचन कहती हूं, जिससे तुम्हारे मन के संशय मिट जाएं।

में धणीतणा गुण लखया सही, एक आसंका मारा मनमां थई।
जे ऊंडा वचन कह्या निरधार, साथ केम करसे विचार।। २ ।।

धनी के गुण लिखते समय मेरे मन में एक संशय हुआ कि जो गहरे वचन मैंने कहे हैं, उनका सुन्दरसाथ विचार कैसे करेगा?

जिहां लगे जीव न पूरे साख, तो भले प्रबोध दीजे दस लाख।
एक वचन नव लागे केमे, जिहां लगे जीव न समझे मने।। ३ ।।

जब तक जीव को भरोसा नहीं हो जाता, तब तक दस लाख बार समझाएं, क्या होगा? जब तक जीव मन से समझ नहीं लेगा, तब तक एक वचन का भी असर नहीं होगा (चोट नहीं लगेगी)।

ते माटे एम थाय अमने, रखे आसंका रहे तमने।
एक परवाही वचन एम कहे, मुखथी कहे पण अर्थ नव लहे।। ४ ।।

इस वास्ते मुझे ऐसा लगता है कि तुम्हें किसी प्रकार का संशय न रह जाए। वैसे तो माया के जीव भी मुख से कहते हैं, पर वह उनके अर्थ (मायने) नहीं समझते।

Nijanand App

सोयतणां नाका मंझार, कुंजर कई निकले हजार।
एनो अर्थ पण आवसे सही, तारतम आसंका राखे नहीं।। ५ ।।

कहा जाता है कि सुई की नोक में से हजारों हाथी निकल गए। इसका अर्थ भी तुमको समझ में आ जाएगा। तारतम से सब संशय मिट जाते हैं।

में गुण लखतां कही लेखण अणी, रखे आसंका उपजे घणी।
कथुआना पगना प्रमाण, लेखणो गढियो हाथ सुजाण।। ६ ।।

धनी के गुणों को लिखते समय मैंने लेखनी की नोक का वर्णन किया है और तुमको सन्देह न रहे इसलिए कथुआ के पैर का प्रमाण दिया है। जिसके पैर के समान मैंने लेखनी की पतली नोक बनाई।

तेह तणी वली कीधियो चीर, गुण जेटली उतारी लीर।
हवे रखे केहेने आसंका रहे, तारतम आसंका नव सहे।। ७ ।।

उसको भी बीच में से चीरा (दो भाग किए)। अब किसी को संशय न रहे, क्योंकि तारतम वाणी से किसी के संशय बाकी रहते ही नहीं।

ते ऊपर एक कहूं विचार, सांभलो साथ मारा सिरदार।
आ चौद भवन देखो आकार, एहेना मूलनो करो विचार।। ८ ।।

इसके ऊपर भी एक विचार बताती हूं। हे मेरे प्रमुख सुन्दरसाथ! सुनो, तुमको यह चौदह लोकों का ब्रह्माण्ड जो दिखाई देता है, इसके आकार को देखो और इसकी जड़ को पहचानो।

एणे सुकजी पण सुपनांतर कहे, कोई एहनो जीव एणे नव लहे।
ए सुपन मूलतां छे समरथ, एहेना मूलनो जुओ अर्थ।। ९ ।।

इसको शुकेदवजी भी स्वप्न का ब्रह्माण्ड कहते हैं, परन्तु इस ब्रह्माण्ड के जीव इसका पार नहीं पाते। इस स्वप्न के ब्रह्माण्ड का मूल (नींद है) समर्थ है। इसके मूल के अर्थ को देखो।

सुपन मूलतां निद्रा थई, जुए जागीतां कांइए नहीं।
एनूं मूलतां न रह्यो लगार, अने कथुवाना पगनो तो कह्यो आकार।। १० ।।

स्वप्न का मूल तो निद्रा है जो जागने पर नहीं रह पाता। इस तरह से इसका मूल तो कुछ है ही नहीं, पर कथुए के पैर के आकार की कही है।

मूल विना तमे जुओ विस्तार, केवडो कीधो छे आकार।
तो आनो तो हूं कह्यो आकार, तेहेनो कां नव थाय विस्तार।। ११ ।।

यह ब्रह्माण्ड मूल के बिना इतना बड़ा आकार लेकर खड़ा है। तुम देखो। फिर कथुए के पैर का तो मैंने आकार बताया है, तो फिर इसका विस्तार क्यों न हो?

एम सोयतणां नाका मंझार, ब्रह्मांड कई निकले हजार।
हवे एह तणो जो जो अर्थ, गुण लखवा वालो समरथ।। १२ ।।

इस तरह सुई की नोक में से हजारों ब्रह्माण्ड निकल गए। इसका तुम अर्थ समझो और देखो। इन गुणों को लिखने वाला हर तरह से समर्थ है।

Nijanand App

हवे केटलो तमने कहूं विस्तार, एक एह वचन ग्रहजो निरधार।
हेत करीने कहूं छूं साथ, ओलखजो प्राणनो नाथ।। १३ ।।

अब इसका विस्तार तुम्हें मैं कहां तक कहूं? इस एक वचन को ग्रहण करना जिसे मैं तुम्हें, हे सुन्दरसाथ! अपना समझकर प्यार से कहती हूं। इन सबका सार एक वचन यह है कि अपने प्राणनाथ को पहचानो।

गुण लखवा वालो ते एह, आपणमां बेठा छे जेह।
इंद्रावती कहे आ ते रे ते, जेणे गुण कीधां ते ए रे ए।। १४ ।।

वही प्राणनाथ गुण लिखने वाले हैं। यह अपने बीच में बैठे हैं। श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि सुन्दरसाथजी! आओ जिन प्राणनाथ ने अपने ऊपर इतनी मेहर (कृपा) की है, यह वही तुम्हारे प्राणनाथ हैं।

तारे केहेवुं होय ते केहे रे केहे, लाभ लेवो होय ते ले रे ले।
तारतम कहे छे आ रे आ, हजार वार कहूं हां रे हां।। १५ ।।

हे सुन्दरसाथजी! अब तुम्हें जो कहना हो वह कहो। लाभ लेना हो, तो लो। तारतम वाणी कहती है, यही अपने प्राणनाथ हैं। मैं भी हजार बार स्वीकार करती हूं।

मायासूं करजे नां रे नां, फोकट फेरो मा खा रे खा।
धणीने चरणे जा रे जा, एवो नहीं लाधे दा रे दा।। १६ ।।

हे सुन्दरसाथजी! अब माया को नाकारा कर दो (छोड़ दो)। व्यर्थ में आवागमन के चक्कर से बचो। धनी के चरणों में जाओ। फिर ऐसा समय नहीं मिलेगा।

जो चूक्यो आंणें ता रे ता, तो कपालमां लागसे घा रे घा।
संसारमां नथी कांई सा रे सा, श्री धाम धणी गुण गा रे गा।। १७ ।।

हे साथजी! यदि तुम ऐसा अवसर चूक गए तो समझो तुम्हारे माथे में बड़ी चोट लगेगी (बहुत बड़ा भारी नुकसान हो जाएगा)। इस संसार में कोई वस्तु सार (सत्य) नहीं है. इसलिए धाम धनी के गुण गाओ।

पोताना पगले था रे था, मा मूके तारो चाह रे चाह।
तारा जीवने प्रेम तूं पा रे पा, जेम सहू कोई कहे तूंने वाह रे वाह।। १८ ।।

हे साथजी! अपने आपको अपने रास्ते पर लाओ और अपनी चाहना धनी से अलग मत करो। अपने जीव को धनी का प्रेम प्राप्त कराओ (अपने जीव से धनी के साथ प्यार कर) जिससे तुम्हें सब कोई 'वाह-वाह' कहे।

॥ प्रकरण ॥ ३५ ॥ चौपाई ॥ १०३० ॥

गुण केटला कहूं मारा वाला, अमसूं कीधां अति घणा जी।
आणां जोगवाई ने आणी जिभ्याए, केम केहेवाय वचन तेह तणा जी।। १ ।।

हे मेरे प्रीतम! आपके गुणों का (मेहर का) जो आपने मेरे से किए हैं, कहां तक बयान करूं (मेरे पर मेहेर की)। इस तन से तथा इस जबान से उन गुणों को वचनों में कैसे कहा जाए?

वृज तणा सुख आंहीं आवीने, अमने अति घणा दीधां जी।
रास तणी रामतडी रमाडी, आप सरीखडा कीधां जी।। २ ।।

ब्रज के सुख यहां आकर हमको बहुत ज्यादा दिए। रास की रामत खिलाकर अपने समान बना लिया।

Nijanand App

हवे केटलो तमने कहूं विस्तार, एक एह वचन ग्रहजो निरधार।
हेत करीने कहूं छूं साथ, ओलखजो प्राणनो नाथ।। १३ ।।

अब इसका विस्तार तुम्हें मैं कहां तक कहूं? इस एक वचन को ग्रहण करना जिसे मैं तुम्हें, हे सुन्दरसाथ! अपना समझकर प्यार से कहती हूं। इन सबका सार एक वचन यह है कि अपने प्राणनाथ को पहचानो।

गुण लखवा वालो ते एह, आपणमां बेठा छे जेह।
इंद्रावती कहे आ ते रे ते, जेणे गुण कीधां ते ए रे ए।। १४ ।।

वही प्राणनाथ गुण लिखने वाले हैं। यह अपने बीच में बैठे हैं। श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि सुन्दरसाथजी! आओ जिन प्राणनाथ ने अपने ऊपर इतनी मेहर (कृपा) की है, यह वही तुम्हारे प्राणनाथ हैं।

तारे केहेवुं होय ते केहे रे केहे, लाभ लेवो होय ते ले रे ले।
तारतम कहे छे आ रे आ, हजार वार कहूं हां रे हां।। १५ ।।

हे सुन्दरसाथजी! अब तुम्हें जो कहना हो वह कहो। लाभ लेना हो, तो लो। तारतम वाणी कहती है, यही अपने प्राणनाथ हैं। मैं भी हजार बार स्वीकार करती हूं।

मायासूं करजे नां रे नां, फोकट फेरो मा खा रे खा।
धणीने चरणे जा रे जा, एवो नहीं लाधे दा रे दा।। १६ ।।

हे सुन्दरसाथजी! अब माया को नाकारा कर दो (छोड़ दो)। व्यर्थ में आवागमन के चक्कर से बचो। धनी के चरणों में जाओ। फिर ऐसा समय नहीं मिलेगा।

जो चूक्यो आंणें ता रे ता, तो कपालमां लागसे घा रे घा।
संसारमां नथी कांई सा रे सा, श्री धाम धणी गुण गा रे गा।। १७ ।।

हे साथजी! यदि तुम ऐसा अवसर चूक गए तो समझो तुम्हारे माथे में बड़ी चोट लगेगी (बहुत बड़ा भारी नुकसान हो जाएगा)। इस संसार में कोई वस्तु सार (सत्य) नहीं है. इसलिए धाम धनी के गुण गाओ।

पोताना पगले था रे था, मा मूके तारो चाह रे चाह।
तारा जीवने प्रेम तूं पा रे पा, जेम सहू कोई कहे तूंने वाह रे वाह।। १८ ।।

हे साथजी! अपने आपको अपने रास्ते पर लाओ और अपनी चाहना धनी से अलग मत करो। अपने जीव को धनी का प्रेम प्राप्त कराओ (अपने जीव से धनी के साथ प्यार कर) जिससे तुम्हें सब कोई 'वाह-वाह' कहे।

॥ प्रकरण ॥ ३५ ॥ चौपाई ॥ १०३० ॥

गुण केटला कहूं मारा वाला, अमसूं कीधां अति घणा जी।
आणो जोगवाई ने आणी जिभ्याए, केम केहेवाय वचन तेह तणा जी।। १ ।।

हे मेरे प्रीतम! आपके गुणों का (मेहर का) जो आपने मेरे से किए हैं, कहां तक बयान करूं (मेरे पर मेहेर की)। इस तन से तथा इस जबान से उन गुणों को वचनों में कैसे कहा जाए?

वृज तणा सुख आंहीं आवीने, अमने अति घणा दीधां जी।
रास तणी रामतडी रमाडी, आप सरीखडा कीधां जी।। २ ।।

ब्रज के सुख यहां आकर हमको बहुत ज्यादा दिए। रास की रामत खिलाकर अपने समान बना लिया।

Nijanand App

भगवानजी केरी रामतडी, जोयानी हुती मूंने खांत जी।
नौतनपुरी मांहें आवी करीने, मूने चींधी देखाड्यो द्रष्टांत जी।। ३ ।।

अक्षर भगवान के खेल देखने की हमें चाहना थी। नौतनपुरी में आकर के दृष्टान्त देकर आडीका (चमत्कारिक) लीला करके दिखाई।

श्री धामतणा सुख केणी पेरे कहूं, जे तारतमे करी तमे दीधां जी।
नौतनपुरीमां मनोरथ कीधां, ते विध विधना मारा सीधां जी।। ४ ।।

परमधाम के सुखों का कैसे वर्णन करूं? इसे आपने तारतम वाणी से दिया। जो इच्छाएं कीं वह सभी तरह से नौतनपुरी में पूरी कीं।

सेहेजल सुखमां झीलतां, दुख न जाणिए कांई जी।
दुस्तर जल सुपनमां देखी, हूं जांणी ते घरनी बडाई जी।। ५ ।।

परमधाम में हम सदा ही सुख में रहते थे। दुःख क्या होता है, नहीं जानते थे। उन कठिन दुःखों को सपने के ब्रह्माण्ड में देखा। तब घर के सुखों की लज्जत का पता चला।

इंद्रावती कहे अति उछरंगे, तमे लाड अमारा घणा पाल्या जी।
निरमल नेत्र करी जीवना, तमे पडदा पाछा टाल्या जी।। ६ ।।

श्री इन्द्रावतीजी उमंग के साथ कहती हैं कि मेरे धनी! आपने हमें बहुत लाड लडाए तथा हमारे जीव के नेत्र निर्मल करके माया का परदा (अज्ञान के परदे को) हटा दिया।

आपोपूं ओलखावी करीने, पोताने पासे तेडी लीधी जी।
इंद्रावती ने एकान्त सुख दीधां, आप सरीखडी कीधी जी।। ७ ।।

आपने अपनी पहचान कराकर अपने पास बुला लिया और श्री इन्द्रावतीजी को अपने समान करके एकान्त में अधिक सुख दिए।

।। प्रकरण ।। ३६ ।। चौपाई ।। १०३७ ।।

प्रगट वाणी

हवे सैयरने हूं प्रगट कहूं, आपणों वास श्री धाममां रहूं।
अछरातीत ते आपणा घर, मूल वैकुंठ मांहें अछर।। १ ।।

अब सुन्दरसाथ को मैं कहती हूं कि अपने रहने का ठिकाना श्री परमधाम है। अक्षरातीत अपना घर है। मूल बैकुण्ठ अक्षर के हृदय में है (बैकुण्ठ का मूल अक्षर में है)।

ए वाणी चित धरजो ब्साथ, दया करी कहे प्राणनाथ।
ए किव करी रखे जाणो मन, श्री धणी लाव्या धामथी वचन।। २ ।।

इस वाणी को सुन्दरसाथ चित्त में धरना। बड़ी कृपा करके अपने प्राणनाथ कह रहे हैं। यह नहीं समझ लेना कि यह वाणी कविता करके लिखी गई है। यह वचन तो धाम धनी परमधाम से लाए हैं।

ते तमने कहूं प्रगट करी, मूल वचन लेजो चित धरी।
हवे तारतम जो जो प्रकास, तिमर मूलथी करूं नास।। ३ ।।

इसको मैं प्रकट करके कहती हूं। अपने इन मूल के वचनों को चित्त में धर लेना। अब तारतम वाणी के उजाले को देखो। जिससे अन्धकार का (अज्ञानता का) मूल से ही नाश कर देती हूं।

Nijanand App

भगवानजी केरी रामतडी, जोयानी हुती मूंने खांत जी।
नौतनपुरी मांहें आवी करीने, मूने चींधी देखाड्यो द्रष्टांत जी।। ३ ।।

अक्षर भगवान के खेल देखने की हमें चाहना थी। नौतनपुरी में आकर के दृष्टान्त देकर आडीका (चमत्कारिक) लीला करके दिखाई।

श्री धामतणा सुख केणी पेरे कहूं, जे तारतमे करी तमे दीधां जी।
नौतनपुरीमां मनोरथ कीधां, ते विध विधना मारा सीधां जी।। ४ ।।

परमधाम के सुखों का कैसे वर्णन करूं? इसे आपने तारतम वाणी से दिया। जो इच्छाएं कीं वह सभी तरह से नौतनपुरी में पूरी कीं।

सेहेजल सुखमां झीलतां, दुख न जाणिए कांई जी।
दुस्तर जल सुपनमां देखी, हूं जांणी ते घरनी बडाई जी।। ५ ।।

परमधाम में हम सदा ही सुख में रहते थे। दुःख क्या होता है, नहीं जानते थे। उन कठिन दुःखों को सपने के ब्रह्माण्ड में देखा। तब घर के सुखों की लज्जत का पता चला।

इंद्रावती कहे अति उछरंगे, तमे लाड अमारा घणा पाल्या जी।
निरमल नेत्र करी जीवना, तमे पडदा पाछा टाल्या जी।। ६ ।।

श्री इन्द्रावतीजी उमंग के साथ कहती हैं कि मेरे धनी! आपने हमें बहुत लाड लडाए तथा हमारे जीव के नेत्र निर्मल करके माया का परदा (अज्ञान के परदे को) हटा दिया।

आपोपूं ओलखावी करीने, पोताने पासे तेडी लीधी जी।
इंद्रावती ने एकान्त सुख दीधां, आप सरीखडी कीधी जी।। ७ ।।

आपने अपनी पहचान कराकर अपने पास बुला लिया और श्री इन्द्रावतीजी को अपने समान करके एकान्त में अधिक सुख दिए।

॥ प्रकरण ॥ ३६ ॥ चौपाई ॥ १०३७ ॥

प्रगट वाणी

हवे सैयरने हूं प्रगट कहूं, आपणों वास श्री धाममां रहूं।
अछरातीत ते आपणा घर, मूल वैकुंठ मांहें अछर।। १ ।।

अब सुन्दरसाथ को मैं कहती हूं कि अपने रहने का ठिकाना श्री परमधाम है। अक्षरातीत अपना घर है। मूल बैकुण्ठ अक्षर के हृदय में है (बैकुण्ठ का मूल अक्षर में है)।

ए वाणी चित धरजो ब्सथ, दया करी कहे प्राणनाथ।
ए किव करी रखे जाणो मन, श्री धणी लाव्या धामथी वचन।। २ ।।

इस वाणी को सुन्दरसाथ चित्त में धरना। बड़ी कृपा करके अपने प्राणनाथ कह रहे हैं। यह नहीं समझ लेना कि यह वाणी कविता करके लिखी गई है। यह वचन तो धाम धनी परमधाम से लाए हैं।

ते तमने कहूं प्रगट करी, मूल वचन लेजो चित धरी।
हवे तारतम जो जो प्रकास, तिमर मूलथी करूं नास।। ३ ।।

इसको मैं प्रकट करके कहती हूं। अपने इन मूल के वचनों को चित्त में धर लेना। अब तारतम वाणी के उजाले को देखो। जिससे अन्धकार का (अज्ञानता का) मूल से ही नाश कर देती हूं।

Nijanand App

हवे तमने कहूं मूलज थकी, अने मोह अहंकार कांई उपनूं नथी।
न कांई ईश्वर न मूल प्रकृती, तेणें समे आपणमां वीती।। ४ ।।

अब तुमको मूल से बताती हूं। जब मोह और अहंकार उत्पन्न नहीं था, न नारायण थे और न मूल प्रकृति थी, उस समय जो अपने पर बीती थी, उस घटना को कहती हूं।

एणे समे मूल वैकुंठ नाथ, इछा दरसन करवा साथ।
साथ तणें मन मनोरथ एह, माया रामत जोइए तेह।। ५ ।।

इस समय मूल बैकुण्ठनाथ अक्षर को सुन्दरसाथ के दर्शन करने की इच्छा हुई। सुन्दरसाथ के मन में माया का खेल देखने की इच्छा हुई।

ए वात अमे श्री राज ने कही, त्यारे अम बेहू पर इछा थई।
उपनूं मोह सुरत संचरी, तेणे माया रचना करी।। ६ ।।

यह बात हम दोनों ने श्री राजजी से कही। तब हम दोनों में आज्ञा की इच्छा प्रकट हुई। मोह सागर बना और हमारी आत्माओं ने इसके अन्दर प्रवेश किया। मोह सागर की रचना माया ने की।

आहीं अछरनूं विलस्यो मन, पांच तत्व चौद भवन।
एमां विष्णु मन बीजो मननो विलास, रच्यो एह स्वांस नो स्वांस।। ७ ।।

यहां अक्षर के मन से पांच तत्व और चौदह लोकों का ब्रह्माण्ड बना। इसमें भगवान विष्णु अव्याकृत के मन के स्वरूप हैं, जिनकी सांसों से ब्रह्माण्ड बना।

एमां वासना आवी अम तणी, मन इछे पोतानू धणी।
अछर वासना लई आवेस, नंद घेर कीधो प्रवेस।। ८ ।।

इस ब्रह्माण्ड में हमारी आत्माएं आईं और अपने धनी से मिलने की इच्छा करने लगीं। अक्षर की आत्मा ने धनी के आवेश को लेकर नन्द के घर में प्रवेश किया।

साथ सुपन एम दीठूं सही, जे गोकुल रमयां भेला थई।
बेहू सुरत रमियां कई भांत, मन वांछित करी खरी खांत।। ९ ।।

सुन्दरसाथ ने इस तरह से स्वप्न को देखा। गोकुल में हम दोनों मिलकर खेले। हम दोनों की सुरताओं ने (अक्षर व ब्रह्मसृष्टि ने) मन में चाही हुई इच्छाओं को तरह-तरह के खेल करके पूरा किया।

अग्यार वरस लगे लीला करी, कालमाया इहांज परहरी।
जोगमाया करी रमिया रास, आनंद मन आंणी उलास।। १० ।।

ग्यारह वर्ष तक लीला करके कालमाया के ब्रह्माण्ड को छोड़ दिया। योगमाया का ब्रह्माण्ड नया रचकर आनन्द और उल्लास के साथ रास खेली।

रास रमी घेर आव्या एह, साथ सकलमां अधिक सनेह।
तामसी उत्कंठा रही मन सार, तो आपण आव्या बीजी वार।। ११ ।।

रास खेलकर घर आए (परम धाम)। उस समय सुन्दरसाथ में बहुत प्यार था। तामसी सखियों के मन में कुछ इच्छा रह गई थी, इसलिए अब हम दूसरी बार आए हैं।

Nijanand App

मारकंडे माया दीठी जेम, घेर बेठा आपण जोइए तेम।
ते माया सुकजीए वरणव करी, त्रण अध्याय कह्या चित धरी।। १२ ।।

मार्कण्डेय ऋषि ने जिस प्रकार माया देखी थी, घर में बैठकर आपने भी इसी प्रकार खेल देखा। इस माया का शुकदेवजी ने तीन अध्यायों में वर्णन किया। (बारहवें स्कन्ध अध्याय ९, श्लोक ८-९-१० में है)।

हवे प्रीछजो ए द्रष्टांत, एणे पण मांगी करी खांत।
जुओ मायानो वृतांत, रिखि केमे न पाम्यो स्वांत।। १३ ।।

हे साथजी! अब इस दृष्टान्त से समझो। जैसी चाहना मार्कण्डेय ने की थी वैसी ही हमने की। माया की हकीकत देखी। ऋषि ने इसमें किसी तरह की शान्ति नहीं पाई।

ततखिण कम्पमानज थयो, माया मांहें भलीने गयो।
कल्पांत सात ने छियासी जुग, माया आडी आवी बुध।। १४ ।।

ऋषि तुरन्त ही कांपने लगे और माया में मिल गए। सात कल्पान्त और छियासी युग तक माया का आवरण उनकी बुद्धि पर रहा।

नहीं तो नथी थई अधखिण वार, मारकंड दुख पाम्यो अपार।
त्यारे मांहें नारायणजी कीधो प्रवेस, देखाडी माया लवलेस।। १५ ।।

नहीं तो आधे क्षण का भी समय नहीं हुआ था, जिसमें मार्कण्डेय ने अपार दुःख देखा। तब नारायण जी ने माया में प्रवेश किया और थोड़ी सी माया दिखाकर सावचेत किया।

जुए जागी तां तेहज ताल, दया करी काढ्यो तत्काल।
मायानी तां एह सनंध, निरमल नेत्रे थइए अंध।। १६ ।।

जागकर मार्कण्डेय ने देखा कि वही घड़ी है और वही तालाब है। दया करके नारायण ने उनको तत्काल निकाला। माया की यह हकीकत है कि सामने देखकर भी अन्धे हो जाते हैं।

एणी पेरे अमने रह्यो अंदेस, ते राखे नहीं धणी लवलेस।
ते माटे वली आ सुपन, इछाए कीधूं उतपन।। १७ ।।

इस प्रकार से हमको संदेह रह गया था, संदेह को धनी थोड़ा भी नहीं रहने देंगे। इस वास्ते फिर से इच्छाओं की पूर्ति के लिए संसार बनाया।

अखंड थयो कालमाया तणों, अंदेस भाजवाने आपणो।
केटलीकने उत्कंठा रही, ते माटे सर्वने आगना थई।। १८ ।।

अपना संदेह मिटाने के लिए कालमाया का पहला ब्रह्माण्ड अखण्ड किया। बहुत सी चाहना बाकी रह गई थी, इस वास्ते राजजी की आज्ञा सभी पर हुई।

ब्रह्मांड मांहें आवियो एह, मन तणां भाजवा संदेह।
साथ मांहें एक सुंदरबाई, तेणे श्री राजे दीधी बडाई।। १९ ।।

हम इस तीसरे ब्रह्माण्ड में अपना संदेह मिटाने के लिए आए। सुन्दरसाथ के बीच में सुन्दरबाई को श्री राजजी ने बड़ा मान दिया।

आवेस अंग आपी आधार, दई तारतम उघाड्या बार।
घर थकी वचन लई आव्या, ते तां सुंदरबाईने कह्या।। २० ।।

श्री राजजी ने उनके अन्दर अपना आवेश दिया और तारतम का ज्ञान देकर घर के दरवाजे खोले। श्री राजजी ने सुन्दरबाई से कहा कि यह तारतम के वचन मैं घर से लाया हूं।

Nijanand App

साथ वचन सांभलिया एह, वासनाए कीधां मूल सनेह।
ते मांहें एक इंद्रावती, केहेवाणी सहुमां महामती।। २१ ।।

सुन्दरसाथ ने इन वचनों को सुना और आत्माओं ने परमधाम की तरह आपस में प्यार किया। उनमें श्री इन्द्रावतीजी ही महामति कहलाईं।

तारतम अंग थयो विस्तार, उदर आव्या बुध अवतार।
इछा दया ने आवेस, एणे अंग कीधो प्रवेस।। २२ ।।

इनके अंग में तारतम का विस्तार हुआ और बुधजी हृदय में विराजमान हुए। दया और आवेश ने श्री इन्द्रावतीजी के अंग में प्रवेश किया।

एणी पेरे भाज्यो संदेह, समझ्या सहुए वातज एह।
वचन विस्तरिया विवेक, तेणे मली रस थयो एक।। २३ ।।

इस प्रकार से संशय मिटाया और इस बात से सबको समझाया। इस वाणी का विवेक से विस्तार किया, जिससे सब मिलकर एक रस हो गए।

साथ मल्योने थई जागणी, हरख्यो साथने रमियां धणी।
ए चारे लीला कीधी सही, पण जागनी तो अति मोटी थई।। २४ ।।

सब सुन्दरसाथ इकट्ठे हुए। सब सुन्दरसाथ धनी के साथ आनन्द से मिलकर खेले। इस प्रकार चारों लीलाएं कीं ब्रज रास (नौतनपुरी-देवचन्द्रजी की) तथा प्राणनाथजी की (पन्नाजी की) लीला की, परन्तु जागनी का काम तो बहुत बड़ा है।

इहां साथने थयो उलास, कह्यो न जाय तेह विलास।
ए जागणीना सुख केणी पेरे कहिए, जाणे श्री धाममां बेठा छैए।। २५ ।।

यहां सुन्दरसाथ में बड़ा उल्लास हुआ, जिसके आनन्द को कहा नहीं जा सकता। इस जागनी के सुख को किस तरह से कहें जिससे ऐसा अनुभव हो जाए कि हम धाम में बैठे हैं।

मली साथ वातो हरखे करी, जेवी रामत जेणे चित धरी।
एम करता द्रष्टे आव्यूं धाम, केहेना मनमां रही न हाम।। २६ ।।

सुन्दरसाथ बड़े हर्ष से मिलकर अपनी-अपनी इच्छानुसार रामत देखकर खुशी से बातें करेंगे। इस तरह से परमधाम नजर में आएगा। किसी के मन में किसी प्रकार की इच्छा बाकी न रहेगी।

पछे साथ उठीने बेठा थया, एह वचन आगलथी कह्या।
इंद्रावती कहे उठसे अछर, लई आनन्द पोताने घर।। २७ ।।

इसके बाद सब सुन्दरसाथ उठकर जागृत होकर बैठ जाएंगे (मूल मिलावा में)। इस होने वाली लीला को मैंने पहले से ही कह दिया है। श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि इसके बाद आनन्द लेकर अक्षर अक्षरधाम में जागृत होंगे।

।। प्रकरण ।। ३७ ।। चौपाई ।। १०६४ ।।

प्रकरण तथा चौपाइयों का पूरा संकलन ।। प्रकरण ।। ८४ ।। चौपाई ।।१९७७।।

।। प्रकास गुजराती जंबूर सम्पूर्ण ।।

Nijanand App